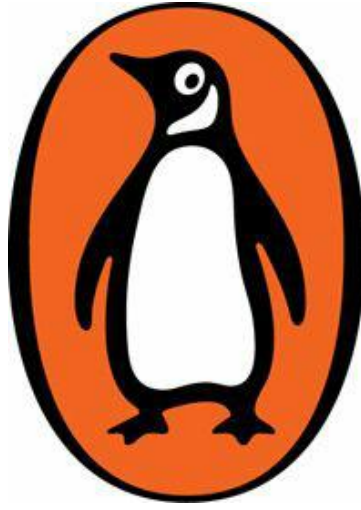


TRAIN TO PAKISTAN  
KHUSHWANT SINGH



खुशवंत सिंह

पाकिस्तान के लिए ट्रेन



अंतर्वस्तु

[लेखक के बारे में](#)

[निष्ठा](#)

[डकैती](#)

[कलयुग](#)

[मनो माजरा](#)

[कर्मा](#)

[पेंगुइन का पालन करें](#)

[कॉपीराइट पेज](#)

पेंगुइन बुक्स

पाकिस्तान के लिए ट्रेन

यह 1947 की गर्मियों की बात है। लेकिन भारत और पाकिस्तान की सीमा पर बसे गांव मनो माजरा के सिखों और मुसलमानों के लिए विभाजन का ज्यादा मतलब नहीं है। फिर, एक स्थानीय साहूकार की हत्या कर दी जाती है, और संदेह एक ग्रामीण लड़की के साथ प्यार करने वाले गाँव के सरगना जुगुत सिंह पर पड़ता है। जब एक ट्रेन आती है, तो मृत सिखों के शवों को ले जाते हुए, गाँव एक युद्ध के मैदान में बदल जाता है, और न तो मजिस्ट्रेट और न ही पुलिस हिंसा के बढ़ते ज्वार को सहन करने में सक्षम होती है। परस्पर विरोधी निष्ठाओं के बीच, यह खुद को छुड़ाने और अपने गांव के लिए शांति बहाल करने के लिए जुगुत सिंह पर छोड़ दिया जाता है।

1956 में पहली बार प्रकाशित, *ट्रेन टू पाकिस्तान* आधुनिक भारतीय कथा साहित्य का एक क्लासिक है।



खुशवंत सिंह भारत के सबसे प्रसिद्ध लेखक और स्तंभकार हैं। उन्होंने कहा कि कर दिया गया है संस्थापक-संपादक की योजना है, और के संपादक *भारत इलस्ट्रेटेड वीकली*, *नेशनल हेराल्ड* और *हिंदुस्तान टाइम्स*। वह कई पुस्तकों के लेखक भी हैं जिनमें *I Shall*

*Not Hear Hearing the Nightingale, Delhi, The Company of Women* और *Burial at Sea* उपन्यास शामिल हैं ; *सिखों का क्लासिक दो-खंड एक इतिहास* ; और सिख धर्म और संस्कृति, दिल्ली, प्रकृति, वर्तमान मामलों और उर्दू कविता पर कई अनुवाद और गैर-काल्पनिक पुस्तकें। उनकी आत्मकथा, *ट्रुथ, लव एंड अ लिटिल मैलिस* , 2002 में प्रकाशित हुई थी।

खुशवंत सिंह 1980 से 1986 तक संसद के सदस्य रहे। उन्हें 1974 में पद्म भूषण से सम्मानित किया गया था, लेकिन 1984 में भारतीय सेना द्वारा स्वर्ण मंदिर के तूफान के विरोध में सजावट वापस कर दी गई। 2007 में, उन्हें पद्म विभूषण से सम्मानित किया गया।

मेरी बेटी माला के लिए



## डकैती

1947 की गर्मी अन्य भारतीय गर्मियों की तरह नहीं थी। उस साल भी भारत में मौसम का अलग ही अहसास था। यह सामान्य से अधिक गर्म था, और ड्रिपर और डस्टर। और गर्मी लंबी थी। कोई भी याद नहीं कर सकता था कि कब मानसून इतनी देर से आया। हफ्तों के लिए, विरल बादलों ने केवल छाया डाली। बारिश नहीं हुई थी। लोग कहने लगे कि भगवान उन्हें उनके पापों की सजा दे रहे हैं।

उनमें से कुछ के पास यह महसूस करने का अच्छा कारण था कि उन्होंने पाप किया था। गर्मियों से पहले, सांप्रदायिक दंगे, देश के प्रस्तावित विभाजन की हिंदू हिंदू और मुस्लिम पाकिस्तान की रिपोर्टों से उपजे, कलकत्ता में टूट गए थे, और कुछ महीनों के भीतर मृत्यु दर कई हजार तक बढ़ गई थी। मुसलमानों ने कहा कि हिंदुओं ने योजना बनाई और हत्या शुरू कर दी। हिंदुओं के अनुसार, मुसलमानों को दोष देना था। तथ्य यह है कि, दोनों पक्ष मारे गए। दोनों ने गोली मारकर हत्या कर दी और फरार हो गए। दोनों तड़पते रहे। दोनों ने बलात्कार किया। कलकत्ता से, दंगे उत्तर और पूर्व और पश्चिम में फैल गए: पूर्वी बंगाल के नोआखली में, जहां मुसलमानों ने हिंदुओं का नरसंहार किया; बिहार में, जहां हिंदुओं ने मुसलमानों का नरसंहार किया। मुल्लाओं ने पंजाब और फ्रंटियर प्रांत में घूमते हुए मानव खोपड़ी के बक्से के साथ कहा कि वे बिहार में मारे गए मुसलमानों के हैं। उत्तर पश्चिमी सीमांत पर सदियों से रहने वाले सैकड़ों हिंदू और सिख अपने घरों को त्याग कर पूर्व में मुख्य रूप से सिख और हिंदू समुदायों की सुरक्षा की ओर भाग गए। वे पैदल, बैलगाड़ी में, लॉरी में लिपटे, गाड़ियों के किनारों और छतों पर चढ़ गए। रास्ते के साथ - साथ, चौराहे पर, रेलवे स्टेशनों पर - वे पश्चिम में सुरक्षा की ओर भाग रहे मुसलमानों के आतंक भरे झुंडों से टकरा गए। दंगे एक हद हो गई थी। 1947 की गर्मियों तक, जब पाकिस्तान के नए राज्य के गठन की औपचारिक रूप से घोषणा की गई थी, दस मिलियन लोग-मुस्लिम और हिंदू और सिख- उड़ान में थे। जब तक मानसून टूटा, तब तक उनमें से लगभग एक लाख लोग मर चुके थे, और पूरे उत्तर भारत में हथियार, आतंक में, या छिपने में थे। शांति की एकमात्र शेष सीमा सीमांत की सुदूर पहुंच में खो गए छोटे गांवों का बिखराव था। इनमें से एक गाँव था मनो माजरा।

मनो माजरा एक छोटी जगह है। इसमें केवल तीन ईट की इमारतें हैं, जिनमें से एक साहूकार लाला राम लाल का घर है। अन्य दो सिख मंदिर हैं

और मस्जिद। तीन ईट की इमारतें बीच में एक बड़े पीपल के पेड़ के साथ एक त्रिकोणीय आम लगाती हैं। गाँव के बाकी हिस्सों में सपाट-छत वाली मिट्टी की झोपड़ियाँ और कम दीवार वाले आंगन हैं, जो केंद्र से निकलने वाली संकरी गलियों के सामने हैं। जल्द ही गलियाँ फुटपाथों में कम हो जाती हैं और आसपास के खेतों में खो जाती हैं। गाँव के पश्चिमी छोर पर कीकर के पेड़ों से गोल तालाब है। मनो माजरा में केवल सत्तर परिवार हैं, और लाला राम लाल का एकमात्र हिंदू परिवार है। दूसरे सिख या मुसलमान हैं, जिनकी संख्या लगभग बराबर है। सिख गाँव के आसपास की सभी भूमि के मालिक हैं; मुसलमान किराएदार हैं और मालिकों के साथ मिलजुल कर रहते हैं। स्वीपरो के कुछ परिवार हैं जिनका धर्म अनिश्चित है। मुसलमान उन्हें अपना होने का दावा करते हैं, फिर भी जब

अमेरिकी मिशनरियों ने मनो माजरा का दौरा किया, तो स्वीपर खाकी सोल टॉप पहने और एक हारमोनियम की संगत में भजन गाने में उनकी महिलाओं के साथ शामिल हुए। कभी-कभी वे सिख मंदिर भी जाते हैं। लेकिन एक बात यह भी है कि सभी मनो मज़ारों-यहाँ तक कि लाला राम लाल की भी वंदना की जाती है। यह बलुआ पत्थर का तीन फुट लंबा स्लैब है जो तालाब के किनारे कीकर के पेड़ के नीचे सीधा खड़ा है। यह स्थानीय देवता है, जिस देव को सभी ग्रामीणों - हिंदू, सिख, मुस्लिम या छद्म-ईसाई- गुप्त रूप से मरम्मत करते हैं जब भी वे आशीर्वाद की विशेष आवश्यकता होती है।

यद्यपि मनो माजरा सतलज नदी के किनारे कहा जाता है, लेकिन यह वास्तव में इससे आधा मील दूर है। भारत में गाँव नदियों के किनारों के बहुत करीब नहीं हो सकते। नदियाँ मौसम के साथ अपना मूड बदलती हैं और बिना चेतावनी के अपने पाठ्यक्रमों में बदलाव करती हैं। सतलज पंजाब की सबसे बड़ी नदी है। मानसून के बाद इसका पानी बढ़ता है और अपने विशाल रेतीले बिस्तर पर फैल जाता है, दोनों तरफ कीचड़ के तटबंधों को ऊंचा उठा देता है। यह चौड़ाई में एक मील से अधिक मैला अशांति का विस्तार बन जाता है। जब बाढ़ कम हो जाती है, तो नदी एक हजार उथली धाराओं में टूट जाती है, जो थोड़ा दलदली द्वीपों के बीच हवा को धीमा कर देती है। मनोहर माजरा के उत्तर में एक मील की दूरी पर सतलुज एक रेल पुल द्वारा फैला है। यह एक शानदार पुल है - इसके अठारह विशाल स्पैन एक घाट से दूसरे तक तरंगों की तरह तैरते हैं और इसके प्रत्येक छोर पर रेलवे लाइन को दबाने के लिए एक पत्थर का तटबंध है। पूर्वी छोर पर तटबंध गाँव के रेलवे स्टेशन तक जाता है।

मनो माजरा हमेशा से ही अपने रेलवे स्टेशन के लिए जाना जाता रहा है। चूंकि पुल में केवल एक ही ट्रैक है, इसलिए स्टेशन के कई किनारे हैं जहां कम महत्वपूर्ण ट्रेनें इंतजार कर सकती हैं, ताकि अधिक महत्वपूर्ण के लिए रास्ता बनाया जा सके।

यात्रियों को भोजन, सुपारी, सिगरेट, चाय, बिस्कुट और मिठाइयों की आपूर्ति करने के लिए स्टेशन के चारों ओर दुकानदारों और फेरीवालों की एक छोटी सी कॉलोनी बड़ी है। यह स्टेशन को निरंतर गतिविधि और उसके स्वरूप का आभास कराता है

कर्मचारियों को कुछ हद तक अतिशयोक्तिपूर्ण समझ। दरअसल स्टेशनमास्टर खुद अपने कार्यालय में कबूतर के माध्यम से टिकट बेचता है, उन्हें दरवाजे के पास बाहर निकलने पर इकट्ठा करता है, और टेबल पर टेलीग्राफ टिकर पर संदेश भेजता है और प्राप्त करता है। जब लोगों को उस पर ध्यान देने की आवश्यकता होती है, तो वह मंच पर निकलता है और गाड़ियों के लिए हरी झंडी दिखाता है जो रुकती नहीं है। उनके एकमात्र सहायक प्लेटफॉर्म पर ग्लास केबिन में लीवर को हेरफेर करते हैं जो दोनों तरफ संकेतों को नियंत्रित करते हैं, और उन्हें पटरी पर लाने के लिए पटरियों पर हाथ के अंक को बदलकर शंटिंग इंजन की मदद करते हैं। शाम को, वह मंच पर दीपों की लंबी लाइन जलाता है। वह सिग्नलों में भारी एल्युमीनियम लैंप ले जाता है और लाल और हरे रंग के कांच के पीछे की मोहरों में चिपका देता है। सुबह में, वह उन्हें वापस लाता है और मंच पर रोशनी डालता है।

कई ट्रेनें मनोहर माजरा में नहीं रुकती हैं। एक्सप्रेस ट्रेनें बिल्कुल नहीं रुकती हैं। कई धीमी गति की पैसेंजर ट्रेनों में से केवल दो, दिल्ली से लाहौर तक की सुबह और दूसरी लाहौर से दिल्ली तक शाम को कुछ मिनटों के लिए रुकने वाली हैं। दूसरे तभी रुकते हैं जब उन्हें पकड़ लिया जाता है। केवल नियमित ग्राहक माल गाड़ियों हैं। यद्यपि मनो माजरा शायद ही कभी किसी माल को भेजने या प्राप्त करने के लिए होता है, लेकिन इसके स्टेशन के किनारों पर आमतौर पर वैगनों की लंबी पंक्तियों का कब्जा होता है। प्रत्येक गुजरने वाली माल गाड़ी घंटों वैगन को बहाती है और दूसरों को इकट्ठा करती है। अंधेरा होने के बाद, जब ग्रामीण



इलाकों में सन्नाटा पसरा होता है, इंजनों की सीटी और फुफकार, बफ़रों की गड़गड़ाहट और लोहे की कपलिंगों को रात भर सुना जा सकता है।

इन सबने मनो माजरा को ट्रेनों के प्रति जागरूक किया है। दिन के समय से पहले, मेल ट्रेन लाहौर के रास्ते से गुजरती है, और जैसे ही वह पुल के पास पहुंचती है, चालक सीटी पर दो लंबे विस्फोट करता है। एक पल में, सभी मनो माजरा जागता है। कीकर के पेड़ों में कौवे रहने लगते हैं। चमगादड़ लंबे साइलेंट रिले में वापस उड़ते हैं और पीपल में अपने पंखों के लिए झगड़ने लगते हैं। मस्जिद के मुल्ला को पता है कि सुबह की नमाज का समय है। उसके पास एक त्वरित धुलाई है, जो मक्का की ओर पश्चिम की ओर खड़ा है और उसके कानों में अपनी उंगलियों के साथ लंबे सोनोरस नोटों में रोता है, 'अल्लाह-ओ-अकबर'। सिख मंदिर के पुजारी बिस्तर पर तब तक पड़े रहते हैं जब तक मुल्ला ने फोन नहीं किया। फिर वह भी उठता है, मंदिर के आंगन में कुएं से पानी की एक बाल्टी खींचता है, उसे खुद पर डालता है, और पानी के छींटे की आवाज के लिए नीरस गाती में उसकी प्रार्थना को व्यक्त करता है।

जब तक दिल्ली से 10:30 सुबह की पैसेंजर ट्रेन आती है, तब तक मनो माजरा में जीवन अपनी सुस्त दैनिक दिनचर्या में बस गया है। पुरुष खेतों में हैं। महिलाएं अपने दैनिक कामों में व्यस्त हैं। बच्चे मवेशियों को नदी से बाहर निकाल रहे हैं। फारसी पहियों चीख और कराहना बैल के रूप में गोल और गोल, शाप और अपने hindquarter में गोआद के जाब्स द्वारा दिए गए। गौरैया उड़ती है

छतों के बारे में, उनकी चोंच में पुआल का निशान। Pyedogs लंबी मिट्टी की दीवारों की छाया चाहते हैं। चमगादड़ अपने तर्कों को सुलझाते हैं, अपने पंखों को मोड़ते हैं, और नींद में खुद को निलंबित कर देते हैं।

जैसे-जैसे मध्याह्न एक्सप्रेस गुजरती है, मनो माजरा थम जाता है। पुरुष और बच्चे रात के खाने और सवेरा के लिए घर आते हैं। जब वे खा चुके होते हैं, तो पुरुष पीपल के पेड़ की छाया में इकट्ठा होते हैं और लकड़ी के प्लेटफार्मों पर बैठते हैं और बात करते हैं और डोज करते हैं। लड़के अपनी भैंसों को तालाब में चढ़ाते हैं, उनकी पीठ से कूदते हैं, और कीचड़ भरे पानी में छप जाते हैं। लड़कियां पेड़ों के नीचे खेलती हैं। महिलाएं एक दूसरे के बालों में स्पष्ट मक्खन रगड़ती हैं, अपने बच्चों के सिर से जूँ उठाती हैं और जन्म, विवाह और मृत्यु पर चर्चा करती हैं।

जब लाहौर से शाम का यात्री आता है, तो सभी को फिर से काम करना पड़ता है। मवेशियों को गोल-गोल घुमाया जाता है और उन्हें रात भर के लिए घर में बंद कर दिया जाता है। महिलाएं शाम का खाना बनाती हैं। फिर परिवारों ने अपनी छतों पर माथा टेका, जहां ज्यादातर गर्मियों में सोते थे। अपने चारपाइयों पर बैठकर, वे सब्जियों और चपातियों के अपने खाने वाले को खाते हैं और बड़े तांबे के गिलास से गर्म मलाईदार दूध निकालते हैं और नींद के लिए सिग्नल आने तक का समय निकाल देते हैं। जब मालगाड़ी अंदर जाती है, तो वे एक-दूसरे से कहते हैं, 'मालगाड़ी है।' यह गुडनाइट कहने जैसा है। मुल्ला ने फिर से वफादार को अपनी आवाज के शीर्ष पर चिल्लाकर प्रार्थना करने के लिए कहा, 'ईश्वर महान है।' आस्थावान लोग अपनी छतों से अपनी आमोद-प्रमोद करते हैं। सिख पुजारी शाम को प्रार्थना करते हैं जो कि बूढ़े और महिलाओं के अर्धवृत्त की प्रार्थना करते हैं। कीकर के पेड़ों से कोमलता से कौवे का शिकार करते हैं। छोटे चमगादड़ शाम में बहते चले जाते हैं और बड़े लोग धीमे-धीमे झाड़ू लेकर चढ़ते हैं। मालगाड़ी स्टेशन पर एक लंबा समय लेती है, इंजन के ऊपर और नीचे चलने वाले वैगनों का आदान-प्रदान होता है। जब तक यह निकलता है, तब तक बच्चे सो चुके होते हैं। पुराने लोग पुल पर उसके रंबल के

लिए इंतजार करते हैं ताकि उन्हें फिसल जाए। तब मानो माजरा में जान बची हुई है, रात में गुजरने वाली ट्रेनों में भौंकने वाले कुत्तों के लिए बचाओ।

1947 की गर्मियों तक यह हमेशा से था।

उसी साल अगस्त में एक भारी रात, पांच आदमी मनोहर माजरा से दूर कीकर ग्रोव से निकले, और चुपचाप नदी की ओर चले गए। वे डकैत, या पेशेवर डाकू थे, और सभी लेकिन उनमें से एक सशस्त्र थे। हथियारबंद दो लोगों ने भाले चलाए। दूसरों के कंधों पर कार्बाइन झुकी हुई थीं। पांचवें व्यक्ति ने एक क्रोमियम-प्लेटेड इलेक्ट्रिक मशाल चलाया। जब वे तटबंध पर आए, तो उन्होंने मशाल की रोशनी को प्रवाहित किया। फिर उसने उसे पकड़कर फँसा दिया।

उन्होंने कहा, 'हम यहां इंतजार करेंगे।'

वह रेत पर गिर गया। दूसरों ने उसके चारों ओर, अपने हथियारों पर झुकाव किया। टार्च वाले व्यक्ति ने एक भाले वाले को देखा।

'तुम्हारे पास जुग्गा के लिए चूड़ियाँ हैं?'

'हाँ। एक दर्जन लाल और नीले कांच। वे किसी भी गांव को खुश करेंगे।' बंदूकधारियों में से एक ने कहा, 'वे जुग्गा को खुश नहीं करेंगे।'

नेता हंस पड़ा। उसने टार्च को हवा में उछाला और पकड़ा। उसने फिर से हँसते हुए मशाल अपने मुँह पर उठाई और स्विच को छू लिया। उसके गाल अंदर से रोशनी से गुलाबी चमक उठे।

" जुग्गा अपनी बुनकर की बेटी को चूड़ियाँ दे सकती थी, " दूसरे भाले ने कहा। 'वे उन बड़ी गजले आँखों और छोटे आमों के स्तनों के साथ अच्छी तरह से दिखते थे। उसका नाम क्या है?'

नेता ने मशाल को बंद कर दिया और अपने मुँह से ले लिया। 'नूरन,' उन्होंने कहा। 'आहो,' भालाधारी ने कहा। 'Nooran। क्या तुमने उसे वसंत मेले में देखा? किया आप देख रहे हैं कि तंग शर्ट उसके स्तनों और उसकी पट्टियों में झनझनाती हुई घंटियाँ और रेशम की जुल्फ-सी दिखा रही है ? हाई! '

'हाई!' चूड़ियों के साथ भाला रोया। 'हाई! हाई! '

बंदूकधारी ने कहा, "उसे जुग्गा को एक अच्छा समय देना चाहिए।" 'दिन के दौरान, वह इतनी मासूम दिखती है कि आपको लगता है कि उसने अपने दूध के दांत नहीं बहाए हैं।' उसने आह भरी। 'लेकिन रात में, वह अपनी आँखों में काली सुरमा लगाती है।'

'सुरमा आँखों के लिए अच्छा है,' दूसरों में से एक ने कहा। 'ठंडक है।' बंदूकधारी ने कहा, "यह अन्य लोगों की आँखों के लिए भी अच्छा है।"

'और उनके जुनून को भी ठंडा।'

'Jugga?' नेता ने कहा।

दूसरे लोग हंसे। उनमें से एक अचानक बैठ गया। 'बात सुनो!' उसने कहा। 'मालगाड़ी है।'

दूसरों ने हंसना बंद कर दिया। वे सभी चुपचाप ट्रेन के पास आ गए। यह एक गड़गड़ाहट के साथ बंद हो गया, और वैगन घबराए और क्रेक हो गए। एक समय के बाद, इंजन को ऊपर और नीचे चलते हुए, वैगनों को जारी करते हुए सुना जा सकता था। जब धमाकों के साथ रिहा हुए वैगनों की टक्कर हुई तो जोरदार धमाके हुए। इंजन वापस ट्रेन में चढ़ गया।

नेताजी ने कहा, 'राम लाल को बुलाने का समय आ गया है।'

उसके साथी उठे और अपने कपड़े से रेत को ब्रश किया। उन्होंने प्रार्थना में शामिल हुए अपने हाथों से एक रेखा बनाई। बंदूकधारियों में से एक ने सामने कदम रखा और गुनगुनाना शुरू कर दिया। जब वह रुक गया, तो वे सभी अपने घुटनों पर बैठ गए और अपने माथे को जमीन पर रगड़ा। फिर वे खड़े हो गए और अपनी पगड़ी के ढीले सिरों को अपने चेहरे पर फेंक दिया। केवल उनकी आँखें खुली थीं। इंजन ने दो लंबे सीटी विस्फोट किए, और ट्रेन आगे की ओर रवाना हो गई

पुल।

'अब,' नेता ने कहा।

दूसरों ने तटबंध और खेतों के पार उसका पीछा किया। जब तक ट्रेन पुल पर पहुंची, तब तक पुरुषों ने तालाब को छोटा कर दिया था और एक गली में चल रहे थे, जिससे गाँव का केंद्र बन गया था। वे लाला राम लाल के घर आए। नेता ने बंदूकधारियों में से एक को सिर हिलाया। वह आगे बढ़ा और अपनी बंदूक की बट से दरवाजे पर ताबड़तोड़ वार करने लगा।

'Oi!' वह चिल्लाया। 'लाला!'

कोई जवाब नहीं था। गाँव के कुत्ते आगंतुकों के पास इकट्ठा हो गए और भौंकने लगे। पुरुषों में से एक ने अपने भाले के ब्लेड के साथ एक कुत्ते को मारा। एक अन्य ने अपनी बंदूक हवा में चलाई। कुत्ते फुसफुसा कर भाग गए और सुरक्षित दूरी से जोर से भौंकने लगे।

पुरुषों ने अपने हथियारों के साथ दरवाजे पर हथौड़ा चलाना शुरू कर दिया। एक ने अपने भाले से उस पर वार किया जो दूसरी तरफ से होकर गया।

"खोलो, तुम व्यभिचार के बेटे हो, या हम तुम्हें बहुत मारेंगे," वह चिल्लाया। एक महिला की आवाज ने जवाब दिया। 'यह कौन है जो इस घंटे पर कॉल करता है? लालाजी के पास है

शहर चला गया।'

"खोलें और हम आपको बताएंगे कि हम कौन हैं या हम दरवाजा तोड़ देंगे," नेता ने कहा।

'मैं बताता हूँ कि लालाजी अंदर नहीं हैं। उन्होंने चाबी अपने साथ ले ली है। हमारे पास घर में कुछ नहीं है।'

पुरुषों ने अपने कंधों को दरवाजे पर रखा, दबाया, वापस खींचा और पस्त होने वाले मेढ़ों की तरह उसमें घुस गए। दूसरी तरफ लकड़ी के बोल्ट टूट गए और दरवाजे खुले। बंदूक के साथ पुरुषों में से एक दरवाजे पर इंतजार कर रहा था; अन्य चार अंदर गए। कमरे के एक कोने में दो महिलाएँ बैठी हुई थीं। बड़ी काली आँखों वाला सात का एक लड़का दोनों के बड़े से चिपक गया।

'भगवान के नाम पर, हमारे पास जो कुछ भी है, हमारे सारे गहने, सब कुछ' ले लो। वह सोने और चांदी के कंगन, पायल और झुमके संभालती थी।

उनमें से एक आदमी ने उसे उसके हाथों से छीन लिया। 'लाला कहाँ है?'

'मैं शपथ लेता हूँ कि वह गुरु है। आपने हम सब ले लिया है। लालाजी के पास देने के लिए और कुछ नहीं है।'

आंगन में चार बिस्तर बिछाए गए।

कार्बाइन वाला आदमी अपनी दादी की गोद से छोटे लड़के को गोद में लेता है और बंदूक के थूथन को बच्चे के चेहरे पर रखता है। महिलाएँ उसके पैरों में गिरकर चोटिल हो

गई।

'मारना मत भाई। गुरु के नाम पर- नहीं।' बंदूकधारी ने महिलाओं को लात मार दी।

'पापा आप कहां हैं?'

लड़का डर के मारे काँप उठा और बोला, 'ऊपर वाला।'

बंदूकधारी ने लड़के को वापस महिला की गोद में डाल दिया, और पुरुष बाहर आंगन में चले गए और सीढ़ी पर चढ़ गए। छत पर केवल एक कमरा था। बिना रुके उन्होंने अपने कंधों को दरवाजे पर रख दिया और उसे अंदर धकेल दिया, और उसे अपनी आंसुओं से बंद कर दिया। कमरे को स्टील की चड़ी के साथ एक दूसरे के ऊपर ढेर कर दिया गया था। वहाँ दो रजाई के साथ कई रजाई उन पर लुढ़का हुआ था। मशाल की सफेद किरण ने कमरे की तलाशी ली और साहूकार को चारपाइयों में से एक के नीचे पकड़ लिया।

'गुरु के नाम पर, लालाजी बाहर हैं,' पुरुषों में से एक ने महिला की आवाज की नकल करते हुए कहा। उन्होंने राम लाल को अपने पैरों से खींच लिया।

नेता ने अपने हाथ के पीछे से साहूकार को थप्पड़ मार दिया। 'क्या यह आपके मेहमानों का इलाज है? हम आते हैं और आप एक चारपाई के नीचे छिप जाते हैं।'

राम लाल ने अपने चेहरे को अपनी बाहों से ढँक लिया और फुसफुसाहट करने लगा। 'तिजोरी की चाबी कहाँ हैं?' नेता ने पूछा, उसे लात मारकर पीछे।

'आप सभी आभूषण, नकदी, खाता-बही ले सकते हैं। किसी को मत मारो, साहूकार ने कहा, अपने दोनों हाथों से नेता के पैरों को पकड़कर।

'तुम्हारी तिजोरी की चाबी कहाँ हैं?' नेता को दोहराया। उसने साहूकार को फर्श पर गिरा दिया। राम लाल डर के मारे कांपते हुए उठ बैठा।

उन्होंने अपनी जेब से नोटों की एक माला बनाई। 'ये लो, उन्होंने पाँच आदमियों को पैसे बांटते हुए कहा। 'यह सब मेरे घर में है। सब तुम्हारा है।'

'तुम्हारी तिजोरी की चाबी कहाँ हैं?'

'तिजोरी में कुछ भी नहीं बचा है; केवल मेरी खाता बही। मैंने आपके पास जो कुछ भी है, वह सब आपको दिया है। मेरे पास सब तुम्हारा है। गुरु के नाम पर, मुझे रहने दो।' राम लाल ने नेता के पैरों को घुटनों से ऊपर कर दिया और सिसकने लगा। 'गुरु के नाम पर! गुरु के नाम पर!'

पुरुषों में से एक ने साहूकार को नेता से दूर कर दिया और उसे अपनी बंदूक के बट से चेहरे पर मार दिया।

'हाँ!' अपनी आवाज के शीर्ष पर राम लाल चिल्लाया, और खून बाहर थूक दिया।

आँगन की औरतों ने रोना सुना और चीखने लगीं, 'डाकू! Dakoo!'

कुत्तों ने चौतरफा भौंक दिया। लेकिन किसी ग्रामीण ने उसके घर से कोई हलचल नहीं की। अपने घर की छत पर, साहूकार को बट्टों की बंदूकें और पिटाई की गई थी

भाला संभालता है और लात और मुक्का मारा जाता है। वह अपने कूबड़ पर बैठ गया, रो रहा था और खून थूक रहा था। उसके दो दांत तोड़ दिए गए। लेकिन वह अपनी तिजोरी की

चाबी नहीं सौंपता था। सरासर उतावली में, पुरुषों में से एक ने अपने भाले के साथ क्राउचिंग आकृति को देखा। राम लाल ने जोर से चिल्लाया और उसके पेट से खून के छींटे फर्श पर गिर गए। आदमी बाहर आ गए। उनमें से एक ने हवा में दो शॉट दागे। महिलाओं ने घूमना बंद कर दिया। कुत्तों ने भौंकना बंद कर दिया। गाँव में सन्नाटा छा गया।

डकैतों ने छत से नीचे गली में छलांग लगा दी। नदी की ओर निकलते ही उन्होंने दुनिया की अवहेलना की।

'आइए!' वे चिल्लाए। 'बाहर आओ, अगर हिम्मत है तो! बाहर आओ, अगर तुम चाहते हो कि तुम्हारी माँ और बहनें बलात्कार करें! बाहर आओ, बहादुर पुरुषों!'

किसी ने उनका जवाब नहीं दिया। मनो माजरा में आवाज नहीं थी। आदमी जब तक वे गाँव के किनारे एक छोटी सी झोंपड़ी में नहीं आए, तब तक गली, चिल्लाते और हँसते रहे। नेता ने रुककर मोर्चा संभाला।

'यह महान जुग्गा का घर है,' उन्होंने कहा। 'हमारे उपहार को मत भूलना। उसकी चूड़ियाँ दे दो।'

भालाधारी ने अपने कपड़ों से एक पैकेज खोदा और दीवार पर फेंक दिया। आँगन में शीशे टूटने की खनकदार आवाज थी।

'हे जुगिया,' उसने झूठा स्वर में पुकारा, 'जुगिया!' वह अपने साथियों पर झपटा। 'ये चूड़ियाँ पहनो, जुगिया। इन चूड़ियों को पहनो और अपनी हथेलियों पर मेंहदी लगाओ।'

बंदूकधारियों में से एक चिल्लाया, 'या उन्हें बुनकर की बेटी को दे दो।'

'है,' दूसरे चिल्लाए। वे अपने होंठ मार, लंबे, भ्रष्टाचरण चुंबन की आवाज बना रही है। 'हाँ! हाँ!'

वे लेन नीचे पर चले गए, अभी भी हँस और चुंबन उड़ाने, नदी की ओर। जुगुत सिंह ने उन्हें जवाब नहीं दिया। उसने उन्हें नहीं सुना। वह घर पर नहीं था।

जुगुत सिंह अपने घर से लगभग एक घंटे चले थे। वह तभी छूटा था जब रात की मालगाड़ी की आवाज ने उसे बताया था कि अब जाना सुरक्षित होगा। उसके लिए, डकैतों के लिए, उस रात ट्रेन का आना एक संकेत था। पहली दूर की गड़गड़ाहट में, वह चुपचाप अपनी चारपाई से फिसल गया और अपनी पगड़ी उठा ली और उसे अपने सिर पर लपेट लिया। फिर उसने आँगन के उस पार घास के मैदान में छिपकर एक भाला निकाला। वह अपने बिस्तर पर वापस गया, अपने जूते उठाए, और दरवाजे की तरफ बढ़ गया।

'तुम कहाँ जा रहे हो?'

जुगुत सिंह ने रोका। यह उसकी माँ थी।

'खेतों की ओर,' उन्होंने कहा। 'कल रात जंगली सुअरों ने बहुत नुकसान किया।'

'सुअर!' उसकी माँ ने कहा। 'चालाक बनने की कोशिश मत करो। क्या आप पहले से ही भूल गए हैं कि आप परिवीक्षा पर हैं - कि आपके लिए सूर्यास्त के बाद गांव छोड़ना मना है? और भाले के साथ! दुश्मन आपको देख लेंगे। वे आपको रिपोर्ट करेंगे। वे तुम्हें वापस जेल भेज देंगे।' उसकी आवाज एक जलसे की तरफ बढ़ी। 'फिर फसलों और मवेशियों की देखभाल कौन करेगा?'

जुगुत सिंह ने कहा, "मैं जल्द ही वापस आऊंगा।" 'चिंता करने की कोई बात नहीं है। गाँव का हर व्यक्ति सो रहा है।'

'नहीं,' उसकी माँ ने कहा। वह फिर से चली गई।

'चुप रहो,' उन्होंने कहा। 'यह आप हैं जो पड़ोसियों को जगाएंगे। चुप रहिए और कोई परेशानी नहीं होगी।'

'जाओ! आप जहां जाना चाहते हैं, वहां जाइए। अगर तुम कुएं में कूदना चाहते हो, कूदो। अगर आप अपने पिता की तरह लटकना चाहते हैं, तो जाइए और लटक जाइए। यह मेरा बहुत रोना है। मेरा किसमेट, 'उसने जोड़ा, उसके माथे पर थप्पड़ मारा,' यह सब वहाँ लिखा है।'

जुगुत सिंह ने दरवाजा खोला और दोनों तरफ देखा। जिसके बारे में कोई नहीं था। वह तब तक दीवारों के साथ चलता रहा जब तक कि वह तालाब के पास की गली के अंत तक नहीं पहुँच गया। वह मेंढक की तलाश में धीरे-धीरे ऊपर और नीचे एक-दूसरे से सटे हुए सारस के जोड़े के भूरे रूप देख सकता था। वे अपनी खोज में रुक गए। जुगुत सिंह तब भी दीवार के खिलाफ खड़ा था जब तक कि सारस फिर से आश्वस्त नहीं हो जाते थे, तब वह नदी की ओर खेतों की ओर जाने वाले फुटपाथ से उतर गया। वह सूखी रेत बिस्तर पार कर गया जब तक वह धारा में नहीं मिला। उसने अपने भाले को ब्लेड से ऊपर की ओर इशारा करते हुए जमीन में गाड़ दिया, फिर रेत पर फैल गया। वह अपनी पीठ के बल लेट गया और सितारों को घूरने लगा। एक उल्का ने मिल्की वे पर गोली चलाई, जो नीले-काले आकाश के नीचे एक चांदी के रास्ते से गुजरती है। अचानक एक हाथ उसकी आँखों पर लगा।

'बताओ कौन?'

जुगुत सिंह ने अपने हाथों को उसके सिर के ऊपर और उसके पीछे फैलाया, टटोलते हुए; लड़की ने उन्हें चकमा दिया। जुगुत सिंह ने अपनी आँखों पर हाथ रखकर शुरू किया और हाथ से कंधे तक और फिर चेहरे पर अपना रास्ता महसूस किया। उसने अपने गाल, आँख और नाक को सहलाया जिसे उसके हाथ अच्छी तरह से जानते थे। वह अपनी उंगलियों को चूमने के लिए उन्हें प्रेरित करने के लिए उसके होंठ के साथ खेलने की कोशिश की। लड़की ने अपना मुँह खोला और उसे जमकर पीटा। जुगुत सिंह ने अपना हाथ दूर फेंक दिया। एक त्वरित आंदोलन के साथ उसने लड़की के सिर को अपने दोनों हाथों में पकड़ा और उसके चेहरे को अपने पास लाया। फिर उसने अपनी बाहों को अपनी कमर के नीचे खिसका लिया और उसे अपने ऊपर हवा में लहराया और अपने पैरों और पैरों को केकड़े की तरह घुमाया। उसने उसे तब तक घुमाया, जब तक कि उसकी बांहों में दर्द नहीं हुआ। वह उसे नीचे फ्लैट पर ले आया अंग को अंग।

लड़की ने उसे चेहरे पर थप्पड़ मारा।

'तुमने अजीब औरत के आदमी पर हाथ रखा। क्या आपके घर में माँ या बहन नहीं है? क्या आपको कोई शर्म नहीं है? कोई आश्चर्य नहीं कि पुलिस आपको एक बुरे चरित्र के रूप में उनके रजिस्टर पर मिली है। मैं इंस्पेक्टर साहब से भी कहूँगा कि आप बदमाश हैं।'

'मैं तुम्हारे साथ केवल बदमाश हूँ नूरो। हम दोनों को एक ही सेल में बंद होना चाहिए।'

'आपने बहुत ज्यादा बात करना सीख लिया है। मुझे दूसरे आदमी की तलाश करनी होगी।'

'जुगुत सिंह ने लड़की की पीठ के पीछे अपनी बाहों को पार किया और उसे तब तक कुचल दिया

बात नहीं कर सकता था या साँस नहीं ले सकता था। हर बार जब उसने बोलना शुरू किया तो उसने अपनी बाहें कस लीं और उसके शब्द गले में अटक गए। उसने हार मान ली और अपना थका हुआ चेहरा उसके खिलाफ कर दिया। उसने उसे उसके बगल में लेटाया और उसके बायें हाथ के कुल्हे में घोंसला बनाया। अपने दाहिने हाथ से उसने अपने बाल और चेहरे को अकड़ दिया।

मालगाड़ी के इंजन ने दो बार सीटी बजाई और बहुत अधिक कराहने और चरमराहट के साथ पुल की ओर अपना रास्ता बनाना शुरू कर दिया। सारस ak क्रक, क्रैक 'के तीखे रोओं के साथ तालाब से उड़कर नदी की ओर आ गए। नदी से वे वापस तालाब में उड़ गए, जब ट्रेन पुल पर जा चुकी थी, तब तक बारी-बारी से फोन किया गया था और उसके पफ-पफस की मौत हो गई थी।

जुगुत सिंह के लाड़ प्यार में पागल हो गए। उसका हाथ लड़की के चेहरे से उसके स्तनों और उसकी कमर तक भटका। उसने उसे पकड़ा और वापस उसके चेहरे पर डाल दिया। उसकी सांस धीमी और कामुक हो गई थी। उसका हाथ फिर से भटक गया और उसके स्तनों के खिलाफ ब्रश किया जैसे कि गलती से। लड़की ने उसे थप्पड़ मारा और दूर डाल दिया। जुगुत सिंह ने अपना बायाँ हाथ बढ़ाया जो कि लड़की के सिर के नीचे लगा और उसके हाथ को पकड़ लिया। उसकी दूसरी भुजा पहले से ही उसके अधीन थी। वह बेसुध थी।

'नहीं! नहीं! नहीं! मेरा हाथ जाने दो! नहीं! मैं आपसे फिर कभी नहीं बोलूंगा।' उसने अपना सिर हिंसक रूप से किनारे कर दिया, अपने भूखे मुंह से बचने की कोशिश कर रही थी। जुगुत सिंह ने अपना हाथ उसकी कमीज़ के अंदर खिसका दिया और उसके बिना उभरे स्तनों की आकृति को महसूस किया। वे तना हुआ। निप्पल सख्त और चमड़े के हो गए।

उसके खुरदरे हाथ धीरे-धीरे उसके स्तनों से होते हुए उसकी नाभि तक चले गए। उसके पेट पर त्वचा मांस में उभरी हुई थी। लड़की

लगातार मारपीट और विरोध करती रही।

'नहीं! नहीं! नहीं! कृप्या। अल्लाह का श्राप आप पर पड़े। मेरा हाथ जाने दो। अगर आप इस तरह का व्यवहार करेंगे तो मैं आपसे फिर कभी नहीं मिलूंगा।'

जुगुत सिंह के खोजे हुए हाथ में उसकी पतलून का एक सिरा मिला। उसने एक झटके से उसे खींच लिया।

'नहीं,' लड़की फूट-फूट कर रोई।

रात भर गोली चलती रही। सारस एक-दूसरे को पुकारते हुए तालाब से ऊपर आए। कीकर के पेड़ों में कौवे ने कौवे को पालना शुरू कर दिया। जुगुत सिंह ने विराम दिया और

गांव की ओर अंधेरे में देखा। लड़की ने चुपचाप अपनी पकड़ से खुद को निकाला और अपनी ड्रेस को समेट लिया। कौवे वापस पेड़ों पर बस गए। सारस नदी के उस पार उड़ गए। केवल कुत्ते भौंकते हैं।

'यह एक बंदूक की गोली की तरह लग रहा था,' उसने घबराते हुए कहा, जुगुत सिंह को अपने प्रेम-सृजन को नवीनीकृत करने से रोकने की कोशिश कर रहा है। 'क्या यह गाँव से नहीं था?'

'मुझे नहीं पता। तुम क्यों भागने की कोशिश कर रहे हो? यह सब अब शांत है।' जुगुत सिंह ने उसे अपने पास खींच लिया।

'यह कोई समय नहीं है। गाँव में हत्या है। मेरे पिता उठेंगे और जानना चाहेंगे कि मैं कहां गया हूँ। मुझे एक ही बार में वापस आना चाहिए।'

'आप नहीं होंगे। मैं तुम्हें नहीं होने दूंगा। आप कह सकते हैं कि आप एक गर्ल फ्रेंड के साथ थे।' 'मूर्ख किसान की तरह बात मत करो। कैसे ...' जुगुत सिंह ने अपना मुंह बंद कर लिया

उनके। वह अपने भारी वजन के साथ उस पर बोर हो गया। इससे पहले कि वह अपनी बाहों को मुक्त कर पाती, उसने अपने पतलून की नाल को एक बार फिर से खोल दिया।

'मुझे जाने दो। मुझे करने दो ...'

वह जुगुत सिंह के पाशविक बल के खिलाफ संघर्ष नहीं कर सकी। वह विशेष रूप से नहीं करना चाहती थी। उसकी दुनिया सांस लेने की लयबद्ध आवाज और बुखार की गर्मी के लिए उभरी सांवली खाल की गर्म गंध से संकुचित थी। उसके होंठ उसकी आँखों और गाल पर फिसले। उसकी जीभ ने उसके कानों के अंदर की तलाश की। उन्माद की स्थिति में उसने अपने नाखूनों को अपनी पतली दाढ़ी वाले गालों और अपनी नाक से थोड़ा सा खोद लिया। उसके ऊपर के सितारे एक पागल चक्कर में चले गए और फिर धीरे-धीरे एक पड़ाव पर आकर मेरी-गो-राउंड की तरह वापस अपने स्थानों पर आ गए। जीवन अपने निचले स्तर पर वापस आ गया। उसे बेजान आदमी का मृत वजन महसूस हुआ; उसके बालों में रेत पीस रही है; हवा उसे नग्न अंगों पर अतिचार; सितारों के मिथकों का सेंसरिंग घूरना। उसने जुगुत सिंह को दूर धकेल दिया। वह उसके पास लेट गया।

'यही आप चाहते हैं। और आप इसे प्राप्त करें। आप सिर्फ किसान हैं। हमेशा अपने बीज बोना चाहते हैं। यहां तक कि अगर दुनिया नरक में जा रही थी, तो आप ऐसा करना चाहेंगे। यहां तक कि जब गांव में बंदूकों से गोलीबारी की जा रही हो। तुम नहीं करोगे?' उसने सताया।

'कोई भी बंदूक नहीं चला रहा है। बस आपकी कल्पना, 'जुगुत सिंह ने बिना सोचे-समझे जवाब दिया।

नदी पार करने के लिए रोते हुए बेहोश रोता है। दंपती सुनने के लिए उठे। दो शॉट तेजी से रन आउट हुए। कीकरो से उड़ते हुए कौवों ने गुस्से में आकर कौवे को मार दिया। लड़की रोने लगी।

'गाँव में कुछ हो रहा है। मेरे पिता जागेंगे और जानेंगे कि मैं बाहर गया हूँ। वह मुझे मार डालेगा।'

जुगुत सिंह उसकी बात नहीं सुन रहे थे। उसे नहीं पता था कि क्या करना है। अगर उसकी

गांव से अनुपस्थिति का पता चला, वह पुलिस के साथ परेशानी में पड़ जाएगा। इससे वह उतना परेशान नहीं हुआ, जितना कि लड़की को होगा। वह फिर नहीं आ सकता है। वह इतना कह रही थी: 'मैं तुम्हें फिर कभी देखने नहीं आऊँगी। अगर अल्लाह ने मुझे इस बार माफ कर दिया तो मैं फिर कभी ऐसा नहीं करूँगा।'

'क्या तुम चुप रहोगी या मुझे तुम्हारा चेहरा सूँघना पड़ेगा?'

लड़की सिसकने लगी। उसे यकीन करना मुश्किल था कि यह वही आदमी था जो एक पल पहले उससे प्यार कर रहा था।

'शांत! कोई आ रहा है, 'जुगुत सिंह ने फुसफुसाते हुए अपना भारी हाथ उसके मुँह पर रख दिया।

दंपति अभी भी अंधेरे में झाँकते हैं। बंदूक और भाले लिए हुए पाँच आदमी उनमें से कुछ गज के भीतर से गुजरे। उन्होंने अपने चेहरों का खुलासा किया था और बात कर रहे थे।

'Dakoo! क्या तुम उन्हें जानते हो?' लड़की ने कानाफूसी में पूछा।

'हां,' जुगुत ने कहा, 'मशाल वाला मल्ली है।' उसका चेहरा कस गया। 'अपनी बहन का वह भद्दा प्रेमी! मैंने उसे एक हजार बार कहा है कि डकैतों के लिए यह समय नहीं था। और अब वह अपने गिरोह को मेरे गाँव ले आया है! मैं उसके साथ यह समझौता करूँगा।'

डकैत नदी तक चले गए और फिर दक्षिण की ओर एक मील की दूरी पर फोर्ड की ओर नीचे की ओर बढ़ गए। लेपिंग्स की एक जोड़ी ने चौंका देने वाले रोआँ के साथ अभी भी रात को छेद दिया: टीट-टिटेटी-टिटेटी-जोडोट, टी-टी-हूओट, टी-टी-व्हाट, टाइट-टाइट- टी- व्हाट।

'क्या आप उन्हें पुलिस को रिपोर्ट करेंगे?'



जुगुत सिंह ने छींटाकशी की। 'मुझे गाँव में याद करने से पहले हमें वापस आने दो।' यह जोड़ी वापस मनो माजरा की ओर चली, सामने वाला आदमी, लड़की कुछ उसके पीछे पेस। वे घूमने और कुत्तों के भौंकने की आवाज सुन सकते थे। छत्तों के पार महिलाएं एक-दूसरे के जयकारे लगा रही थीं। पूरा गाँव जागता हुआ लग रहा था। जुगुत सिंह तालाब के पास रुक गया और लड़की से बात करने के लिए चक्कर लगाया।

'नूरो, कल आओगे?' उसने विनती करते हुए पूछा।

'तुम कल के बारे में सोचते हो और मैं अपने जीवन से परेशान हूँ। मेरी हत्या होने पर भी आपके पास अच्छा समय है।'

'मेरे रहते हुए आपको कोई नुकसान नहीं पहुँचा सकता। मनो माजरा में कोई भी आप पर अपनी भौहें नहीं उठा सकता है और जुग्गा से दूर हो सकता है। मैं कुछ भी नहीं के लिए एक बदमाश नहीं हूँ, 'उन्होंने जल्दबाजी में कहा। आप मुझे बताएं कि कल क्या होता है या परसों क्या होता है जब यह सब - जो भी है - खत्म हो चुका है। मालगाड़ी के बाद?'

'नहीं! नहीं! नहीं!' लड़की को जवाब दिया। 'अब मैं अपने पिता से क्या कहूँगा? इस शोर ने उसे जगा दिया है।'

जरा कही तो तुम बाहर गए थे। आपका पेट खराब था या ऐसा ही कुछ। आपने फायरिंग सुनी और डकैतों के चले जाने तक छिपे रहे। परसों आओगे क्या?'

'नहीं,' उसने दोहराया, इस बार थोड़ा कम जोर से। बहाना काम कर सकता है। साथ ही उसके पिता भी लगभग अंधे थे। उसे न तो उसकी रेशमी कमीज दिखाई देती थी, न ही उसकी आँखों में सुरमा। नूरन अंधेरे में दूर चला गया, कसम खाता था कि वह फिर कभी नहीं आएगा।

जुगुत सिंह अपने घर की तरफ बढ़ गया। दरवाज़ा खुला था। कई ग्रामीण अपनी माँ से बात करने आंगन में थे। वह चुपचाप इधर-उधर हो गया और वापस नदी की तरफ अपना रास्ता बना लिया।

नौकरशाही हलकों में मनोहर माजरा का कुछ महत्व है क्योंकि रेलवे पुल के उत्तर में एक अधिकारी विश्राम गृह है। यह एक सपाट छत वाला बंगला है जो खाकी ईंटों से बना है, जिसके सामने एक नदी है। यह एक निचली दीवार से घिरे एक चौकोर भूखंड के बीच में स्थित है। गेट से बरामदे तक प्रत्येक तरफ ईंटों की एक पंक्ति के साथ एक सड़क चलती है और इसे बगीचे से चिह्नित किया जाता है। उद्यान अपने फ्लैट, यहां तक कि सतह को तोड़ने के लिए घास के एक ब्लेड के बिना प्लास्टर कीचड़ का एक पैनकेक है, लेकिन चमेली के कुछ खुरदरी झाड़ियाँ बरामदे के स्तंभों के पास और घर के पीछे स्थित नौकरों के क्वार्टरों की पंक्ति के पास बढ़ती हैं। रेस्ट हाउस मूल रूप से पुल के निर्माण के प्रभारी इंजीनियर के लिए बनाया गया था। पुल के पूरा होने के बाद, यह सभी वरिष्ठ अधिकारियों की आम संपत्ति बन गई। इसकी लोकप्रियता नदी के निकट होने के कारण है। इसके बारे में सभी *पाम्पास* घास और *टाक* के जंगली कचरे, या जंगल की लौ हैं, और यहाँ *partridges* अपने साथियों को सूर्योदय से सूर्यास्त तक कहते हैं। जब नदी ने अपने शीतकालीन चैनल पर कब्जा कर लिया है, तो दलदल और तालाबों में पीछे छोड़ दिया गया है। इन स्थानों पर अक्सर गीज़, मल्लार्ड, विडीनगर, चैती और कई अन्य प्रकार के जलपक्षी, और बड़े ताल राहू और मल्ली और महासीर के साथ मौजूद हैं।

पूरे सर्दियों के महीनों में, अधिकारी पर्यटन की व्यवस्था करते हैं जिसमें मनो माजरा विश्राम गृह में एक छोटा पड़ाव शामिल होता है। वे सूर्योदय के समय जलप्रपात के लिए जाते हैं, दिन के दौरान भाग के लिए, दोपहर में मछली, और एक बार बतख के लिए जब वे

अपनी शाम की उड़ान में वापस आते हैं। वसंत ऋतु में रूमानी आ जाते हैं - अपनी व्हिस्की को निचोड़ने के लिए और ढाक के चमकीले नारंगी को नदी में डूबते हुए सूर्य के समृद्ध लाल रंग को देखने के लिए; दलदल में मेंढकों के सुखदायक घोंघे और गाड़ियों की गड़गड़ाहट सुनने के लिए; पुल के मेहराब के नीचे से चांद के ऊपर आते ही, अग्नि को किरणों के बीच से गुजरते हुए देखना। गर्मियों के शुरुआती महीनों के दौरान, केवल एकांत की तलाश में रहने वाले लोग मनो में आते हैं

माजरा रेस्ट हाउस। लेकिन मानसून के टूटने के बाद, सतलुज के सूजे हुए पानी के लिए आगंतुक कई गुना बढ़ जाते हैं।

मनो माजरा में डकैती से पहले सुबह, रेस्ट हाउस गया था एक महत्वपूर्ण अतिथि प्राप्त करने के लिए। स्वीपर ने बाथरूम धोया था, कमरों में बह गया, और सड़क पर पानी छिड़का। भालू और उसकी पत्नी ने फर्नीचर को धूल और पुनः व्यवस्थित किया था। स्वीपर के लड़के ने पंकह पर रस्सी को खोल दिया था जो छत से लटका था और दीवार में छेद के माध्यम से डाल दिया ताकि वह इसे बरामदे से खींच सके। उसने एक नया लाल लंगोट धारण किया था और बरामदे में रस्सा बाँधकर और बिना गांठ के रस्सी पर बैठा था। रसोई से चिकन की खुशबू आ रही थी।

ग्यारह बजे पुलिस के एक सबइंस्पेक्टर और दो कांस्टेबलों ने साइकिलों पर बैठकर व्यवस्थाओं का निरीक्षण किया। फिर दो आर्डर आए। उन्होंने लाल रंग की साड़ी के साथ सफेद वर्दी पहनी थी और सामने चौड़े बैंड के साथ उनकी कमर और सफेद पगड़ी थी। बैंड पर पंजाब की सरकार के पीतल के प्रतीक लगाए गए थे - सूरज जो प्रांत की नदियों का प्रतिनिधित्व करने वाली पांच लहरदार रेखाओं पर उगता था। उनके साथ कई ग्रामीण थे जिन्होंने सामान और चमकदार काले आधिकारिक प्रेषण मामलों को अंजाम दिया।

एक घंटे बाद एक बड़ी ग्रे अमेरिकी कार लुढ़की। एक अर्दली आगे की सीट से बाहर निकला और अपने मालिक के लिए पीछे का दरवाजा खोल दिया। सबइंस्पेक्टर और पुलिसकर्मी ध्यान में आए और सलामी दी। ग्रामीणों ने एक सम्मानजनक दूरी तय की। भालू ने तार-धुंध दरवाजा खोल दिया, जिससे मुख्य बिस्तर पर बैठने वाला कमरा बन गया। जिला के मजिस्ट्रेट और डिप्टी कमिश्नर श्री हुकुम चंद ने कार से बाहर अपने शव को ढँक दिया। वह पूरी सुबह यात्रा कर रहा था और कुछ थका हुआ और कठोर था। उसके निचले होंठ पर पड़ी सिगरेट ने उसकी आँखों में धुएँ की पतली धारा भेजी। अपने दाहिने हाथ में उन्होंने सिगरेट का टिन और माचिस की डिब्बी रखी थी। वह सब-इंस्पेक्टर के पास गया और उसे पीठ पर एक दोस्ताना थप्पड़ मार दिया, जबकि दूसरा अभी भी ध्यान में था।

'साथ आओ, इंस्पेक्टर साहब, अंदर आओ,' हुकुम चंद ने कहा। वह निरीक्षक के दाहिने हाथ को ले गया और उसे कमरे में ले गया। उसके बाद के अधिकारी और डिप्टी कमिश्नर के निजी नौकर ने पीछा किया। कांस्टेबलों ने सामान को कार से बाहर निकालने के लिए चौराहे की मदद की।

हुकुम चंद सीधे बाथरूम में गए और अपने चेहरे से धूल को धोया। वह एक तौलिया के साथ अपना चेहरा पोंछते हुए वापस आया। सबइंस्पेक्टर फिर खड़ा हो गया।

'बैठो, बैठो,' उसने आज्ञा दी।

उसने अपने बिस्तर पर तौलिया फेंका और आरामकुर्सी में डूब गया। पंकह आगे और पीछे की ओर फड़फड़ाने लगा, जिससे पीछे की ओर चलने वाली रस्सी की भनक लग गई

दीवार में छेद। आदेशों में से एक ने मजिस्ट्रेट के जूते को खोल दिया और अपने मोजे उतार दिए और अपने पैरों को रगड़ना शुरू कर दिया। हुकुम चंद ने सिगरेट का टिन खोला और उसे सब-इंस्पेक्टर को सौंप दिया। सबइंस्पेक्टर ने मजिस्ट्रेट की सिगरेट जलाई और फिर अपनी। हुकुम चंद की धूम्रपान की शैली ने उनके निम्न-मध्यम वर्ग के मूल को धोखा दिया। वह नीरवता से चूसा, उसका मुंह उसके बंद मुट्ठी से चिपके हुए था। उसने अपनी उंगलियों को पनपने के साथ तडक कर सिगरेट की राख को गिरा दिया। सबइंस्पेक्टर, जो एक छोटा आदमी था, अधिक परिष्कृत तरीके से था।

'अच्छा, इंस्पेक्टर साहब, चीजें कैसी हैं?'

सबइंस्पेक्टर ने उसके हाथ जोड़े। 'भगवान दयालु हैं। हम केवल आपकी दया के लिए प्रार्थना करते हैं।'

'इस क्षेत्र में कोई सांप्रदायिक परेशानी नहीं?'

'हम इसे अब तक बच गए हैं, सर। पाकिस्तान से सिख और हिंदू शरणार्थियों के काफिले गुजर चुके हैं और कुछ मुसलमान बाहर गए हैं, लेकिन हमारे पास कोई घटना नहीं हुई है।'

'सीमांत के इस तरफ आपके पास मृत सिखों के काफिले नहीं थे। वे अमृतसर से होकर आते रहे हैं। एक भी व्यक्ति जीवित नहीं! वहां पर हत्या हुई है।' हुकुम चंद ने अपने दोनों हाथों को पकड़ लिया और इस्तीफे के इशारे में उन्हें अपनी जांघों पर जोर से गिरा दिया। स्पावर्स अपनी सिगरेट से उड़ गया और अपने पतलून पर गिर गया। सबइंस्पेक्टर ने उन्हें थप्पड़ मारने की धमकी देकर जल्दबाजी में मार डाला।

'क्या आप जानते हैं,' मजिस्ट्रेट ने जारी रखा, 'सिखों ने जवाबी कार्रवाई करते हुए एक मुस्लिम शरणार्थी ट्रेन पर हमला किया और उसे एक हज़ार लाशों के साथ सीमा पार भेज दिया? उन्होंने इंजन पर लिखा था "पाकिस्तान को उपहार!'"

सबइंस्पेक्टर ने सोच समझकर जवाब दिया: 'वे कहते हैं कि दूसरी तरफ हत्याओं को रोकने का एकमात्र तरीका है। आदमी के लिए आदमी, औरत के लिए औरत, बच्चे के लिए बच्चा। लेकिन हम हिंदू ऐसे नहीं हैं। हम वास्तव में इस छुरा खेल नहीं खेल सकते हैं। जब यह एक खुली लड़ाई की बात आती है, तो हम किसी भी लोगों के लिए एक मैच हो सकते हैं। मेरा मानना है कि हमारे आरएसएस के लड़कों ने सभी शहरों में मुस्लिम गिरोहों की पिटाई की। सिख अपना हिस्सा नहीं कर रहे हैं। उन्होंने अपनी मर्दानगी खो दी है। वे सिर्फ बड़ी बात करते हैं। यहां हम सिख गांवों में रहने वाले मुसलमानों के साथ सीमा पर हैं जैसे कि कुछ भी नहीं हुआ था। मनोज माजरा जैसे गांव के दिल में प्रार्थना करने के लिए हर सुबह और शाम को मुज़्जिन बुलाता है। आप सिखों से पूछते हैं कि वे इसकी अनुमति क्यों देते हैं और वे जवाब देते हैं कि मुसलमान उनके भाई हैं। मुझे यकीन है कि उन्हें उनसे पैसे मिल रहे हैं।'

हुकुम चंद ने अपनी उंगलियों को अपने बालों के अग्रभाग में घुमाया। 'इस क्षेत्र का कोई भी मुसलमान भलाई करने वाला है?'

'बहुत नहीं, सर। उनमें से ज्यादातर बुनकर या कुम्हार हैं।'

'लेकिन चुंदनुगनगर को एक अच्छा पुलिस स्टेशन कहा जाता है। बहुत सारी हत्याएं, इतनी अवैध डिस्टिलिंग, और सिख किसान समृद्ध हैं। आपके पूर्ववर्तियों ने शहर में खुद के घर बनाए हैं।'

'आपका सम्मान मेरा मजाक उड़ा रहा है।'

'मुझे इस बात से एतराज नहीं है कि आप जो भी लें, निश्चित रूप से - हर कोई करता है - केवल, सावधान रहें। यह नई सरकार इस सब पर मुहर लगाने की बहुत जोर-शोर से

बात कर रही है। कार्यालय में कुछ महीनों के बाद उनका उत्साह शांत होगा और चीजें पहले की तरह चलेंगी। यह रातोंरात चीजों को बदलने की कोशिश का कोई फायदा नहीं है। '

'वे बात करने वाले नहीं हैं। दिल्ली से आने वाले किसी से भी पूछें और वह आपको बताएगा कि ये सभी गाँधी शिष्य पैसे जमा कर रहे हैं। वे क्रेन के रूप में अच्छे संत हैं। वे अपनी आंखें बंद कर लेते हैं और एक पैर पर खड़े होते हैं जैसे योगी तपस्या करते हैं; जैसे ही कोई मछली पास आती है — तूफान। '

हुकुम चंद ने नौकर को आदेश दिया कि वह कुछ बीयर पाने के लिए अपने पैरों को रगड़े। जैसे ही वे अकेले थे, उन्होंने सबइंस्पेक्टर के घुटने पर एक दोस्ताना हाथ रखा।

तुम बच्चे की तरह कर्कश बातें करते हो। यह आपको एक दिन मुसीबत में डाल देगा। आपका सिद्धांत सब कुछ देखने और कुछ नहीं कहने के लिए होना चाहिए। दुनिया इतनी तेजी से बदलती है कि यदि आप चाहते हैं कि आप किसी भी व्यक्ति या बिंदु के साथ खुद को संरेखित नहीं कर सकते। यहां तक कि अगर आप किसी चीज के बारे में दृढ़ता से महसूस करते हैं, तो भी चुप रहना सीखें। '

सबइंस्पेक्टर का हृदय कृतज्ञता से गर्म हो गया। वह गैर-जिम्मेदाराना आलोचना के द्वारा अधिक पैतृक सलाह देना चाहता था। वह जानता था कि हुकुम चंद उससे सहमत हैं।

'कभी-कभी, साहब, कोई अपने आप को रोक नहीं सकता। दिल्ली में गांधी-टोपी पंजाब के बारे में क्या जानते हैं? दूसरी तरफ पाकिस्तान में जो हो रहा है, वह उनके लिए कोई मायने नहीं रखता। उन्होंने अपना घर और सामान नहीं खोया है; सड़कों पर उनकी मां, पत्नियों, बहनों और बेटियों के साथ बलात्कार और उनकी हत्या नहीं हुई है। क्या आपके सम्मान में सुना है कि शेखूपुरा और गुजरांवाला के बाजारों में हिंदू और सिख शरणार्थियों के लिए मुस्लिम भीड़ ने क्या किया? पाकिस्तान पुलिस और सेना ने हत्याओं में भाग लिया। कोई आत्मा जीवित नहीं बची थी। महिलाओं ने अपने बच्चों की हत्या कर दी और लाशों से भरे कुएं में कूद गईं। '

'हरे राम, हरे राम' हुकुम चंद की गहरी आह भरी। 'मुझे यह सब पता है। हमारी हिंदू महिलाएं ऐसी हैं: इतनी शुद्ध कि वे किसी अजनबी को छूने की बजाय आत्महत्या कर लेंगी। हम हिंदू कभी भी महिलाओं पर प्रहार करने के लिए हाथ नहीं उठाते हैं, लेकिन इन मुसलमानों का कमजोर लिंग के प्रति कोई सम्मान नहीं है। लेकिन हम इसके बारे में क्या कर रहे हैं? यहां शुरू होने से पहले यह कब तक चलेगा? '

'मुझे उम्मीद है कि हमें मनो माजरा से होकर आने वाली लाशों वाली ट्रेनें नहीं मिलेंगी। यह

प्रतिशोध को रोकना असंभव होगा। हमारे चारों तरफ सैकड़ों छोटे-छोटे मुस्लिम गाँव हैं, और हर सिख गाँव में कुछ मुस्लिम परिवार हैं जैसे मनो माजरा, " सबइंस्पेक्टर ने कहा, एक फीलिंग फेंक रहा हूँ।

हुकुम चंद ने उसकी सिगरेट को नोच-नोच कर चूसा और उसकी उंगलियाँ फँसा दीं। उन्होंने कहा, 'हमें कानून और व्यवस्था बनाए रखनी चाहिए।' 'अगर संभव हो तो मुसलमानों को शांति से बाहर जाने के लिए पाएं। किसी को भी वास्तव में रक्तपात से लाभ नहीं होता है। बुरे चरित्रों को सारी लूट मिल जाएगी और सरकार हमें हत्या के लिए दोषी ठहराएगी। नहीं, इंस्पेक्टर साहब, जो भी हमारे विचार हैं - और ईश्वर अकेले जानता है कि मैंने इन पाकिस्तानियों के साथ क्या किया होता अगर मैं एक सरकारी नौकर नहीं होता - तो हमें कोई हत्या या संपत्ति का विनाश नहीं होने देना चाहिए। उन्हें बाहर निकलने दें, लेकिन सावधान रहें वे उनके साथ बहुत अधिक नहीं लेते हैं। पाकिस्तान के

हिंदुओं को उनके सभी सामानों को छीन लिया गया था, इससे पहले कि उन्हें छोड़ दिया जाए। पाकिस्तानी मजिस्ट्रेट रातोंरात करोड़पति बन गए हैं। हमारी तरफ से भी कुछ बुरा नहीं किया है। केवल वहीं जहाँ सरकार की हत्या हुई थी या जल रही थी या उन्हें निलंबित कर दिया गया था। कोई हत्या नहीं होनी चाहिए। सिर्फ शांतिपूर्ण निकासी। '

भालू बीयर की एक बोतल ले आया और हुकुम चंद और सब-इंस्पेक्टर के सामने दो गिलास रखे। सबइंस्पेक्टर ने अपना गिलास उठाया और उस पर अपना हाथ रख दिया, विरोध करते हुए कहा, 'नहीं, सर, मैं आपकी उपस्थिति में असंगत और शराब नहीं पी सकता।'

मजिस्ट्रेट ने विरोध को पूरी तरह से खारिज कर दिया। 'आपको मुझसे जुड़ना पड़ेगा। यह एक आदेश है। बियर, इंस्पेक्टर साहब का गिलास भर दो और उसके लिए दोपहर का खाना बिछा दो। '

सबइंस्पेक्टर ने बियर को भरने के लिए अपना गिलास बाहर रखा। 'यदि आप मुझे आदेश देते हैं, तो मैं अवज्ञा नहीं कर सकता।' वह आराम करने लगा। उसने अपनी पगड़ी उतार कर मेज़ पर रख दी। यह एक सिख पगड़ी जो जरूरत की तरह नहीं था फिर से बांधने हर बार इसे बंद कर लिया गया था; यह सिर्फ तीन गज की दूरी पर था, जिसमें खाकी मलमल लपेटी हुई एक नीली खोपड़ी थी, जिसे टोपी की तरह बंद और बंद किया जा सकता था।

'मनो माजरा में क्या स्थिति है?'

'अभी तक तो सब ठीक है। *Lambardar* नियमित रूप से रिपोर्ट। अभी तक कोई भी शरणार्थी गांव से नहीं आया है। मुझे यकीन है कि मनो माजरा में कोई भी नहीं जानता है कि अंग्रेजों ने छोड़ दिया है और देश पाकिस्तान और हिंदुस्तान में विभाजित है। उनमें से कुछ गांधी के बारे में जानते हैं लेकिन मुझे संदेह है कि अगर किसी ने जिन्ना के बारे में सुना है। '

'यह अच्छा है। आपको मनो माजरा पर नजर रखनी चाहिए। यह यहाँ की सीमा पर सबसे महत्वपूर्ण गाँव है। यह पुल के करीब है। क्या गाँव में कोई बुरा चरित्र है? '

'केवल एक, सर। उसका नाम जुग्गा है। आपके सम्मान ने उन्हें गाँव तक सीमित कर दिया।

वह हर दिन खुद को लंबरदार की रिपोर्ट करता है और हर हफ्ते एक बार पुलिस स्टेशन आता है। '

'Jugga? वह कौन सा है? '

'आपको डकैत आलम सिंह का बेटा जुगुत सिंह याद होगा, जिसे दो साल पहले फांसी दी गई थी। वह बहुत बड़ा साथी है। वह इस क्षेत्र का सबसे लंबा आदमी है। वह छह फुट चार और चौड़ा होना चाहिए। वह स्टड बैल की तरह है। '

'अरे हां, मुझे याद है। खुद को बदचलन से दूर रखने के लिए वह क्या करती है? वह हर महीने किसी न किसी मामले में मेरे सामने आते थे। '

सबइंस्पेक्टर मोटे तौर पर मुस्कुराया। 'सर, पंजाब की पुलिस क्या करने में नाकाम रही है, सोलह की लड़की की आंखों का जादू चल चुका है।'

हुकुम चंद की दिलचस्पी जाग उठी। 'उसके

पास लाइजन है?' उसने पूछा।

'एक मुस्लिम बुनकर की बेटा के साथ। वह अंधेरा है, लेकिन उसकी आँखें गहरी हैं। वह निश्चित रूप से गाँव में जुग्गा रखता है। और कोई भी मुसलमानों के खिलाफ एक शब्द कहने की हिम्मत नहीं करता। उसके अंधे पिता मस्जिद के मुल्ला हैं। '

दोनों ने अपनी बीयर पी और दोपहर के भोजन में लाए जाने तक धूम्रपान किया। उन्होंने शराब पीना और खाना जारी रखा और देर रात तक जिले में स्थिति पर चर्चा करते रहे। बीयर

और गरिष्ठ भोजन ने हुकुम चंद को नींद के साथ भारी बना दिया। चिक्स बरामदे में दोपहर सूरज की चमक बाहर रखने के लिए उतारा गया था। पंकह एक थके हुए वादी क्रेक के साथ धीरे से और फड़फड़ाया। हुकुम चंद के ऊपर सुन्नपन की भावना आ गई। उसने अपने चांदी के टूथपिक निकले, अपने दांत निकाले और टूथपिक को मेज़पोश पर रगड़ दिया। यहां तक कि इससे उन्हें नींद से दूर रहने में भी मदद नहीं मिली। सबइंस्पेक्टर ने मजिस्ट्रेट को सिर हिलाया और छुट्टी लेने के लिए उठ खड़ा हुआ।

'क्या मुझे छोड़ने की आपकी अनुमति है, सर?'

'अगर आप आराम करना चाहते हैं, तो आप यहाँ बिस्तर पा सकते हैं।'

'आप बहुत दयालु हैं सर, लेकिन स्टेशन पर उपस्थित होने के लिए मेरे पास कुछ चीजें हैं। मैं यहां दो कॉन्स्टेबलों को छोड़ दूंगा। यदि आपका सम्मान मेरी उपस्थिति की इच्छा करता है, तो वे मुझे सूचित करेंगे।'

'अच्छा,' मजिस्ट्रेट ने झिझकते हुए कहा, 'क्या आपने शाम के लिए कोई व्यवस्था की है?'

'क्या मेरे लिए इस बात की अनदेखी संभव है? अगर वह आपको खुश नहीं करती है, आप मुझे सेवा से बर्खास्त कर सकते हैं। मैं ड्राइवर को बताऊंगा कि कहां जाना है और पार्टी को इकट्ठा करना है।'

सबइंस्पेक्टर ने सलामी दी और चला गया। मजिस्ट्रेट ने अपने आप को देर से दोपहर की शादी के लिए बिस्तर पर फैलाया।

बंगले से निकलते ही कार की आवाज ने हुकुम चंद को जगा दिया

नींद। पम्पास-डंठल वाले चूजों को बरामदे पर लटकाकर बड़े स्विस रोल में बांधा गया और स्तंभों के बीच बांध दिया गया। बरामदे का सफ़ेद सफ़ेद भाग धूप के नरम अम्बर में पिघला हुआ था। सफाईकर्मी लड़का हाथ में पंकज की रस्सी को पकड़ते हुए ईंट के फर्श पर लेट गया। उनके पिता रेस्ट हाउस में चारों तरफ पानी छिड़क रहे थे। चमेली की मीठी गंध के साथ मिश्रित पृथ्वी की नम गंध तार-धुंध दरवाजे के माध्यम से आई। घर के सामने, नौकरों ने उस पर कालीन के साथ एक बड़ी कॉयर चटाई बिछा दी थी। कालीन के एक छोर पर एक बड़ी बेंत की कुर्सी थी, व्हिस्की की एक बोतल के साथ एक मेज, कुछ टम्बलर और सेवरियों की प्लेटें। टेबल के नीचे एक पंक्ति में सोडा वाटर की कई बोतलें खड़ी थीं।

हुकुम चंद अपने नौकर को नहलाने के लिए तैयार हुए और शेविंग के लिए गर्म पानी लाने के लिए चिल्लाए। उसने एक सिगरेट जलाई और छत पर बिस्तर पर लेट गया। उसके सिर के ठीक ऊपर दो जेकॉस एक लड़ाई के लिए तैयार हो रहे थे। वे एक दूसरे की ओर कम रेंगते हुए शोर की ओर बढ़ गए। वे उन दोनों के बीच आधा इंच तक रुके और अपनी पूंछ को धीमे-धीमे, विचार-विमर्श के साथ स्थानांतरित किया, फिर सिर पर टक्कर हुई। इससे पहले कि हुकुम चंद दूर जा पाते वे अपने तकिए के पास एक जोर से गिरे। उसके ऊपर एक ठंडा कौम का भाव आ गया। उसने बिस्तर से छलांग लगाई और जेकॉस को देखा। गेको उस पर वापस देखें, अभी भी दांत के द्वारा एक दूसरे को पकड़ने के रूप में यदि वे चुंबन कर रहे थे। भालू के नक्शेकदम ने कृत्रिम निद्रावस्था के तार को तोड़ दिया जिसके साथ मजिस्ट्रेट और जेकॉस एक दूसरे के संबंध में थे। जेकॉस बिस्तर के नीचे भाग गया और दीवार को छत तक वापस लाया। हुकुम चंद को लगा जैसे उसने छिपकली को छू लिया हो और उन्होंने उसके हाथ गंदे कर दिए हों। उसने अपने हाथ उसकी कमीज के हेम पर रगड़े। यह उस तरह की गंदगी नहीं थी जिसे साफ किया जा सके या साफ किया जा सके।

भालू गर्म पानी का एक मग लाया और ड्रेसिंग टेबल पर शेविंग गियर बिछाया। उन्होंने एक कुर्सी पर अपने स्वामी के कपड़े पहने- एक पतली मलमल की शर्ट, एक जोड़ी बैगी

ट्राउज़र्स जो एक मोर-नीले सिल्कन कॉर्ड के साथ जुड़ा हुआ था, जो चांदी के धागे से जुड़ा हुआ था। उन्होंने मजिस्ट्रेट के काले पंपों को तब तक चमकाया जब तक कि वे चमक नहीं गए और उन्हें कुर्सी के बगल में रख दिया।

हुकुम चंद ने मुंडन कराया और बड़ी सावधानी से नहाया। नहाने के बाद उन्होंने अपने चेहरे और बांहों पर त्वचा-लोशन रगड़े और खुद को सुगंधित टैल्कम पाउडर से धोया। उन्होंने अपनी उंगलियों को ओउ डे कोलोन के साथ डब किया। ब्रिलिएंटाइन ने अपने बालों को चिकना और कोमल बना दिया और इसकी जड़ों पर सफेद दिखाया। उसने एक पखवाड़े से इसे रंगे नहीं। उसने अपनी मोटी मूंछें उतारीं और उसे तब तक घुमाया, जब तक कि उसकी आँखों में कड़ियाँ न पड़ गईं; उसकी मूंछों की जड़ें भी बैंगनी और सफेद दिखाई देती थीं। उन्होंने अपनी पतली मलमल की शर्ट पहन ली, जिसके माध्यम से उनकी एयरटेक्स बनियान स्पष्ट रूप से दिखाई दी। पतलून स्टार्च के क्रम में गिर गया। उसने अपने कपड़े स्वैब से दबोच लिए

कस्तूरी की खुशबू में डूबा हुआ कपास। जब वह तैयार हुआ तो उसने छत की तरफ देखा। जियोकोस अपनी उज्ज्वल, काली, पिन-पॉइंट आँखों से उसे घूर रहे थे।

अमेरिकी कार वापस ड्राइववे में चली गई। हुकुम चंद तार-धुंध दरवाजे तक गए और अभी भी अपनी मूंछों को तार रहे हैं। दो पुरुष और दो महिलाएं बाहर निकलीं। पुरुषों में से एक ने एक हारमोनियम और दूसरे ने ड्रम की एक जोड़ी को ढोया। महिलाओं में से एक बूढ़ा था, सफेद बालों के साथ एक अमीर मेंहदी-नारंगी रंगे हुए थे। दूसरी एक युवा लड़की थी, जिसका मुँह सुपारी से फूला हुआ था और जिसने अपनी चपटी नाक के एक तरफ हीरे की चमक बिखेरी हुई थी। वह एक छोटी सी गठरी ले गई जो कार से बाहर निकलते ही उछल पड़ी। पार्टी में गए और कालीन पर बैठ गए।

हुकुम चंद ने शीशे में खुद को गौर से देखा। उसने अपने बालों की जड़ों पर सफेद ध्यान दिया और उसे फिर से चिकना कर दिया। उसने एक सिगरेट जलाई और अपने प्रथागत तरीके से उस पर माचिस की तीली से सिगरेट का टिन ले गया। उसने आधे तार-धुंध दरवाजे को खोल दिया और अपने भालू के लिए व्हिस्की लाने के लिए चिल्लाया, जिसे वह जानता था कि पहले से ही मेज पर रखा गया था। यह उसके बाहर आने वाले लोगों को चेतावनी देने के लिए था। जैसे ही वह बाहर आया उसने दरवाजे को जोर से पटक दिया। धीमे-धीमे कदमों के साथ अपने चमकदार पंपों की चरमराहट के कारण वह गन्ने की कुर्सी तक गया।

मजिस्ट्रेट का अभिवादन करने के लिए पार्टी खड़ी हुई। दोनों संगीतकारों ने सिर झुकाकर नमस्कार किया। बूढ़ी दांतेदार महिला ने प्रशंसा के एक गाथाओं में तोड़ दिया: 'आपकी प्रसिद्धि और सम्मान में वृद्धि हो सकती है। आपकी कलम हजारों और हजारों की संख्या में आंकड़े लिख सकती है।' जवान लड़की सिर्फ अपनी बड़ी आँखों से उसे देखती थी जो सुरमा और लैम्पब्लाक से चमकती थी। मजिस्ट्रेट ने हाथ से इशारे से उन्हें बैठने का आदेश दिया। बूढ़ी औरत की आवाज़ एक कानाफूसी पर उतर आई। चारों कालीन पर बैठ गए।

भालू ने अपने मालिक के लिए व्हिस्की और सोडा डाला। हुकुम चंद ने एक बड़ी छलांग लगाई और अपने हाथ के पिछले हिस्से से अपनी मूंछें पोंछ लीं। उन्होंने कहा कि तंत्रिका अंत में घुमाया। लड़की ने अपनी गठरी खोली और अपने टखनों को गोल - गोल बाँध दिया। हारमोनियम बजाने वाले ने एकल नोट बजाया। उनके साथी ने ड्रमों को एक छोटे से मैलेट के साथ किनारों को गोल किया और कस दिया और उनके बीच में लकड़ी के ब्लॉक की अंगूठी को हथौड़ा करके चमड़े के हवाई चप्पल को ढीला कर दिया। जब तक ड्रम में

हारमोनियम नहीं होता, तब तक वह अपनी उंगलियों से सफेद त्वचा को हरा देता था। संगत तैयार थी।

युवा लड़की ने सुपारी को बाहर निकाला और गहरी छाती की खांसी की एक श्रृंखला के साथ उसके गले को साफ कर दिया, जिससे कफ पैदा हुआ। बुढ़िया बोली: 'गरीबों का चिरजीवी। आपके सम्मान का क्या मतलब है? कुछ शास्त्रीय-

पक्का- या एक प्रेम गीत? '

'नहीं, कुछ नहीं पक्का। फिल्मों से कुछ। कुछ अच्छे फिल्मी गीत- अधिमानतः पंजाबी। '

जवान लड़की ने सलाम किया। 'जैसा आप आज्ञा दें।'

संगीतकारों ने अपना सिर एक साथ रखा और लड़की के साथ एक संक्षिप्त परामर्श के बाद उन्होंने खेलना शुरू किया। ड्रम ने एक प्रारंभिक टैटू को हरा दिया और फिर हारमोनियम में शामिल होने के लिए नरम कर दिया। दोनों कुछ समय के लिए खेले, जबकि लड़की चुपचाप बैठी रही, ऊब और उदासीन दिख रही थी। जब उन्होंने परिचयात्मक टुकड़ा समाप्त किया, तो उसने अपनी नाक फोड़ ली और अपना गला फिर से साफ कर लिया। उसने अपना बायाँ हाथ कान पर रखा और दूसरे को मजिस्ट्रेट की ओर बढ़ाया, जिसमें उसने एक झगड़े में कहा:

हे प्रेमी मेरा, हे प्रेमी कि कला चली गई,  
मैं जीवित हूँ, लेकिन मर जाऊंगा,  
मैं देख रहा हूँ कि बहने वाले आँसुओं के लिए नहीं,  
मैं सांस नहीं लेता, क्योंकि मैं आँसु भरता हूँ।  
एक पतंगा के रूप में जो लौ से प्यार करता है,  
उस ज्वाला से मृत्यु तक हो जाती है,  
अपने भीतर मैंने आग जलाई है  
कि अब मुझे मेरी सांस लूटता है।  
रातें मैं सितारों को गिनने में बिताता हूँ,  
दिनों के सपने में दिन  
जब होमवार्ड तू तेरा बागडोर बदल जाएगा  
तेरा चांद-गोरा चेहरा मैं फिर देखूंगा।

लड़की ने विराम दिया। संगीतकारों ने उसे फिर से गाने के लिए फिर से खेलना शुरू कर दिया:

ओ अक्षर, मेरे प्रेमी को सीखने दो  
जुदाई की आग कैसे जलती है।

जब लड़की ने अपना गाना खत्म किया, तो हुकुम चंद ने कालीन पर पांच रुपये का नोट उड़ाया। लड़की और संगीतकारों ने सिर झुका लिया। हाग ने पैसा उठाया और अपने बटुए में डाल दिया, घोषणा की: 'क्या आप कभी शासन करते हैं। आपकी कलम से सैकड़ों हजार लिख सकते हैं। हो सकता है ... '

गायन फिर से शुरू हुआ। हुकुम चंद ने खुद को एक कड़ी व्हिस्की पिलाई और उसे एक घूंट में पिया। उसने अपनी मूँछें हाथ से पोंछ लीं। उसके पास लड़की को देखने के लिए तंत्रिका नहीं थी। वह एक गीत गा रही थी जिसे वह अच्छी तरह से जानता था; उन्होंने अपनी बेटी को इसे गुनगुनाते हुए सुना था:



हवा में उड़ रहा है  
लाल मलमल का मेरा घूँघट  
हो सर, हो सर।

हुकुम चंद को बेचैनी महसूस हुई। उन्होंने एक और व्हिस्की ली और अपने विवेक को खारिज कर दिया। लोगों में विवेक के लिए जीवन बहुत कम था। उन्होंने अपनी उंगलियां चटकाने और प्रत्येक 'हो सर, हो सर' पर अपनी जांघों को थप्पड़ मारकर गाने को समय देना शुरू कर दिया।

गोधूली रात के अंधेरे को रास्ता दिया। नदी द्वारा दलदल में, मेंढक टेढ़े मेढ़े। सिसदास ने नरकट में चूर किया। बियरर ने एक हिसिंग आयल लैम्प निकाला जो एक चमकदार नीली रोशनी डाली। दीपक के फ्रेम ने हुकुम चंद के ऊपर छाया डाली। वह उस लड़की को घूरता रहा जो रोशनी से बचकर बैठी थी। वह केवल एक बच्ची थी और बहुत सुंदर नहीं थी, बस युवा और अनप्लग्ड थी। उसके स्तनों को बड़ी मुश्किल से उसकी चोली ने भर दिया। वे पुरुष के हाथ का स्पर्श नहीं जान सकते थे। यह विचार कि वह शायद अपनी ही बेटी से छोटी थी, उसके दिमाग में चमक आ गई। उसने इसे दूसरे व्हिस्की के साथ जल्दी से डुबो दिया। जीवन ऐसा ही था। आपने इसे लिया जैसे ही आया, मूर्खतापूर्ण सम्मेलनों और मूल्यों का कफन जो केवल होंठ पूजा के लायक थे। वह अपना पैसा चाहती थी, और वह ... अच्छी तरह से। जब सब कहा गया और किया गया तो वह एक वेश्या थी और उसे देखा। उसकी काली साड़ी पर चाँदी के सेक्विन चमक उठे। उसकी नाक में लगा हीरा तारे की तरह चमकता था। हुकुम चंद ने अपनी शेष शंकाओं को दूर करने के लिए एक और पेय लिया। इस बार उन्होंने अपनी मूंछों को अपने रेशमी रूमाल से पोंछा। उसने जोर से ठहाका लगाना शुरू किया और फुलझड़ी के साथ अपनी उंगलियाँ फँसा ली।

एक के बाद एक फिल्मी गीत तब तक चलते रहे जब तक कि सभी भारतीय गाने तांगों और सांबों की धुनों पर सेट नहीं हो गए, जिन्हें हुकुम चंद जानते थे।

'कुछ और भी तुम जानते हो गाओ,' मजिस्ट्रेट को बहुत ही संवेदना के साथ आदेश दिया। 'कुछ नया और समलैंगिक।'

लड़की ने एक गाना गाना शुरू किया जिसमें कई अंग्रेजी शब्द थे:

*रविवार के बाद रविवार, ओ मेरी जान।*

हुकुम चंद ने सराहना की, 'वाह, वाह।' जब लड़की ने अपना गाना खत्म किया, तो उसने उस पर फिवरुपी नोट नहीं फेंका, बल्कि उसे अपने हाथ से लेने के लिए कहा। बुढ़िया ने लड़की को आगे बढ़ाया।

'जाओ, सरकार तुम्हारे लिए भेजती है।'

लड़की उठ कर टेबल पर चली गई। उसने पैसे लेने के लिए हाथ बढ़ाया; हुकुम चंद ने अपना नाम वापस ले लिया और नोट को अपने दिल से लगा लिया। वह शालीनता से मुस्कुराया। लड़की ने मदद के लिए अपने साथियों को देखा। हुकुम चंद ने नोट को टेबल पर रख दिया। इससे पहले कि वह उस तक पहुँच पाती उसने उसे उठा लिया और फिर से डाल दिया

उसकी छाती। उसके चेहरे पर मुसकान चौड़ी हो गई। लड़की दूसरों से जुड़ने के लिए पीछे मुड़ी। हुकुम चंद ने तीसरी बार नोट निकाला।

'सरकार के पास जाओ,' बुढ़िया ने विनती की। लड़की ने आज्ञाकारी रूप से गोल घुमाया और मजिस्ट्रेट के पास गई। हुकुम चंद ने उसकी कमर पर हाथ रखा।

'तुम अच्छा गाते हो।'

लड़की ने अपने साथियों की आंखों में चौंधिया दी।

'सरकार आपसे बात कर रही है। आप उसका जवाब क्यों नहीं देते?' बुढ़िया को डांटा।

'सरकार, लड़की जवान है और बहुत शर्मीली है। वह सीखेगी, 'उसने कहा।

हुकुम चंद ने लड़की के होंठों पर एक गिलास व्हिस्की डाली। 'थोड़ा पी लो। मेरी खातिर बस एक घूंट, 'उसने विनती की।

लड़की बिना मुँह खोले बेसब्री से खड़ी रही। बुढ़िया फिर बोली।

'सरकार, वह पेय के बारे में कुछ नहीं जानती। वह मुश्किल से सोलह साल की है और पूरी तरह से निर्दोष है। वह पहले कभी किसी पुरुष के पास नहीं रही। मैंने आपके सम्मान की खुशी के लिए उसे पाला है।'

हुकुम चंद ने कहा, " अगर वह शराब नहीं पीता है तो भी वह कुछ खाएगा। उन्होंने महिला के बाकी भाषणों को नजरअंदाज करना पसंद किया। उसने एक प्लेट से मीटबॉल उठाया और उसे लड़की के मुँह में डालने की कोशिश की। उसने उससे ले लिया और खा लिया।

हुकुम चंद ने उसे अपनी गोद में खींच लिया और उसके बालों से खेलने लगा। यह भारी तेलीय था और भड़कीली सेल्युलाइड हेयर-क्लिप द्वारा तरंगों में तय किया गया था। उन्होंने हेयरपिन के एक जोड़े को बाहर निकाल लिया और पीछे की तरफ बन्स को ढीला कर दिया। बाल उसके कंधों पर गिर गए। संगीतकार और बुढ़िया उठे।

'क्या हमें छोड़ने की अनुमति है?'

'हां जाओ। ड्राइवर आपको घर ले जाएगा।'

बूढ़ी औरत ने फिर से एक जोर का सिंघाड़ा लगाया: 'आपकी प्रसिद्धि और सम्मान बढ़ सकता है। आपकी कलम हजारों- सैकड़ों, सैकड़ों हजारों का आंकड़ा लिख सकती है।'

हुकुम चंद ने नोटों की एक माला तैयार की और उसके लिए मेज पर रख दी। तब पार्टी कार में गई, मजिस्ट्रेट को अपनी गोद में लड़की के साथ छोड़ दिया और आदेश के लिए इंतजार कर रहा था।

'क्या मैं रात का खाना परोसूंगी, सर?'

'नहीं, बस मेज पर खाना छोड़ दो। हम अपनी सेवा देंगे। तुम जा सकते हो।' भालू ने रात का खाना बाहर रखा और अपने क्वार्टर में सेवानिवृत्त हो गया।

हुकुम चंद ने हाथ बढ़ाकर पैराफिन लैंप बाहर रख दिया। यह चला गया

एक जोर की फुफकार के साथ, दोनों को पूरी तरह से अंधेरे में छोड़कर, पीली पीली रोशनी के लिए बचाओ जो बेडरूम से टिमटिमाती थी। हुकुम चंद ने दरवाजों से बाहर रहने का फैसला किया।

मालगाड़ी ने मनो माजरा वैगनों को गिरा दिया था और पुल के लिए स्टेशन छोड़ रही थी। यह स्पष्ट रूप से सामने आया, इसकी प्रगति को अंगारों द्वारा चिह्नित किया गया था जो इंजन के फ्रनल से बाहर निकल गया था। वे फायरबॉक्स में कोयला चुरा रहे थे। एक चमकदार लाल-और पीली रोशनी पुल के स्पैन के माध्यम से यात्रा की और दूसरी तरफ जंगल के पीछे खो गई। ट्रेन की रंबल फीकी और फीकी हो गई। इसके गुजरने से निजता का अहसास हुआ।

हुकुम चंद ने खुद को एक और व्हिस्की की मदद की। उनकी गोद में बैठी लड़की कठोर और मटमैली थी।

'क्या आप नाराज हो मुझसे? आप मुझसे बात नहीं करना चाहते हैं?' हुकुम चंद से पूछा, उसे अपने करीब दबाकर। लड़की ने न तो जवाब दिया और न ही उसकी तरफ देखा।

मजिस्ट्रेट विशेष रूप से उसकी प्रतिक्रियाओं से चिंतित नहीं था। उसने वह सब चुका दिया था। वह अपने ही नजदीक लड़की का चेहरा लाया जाता है और उसकी गर्दन के पीछे पर और उसके कान पर उसे चूमने शुरू कर दिया। वह मालगाड़ी को और नहीं सुन सकता था। इसने देश को पूरी तरह एकांत में छोड़ दिया था। हुकुम चंद अपनी साँसें तेज करते सुन सकते थे। उसने लड़की की चोली का पट्टा खोल दिया।

एक गोली की आवाज ने रात की शांति को चकनाचूर कर दिया। लड़की ढीली हो गई और उठ खड़ी हुई।

'क्या आपने एक शॉट सुना?'

लड़की ने सिर हिलाया। May हो सकता है शिखरी हो, 'उसने जवाब दिया, पहली बार उससे बात करते हुए। उसने अपना चोला उतार दिया।

'अंधेरी रात में कोई शिकारा नहीं हो सकता।'

कुछ समय के लिए दोनों खामोश खड़े रहे - आदमी थोड़ा आशंकित था; लड़की ने एक प्रेमी की उपस्थिति से छुटकारा पा लिया जिसकी सांस में व्हिस्की, तंबाकू और पायरिया की गंध थी। लेकिन मौन ने हुकुम चंद से कहा कि सब ठीक है। उन्होंने आश्वासन को दोगुना करने के लिए एक और व्हिस्की ली। लड़की को एहसास हुआ कि कोई बचा नहीं था।

'पटाखा होना चाहिए। शादी हो रही है या कुछ और, 'हुकुम चंद ने लड़की को अपनी बाहों में डालते हुए कहा। उन्होंने कहा कि नाक पर उसे चूमा। उन्होंने कहा, " हम भी शादी कर लें। "

लड़की ने कोई जवाब न दिया। उसने खुद को बासी मीटबॉल और सिगरेट की राख से ढकी प्लेटों के बीच मेज पर खींचने की अनुमति दी। हुकुम चंद ने उन्हें अपने हाथ से मेज पर झुका दिया और उनके प्रेम-प्रसंग के साथ चले गए। लड़की को बिना किसी विरोध के अपना पंजा मारना पड़ा। उसने उसे मेज से उठाया और उसे टंबलर, प्लेट और बोटलों के कूड़े के बीच कालीन पर लिटा दिया। वह

अपनी साड़ी के ढीले सिरे से अपना चेहरा ढँक लिया और अपनी सांस से बचने के लिए बगल में मुड़ गई। हुकुम चंद ने अपनी पोशाक से लड़खड़ाना शुरू कर दिया।

मनो माजरा से लोगों के चिल्लाने और कुत्तों के उत्तेजित भौंकने की आवाजें आईं। हुकुम चंद ने देखा। दो शॉट बाहर निकले और भौंकने और चिल्लाने पर चुप हो गए। जोर से शपथ के साथ हुकुम चंद ने लड़की को छोड़ दिया। वह उठ गई, ब्रश कर रही थी और अपनी साड़ी को समेट रही थी। नौकरों के क्वार्टर से भालू और सफाईकर्मी लालटेन लेकर और उत्साह से बात करते हुए निकले। थोड़ी देर बाद चौकीदार ने कार को ड्राइववे में फेंक दिया, उसके हेडलाइट्स बंगले के सामने की रोशनी को उजागर करते हैं।

डकैती के बाद सुबह रेलवे स्टेशन पर सामान्य से अधिक भीड़ थी। दिल्ली से लाहौर आने वाली 10:30 धीमी पैसेंजर ट्रेन को देखने के लिए कुछ मनो मेजरन्स ने वहां जाने की आदत बना ली। उन्होंने उन कुछ यात्रियों को देखना पसंद किया, जो मनो माजरा पर या उससे दूर हो सकते हैं, और उन्होंने इस बारे में अंतहीन बहस का भी आनंद लिया कि कैसे देर से ट्रेन एक निश्चित दिन पर थी और जब यह समय पर चली थी। देश के विभाजन के बाद से एक अतिरिक्त रुचि थी। अब ट्रेनें अक्सर चार या पाँच घंटे लेट होती थीं और कभी-कभी बीस के रूप में। जब वे आए, तो उन्हें पाकिस्तान के सिख और हिंदू शरणार्थियों या भारत के मुसलमानों के साथ भीड़ दी गई थी। लोग अपने पैरों को झूलने के साथ छतों पर बैठे थे, या

बोगियों के बीच में बेडस्टेड पर चादर बिछाई थी। उनमें से कुछ बफ़र्स पर अनिश्चित रूप से सवार हुए।

ट्रेन आज सुबह केवल एक घंटे था देर लगभग की तरह पूर्व युद्ध दिनों। जब इसमें धमाका हुआ, तो मंच पर फेरीवालों के रोने और यात्रियों के बारे में चिल्लाते हुए और एक दूसरे को चिल्लाते हुए यह धारणा दी कि बहुत से लोग उतर रहे होंगे। लेकिन जब गार्ड ने प्रस्थान के लिए अपनी सीटी फूँकी, तो उनमें से अधिकांश ट्रेन में वापस आ गए। केवल एक एकांत सिख किसान एक विडंबनापूर्ण बांस के कर्मचारियों को ले जा रहा था और उसकी पत्नी के साथ उसके कूल्हे पर आराम कर रहे शिशु मंच पर फेरीवालों के साथ रहे। उस आदमी ने अपना लुढ़का बिस्तर उसके सिर पर फहराया और उसे एक हाथ से पकड़ लिया। दूसरे में उन्होंने स्पष्ट मक्खन का एक बड़ा टिन किया। बांस के कर्मचारी ने उसे अपनी कांख में पकड़ रखा था, जिसका एक सिरा जमीन पर था। उसकी मूँछों के नीचे दो हरे रंग के टिकट चिपकें हुए थे, जो उसके ऊपरी होंठ से दाढ़ी पर बिलबिला रहे थे। महिला ने स्टेशन की लोहे की रेलिंग के माध्यम से चेहरे की रेखा देखी और उसके चेहरे पर घूँघट डाल दिया। उसने अपने पति का पीछा किया, उसकी चप्पल बजरी पर फिसल गई और उसके चांदी के गहने सभी अँगूठी। स्टेशनमास्टर ने किसान के मुँह से टिकट लूटा और दंपति को गेट से बाहर जाने दिया, जहां वे अभिवादन और गले लगाने के दौरान खो गए थे।

गार्ड ने दूसरी बार अपनी सीटी बजाई और हरे झंडे को लहराया। फिर, इंजन के ठीक पीछे वाले डिब्बे से, सशस्त्र पुलिसकर्मी निकले। उनमें से बारह थे, और एक सबइंस्पेक्टर। उन्होंने राइफलें चलाईं और उनके सैम ब्राउन बेल्ट को गोलियों से उड़ा दिया गया। दो चैन और हथकड़ी ले गए। ट्रेन के दूसरे छोर से, गार्ड की वैन के पास, एक युवक ने नीचे कदम रखा। उन्होंने एक लंबी सफ़ेद कमीज़, मोटे कपास की एक भूरे रंग की कमरकोट और ढीली पाजामा पहनी थी और उन्होंने एक स्टॉल लगाया था। उन्होंने ट्रेन से अदरक को हटा दिया, अपने गुदगुदे बालों को दबाते हुए और पूरे गोल दिखे। वह एक छोटा सा मामूली आदमी था, दिखने में कुछ हद तक पवित्र। पुलिसकर्मियों की दृष्टि ने उसे गले लगा लिया। उन्होंने अपने बाएं कंधे पर होल्डल फहराया और बाहर निकलने की दिशा में खुशी से झूम उठे। ग्रामीणों ने युवक और पुलिस पार्टी को गेट के पास खड़े स्टेशनमास्टर की ओर विपरीत दिशाओं से जाते देखा। उसने पुलिस के लिए इसे खोल दिया था और सब-इंस्पेक्टर को नमन कर रहा था। युवक पहले गेट पर पहुंचा और स्टेशनमास्टर और पुलिस के बीच रुक गया। स्टेशनमास्टर ने जल्दी से उससे टिकट ले लिया, लेकिन युवक सब-वे के लिए आगे नहीं बढ़ा और न ही उसने रास्ता बनाया।

'क्या आप मुझे बता सकते हैं, स्टेशनमास्टर साहब, अगर कोई जगह है तो मैं इस गाँव में रह सकता हूँ?'

स्टेशनमास्टर चिढ़ गया था। आगंतुक के शहरी लहजे, उनकी उपस्थिति, पोशाक और धारण ने स्टेशन मास्टर को अपना गुस्सा वापस ले लिया था।

उन्होंने कहा, 'मनो माजरा में कोई होटल या सराय नहीं हैं।' 'केवल सिख मंदिर है। आप गाँव के केंद्र में पीले झंडे-मस्तूल देखेंगे।'

'धन्यवाद महोदय।'

पुलिस पार्टी और स्टेशनमास्टर ने युवाओं के बीच थोड़ी भिन्नता के साथ छानबीन की। बहुत से लोगों ने इन भागों में 'धन्यवाद' नहीं कहा। ज्यादातर 'थैंक यू' भीड़ विदेशी शिक्षित थी। उन्होंने इंग्लैंड में शिक्षित, ग्रामीण उत्थान कार्य करने के लिए किसान वेश भूषा दान करते हुए कई युवा - युवतियों के बारे में सुना था। कुछ कम्युनिस्ट एजेंट होने

के लिए जाने जाते थे। कुछ करोड़पति के पुत्र थे, कुछ उच्च सरकारी अधिकारियों के पुत्र थे। सभी परेशानी की तलाश में थे, और बहुत शोर करने में सक्षम थे। एक को सावधान रहना था।

जवान स्टेशन से गाँव की तरफ निकल गया। वह पुलिसवालों के सामने कुछ गज की दूरी पर एक होश में आया। वह अपने ध्यान से अनभिज्ञ था। उसकी गर्दन के पीछे की खुजली ने उसे बताया कि वे उसे देख रहे थे और उसके बारे में बात कर रहे थे। वह खरोंच नहीं करता था या पीछे मुड़कर नहीं देखता था - वह बस एक सैनिक की तरह चलता था। उन्होंने झंडे-मस्तूल को मिट्टी के कुंडों के समूह के ऊपर एक त्रिकोणीय झंडे के साथ पीले कपड़े में लिपटा देखा। झंडे पर था

काले रंग में सिख प्रतीक, एक खंजर के माध्यम से चल रहा है और दो तलवारें नीचे से पार हो गईं। वह कांटेदार नाशपाती की झाड़ियों द्वारा दोनों ओर से धूल भरे रास्ते पर चला गया, जिसने इसे खेतों से निकाल दिया। पथ संकरा होने के कारण मिट्टी का झोपड़ा उस केंद्र में खुल जाता है, जहां साहूकार का घर, मस्जिद और मंदिर एक-दूसरे का सामना करते थे। पीपल के पेड़ के नीचे आधा दर्जन ग्रामीण एक-दूसरे से बातें करते हुए एक कम लकड़ी के मंच पर बैठे थे। पुलिसकर्मियों को देखते ही वे उठे और राम लाल के घर में उनका पीछा किया। किसी ने अजनबी की कोई सुध नहीं ली।

उन्होंने मंदिर के प्रांगण के खुले दरवाजे में कदम रखा। अंत में प्रवेश द्वार के सामने एक बड़ा हॉल था जिसमें ग्रंथ, ग्रन्थ, एक मखमली शामियाना के नीचे भड़कीले सिल्क्स में लिपटा हुआ था। एक तरफ दो कमरे थे। एक ईंट की सीढ़ी दीवार के साथ कमरों की छत तक चली गई। आंगन के उस पार एक ऊँचा परपेट वाला कुआँ था। कुएं के पास एक चार फुट का ईंट का स्तंभ खड़ा था, जो लंबे झंडे के साथ पीले कपड़े के साथ मस्तूल का समर्थन कर रहा था।

युवक ने किसी के बारे में नहीं देखा। वह भीगने की आवाज सुन सकता था पत्थर की पटिया पर पीटे जा रहे कपड़े। वह डरकर कुएं के दूसरी तरफ चला गया। एक बूढ़ा सिख अपनी दाढ़ी और सफेद शॉर्ट्स से पानी टपकने लगा।

'सत श्री अकाल।'

'सत श्री अकाल।'

'क्या मैं दो या तीन दिन रुक सकता हूँ?'

'यह एक गुरुद्वारा है, जो गुरु का घर है - यहां कोई भी रह सकता है। लेकिन आपको अपना सिर ढक कर रखना चाहिए और आपको सिगरेट या तम्बाकू नहीं लाना चाहिए, न ही धूम्रपान करना चाहिए।'

मैं धूम्रपान नहीं करता, 'युवक ने जमीन पर होल्ड लगाते हुए कहा और अपना रूमाल उसके सिर पर फैला दिया।

'नहीं, बाबू साहब, जब आप ग्रन्थ साहिब बुक के पास जाते हैं, तो आप अपने जूते उतार देते हैं और अपना सिर ढक लेते हैं। अपना सामान उस कमरे में रखें और खुद को सहज बनाएं। क्या आपके पास खाने के लिए कुछ होगा?'

'यह आपका बड़प्पन है। लेकिन मैं अपना खाना खुद लाई हूँ।'

बूढ़े ने आगंतुक को अतिरिक्त कमरे में दिखाया और फिर कुएँ पर वापस चला गया। युवक कमरे में चला गया। इसका एकमात्र फर्नीचर बीच में पड़ा एक चारपाई था। एक दीवार पर एक बड़ा रंगीन कैलेंडर था। इसमें एक हाथ पर बाज के साथ घोड़े पर गुरु की तस्वीर थी। कैलेंडर के साथ-साथ कपड़े लटकाने के लिए नाखून थे।

आगंतुक ने अपना होल्ड खाली कर दिया। उसने अपना हवाई गद्दा निकाल लिया और उसे चारपाई पर उड़ा दिया। उन्होंने पजामा और गद्दे पर एक रेशम ड्रेसिंग गाउन बिछाया।

उन्होंने सार्डिन का एक टिन, ऑस्ट्रेलियाई मक्खन का एक टिन और सूखे बिस्कुट का एक पैकेट निकाला। उसने अपनी पानी की बोतल हिला दी। वो खाली था।

बूढ़ा सिख उसके पास आया, उसकी लंबी दाढ़ी को अपनी उंगलियों से सहलाते हुए। 'तुम्हारा नाम क्या है?' उसने पूछा, दहलीज पर बैठे। 'इकबाल। आपका क्या है?'

'इकबाल सिंह?' बूढ़े को समझा दिया। बिना उत्तर की प्रतीक्षा किए, वह चलता रहा। 'मैं मंदिर का भाई हूँ। भाई मीत सिंह। मनो माजरा, इकबाल सिंहजी में आपका क्या व्यवसाय है? '

युवक को राहत मिली कि दूसरा उसके पहले सवाल पर नहीं गया था। उसे यह कहने की ज़रूरत नहीं थी कि वह इकबाल क्या था। वह एक मुस्लिम, इकबाल मोहम्मद हो सकता है। वह एक हिंदू, इकबाल चंद या एक सिख, इकबाल सिंह हो सकता है। यह तीन समुदायों में आम कुछ नामों में से एक था। एक सिख गाँव में, एक इकबाल सिंह को कोई शक नहीं होगा कि एक बेहतर सौदा हो, भले ही उसके बाल काटे गए हों और उसकी दाढ़ी मुंटी हुई हो, इकबाल मोहम्मद या इकबाल चंद की तुलना में। वह स्वयं कुछ धार्मिक भावनाएँ रखते थे।

'मैं एक सामाजिक कार्यकर्ता, भाईजी। हमारे गांवों में बहुत कुछ किया जाना है। अब इस विभाजन के साथ इतना खून बह रहा है, इसे रोकने के लिए किसी को कुछ करना होगा। मेरी पार्टी ने मुझे यहां भेजा है, क्योंकि यह स्थान शरणार्थी आंदोलनों के लिए एक महत्वपूर्ण बिंदु है। यहां मुसीबत विनाशकारी होगी। '

भाई को इकबाल के कब्जे में कोई दिलचस्पी नहीं थी। 'आप कहाँ से हैं, इकबाल सिंहजी?'

इकबाल जानते थे कि उनका मतलब अपने पूर्वजों से है और खुद से नहीं।

'मैं जिले के हैं झेलम-अब में पाकिस्तान-लेकिन मैं विदेशी देशों में एक लंबे समय के लिए किया गया है। यह दुनिया को देखने के बाद है कि कोई महसूस करता है कि हम कितने पिछड़े हुए हैं और कोई इसके बारे में काम करना चाहता है। इसलिए मैं सामाजिक कार्य करता हूँ। '

'वे आपको कितना भुगतान करते हैं?'

इकबाल ने इन सवालों को टालना नहीं सीखा था।

'मुझे बहुत अधिक वेतन नहीं मिलता है। बस मेरा खर्च। '

'क्या वे आपकी पत्नी और बच्चों का खर्च भी वहन करते हैं?' 'नहीं भाईजी। मैं शादीशुदा नहीं हूँ। मैं वास्तव में ...'

'कितने साल के हो?'

'सत्ताईस। मुझे बताओ, क्या अन्य सामाजिक कार्यकर्ता इस गांव में आते हैं? ' इकबाल ने मीट सिंह से पूछताछ बंद करने के लिए सवाल पूछने का फैसला किया।

'कभी-कभी अमेरिकी पैडर्स आते हैं।'

'क्या आपको उनके गाँव में उनका प्रचारक ईसाई धर्म पसंद है?'

'सभी का अपने धर्म में स्वागत है। यहाँ अगले दरवाजे पर एक मुस्लिम मस्जिद है। जब मैं अपने गुरु से प्रार्थना करता हूँ, चाचा इमाम बख्श अल्लाह को पुकारते हैं। कितने

यूरोप में धर्म हैं? '

'वे सभी एक तरह के या दूसरे ईसाई हैं। वे अपने धर्मों के बारे में झगड़ा नहीं करते हैं जैसा कि हम यहां करते हैं। वे वास्तव में धर्म के बारे में बहुत परेशान नहीं करते हैं। '

'तो मैंने सुना है,' मीट सिंह ने बहुत सोच-समझकर कहा। 'इसीलिए उनकी कोई नैतिकता नहीं है। साहब और उनकी पत्नियाँ अन्य साहब और उनकी पत्नियों के बारे में जाना करते हैं। यह अच्छा नहीं है, है ना? '

इकबाल ने कहा, "लेकिन वे झूठ नहीं बोलते हैं जैसे हम करते हैं और वे भ्रष्ट और बेईमान नहीं हैं।"

उन्होंने अपने टिन सलामी बल्लेबाज को आउट किया और सार्डिन के टिन को खोला। उसने एक बिस्किट पर मछली को फैलाया और खाना खाते समय बात करना जारी रखा।

'नैतिकता, मीट सिंहजी, पैसे की बात है। गरीब लोग नैतिकता का जोखिम नहीं उठा सकते। इसलिए उनका धर्म है। हमारी पहली समस्या लोगों को अधिक भोजन, वस्त्र, आराम दिलाना है। यह केवल अमीरों द्वारा शोषण को रोककर, और जमींदारों को समाप्त करके किया जा सकता है। और वह केवल सरकार को बदलकर किया जा सकता है। '

मिलते हैं, घृणित मोह के साथ, सिर, आंखें और पूंछ के साथ मछली खाते हुए युवक को देखा। उन्होंने ग्रामीण ऋणग्रस्तता, औसत राष्ट्रीय आय और पूंजीवादी शोषण पर व्याख्यान पर अधिक ध्यान नहीं दिया, जो दूसरे ने सूखे बिस्कुट के गुच्छे के साथ डाला। जब इकबाल ने खाना खा लिया तो मीट सिंह उठ गया और उसे अपने घड़े से पानी का एक गिलास लाया। इकबाल ने बात करना बंद नहीं किया। भाई के बाहर जाने पर ही उन्होंने आवाज उठाई।

इकबाल ने अपनी जेब से सिलोफ़न पेपर का एक छोटा पैकेट तैयार किया, उसमें से एक सफेद गोली ली और उसे टम्बलर में गिरा दिया। उन्होंने मीट सिंह के अंगूठे को देखा था, जो नाखून के नीचे गंदगी के काले अर्धचंद्र के साथ पानी में डूबा हुआ था। किसी भी मामले में यह एक कुएं से बाहर था जिसे कभी भी क्लोरीनयुक्त नहीं किया जा सकता था।

'क्या तुम बीमार हो?' दूसरे व्यक्ति से पूछा कि गोली को भंग करने के लिए दूसरे इंतजार को देखकर।

'नहीं, यह मेरे भोजन को पचाने में मेरी मदद करता है। हम शहरवासियों को भोजन के बाद इस तरह की जरूरत है। '

इकबाल ने अपना भाषण फिर से शुरू किया। 'यह सब जोड़ने के लिए,' उन्होंने जारी रखा, 'पुलिस व्यवस्था है जो नागरिक की सुरक्षा के बजाय, उसके साथ दुर्व्यवहार करती है और भ्रष्टाचार और रिश्वत पर जीवन जीती है। आप सब जानते हैं, मुझे यकीन है। '

बूढ़े ने सहमति में अपना सिर हिलाया। इससे पहले कि वह टिप्पणी कर पाता, युवक ने फिर से बात की। 'मेरे साथ उसी ट्रेन में एक इंस्पेक्टर के साथ पुलिसकर्मियों का दल आया। उन्हें कोई संदेह नहीं है कि सभी मुर्गियां खाएंगी, इंस्पेक्टर रिश्वत में थोड़ा पैसा कमाएगा, और वे अगले पर चले जाएंगे

गाँव। एक को लगता है कि उनके पास लोगों के अलावा और कुछ नहीं था। ' पुलिस

के संदर्भ ने बूढ़े व्यक्ति को उसके अनुपस्थित दिमाग से जगाया सुना रहा है। 'तो पुलिस आखिर आ गई। मुझे जाना चाहिए और देखना चाहिए कि वे क्या कर रहे हैं। उन्हें साहूकार के घर पर होना चाहिए। गुरुद्वारे से कुछ ही दूरी पर कल रात उसकी हत्या कर दी गई। डकैतों ने बहुत सारी नकदी ले ली और उन्होंने कहा कि उनकी महिलाओं से चांदी और सोने के आभूषणों में पांच हजार रुपये से अधिक की रकम है। '

मीत सिंह ने अपने द्वारा बनाई गई रुचि को महसूस किया और धीरे-धीरे उठते हुए दोहराया, 'मुझे जाना चाहिए। सारा गाँव वहाँ होगा। वे लाश को मेडिकल जांच के लिए ले जाएंगे। अगर किसी आदमी की मौत हो जाती है तो उसका अंतिम संस्कार नहीं किया जा सकता, जब तक कि डॉक्टर उसे मृत घोषित नहीं कर देता।' बूढ़े ने एक मुस्कराहट दी।

'एक खून! क्यों, उसकी हत्या क्यों की गई?' हकलाया हुआ इकबाल, कुछ हद तक हतप्रभ। उन्हें आश्चर्य हुआ कि मीत सिंह ने इस बार अगले दरवाजे के पड़ोसी की हत्या का उल्लेख नहीं किया। 'क्या यह सांप्रदायिक था? क्या यहाँ रहना मेरे लिए सब ठीक है? मुझे नहीं लगता कि अगर गांव एक हत्या को लेकर उत्साहित है तो मैं बहुत कुछ कर सकता हूँ।'

'क्यों, बाबू साहब, आप हत्या बंद करने आए हैं और आप एक हत्या से परेशान हैं?' मीत सिंह ने मुस्कराते हुए पूछा। 'मुझे लगा कि तुम बाबू साहब की ऐसी बातों को रोकने आए थे। लेकिन आप मनो माजरा में काफी सुरक्षित हैं, 'उन्होंने कहा। 'डकैत साल में एक बार से ज्यादा एक ही गांव में नहीं आते हैं। कुछ दिनों में एक और गाँव में एक और डकैती होगी और लोग इस बारे में भूल जाएंगे। हम शाम की प्रार्थना के बाद एक रात यहां एक बैठक कर सकते हैं और आप उन सभी को बता सकते हैं जो आप चाहते हैं। आपके पास बेहतर आराम था। मैं वापस आऊंगा और आपको बताऊंगा कि क्या होता है।'

बूढ़ा आंगन से बाहर निकल आया। इकबाल ने खाली टिन, उनके चाकू और कांटा और टिन की प्लेट एकत्र की और उन्हें धोने के लिए कुएं पर ले गए।

दोपहर में, इकबाल ने मोटे तार चारपाई पर खुद को फैलाया और कुछ नींद लेने की कोशिश की। उन्होंने भीड़ - भाड़ वाले थर्ड-क्लास डिब्बे में अपने बिस्तर पर बैठकर रात बिताई थी। हर बार जब वह बंद हो जाता था, तब ट्रेन किसी तरह स्टेशन पर रुकती थी और दरवाजा खुला रहता था और अधिक किसान अपनी पत्नियों, बिस्तर और टिन की चड़ी के साथ अंदर जाते थे। अपनी मां की गोद में सो रहे कुछ बच्चे तब तक रोना शुरू कर देते थे जब तक कि उसके मुंह में स्तन घुसेड़कर उसकी पूंछ नहीं गल जाती। जब तक ट्रेन स्टेशन से बाहर नहीं निकली, तब तक चीख-पुकार और हंगामा जारी रहेगा। एक ही बात को बार-बार दोहराया गया, जब तक कि डिब्बे का मतलब पचास नहीं था, उसमें लगभग दो सौ लोग थे, फर्श पर, सीटों पर, सामान की रैक पर, चड़ी पर, बेडरेक पर, और एक दूसरे पर, या खड़े होकर। कोनों। वहाँ बाहर दर्जनों अनिश्चित रूप से बैठे थे

फुटबोर्ड, दरवाजे के हैंडल पर पकड़। छत पर कई लोग थे। गर्मी और गंध दमनकारी थी। टैपरों को भून दिया गया था और हर कुछ मिनटों के बाद एक बहस शुरू हो जाती थी क्योंकि किसी ने खुद को बहुत ज्यादा फैला लिया था या किसी दूसरे के पैर में लावारिस के रास्ते पर रखा था। इस तर्क को दोस्तों या रिश्तेदारों द्वारा और फिर सभी अन्य लोगों द्वारा इसे पैच अप करने की कोशिश में शामिल किया जाएगा। इकबाल ने दुनिया भर में धूम मचाने वाली पतंगों की परछाई से घिरे मंद प्रकाश में पढ़ने की कोशिश की थी। अपने पड़ोसी द्वारा देखे जाने से पहले उसने शायद ही कोई पैराग्राफ पढ़ा हो:

'तुम पढ़ रहे हो।' 'हाँ, मैं पढ़

रहा हूँ।' 'तुम क्या पढ़ रहे

हो?' 'एक किताब।'

यह काम नहीं किया था। उस शख्स ने बस इकबाल के हाथ से किताब निकाल ली और उसके पन्ने पलट दिए।

'अंग्रेज़ी।'



'तुम्हें शिक्षित होना चाहिए।'  
इकबाल ने कोई टिप्पणी  
नहीं की।

पुस्तक जांच के लिए डिब्बे के चारों ओर घूम गई थी। वे सब उस पर नजर गड़ाए हुए थे। वह शिक्षित था, इसलिए एक अलग वर्ग का था। वह एक बाबू था।

'आपके सम्मान के लिए क्या सम्मानजनक संज्ञा है?'

'मेरा नाम इकबाल है।'

'आपका इकबाल [शोहरत] कभी भी बढ़ सकता है।'

वह व्यक्ति स्पष्ट रूप से उसे मुसलमान होने के लिए ले गया था। अच्छा ही है।

पाकिस्तान जाते समय सभी यात्री मुस्लिम दिखाई दिए।

'तुम्हारा धन कहाँ रहता है, बाबू साहब?'

'मेरा गरीब घर झेलम जिले में है,' इकबाल ने बिना किसी जलन के जवाब दिया। जवाब में उनके मुस्लिम होने की संभावना की पुष्टि की गई: झेलम पाकिस्तान में थी।

इसके बाद अन्य यात्री जिरह में शामिल हुए थे। इकबाल को उन्हें बताना था कि उसने क्या किया, उसकी आय का स्रोत क्या था, उसकी कीमत कितनी थी, उसने कहाँ पढ़ाई की थी, उसने शादी क्यों नहीं की थी, वह सभी बीमारियाँ जो उसने कभी झेली थीं। उन्होंने अपनी घरेलू समस्याओं और बीमारियों पर चर्चा की थी और उनसे सलाह ली थी। क्या इकबाल को किसी ऐसे गुप्त नुस्खे या जड़ी-बूटियों के बारे में पता था, जो अंग्रेज तब इस्तेमाल करते थे जब वे 'रन डाउन' होते थे? इकबाल ने सोने या पढ़ने की कोशिश छोड़ दी थी। उन्होंने सुबह के शुरुआती घंटों तक बातचीत जारी रखी थी। उन्होंने यात्रा को अपर्याप्त बताया होगा

सिवाय इसके कि भारत में मानवीय धीरज की जो सीमाएँ खिंची जा सकती हैं, उसने इस शब्द को अर्थहीन बना दिया। वह राहत की सांस लेकर मनो माजरा पर पहुंच गया। वह ताजी हवा में सांस ले सकता था। वह एक लंबे समय तक काम करने के लिए उत्सुक था।

लेकिन इकबाल को नींद नहीं आती थी। कमरे में वेंटिलेशन नहीं था। इसमें मटमैली मिट्टी की गंध थी। बासी कोनों के ढेर में कपड़ों का ढेर स्पष्ट मक्खन था, और चारों तरफ मक्खियाँ भिनभिना रही थीं। इकबाल ने उसके चेहरे पर रूमाल फैला दिया। वह मुश्किल से सांस ले पा रहा था। इन सबके साथ, जिस तरह वह हार मानने में सफल रहे, मीट सिंह दार्शनिक रूप से उत्कृष्ट प्रदर्शन करने के लिए आए:

One's साथी ग्रामीण को लूटना किसी की मां से चोरी करने जैसा है। इकबाल सिंहजी, यह कलयुग है - अंधकार युग। क्या आपने कभी डकैतों को अपने पड़ोसी के घरों को लूटने के बारे में सुना है? अब सारी नैतिकता दुनिया छोड़ चुकी है।'

इकबाल ने अपने चेहरे से रूमाल हटा दिया। 'क्या हुआ है?'

'क्या हुआ है?' सिंह से बार-बार मिलना, आश्चर्यचकित करने वाला है। 'मुझसे पूछो क्या नहीं हुआ है! जुग्गा- जुग्गा के लिए भेजी गई पुलिस एक बदमाश नंबर दस [पुलिस रजिस्टर की संख्या से जिसमें बुरे पात्रों के नाम सूचीबद्ध हैं]। लेकिन जुग्गा फरार हो गया था, फरार हो गया। इसके अलावा, लूट का कुछ सामान - चूड़ियों का एक बैग - उसके आंगन में पाया गया था। तो हम जानते हैं कि यह किसने किया। यह पहली हत्या नहीं है - उसने इसे अपने खून में किया है। उनके पिता और दादा भी डकैत थे और उन्हें हत्या के लिए फांसी पर लटका दिया गया था। लेकिन उन्होंने अपने ही गांव के लोगों को कभी नहीं लूटा। तथ्य की

बात के रूप में, जब वे घर पर थे, कोई भी डकैत मनो माजरा में नहीं आया। जुगुत सिंह ने अपने परिवार को बदनाम किया है। '

इकबाल अपना माथा रगड़ते हुए उठ बैठा। उनके देशवासियों के आचार संहिता ने हमेशा उन्हें हैरान कर दिया था, चीजों को देखने के उनके शानदार तरीके से। पंजाबी का कोड और भी अधिक चौंकाने वाला था। उनके लिए सत्य, सम्मान, वित्तीय ईमानदारी right सब ठीक 'था, लेकिन इन्हें किसी के नमक, एक के दोस्तों और साथी ग्रामीणों के लिए सही होने के बजाय मूल्यों के पैमाने से नीचे रखा गया था। दोस्तों के लिए आप अदालत में झूठ बोल सकते हैं या धोखा दे सकते हैं, और कोई भी आपको दोषी नहीं ठहराएगा। इसके विपरीत, आप एक *नरमी* - ए - *हीम* -मैन बन गए थे, जिसने प्राधिकरण (मजिस्ट्रेट और पुलिस) और धर्म (धर्मग्रंथ पर शपथ) को परिभाषित किया था, लेकिन दोस्ती के लिए सही साबित हुआ। यह ग्रामीण समाज का प्रक्षेपण था जहाँ गाँव में हर कोई एक रिश्ता था और गाँव के प्रति वफादारी सर्वोच्च परीक्षा थी। पुजारी, मीट सिंह को जो परेशान करता था, वह यह नहीं था कि जुग्गा ने हत्या कर दी थी, बल्कि उसके हाथ साथी ग्रामीण के खून से लथपथ थे। अगर जुग्गा ने पड़ोस के गाँव में यही काम किया होता तो मीट सिंह खुशी से अपने बचाव में दिखाई देता और पवित्र ग्रन्थ पर शपथ लेता कि जुग्गा हत्या के समय गुरुद्वारे में प्रार्थना कर रहा था। इकबाल ने बात करने से तौबा कर ली थी

सिंह से मिलना पसंद है। उन्हें समझ नहीं आया। वह इस नतीजे पर पहुंचा था कि वह नहीं था।

मीत सिंह को निराशा हुई कि वह इकबाल की रुचि को भड़काने में असफल रहा।

'आपने दुनिया देखी है और कई किताबें पढ़ी हैं, लेकिन यह मुझसे ले लीजिए कि ए सांप अपने जहर को ढंक सकता है लेकिन उसके जहर को नहीं। यह कहावत सवा सौ रुपये की है। '

इकबाल ने बहुमूल्य कहा की प्रशंसा दर्ज नहीं की। मीत सिंह ने समझाया: 'जुग्गा कुछ समय से सीधे जा रहा था। उसने अपनी ज़मीन गिरवी रखी और अपने मवेशियों की देखभाल की। उन्होंने कभी गाँव नहीं छोड़ा, और प्रतिदिन खुद को लंबरदार की सूचना दी। लेकिन सांप कब तक सीधा रह सकता है? उसके खून में अपराध है। '

इकबाल ने जागते हुए कहा, 'किसी के खून में कोई गुनाह नहीं है, दूसरों के खून में अच्छाई नहीं है।' यह उनके पालतू सिद्धांतों में से एक था। 'क्या कोई कभी यह जानने के लिए परेशान होता है कि लोग चोरी और लूट और हत्या क्यों करते हैं? नहीं!

उन्हें जेल में डाल दिया या उन्हें फांसी दे दी। यह आसान है। अगर फांसी या सेल के डर से लोगों को मारने या चोरी करने से रोक दिया जाता, तो कोई हत्या या चोरी नहीं होती। ऐसा नहीं होता। वे इस प्रांत में हर दिन एक आदमी को लटकाते हैं। फिर भी हर चौबीस घंटे में दस हत्याएं हो जाती हैं। नहीं भाईजी, अपराधी पैदा नहीं होते। वे भूख, चाह और अन्याय से बने हैं। '

इकबाल ने इन अपराधों के साथ बाहर आने के लिए थोड़ा मूर्खतापूर्ण महसूस किया। उसे बातचीत को धर्मोपदेश में बदलने की इस आदत की जाँच करनी चाहिए। वह विषय पर लौट आया।

'अगर मुझे लगता है कि वे जुगागा को आसानी से प्राप्त कर लेंगे तो वह इस तरह का एक प्रसिद्ध चरित्र होगा।' 'जुग्गा बहुत दूर नहीं जा सकती। उसे एक कोस से पहचाना जा सकता है। वह किसी और की तुलना में हाथ की लंबाई है। डिप्टी साहब ने पहले ही सभी को आदेश भेज दिए हैं

जुगा पर नजर रखने के लिए पुलिस स्टेशन। '

'डिप्टी साहब कौन हैं?' इकबाल से पूछा।

'आप डिप्टी को नहीं जानते?' मीत सिंह को आश्चर्य हुआ। 'यह हुकुम चंद है। वह पुल के उत्तर में डाक बंगले में ठहरे हैं। अब हुकुम चंद एक सुनामी हैं। उन्होंने एक फुट-कांस्टेबल के रूप में शुरुआत की और देखें कि वह अब कहां हैं! वह हमेशा साहबों को प्रसन्न रखते थे और उन्होंने उन्हें एक के बाद एक पदोन्नति दी। पिछले एक ने उसे अपनी जगह दी और उसे उप बनाया। हां, इकबाल सिंहजी, हुकुम चंद एक सुनामी और चतुर हैं। वह अपने दोस्तों के लिए सच है और हमेशा उनके लिए काम करता है। उनके दर्जनों रिश्तेदारों ने अच्छी नौकरियां दी हैं। वह सौ में से एक है। हुकुम चंद के बारे में कुछ भी नकली नहीं है। '

'क्या वह तुम्हारा दोस्त है?'

'दोस्त? नहीं, नहीं, 'मीट सिंह का विरोध किया। 'मैं गुरुद्वारे का एक विनम्र भाई हूं और वह एक सम्राट है। वह सरकार है और हम उसके विषय हैं। अगर वह

मनो माजरा आता है, आप उसे देखेंगे। '

बातचीत में विराम लग गया। इकबाल ने अपने पैर उसकी सैंडल में खिसका दिए और उठ खड़ा हुआ।

'मुझे चलना चाहिए। आप मुझे किस रास्ते पर जाना चाहिए? '

। आप किसी भी दिशा में जाएं। यह सब एक ही खुला देश है। नदी पर जाओ। आप ट्रेनों को आते-जाते देखेंगे। यदि आप रेलमार्ग को पार करते हैं तो आपको डाक बंगला दिखाई देगा। बहुत देर मत करो। ये बुरे समय हैं और अंधेरे से पहले घर के अंदर होना सबसे अच्छा है। इसके अलावा, मैंने लंबरदार और अंकल इमाम बख्श से कहा है - वह मस्जिद का मुल्ला है - कि तुम यहाँ हो। वे आपसे बात करने के लिए आ रहे होंगे। '

'नहीं, मुझे देर नहीं होगी।'

इकबाल ने गुरुद्वारे से बाहर कदम रखा। अब गतिविधि का कोई संकेत नहीं था। पुलिस ने स्पष्ट रूप से जांच समाप्त कर दी थी। आधा दर्जन कांस्टेबल पीपल के पेड़ के नीचे चारपाई पर लेटे हुए थे। राम लाल के घर का दरवाजा खुला था। कुछ ग्रामीण आंगन में फर्श पर बैठ गए। एक महिला एक गाती में सवार थी जो रोने की सजा में समाप्त हो गई जिसमें अन्य महिलाएं शामिल हुईं। यह गर्म था और अभी भी है। मिट्टी की दीवारों पर धूप खिल गई।

इकबाल गुरुद्वारे की दीवार की छाया में चले गए। बच्चों ने खुद को इससे मुक्त कर लिया था। पुरुषों ने इसे एक मूत्रालय के रूप में इस्तेमाल किया था। एक मैगी कुतिया आठ स्किनी पिल्ले के कूड़े के साथ उसके किनारे पर लेटी हुई थी और उसके शिथिल उगड़ पर टगिंग कर रही थी।

गाँव के तालाब में लेन अचानक खत्म हो गई - भैंसों से भरा एक छोटा - सा गन्दा पानी जो उनके सिर से चिपका हुआ था।

एक पगडंडी ने तालाब को छोटा किया और एक सूखे जल के साथ गेहूं के खेतों से होकर नदी की ओर चला गया। इकबाल अपने कदमों को ध्यान से देखते हुए जलकुंभी के पास गया। लाहौर से पुल पर एक्सप्रेस आते ही वह नदी के किनारे पहुँचा। उन्होंने स्टील के क्रिस-क्रॉस के माध्यम से इसकी प्रगति देखी। सभी ट्रेनों की तरह यह भरी हुई थी। छत से, दरवाजे और खिड़कियों पर पैर नीचे की ओर लटक गए। दरवाजे और खिड़कियाँ सिर और बाँहों से जकड़े हुए थे। बोगियों के बीच बफर्स पर लोग थे। ट्रेन के टेल एंड पर लगी भैंसों पर दो लोग जमकर लात-घूंसे बरसा रहे थे। पुल पार करने के बाद ट्रेन ने रफ्तार पकड़ी। इंजन चालक ने सीटी बजाना शुरू कर दिया और तब तक उड़ाता रहा जब तक उसने मनो

माजरा स्टेशन को पार नहीं कर लिया। यह राहत की अभिव्यक्ति थी कि वे पाकिस्तान और भारत से बाहर थे।

इकबाल नदी की पुलिया की तरफ बढ़ गया। वह जाने की योजना बना रहा था इसके नीचे डाक बंगले की ओर जब उन्होंने एक सिख सैनिक को देखा

पुल के अंत में संतरी बॉक्स से उसे। इकबाल ने अपना विचार बदल दिया और साहसपूर्वक रेल तटबंध तक चला गया और मनो माजरा स्टेशन की ओर बढ़ गया। पैतरेबाज़ी ने संतरी के संदेह को दूर कर दिया। इकबाल सौ गज ऊपर गया और फिर लापरवाही से रेलवे लाइन पर बैठ गया।

पासिंग एक्सप्रेस ने अपने लेट सियास्ता से मनो माजरा को जगा दिया था। लड़कों ने तालाब में भैंसों पर पत्थर फेंके और उन्हें घर ले गए। महिलाओं के समूह खेतों में निकल गए और खुद को झाड़ियों के पीछे बिखेर दिया। राम लाल की लाश को ले जा रही एक बैलगाड़ी गाँव से निकल कर स्टेशन की ओर चली गई। इसकी सुरक्षा पुलिसकर्मियों ने की थी। कई ग्रामीण इसके साथ थोड़ी दूरी पर गए और फिर रिश्तेदारों के साथ वापस लौट गए।

इकबाल ने खड़े होकर चौतरफा देखा। रेलवे स्टेशन से लेकर विश्राम गृह की छत तक, पंपाओं के नालों के ऊपर, पुल से गाँव तक और रेलवे स्टेशन तक, पूरी जगह पुरुषों, महिलाओं, बच्चों, मवेशियों और कुत्तों से अटी पड़ी थी। आसमान में पतंगों की ऊँची-ऊँची कतारें थीं, कौवों की लंबी-लंबी कतारें कहीं से कहीं तक उड़ रही थीं और लाखों गौरैया पेड़ों को लेकर चहक रही थीं। भारत में कोई ऐसा स्थान कहां मिल सकता है जो जीवन के साथ नहीं था? इकबाल ने बंबई पहुंचने पर अपनी पहली प्रतिक्रिया के बारे में सोचा। मिलिंग भीड़-लाखों लोगों की उन्हें-ऑन Quayside, गलियों में, रेलवे प्लेटफॉर्म पर; रात में भी फुटपाथ लोगों से भरे थे। पूरा देश भीड़भाड़ वाले कमरे की तरह था। जब आबादी हर मिनट छह से पाँच लाख हो गई तो आप क्या उम्मीद कर सकते हैं ! इसने उद्योग या कृषि की सारी योजना को मजाक बना दिया। जनसंख्या में वृद्धि की जाँच में प्रयास का एक ही राशि क्यों नहीं खर्च करते हैं? लेकिन आप कैसे कामसूत्र की भूमि में, फाल्सी पूजा के घर और बेटे को पा सकते हैं?

इकबाल अपने गुस्से में आए दिवास्वप्न से जागते हुए स्टील की तारों के साथ झिलमिलाते हुए आवाज से जागा, जो रेलवे लाइनों के समानांतर चलता था। पुल के पास संतरी के डिब्बे के ऊपर का सिग्नल नीचे आ गया। इकबाल ने खड़े होकर अपने कपड़े उतारे। सूरज नदी के पार चला गया था। मैदानी क्षेत्र में फैले धुंधलके के रूप में रसेट आसमान ग्रे रंग का हो गया। शाम के तारे के पास एक नया चाँद जो एक पतले पैर की उँगलियों की तरह दिख रहा था। अप्रोचिंग ट्रेन की गड़गड़ाहट के ऊपर मुजेज़िन की प्रार्थना का आह्वान हुआ।

इकबाल ने अपना रास्ता आसानी से पा लिया। सभी गलियाँ मंदिर में मिलीं- मस्जिद-केंद्र में पीपल के पेड़ के साथ साहूकार के घर का त्रिकोण। राम लाल के घर से अभी भी जलभराव की आवाज़ें आती हैं। मस्जिद में, एक दर्जन लोग दो पंक्तियों में चुपचाप खड़े होकर अपने गुप्तांगों से गुजर रहे थे। गुरुद्वारे में, मीट सिंह, जो एक खाट पर मलमल में बँधी हुई किताब के पास बैठे थे, शाम की प्रार्थना का पाठ कर रहे थे। पाँच या छह पुरुष और महिलाएँ अर्धवृत्त में बैठे थे

एक तूफान लालटेन के आसपास और उसकी बात सुनी।

इकबाल सीधे अपने कमरे में गया और अंधेरे में अपनी चारपाई पर लेट गया। उसने बड़ी मुश्किल से अपनी आँखें बंद कीं जब उपासक जप करने लगे। केवल दो मिनट के लिए जप बंद हो गया, केवल फिर से शुरू करने के लिए। समारोह 'सत श्री अकाल' के जयकारों और ढोल की थाप के साथ समाप्त हुआ। पुरुष और महिलाएं बाहर निकले। मीत सिंह ने लालटेन को धारण किया और उन्हें अपने जूते खोजने में मदद की। वे जोर-जोर से बातें करने लगे। बाबेल में इकबाल का एकमात्र शब्द 'बाबू' था। किसी ने इकबाल पर ध्यान दिया था, जो दूसरों को बताया था। कुछ फुसफुसाते हुए और फिर पैरों को हिलाते हुए चुप हो गया।

इकबाल ने एक बार फिर अपनी आँखें बंद कर लीं। एक मिनट बाद मीत सिंह लालटेन पकड़े दहलीज पर खड़ा था।

'इकबाल सिंहजी, क्या आप बिना भोजन किए बिस्तर पर चले गए हैं? क्या आप कुछ पालक खाना पसंद करेंगे? मेरे पास दही और छाछ भी है।'

'नहीं, धन्यवाद, भाईजी। मुझे जो भोजन चाहिए, वह मेरे पास है।' 'हमारा खराब खाना ...' सिंह से मिलने लगा।

'नहीं, नहीं, ऐसा नहीं है कि,' इकबाल ने बैठे होने में बाधा डाली, 'यह सिर्फ इतना है कि मेरे पास है और अगर मैं इसे नहीं खाता तो बर्बाद हो सकता है। मैं थोड़ा थक गया हूँ और सोना चाहूँगा।'

'तब तुम्हारे पास थोड़ा दूध होना चाहिए। बंबा सिंह, लंबरदार, आपको कुछ ला रहा है। अगर आप जल्दी सोना चाहते हैं तो मैं उनसे कहूँगा कि आप जल्दी उठें। मेरे पास छत पर तुम्हारे लिए एक और चरपई है। यहां सोना बहुत गर्म है।' मीत सिंह तूफान के लालटेन को कमरे में छोड़कर अंधेरे में गायब हो गया।

लंबरदार से बात करने की संभावना बहुत रोमांचक नहीं थी। इकबाल ने अपने चांदी के कूल्हे की कुप्पी तकिए के नीचे से निकाली और व्हिस्की का एक लंबा स्वाग लिया। उसने कुछ सूखे बिस्कुट खाए जो कागज के पैकेट में थे। वह अपना गद्दा और तकिया छत पर ले गया जहाँ उसके लिए एक चारपाई बिछाई गई थी। मीत सिंह जाहिरा तौर पर गुरुद्वारे की सुरक्षा के लिए आंगन में सोते थे।

इकबाल अपनी चारपाई पर लेट गया और तिमंजिले आकाश में तारों को देखा, जब तक कि उसने गुरुद्वारे में कई आवाजें सुनाई नहीं दीं और सीढ़ियां चढ़ने लगा। फिर वह आगंतुकों का अभिवादन करने के लिए उठे।

'सत श्री अकाल, बाबू साहब।'

'सलाम टू यू, बाबू साहब।'

उन्होंने हाथ हिलाया। मीत सिंह ने उनका परिचय कराने की जहमत नहीं उठाई। इकबाल ने आगंतुकों के लिए चारपाई पर जगह बनाने के लिए हवा के गद्दे को एक तरफ धकेल दिया। वह खुद फर्श पर बैठ गया।

सिख ने कहा, "मुझे खुद को प्रस्तुत नहीं करने पर शर्म आती है।" 'कृपया मुझे माफ़ करें। मैं तुम्हारे लिए कुछ दूध लाया हूँ।'

'हां, साहब, हमें खुद पर शर्म आती है। आप हमारे मेहमान हैं और हमारे पास हैं

आप किसी भी सेवा प्रदान नहीं की। ठंडा होने से पहले दूध पी लें, 'दूसरे आगंतुक ने कहा। वह एक लंबा दुबला-पतला आदमी था, जिसकी एक दाढ़ी थी।

'यह बहुत दयालु है ... मुझे पता है कि आप पुलिस के साथ व्यस्त हैं ... मैं दूध नहीं पीता। सचमुच मैं नहीं। हम शहरवासी ... '

लम्बरदार ने इकबाल के अच्छे प्रदर्शनों की अनदेखी की। उसने एक बड़े पीतल के टम्बलर से अपने गंदे रूमाल को हटा दिया और दूध को अपनी तर्जनी से हिलाना शुरू कर दिया। 'यह ताजा है। मैंने भैंस को केवल एक घंटे पहले दूध पिलाया और पत्नी को उसे उबालने के लिए मिला। मुझे पता है कि आप शिक्षित लोग केवल उबला हुआ दूध पीते हैं। इसमें काफी चीनी होती है; यह सबसे नीचे है, 'उन्होंने अंतिम हलचल के साथ जोड़ा। दूध की गुणवत्ता पर जोर देने के लिए, उन्होंने अपनी तर्जनी पर बंद क्रीम का एक स्लैब उठाया और वापस दूध में थप्पड़ मार दिया।

'इधर, बाबूजी, जुकाम होने से पहले पी लो।'

'नहीं! नहीं! नहीं, धन्यवाद, नहीं!' विरोध किया इकबाल ने। वह यह नहीं जानता था कि आगंतुकों को अपमानित किए बिना कैसे अपनी भविष्यवाणी से बाहर निकलना है। 'मैं कभी दूध नहीं पीता। लेकिन अगर आप जिद करेंगे तो मैं बाद में इसे पी लूंगा। मुझे यह ठंडा पसंद है।'

'हाँ, आप इसे वैसे ही पीते हैं, जैसे बाबूजी,' मुसलमान ने कहा, उसके पास आकर बचाव। 'बंता सिंह, यहाँ के टम्बलर को छोड़ दो। भई इसे सुबह वापस लाएंगे।'

लम्बरदार ने अपने रूमाल से टम्बलर को कवर किया और इसे नीचे रख दिया इकबाल की चारपाई। काफी लंबा विराम था। इकबाल को अपने सभी क्लॉट किए हुए क्रीम के साथ दूध को नाली में डालने के सुखद दृश्य थे।

'अच्छा, बाबूजी,' मुसलमान शुरू हुआ। 'हमें कुछ बताओ। दुनिया में क्या हो रहा है? पाकिस्तान और हिंदुस्तान के बारे में यह सब क्या है?'

'हम इस छोटे से गाँव में रहते हैं और कुछ भी नहीं जानते हैं,' लम्बरदार ने कहा। "बाबूजी, हमें बताओ, अंग्रेजी क्यों छोड़ दी?'

इकबाल को नहीं पता था कि इन जैसे सरल सवालों का जवाब कैसे दिया जाता है। आजादी का मतलब इन लोगों से बहुत कम या कुछ भी नहीं था। वे भी नहीं पता था कि यह एक कदम आगे था और सभी वे करते हैं करने के लिए आवश्यक अगला कदम उठाने और चालू करने के लिए किया गया है कि मेकअप का मानना है कि एक वास्तविक आर्थिक एक में राजनीतिक स्वतंत्रता।

'उन्होंने छोड़ दिया क्योंकि उन्हें करना था। हमारे पास युद्ध में लड़ने के लिए प्रशिक्षित हजारों युवा थे। इस बार उनके पास हथियार भी थे। क्या आपने भारतीय नाविकों की बगावत के बारे में नहीं सुना है? सैनिकों ने भी यही किया होगा। अंग्रेज भयभीत थे। उन्होंने जापानियों द्वारा स्थापित भारतीय राष्ट्रीय सेना में शामिल होने वाले किसी भी भारतीय को गोली नहीं मारी, क्योंकि उन्हें लगा कि पूरा देश उनके खिलाफ हो जाएगा।'

इकबाल की थीसिस ने ज्यादा बर्फ नहीं काटी।

"बाबूजी, आप जो कहते हैं, वह सही हो सकता है।" लम्बरदार ने संकोच के साथ कहा। 'लेकिन मैं

आखिरी युद्ध में था और मेसोपोटामिया और गैलीपोली में लड़ा था। हमें अंग्रेज अधिकारी पसंद थे। वे भारतीय से बेहतर थे।'

'हां,' मीट सिंह को जोड़ा, 'मेरा भाई जो हवलदार है, कहता है कि सभी सिपाही भारतीय के साथ अंग्रेजी अधिकारियों के साथ अधिक खुश हैं। मेरे भाई के कर्नल मेमसाब अब भी लंदन से मेरी भतीजी की चीजें भेजते हैं। आप जानते हैं, लम्बरदार साहब ने अपनी शादी में पैसे भी भेजे थे। भारतीय अधिकारियों की पत्नियां क्या करेंगी?'

इकबाल ने आक्रामक व्यवहार करने की कोशिश की। 'क्यों, क्या तुम लोग आज़ाद नहीं होना चाहते? क्या आप जीवन भर गुलाम बने रहना चाहते हैं? '

लंबी चुप्पी के बाद लंबरदार ने जवाब दिया: 'स्वतंत्रता एक अच्छी चीज होनी चाहिए। लेकिन हम इससे क्या निकलेंगे? आप जैसे शिक्षित लोगों को, बाबू साहब को अंग्रेजी में रोजगार मिलेगा। क्या हमें ज्यादा जमीन या ज्यादा भैंस मिलेगी? '

'नहीं,' मुस्लिम ने कहा। 'आजादी शिक्षित लोगों के लिए है, जिन्होंने इसके लिए संघर्ष किया। हम अंग्रेजी के गुलाम थे, अब हम शिक्षित भारतीयों-या पाकिस्तानियों के गुलाम होंगे। '

इकबाल विश्लेषण पर चौंका।

'आप जो कहते हैं वह बिल्कुल सही है,' वह गर्मजोशी से सहमत हुआ। 'यदि आप चाहते हैं कि आपके लिए स्वतंत्रता का मतलब है - किसानों और श्रमिकों-आपको एक जुट होकर लड़ना होगा। बनिया कांग्रेस सरकार को बाहर करो। हाकिमों और जमींदारों से छुटकारा पाइए और आजादी का मतलब आपके लिए वही होगा जो आप सोचते हैं कि यह होना चाहिए। ज्यादा जमीन, ज्यादा भैंस, कोई कर्ज नहीं। '

'यही तो है कि साथी ने हमें बताया,' मीट सिंह को बाधित किया, 'उस साथी ने ... लंबरदार, उसका नाम क्या था? कॉमरेड समथिंग- ऑर - अदर। क्या आप कॉमरेड हैं, बाबू साहब? '

'नहीं।'

'मैं खुश हूँ। उस कॉमरेड को ईश्वर पर विश्वास नहीं था। उन्होंने कहा कि जब उनकी पार्टी सत्ता में आएगी तो वे तरनतारन में मंदिर के चारों ओर पवित्र तालाब की परिक्रमा करेंगे और उसमें चावल लगाएंगे। उन्होंने कहा कि यह अधिक उपयोगी होगा। '

इकबाल ने विरोध जताया। उन्होंने चाहा कि मीट सिंह को कॉमरेड का नाम याद हो। आदमी को मुख्यालय को सूचित किया जाना चाहिए और उसे काम पर ले जाना चाहिए।

'अगर हमें ईश्वर पर भरोसा नहीं है तो हम जानवरों की तरह हैं,' मुस्लिम ने गंभीरता से कहा। 'सारी दुनिया एक धार्मिक आदमी का सम्मान करती है। गांधी को देखो! मैंने सुना है कि वह कुरान और शरीफ और वेदों और शास्त्रों के साथ कुरान पढ़ता है। लोग पृथ्वी के चारों कोनों में उसकी प्रशंसा गाते हैं। मैंने गांधी की प्रार्थना सभा के एक अखबार में एक तस्वीर देखी है। इसमें कई गोरे पुरुषों और महिलाओं को क्रॉस लेग करते हुए दिखाया गया है। एक गोरी लड़की ने अपनी आँखें बंद कर ली थीं। उन्होंने कहा कि वह

बड़ी भगवान की बेटी थी। आप देखें, मीट सिंह, यहां तक कि अंग्रेजी भी धर्म के व्यक्ति का सम्मान करते हैं। '

'बेशक, चाचा। जो कुछ आप कहते हैं वह रुपये के सोलहवें अन्ना के लिए सही है, 'मीट सिंह ने अपना पेट चीरते हुए सहमति व्यक्त की।

इकबाल को उनका गुस्सा बढ़ गया। उन्होंने कहा, " वे चार-बिसवां दशा की दौड़ हैं।" [भारतीय दंड संहिता की धारा 420 धोखाधड़ी के अपराध को परिभाषित करती है।] 'वे जो कहते हैं, उस पर विश्वास न करें।'

एक बार फिर उसे लगा कि उसका विष उसके निशान से छूट गया है। लेकिन बड़े भगवान की बेटी अपनी आँखों के साथ क्रॉस-लेग करती हुई बैठी, फ़ोटोग्राफ़रों के फ़ायदे के लिए बंद हो गई, और बिग लॉर्ड ने खुद को सुंदर, हिंदुस्तानी बोलने वाले राजा का चचेरा भाई, जो मिशनरियों की तरह भारत से प्यार करता था - हमेशा इकबाल से बहुत अधिक था।

'मैं कई वर्षों से उनके देश में रह रहा हूँ। वे इंसानों की तरह अच्छे हैं। राजनीतिक रूप से वे दुनिया के सबसे बड़े चार-बिसवां दशा हैं। अगर वे ईमानदार होते तो पूरी दुनिया में अपना डोमेन नहीं फैलाते। हालांकि, यह अप्रासंगिक है, 'इकबाल ने कहा। विषय बदलने का समय आ गया था। 'क्या महत्वपूर्ण है: अब क्या होने जा रहा है?'

'हमें पता है कि क्या हो रहा है,' लंबरदार ने कुछ गर्मी से जवाब दिया। 'पूरे देश में विनाश की हवाएँ बह रही हैं। हम सब सुनते हैं मारना है, मारना है। स्वतंत्रता का आनंद लेने वाले ही चोर, लुटेरे और कटघरे हैं।' फिर उन्होंने शांति से जोड़ा: 'हम अंग्रेजों के अधीन बेहतर थे। कम से कम सुरक्षा थी।'

एक असहज सी खामोशी थी। एक इंजन ऊपर-नीचे हो रहा था रेलवे लाइन माल वैगनों के अपने भार को पुनः व्यवस्थित करती है। मुसलमान ने विषय बदल दिया।

'वह मालगाड़ी है। देर तो होनी ही चाहिए। बाबू साहब, आप थके हुए हैं; हमें आपको आराम करने देना चाहिए। अगर आपको हमारी जरूरत है, तो हम हमेशा आपकी सेवा में रहेंगे।'

वे सब उठ गए। इकबाल ने गुस्से का कोई निशान न दिखाते हुए अपने आगंतुकों से हाथ मिलाया। मीट सिंह ने लंबरदार और मुस्लिम को आंगन में ले जाया। वह फिर अपने चारपाई के लिए सेवानिवृत्त हुए।

इकबाल एक बार फिर लेट गया और सितारों को घूरने लगा। अभी भी विशाल मैदान में इंजन की शक्ति ने उसे अकेला और उदास महसूस कराया। क्या कर सकता है वह एक छोटे से आदमी कर चालीस करोड़ की इस विशाल अवैयक्तिक देश में?

क्या वह हत्या को रोक सकता था? बेशक नहीं। हर कोई- हिंदू, मुस्लिम, सिख, कांग्रेस, वामपंथी, अकाली, या कम्युनिस्ट - इसमें गहरा था। यह सुझाव देना कठिन था कि बुर्जुआ क्रांति को सर्वहारा वर्ग में बदला जा सकता है। मंच नहीं आया था। सर्वहारा वर्ग राजनीतिक स्वतंत्रता के प्रति उदासीन था

हिंदुस्तान या पाकिस्तान के लिए, सिवाय इसके कि जब एक अलग धार्मिक संप्रदाय के मालिक की हत्या करके ज़मीन हड़पने जैसा आर्थिक महत्व दिया जा सकता है। जो कुछ भी किया जा सकता था, वह सांप्रदायिक चैनलों से हत्या और हड़पने की प्रवृत्ति को हटाने और इसे उचित वर्ग के खिलाफ करने का था। यह सर्वहारा क्रांति का आसान तरीका था। उनकी पार्टी के बॉस इसे नहीं देखेंगे।

इकबाल की इच्छा थी कि वे किसी और को मनो माजरा भेजे। वह बहुत अधिक उपयोगी निर्देशन नीति होगी और अपने दिमाग से कोबियों को साफ करेगी। लेकिन वह नेता नहीं थे। उसके पास योग्यता की कमी थी। उन्होंने उपवास नहीं किया था। वह कभी जेल में नहीं रहा था। उसने कोई भी आवश्यक 'बलिदान' नहीं किया था। इसलिए, स्वाभाविक रूप से, कोई भी उसकी बात नहीं सुनेगा। उसे अदालत के कारावास का बहाना खोजकर अपना राजनीतिक जीवन शुरू करना चाहिए था। लेकिन अभी भी समय था। दिल्ली वापस आते ही वह ऐसा करता। तब तक नरसंहार खत्म हो जाएगा। यह काफी सुरक्षित होगा।

मालगाड़ी स्टेशन से बाहर निकल गई थी और पुल पर गिर गई थी। इकबाल सो गया, जेल में शांतिपूर्ण जीवन का सपना देख रहा था।

अगली सुबह, इकबाल को गिरफ्तार कर लिया गया।

मीट सिंह अपनी पीतल की मग पानी लेकर खेतों में चला गया था और टूथब्रश के रूप में इस्तेमाल की जाने वाली कीकर टहनी को चबाता था। इकबाल गुजरने वाली गाड़ियों,



मुअज्जिन की पुकार और दूसरे गाँव के शोर के कारण सो गया था। दो कांस्टेबल गुरुद्वारे में आए, अपने कमरे में देखते हुए, उनके सेल्युलॉइड कप और साँसर की जांच की, एल्यूमीनियम के चम्मच, कांटे और चाकू, उनके थर्मस को चमकाया, और फिर छत पर आ गए। उन्होंने इकबाल को बेरहमी से हिलाया। वह आँखें मूँद कर बैठ गया, कुछ घबराया हुआ। इससे पहले कि वह स्थिति को आकार दे पाता और कर्ट जवाब तैयार करता, जिसे वह देना चाहता था, उसने पुलिसकर्मियों को अपना नाम और व्यवसाय बताया था। उनमें से एक ने खाली कागज के पीले टुकड़े पर रिक्त स्थानों को भरा और इसे इकबाल की निमिष आँखों के सामने रखा।

'यहां आपकी गिरफ्तारी का वारंट है। उठ जाओ।'

दूसरे ने अपनी बेल्ट में एक जोड़ी हथकड़ी के एक छोर पर रिंग को खिसकाया और राउंड इकबाल की कलाई लगाने के लिए लिंक को अनलॉक किया। हथकड़ी की दृष्टि ने इकबाल को व्यापक जागृत कर दिया। वह बिस्तर से कूद गया और पुलिसकर्मियों का सामना किया।

'आपको इस तरह मुझे गिरफ्तार करने का कोई अधिकार नहीं है,' वह चिल्लाया। 'आपने मेरे सामने वारंट बनाया। बात यहीं खत्म नहीं होने वाली है। पुलिस शासन के दिन खत्म हो गए हैं। अगर आप मुझ पर हाथ डालने की हिम्मत करेंगे तो दुनिया इसके बारे में सुनेगी। मैं देखूंगा कि कागजात लोगों को बताते हैं कि आप कैसे अपना कर्तव्य निभाते हैं।'

पुलिसकर्मियों को आड़े हाथों लिया गया। युवक का उच्चारण, रबर तकिए और गद्दे और अन्य सभी चीजें जो उन्होंने कमरे में देखी थीं, और

इन सबसे ऊपर, उनके आक्रामक रवैये ने उन्हें असहज कर दिया। उन्हें लगा कि शायद उनसे कोई गलती हो गई है।

'बाबू साहब, हम केवल अपना कर्तव्य कर रहे हैं। आप इसे मजिस्ट्रेट के साथ सुलझाते हैं, 'उनमें से एक ने विनम्रता से जवाब दिया। दूसरे ने हथकड़ी के साथ बेचैनी से हाथापाई की।

'मैं इसे आप सभी के साथ सुलझाऊँगा -पुलिस और मजिस्ट्रेट! आओ और नींद में लोगों को परेशान! आपको इस गलती का पछतावा होगा।' इकबाल ने पुलिसकर्मियों के लिए कुछ कहने का इंतजार किया ताकि वह कानून और व्यवस्था के खिलाफ अपने काम पर जा सके। लेकिन वे दब गए थे।

'आपको इंतजार करना होगा। मुझे इकबाल को आक्रामक तरीके से धोना और बदलना और छोड़ना पड़ता है।'

'ठीक है, बाबू साहब। जब तक चाहो ले लो।'

पुलिसकर्मियों के नागरिक रवैये से इकबाल का गुस्सा शांत हुआ। उसने अपनी चीजें एकत्र कीं और सीढ़ियों से नीचे अपने कमरे में चला गया। वह कुएँ के पास गया, एक बाल्टी पानी निकाला और धोने लगा। वह कोई जल्दी में नहीं था।

भाई मीत सिंह कीकर टहनी के अंत के साथ अपने दाँत साफ़ करते हुए वापस आए, जिसे उन्होंने रेशेदार ब्रश में चबाया था। गुरुद्वारे में पुलिसकर्मियों की मौजूदगी ने उन्हें हैरान नहीं किया। जब भी वे गाँव आते और लम्बरदार के घर पर आवास नहीं पाते थे, तो वे मंदिर में आते थे। साहूकार की हत्या के बाद उन्हें उनसे उम्मीद थी।

'सत श्री अकाल', मीट सिंह ने कहा, अपने कीकर के टूथब्रश को फेंक दिया। 'सत श्री अकाल' ने पुलिसकर्मियों को जवाब दिया।

'आप कुछ चाय पसंद करेंगे या कुछ और? कुछ छाछ?'

पुलिसकर्मियों ने कहा, 'हम बाबू साहब का इंतजार कर रहे हैं।' 'अगर आप तैयार होने के दौरान हमें कुछ दे सकते हैं, तो यह बहुत दयालु होगा।'

मीत सिंह ने एक आकस्मिक उदासीनता बनाए रखी। पुलिस के साथ बहस करना या उनके व्यवसाय के बारे में उदासीन होना उसके ऊपर नहीं था। इकबाल सिंह शायद एक 'कॉमरेड' थे। वह निश्चित रूप से एक की तरह बात करता था।

मीत सिंह ने जवाब दिया, 'मैं उसके लिए कुछ चाय बनाऊंगा।' उसने इकबाल की तरफ देखा। 'या बड़ी बोतल से आपका अपना होगा?'

'बहुत-बहुत धन्यवाद,' इकबाल ने उसके मुंह में टूथ पेस्ट के जरिए जवाब दिया। उसने उसे उगल दिया। 'बोतल में चाय अब तक ठंडी होनी चाहिए। मैं गर्म कप के लिए आभारी रहूंगा। और क्या आप दूर रहने के दौरान मेरी बातों पर गौर करेंगे? वे मुझे किसी बात के लिए गिरफ्तार कर रहे हैं। वे खुद नहीं जानते कि किस चीज के लिए।'

मीत सिंह ने दिखावा किया जो उन्होंने नहीं सुना था। पुलिसवाले थोड़े विह्वल दिखे।

'यह हमारी गलती नहीं है, बाबू साहब,' उनमें से एक ने कहा। 'आप हमसे क्यों नाराज हो रहे हैं? मजिस्ट्रेट से नाराज हो जाओ।'

इकबाल ने अपने दांतों को अधिक ब्रश करके उनके विरोध को नजरअंदाज कर दिया। उसने अपना चेहरा धोया और तौलिया के साथ खुद को रगड़ता हुआ कमरे में वापस आया। उसने हवा को गद्दे और तकिये से बाहर निकाला और उन्हें लुढ़का दिया। उन्होंने इसकी सामग्री की पकड़ को खाली कर दिया: किताबें, कपड़े, मशाल, एक बड़ी रजत हिप फ्लास्क। उसने अपनी चीजों की एक सूची बनाई और उन्हें वापस रख दिया। जब मीत सिंह चाय लेकर आया, इकबाल ने उसे पकड़ के सौंप दिया।

'भाईजी, मैंने अपनी सारी बातें होल्ड में डाल दी हैं। मुझे उम्मीद है कि उनकी देखभाल करने में बहुत परेशानी नहीं होगी। मैं हमारे इस मुक्त देश में पुलिस के बजाय आप पर भरोसा करना चाहूंगा।'

पुलिसकर्मी भागते दिखे। मीत सिंह शर्मिदा था।

'निश्चित रूप से, बाबू साहब,' उन्होंने नम्रतापूर्वक कहा। 'मैं आपका नौकर होने के साथ-साथ पुलिस वाला भी हूँ। यहां सभी का स्वागत है। आपको अपने कप में चाय पसंद है?'

इकबाल ने अपना सेल्युलाइड चायपत्ती और चम्मच निकाला। कांस्टेबलों ने मीत सिंह से पीतल के गिलास लिए। उन्होंने गर्म पीतल से अपने हाथों को बचाने के लिए अपनी पगड़ी के ढीले सिरों को टंबलर से लपेटा। खुद को आश्वस्त करने के लिए उन्होंने शोर किया। लेकिन इकबाल स्थिति पूरी तरह से कब्जे में था। वह तार खाट पर बैठ गया, जब वे दहलीज पर बैठे थे और सिंह से बाहर फर्श पर मिले थे। वे अशिष्टता के डर से उससे बात करने की हिम्मत नहीं करते थे। हथकड़ी के साथ कांस्टेबल ने चुपचाप उन्हें अपनी बेल्ट से उतार लिया और उन्हें अपनी जेब में डाल लिया। उन्होंने अपनी चाय खत्म की और बेचैनी से उठे। इकबाल महत्व के साथ लगाए गए तीव्रता के साथ अपने सिर के ऊपर घूरते हुए बैठे थे। वह खुशी से अंतरिक्ष में जागा, कभी-कभी अपनी चाय की चुस्की लेता हुआ। जब वह समाप्त हो गया, तो वह अचानक खड़ा हो गया।

'मैं तैयार हूँ,' उसने घोषणा की, नाटकीय रूप से अपने हाथों को पकड़े हुए। 'हथकड़ियों पर रखो।'

C c हथकड़ी की कोई जरूरत नहीं है, बाबूजी,' एक सिपाही ने जवाब दिया। 'आपने अपने चेहरे को बेहतर ढंग से ढक लिया था या आपको पहचान परेड में पहचाना जाएगा।'

इकबाल ने मौके पर चौका लगाया। 'क्या यह है कि आप अपना कर्तव्य कैसे करते हैं? यदि नियम यह है कि मुझे हथकड़ी लगानी है, तो हथकड़ी लगाई जाएगी। मैं पहचाने जाने से नहीं डरता। मैं कोई चोर या डकैत नहीं हूँ। मैं एक राजनीतिक कार्यकर्ता हूँ। मैं गाँव से होकर जाऊंगा क्योंकि मैं ऐसा हूँ ताकि लोग देख सकें कि पुलिस उन लोगों के लिए क्या करती है जिन्हें वे पसंद नहीं करते हैं। '

यह विस्फोट एक कॉन्स्टेबल के लिए बहुत अधिक था। वह तेजी से बोला: 'बाबूजी, हम आपसे विनम्र हो रहे हैं। हम आप सभी को "जी", "जी" कहते रहते हैं

समय, लेकिन आप हमारे सिर पर बैठना चाहते हैं। हमने आपको सौ बार बताया है कि हम अपना कर्तव्य निभा रहे हैं, लेकिन आप यह मानने पर जोर देते हैं कि हमारे पास एक व्यक्तिगत शिकायत है। ' उन्होंने अपने सहयोगी की ओर रुख किया। 'साथी पर हथकड़ी डाल दो। वह वही कर सकता है जो उसे अपने चेहरे से पसंद है। अगर मेरा चेहरा उनके जैसा होता, तो मैं उसे छिपाना चाहता। हम रिपोर्ट करेंगे कि उन्होंने इसे कवर करने से इनकार कर दिया। '

इकबाल के पास व्यंग्य का कोई तैयार जवाब नहीं था। उसे अपनी झुकी हुई नाक की अर्धचेतना थी। काफी अनजाने में उसने अपने हाथ के पीछे से ब्रश किया। उनकी शारीरिक बनावट के संदर्भ ने उन्हें हमेशा परेशान किया। हथकड़ी को उसकी कलाई पर गोल-गोल घुमाया गया और पुलिसवाले के बेल्ट पर जंजीर बांध दी गई।

'सत श्री अकाल, भाईजी। मैं जल्द वापस आऊंगा।'

'सत श्री अकाल, इकबाल सिंहजी और गुरु आपकी रक्षा कर सकते हैं। सत श्री अकाल, संतरीजी। '

'सत श्री अकाल।'

पार्टी ने मंदिर के प्रांगण से मार्च किया, जिससे मीत सिंह हाथ में चाय की केतली लेकर खड़े थे।

जिस समय इकबाल को गिरफ्तार करने के लिए दो कांस्टेबल भेजे गए थे, जुगुत सिंह को गिरफ्तार करने के लिए दस लोगों का एक दल भेजा गया था। पुलिसकर्मियों ने सभी बिंदुओं पर उसके घर को घेर लिया। राइफलों से लैस कांस्टेबलों को पड़ोसी की छतों और घर के सामने और पीछे के हिस्से पर तैनात किया गया था। तब रिवाल्वर से लैस छह अन्य लोग आंगन में भाग गए। जुगुत सिंह अपनी चारपाई पर लेट गया, जो सिर से पाँव तक एक सफेद चादर में लिपटा हुआ था और वासना से भर रहा था। उन्होंने बिना भोजन या आश्रय के जंगल में दो रातें और एक दिन बिताया था। वह सुबह के शुरुआती घंटों में घर आया था जब उसे विश्वास था कि गाँव में सभी सो रहे होंगे। पड़ोसी सतर्क हो गए थे और पुलिस को तुरंत सूचित किया गया था। वे तब तक इंतजार करते रहे जब तक वह खुद को भोजन से भर नहीं गया और सो रहा था। उसकी मां बाहर से दरवाजा पीटती हुई बाहर चली गई थी।

जुगुत सिंह के पैरों को भ्रूण में डाल दिया गया और उसके सोते समय उसकी दाहिनी कलाई पर हथकड़ियाँ तेज़ कर दी गईं। पुलिसकर्मियों ने अपने रिवाल्वर उनके होल्स्टर्स में डाल दिए। राइफल वाले पुरुष आंगन में उनके साथ ही लिए। उन्होंने जुगुत सिंह को अपनी बंदूकों के बटों से प्रहार किया।

'ओ जुग्गा, उठो, लगभग दोपहर हो गई है।'

'देखिए दुनिया में बिना किसी देखभाल के वह कैसे सूअर की तरह सोता है।'

जुग्गा अपनी आंखें झपकाते हुए पहनने लगी। वह हथकड़ी और चकित हो गया

दार्शनिक टुकड़ी के साथ भ्रूण, फिर अपनी बाहों को चौड़ा किया और जोर से चिल्लाया।  
नींद फिर उस पर आ गई और वह सुबकने लगी।

जुगुत सिंह की माँ ने अंदर आकर अपने आंगन को सशस्त्र पुलिसकर्मियों से भरा देखा।  
उसका बेटा अपने मनचले हाथों पर सिर टिकाए चारपाई पर बैठ गया। उसकी आँखें बंद थीं।  
वह उसके पास गई और घुटनों के बल बैठ गई। उसने अपना सिर उसकी गोद में रख दिया  
और रोने लगी।

जुगुत सिंह अपनी श्रद्धा से जाग गया। उसने अपनी माँ को बेरहमी से पीछे धकेल  
दिया। 'क्यों रो रही हो?' उसने कहा। 'तुम्हें पता है मुझे इससे कोई लेना-देना नहीं था  
डकैती। '

वह विह्वल होने लगी। 'उसने ऐसा नहीं किया। उसने कुछ नहीं किया। भगवान के नाम  
पर, मैं कसम खाता हूँ कि उन्होंने कुछ नहीं किया। '

'फिर वह हत्या की रात कहाँ था?' हेड कांस्टेबल ने कहा। 'वह अपने खेतों में था। वह  
डकैतों के साथ नहीं था। मैं कसम खाता हूँ कि वह नहीं था। ' वह सूर्यास्त के बाद गाँव  
से बाहर न जाने के आदेश के तहत एक बदमाश है। हम  
किसी भी मामले में उसके लिए उसे गिरफ्तार करना होगा। ' उसने अपने आदमियों को  
गति दी। 'कमरे और खलिहान खोजो।' हेड कांस्टेबल को अपने ही गाँव में डकैती में  
जुगुत सिंह के भाग जाने का संदेह था। यह सबसे असामान्य था।

चार कांस्टेबल खुद को घर के चारों ओर देख रहे थे, स्टील की चूड़ी और टिन के डिब्बे  
खाली कर रहे थे। घास का ढेर नीचे खींचा गया था और घास यार्ड में बिखरे हुए थे। बिना  
किसी कठिनाई के भाला मिल गया।

'मुझे लगता है कि यह तुम्हारे चाचा द्वारा यहाँ रखा गया है?' हेड कांस्टेबल ने कहा  
मां को खट्टा कहना। 'ब्लेड को कपड़े के टुकड़े में लपेटें, इस पर खून के धब्बे हो सकते हैं।'

There इस पर कुछ नहीं है, 'मां ने रोते हुए कहा, it कुछ नहीं। वह इसे फसलों को  
नष्ट करने के लिए आने वाले जंगली सुअरों को मारने के लिए रखता है। मैं कसम खाता हूँ  
कि वह निर्दोष है। '

'हम देख लेंगे। हम देखेंगे, 'हेड कांस्टेबल ने उसे बर्खास्त कर दिया। 'आप बेहतर तरीके से  
मजिस्ट्रेट के लिए तैयार उसकी बेगुनाही का सबूत पा सकते हैं।'

बुढ़िया ने कराहना बंद कर दिया। उसके पास सबूत था- टूटी चूड़ियों का पैकेट। उसने  
जुगुता को इसके बारे में नहीं बताया था। अगर वह होता, तो वह अपमान में पागल हो जाता  
और किसी के प्रति हिंसक होता। अब वह भ्रूण और हथकड़ी में था, वह केवल अपना आपा  
खो सकता था।

, रुको, भाई पुलिसकर्मियों। मेरे पास सबूत हैं। '

पुलिसकर्मियों ने देखा कि महिला अंदर गई और अपने स्टील के ट्रंक के नीचे से एक  
पैकेट निकाला। उसने भूरे रंग के कागज को उकेरा। छोटे सोने के धब्बों के साथ नीले और  
लाल कांच की चूड़ियों के टूटे हुए टुकड़े थे। उनमें से दो बरकरार थे। हेड कांस्टेबल उन्हें ले  
गया।

'ये किस तरह के प्रमाण हैं?'

'हत्या के बाद डकैतों ने उन्हें आंगन में फेंक दिया। वे उनके साथ नहीं आने के लिए जुगुता  
का अपमान करना चाहते थे। देखो!' उसने अपने हाथों को पकड़ रखा था। 'मैं भी हूँ

कांच की चूड़ियाँ पहनना पुराना है और वे मेरी कलाई के लिए बहुत छोटी हैं। '

'तब जुग्गा को पता होना चाहिए कि डकैत कौन थे। जब उन्होंने उन्हें फेंका तो उन्होंने क्या कहा?' हेड कांस्टेबल से पूछा।

'कुछ नहीं, उन्होंने कुछ नहीं कहा। उन्होंने जुग्गा को गाली दी ... '

'क्या आप अपना मुंह बंद नहीं रख सकते?' जुग्गा को गुस्से से दबा दिया। 'मुझे नहीं पता कि डकैत कौन थे। मुझे पता है कि मैं उनके साथ नहीं था। '

'तुम्हें चूड़ियाँ कौन छोड़ता है?' हेड कांस्टेबल से पूछा। वह मुस्कुराया और कांच के टुकड़ों को हाथों में पकड़ लिया।

जुग्गा अपना आपा खो बैठी। उन्होंने अपने मनचले मुट्टियों को उठाया और उन्हें हेड कांस्टेबल की हथेलियों पर जोर से गिरा दिया। उसकी माँ की कौन सी बहकावे में चूड़ियाँ फेंक सकती हैं? क्या ...'

कांस्टेबलों ने गोल जुगुत सिंह को बंद कर दिया और उसे थप्पड़ मारना शुरू कर दिया और उसे अपने मोटे जूते से मारना शुरू कर दिया। जुग्गा अपनी जाँघों पर बैठी, अपने सिर को अपनी बाँहों से ढँक रही थी। उसकी माँ ने उसका माथा पीटना शुरू कर दिया और फिर से रोने लगी। उसने पुलिसकर्मियों के घेरा तोड़ दिया और खुद को उसके बेटे पर फेंक दिया।

'उसे मत मारो। गुरु का श्राप आप पर हो। वह निर्दोष है। यह सब मेरी गलती है। आप मुझे हरा सकते हैं। '

धड़कन रुक गई। हेड कांस्टेबल ने अपनी हथेली से कांच के टुकड़े निकाले, खून निकाला और उसे अपने रूमाल से पोंछा।

'आप अपने बेटे की बेगुनाही का सबूत रखते हैं,' उसने कड़वाहट से कहा। हम तुम्हारे इस कुतिया के बेटे की कहानी अपने तरीके से निकालेंगे। जब वह अपने नितंबों पर कुछ झपकी लेगा, तो वह बात करेगा। उसे बाहर निकालो।'

जुगुत सिंह को घर से बाहर हथकड़ी और भ्रूण में लिटाया गया था। वह अपनी मां के लिए भावनाओं का पता लगाने के बिना छोड़ दिया, जो अपने माथे और स्तनों को मारना और पीटना जारी रखा। उनके बिदाई शब्द थे:

'मैं जल्द वापस आऊंगा। भाले होने और गाँव से बाहर जाने के लिए वे मुझे कुछ महीनों से अधिक नहीं दे सकते। सत श्री अकाल। '

जुग्गा ने अपना आपा खो दिया, जैसे ही उसने खोया। चूड़ियों की मार और पिटाई की घटना को वह भूल गया जैसे ही उसने अपनी दहलीज पार की। उसके पास पुलिसकर्मियों के प्रति कोई दुर्भावना या दुर्भावना नहीं थी: वे अन्य मनुष्यों की तरह मानव नहीं थे। उनके पास कोई स्नेह, कोई वफादारी या दुश्मनी नहीं थी। वे सिर्फ वर्दी में पुरुष थे जिनसे आपने बचने की कोशिश की।

जुगुत सिंह के चेहरे को ढकने के लिए बहुत कुछ नहीं था। पूरा गाँव उसे जानता था। वह ग्रामीणों के सामने गया, मुस्कुराया और सभी को अभिवादन में अपने हाथों को उठाया। उसके पैरों के आसपास के भ्रूणों ने उसे अपने पैरों के साथ धीरे-धीरे चलने के लिए मजबूर किया। उसे अपने कदम में शैतान-की-केयर जॉटनेस थी। वह

अपनी पतली भूरी मूँछों को घुमाकर और पुलिसकर्मियों के साथ अश्लील चुटकुले सुनाकर अपनी अस्वाभाविकता का परिचय दिया।

इकबाल और दो कांस्टेबल नदी द्वारा जुगुत सिंह की पार्टी में शामिल हो गए। वे सभी पुल की ओर बढ़े। हेड कांस्टेबल सामने चल दिया। सशस्त्र पुलिसकर्मियों ने पक्षों पर और

कैदियों के पीछे मार्च किया। इकबाल खोकी और उनकी वर्दी के लाल में खो गया था। जुगुत सिंह के सिर और कंधे पुलिसवालों की पगड़ी के ऊपर दिखाई दिए। यह उनके बीच में एक हाथी के साथ घोड़ों के एक जुलूस की तरह था — लंबा, चौड़ा, धीमा, उसकी जंजीरों के साथ औपचारिक अनुष्ठानों की तरह।

कोई बात करने के मूड में नहीं लग रहा था। पुलिसकर्मियों में बेचैनी थी। वे जानते थे कि उन्होंने एक गलती की है, या दो गलतियाँ की हैं। सामाजिक कार्यकर्ता को गिरफ्तार करना एक दोषपूर्ण और परेशानी का एक संभावित स्रोत था। उनके जुझारू रवैये ने उनकी बेगुनाही की पुष्टि की। उसके खिलाफ किसी तरह का मामला बनता। शिक्षित लोगों के लिए यह हमेशा एक मुश्किल काम था। जुगुत सिंह सही होने के लिए बहुत स्पष्ट शिकार थे। उन्होंने रात में गाँव छोड़ने का निस्संदेह कानून तोड़ा था, लेकिन उनके अपने गाँव में डकैती में शामिल होने की संभावना नहीं थी। वह अपने विशाल आकार से बहुत आसानी से पहचाना जाएगा। इसके अलावा, यह स्पष्ट था कि ये दोनों पहली बार मिले थे।

इकबाल का गौरव घायल हो गया था। जिस समय वे जुगुत सिंह से मिले, उस समय तक वह इस धारणा के तहत थे कि उन्हें उनकी राजनीति के लिए गिरफ्तार किया गया था। उसने हथकड़ी लगाए जाने पर ज़ोर दिया था ताकि गाँव वाले देख सकें कि उसने खुद को किस गरिमा से बोर किया है। वे नागरिक स्वतंत्रता के लिए इस तरह के आक्रोश पर नाराज होंगे। लेकिन पुरुषों ने बेवकूफी से दूरी बना ली थी और महिलाओं ने अपने घूँघट को सहलाते हुए एक दूसरे से फुसफुसाते हुए पूछा, 'यह कौन है?' जब वह उस पुलिसकर्मी से जुड़ गया, जिसने जुगुत सिंह की सलाह पर पुलिसकर्मी की सलाह को स्वीकार किया, 'अपना चेहरा ढक लो, नहीं तो तुम्हें पहचान परेड में पहचाना जा सकता है।' राम लाल की हत्या के सिलसिले में उनकी गिरफ्तारी हुई थी। यह इतना बेवकूफ था कि वह शायद ही इस पर विश्वास कर सके। सभी को पता था कि वह हत्या के बाद मनो माजरा आया था। पुलिसकर्मियों के रूप में एक ही ट्रेन पर, वास्तव में। वे उसकी बीबी के गवाह बन सकते थे। शब्दों के लिए स्थिति बहुत भयावह थी। लेकिन पंजाबी पुलिसवाले उस तरह के नहीं थे जिन्होंने गलतियाँ करना स्वीकार किया। वे किसी प्रकार के आवेश को रोक देते थे: आवारागर्दी, अपने कर्तव्य को पूरा करने में अधिकारियों को बाधा डालना या ऐसी कोई बात। वह उनसे दांत और नाखून लड़ाता था।

पार्टी में एकमात्र ऐसा व्यक्ति नहीं था, जो जुगुत सिंह का दिमाग नहीं था। उसे पहले भी गिरफ्तार किया गया था। उन्होंने जेल में काफी समय घर पर ही बिताया था। पुलिस के साथ उनका जुड़ाव एक विरासत था। रजिस्टर नंबर दस पर

पुलिस स्टेशन, जिसने इलाके के बुरे चरित्रों की गतिविधियों का रिकॉर्ड दिया था, अपने पिता आलम सिंह के नाम पर रहते थे। आलम सिंह को हत्या के साथ डकैती का दोषी ठहराया गया था, और फांसी दी गई थी। जुगुत सिंह की माँ को वकीलों को भुगतान करने के लिए अपनी सारी जमीन गिरवी रखनी पड़ी। जुगुत सिंह को भूमि को भुनाने के लिए पैसे खोजने थे, और उन्होंने वर्ष के भीतर ऐसा किया था। कोई यह साबित नहीं कर सका कि उसने पैसे कैसे जुटाए, लेकिन साल के अंत में पुलिस उसे ले गई थी। उनका नाम रजिस्टर नंबर दस में दर्ज किया गया था और उन्हें आधिकारिक तौर पर बुरे चरित्र का व्यक्ति घोषित किया गया था। उनकी पीठ के पीछे सभी ने उन्हें 'नंबर दस' कहा।

जुगुत सिंह ने कई बार कैदी को अपने पास देखा। वह बातचीत शुरू करना चाहता था। इकबाल ने अपनी आँखें उसके सामने स्थिर कर दीं और लेंस का सामना कर रहे एक अभिनेता की कैमरा-चेतना के साथ चला गया। जुगुत सिंह ने धैर्य खो दिया।

'बात सुनो। आप किस गाँव से हैं?' उन्होंने पूछा और मुस्कुराया, केंद्रों में सोने के बिंदुओं से जड़ी दांतों का एक सेट भी रोक दिया।

इकबाल ने ऊपर देखा, लेकिन मुस्कान वापस नहीं आई।

'मैं कोई ग्रामीण नहीं हूँ। मैं दिल्ली से आता हूँ। मुझे किसानों को संगठित करने के लिए भेजा गया था, लेकिन सरकार को यह पसंद नहीं है कि लोग संगठित हों।'

जुगुत सिंह विनम्र हो गए। उन्होंने परिचित होने का लहजा त्याग दिया। उन्होंने कहा, "मैंने सुना है कि हमारा अपना नियम है।" 'दिल्ली में महात्मा गांधी की सरकार है, है ना? वे हमारे गाँव में ऐसा कहते हैं।'

'हां, अंग्रेज चले गए हैं लेकिन अमीर भारतीयों ने उनकी जगह ले ली है। आपने या आपके साथी ग्रामीणों ने आजादी के बाद क्या किया है? अधिक रोटी या अधिक कपड़े? आप उसी हथकड़ी और भ्रूण में हैं जो अंग्रेजी ने आप पर डाला है। हमें एकजुट होकर उठना होगा। हमारे पास खोने के लिए कुछ नहीं है लेकिन ये जंजीरें हैं।' इकबाल ने अपने चेहरे पर हाथ उठाकर और उन्हें झटका देते हुए अंतिम वाक्य पर जोर दिया जैसे कि आंदोलन हथकड़ी को तोड़ देगा।

पुलिसकर्मी एक-दूसरे को देखते रहे।

जुगुत सिंह ने अपने टखनों और लोहे की सलाखों के नीचे भ्रूणों को देखा जो उन्हें हथकड़ी से जोड़ते थे।

'मैं बदमाश हूँ। सभी सरकारों ने मुझे जेल में डाल दिया।'

'लेकिन,' ने इकबाल को नाराज़ कर दिया, 'इससे आपको क्या बुरा लगता है?' सरकार! यह नियम बनाता है और उन्हें लागू करने के लिए रजिस्टर, पुलिसकर्मी और जेलर रखता है। किसी को भी वे पसंद नहीं करते हैं, उनके पास एक नियम है जो उसे एक बुरा चरित्र और अपराधी बनाता है। मेरे पास क्या है ...'

'नहीं, बाबू साहब,' जुगुत सिंह में अच्छे- बुरे ढंग से टूट गया, 'यह हमारी किस्मत है। यह हमारे माथे और हमारे हाथों की तर्ज पर लिखा गया है। मैं हमेशा से चाहता हूँ

कुछ करने के लिए। जब करने की जुताई हो रही है या फसल इकट्ठा होने वाली है, तो मैं व्यस्त हूँ। जब कोई काम नहीं होता है, तब भी मेरे हाथ कुछ करने के लिए खुजली करते हैं। इसलिए मैं कुछ करता हूँ, और यह हमेशा गलत होता है।'

पार्टी पुल के नीचे से गुजरी और रेस्ट हाउस के पास पहुंची। जुगुत सिंह की शालीनता ने इकबाल को दूर कर दिया था। वह गाँव के बुरे चरित्र के साथ बहस करते हुए अपनी सांसों को बर्बाद नहीं करना चाहता था। वह मजिस्ट्रेट के लिए अपने शब्दों को बचाना चाहता था। वह उसे अंग्रेजी में लिखने देगा - उच्चारण उसे विद्रूप बना देगा।

जब पुलिस कैदियों को लेकर आई तो सबइंस्पेक्टर ने उन्हें नौकरों के क्वार्टर में ले जाने का आदेश दिया। मजिस्ट्रेट अपने कमरे की ड्रेसिंग में था। हेड कांस्टेबल ने अपने आदमियों के साथ कैदियों को छोड़ दिया और वापस बंगले में आ गया।

'यह छोटा सा चैप कौन लाया है?' सब-इंस्पेक्टर से पूछा, थोड़ा चिंतित दिख रहे थे।

'मैंने आपके आदेश पर उसे गिरफ्तार कर लिया। वह सिख मंदिर में रहने वाला अजनबी था।'

जवाब ने सब-इंस्पेक्टर को चिढ़ाया। 'मुझे नहीं लगता कि तुम्हारा अपना कोई दिमाग है! मैं तुम्हारे लिए एक छोटी सी नौकरी छोड़ देता हूँ और तुम खुद को बेवकूफ बनाते हो। आपको उसे गिरफ्तार करने से पहले देखना चाहिए था। क्या वह वही आदमी नहीं है जो कल हमारे साथ ट्रेन से उतर गया था?'

'ट्रेन?' हेड कांस्टेबल, झगड़ालू अज्ञान को शांत किया। 'मैंने उसे ट्रेन में नहीं देखा, गरीबों का पालन-पोषण करने वाला। मैंने केवल आपके आदेशों को पूरा किया और संदिग्ध परिस्थितियों में गांव के बारे में जानकारी देने वाले अजनबी को गिरफ्तार किया।'

सबइंस्पेक्टर का गुस्सा फूट पड़ा। 'गधा!'

हेड कांस्टेबल ने अपने अधिकारी की टकटकी से बचा लिया।

'आप किसी जगह के एक गधे हैं,' उसने बड़ी वीरता के साथ दोहराया। 'क्या आपका कोई दिमाग नहीं है?'

'गरीबों का पालन-पोषण करने वाला, मेरी क्या

गलती ...' 'चुप रहो!'

हेड कांस्टेबल उसके पैरों को देखने लगा। सबइंस्पेक्टर ने अपना आपा शांत कर दिया। उसे हुकुम चंद का सामना करना पड़ा, जो उस पर भरोसा करते थे और निराश नहीं होने देते थे। कुछ विचार के बाद, सब-इंस्पेक्टर ने तार-धुंध दरवाजे के माध्यम से पेश किया।

'क्या मुझे प्रवेश करने की अनुमति है?'

'अंदर आओ, इंस्पेक्टर साहब,' हुकुम चंद ने जवाब दिया। 'रुको मत

औपचारिकताओं।'

सबइंस्पेक्टर अंदर गया और सलामी दी।

'अच्छा, आप क्या कर रहे थे?' मजिस्ट्रेट से पूछा। वह अपनी ताज़ी शेव की हुई ठुड़ी पर क्रीम रगड़ रहा था। ड्रेसिंग टेबल पर एक टम्बलर में एक सपाट सफेद गोली नीचे की ओर नाचती है, जो बुलबुले की एक धारा भेजती है।

'सर, हमने आज सुबह दो गिरफ्तारियां की हैं। एक है जुगगा बदमाश। वह डकैती की रात अपने घर से बाहर था। हम उससे कुछ जानकारी प्राप्त करने के लिए बाध्य हैं। दूसरा वह अजनबी है जिसकी उपस्थिति मुखिया द्वारा बताई गई थी और आपने उसे गिरफ्तार करने का आदेश दिया था।'

हुकुम चंद ने अपनी ठुड़ी को रगड़ना बंद कर दिया। उसने उस पर दूसरी गिरफ्तारी से बचने की कोशिश का पता लगाया।

'कौन है ये?'

इंस्पेक्टर बाहर से आए हेड कांस्टेबल को चिल्लाया।

'सिख मंदिर में आपके द्वारा पकड़े गए साथी का नाम क्या है?' 'इकबाल'।

'इकबाल क्या?' मजिस्ट्रेट से जोर से सवाल किया।

'मुझे अभी पता चलेगा, सर।' मजिस्ट्रेट के उस पर उड़ने से पहले हेड कांस्टेबल नौकरों के क्वार्टर में भाग गया। हुकुम चंद को अपना आपा उठता हुआ महसूस हुआ। उसने अपने गिलास से एक घूंट लिया। सबइंस्पेक्टर ने बेचैनी से हाथ हिलाया। हेड कांस्टेबल कुछ मिनट बाद वापस आया और अपनी वापसी की घोषणा करने के लिए खांसने लगा।

'सर,' वह फिर खाँस गया। 'सर, वह पढ़-लिख सकता है। वह शिक्षित है।'

मजिस्ट्रेट गुस्से में दरवाजे की ओर बढ़ा।

'क्या वह एक पिता और माँ है, एक विश्वास है, या नहीं? शिक्षित!'

'सर,' ने हेड कांस्टेबल को ललकारा, 'उसने हमें अपने पिता का नाम बताने से इंकार कर दिया और कहा कि उसका कोई धर्म नहीं है। वह कहता है कि वह खुद आपसे बात करेगा।'



" जाकर पता करो, " मजिस्ट्रेट ने दहाड़ लगाई। 'जब तक वह बात नहीं करता तब तक उसे अपने नितंबों पर चाबुक। जाओ ... नहीं, रुको, सबइंस्पेक्टर साहब इसे संभाल लेंगे। '

हुकुम चंद गुस्से में था। उसने टम्बलर में पानी भरकर नीचे गिरा दिया और शेविंग टॉवल से अपना सिर काट लिया। एक बेल्ट ने उसे अपने बढ़ते क्रोध से छुटकारा दिलाया।

'अच्छा साथियों, आप और आपके पुलिसवाले! आप अपने नाम, पितृत्व या जाति का पता लगाए बिना लोगों को जाते हैं और गिरफ्तार करते हैं। आप मुझे गिरफ्तारी के खाली वारंट पर हस्ताक्षर करें। किसी दिन आप राज्यपाल को गिरफ्तार करेंगे और कहेंगे हुकुम चंद ने आपको ऐसा करने का आदेश दिया। आपने मुझे बर्खास्त कर दिया होगा। '

'गरीबों का पालनहार, मैं जाकर इस पर गौर करूंगा। यह आदमी कल मनो मनोरा आया था। मैं उसके पूर्वजों और व्यापार का पता लगाऊंगा। '

'अच्छा, तो, जाकर पता लगाओ, और खड़े होकर घूरो मत,' हुकुम चंद ने कहा। उसे अपना आपा खोने या अशिष्ट होने की आदत नहीं थी। सबइंस्पेक्टर के चले जाने के बाद, उसने अपनी जीभ की शीशे में जांच की और एक और टेबलेट के सेल्टर को टम्बलर में डाला।

सबसिनेक्टर बाहर गया और कुछ गहरी साँस लेने के लिए बरामदे में रुक गया। मजिस्ट्रेट के प्रकोप ने उनका रवैया तय कर दिया। उसे एक मजबूत लाइन लेनी होगी और शिली-शालीनता को खत्म करना होगा। वह नौकरों के क्वार्टर में गया। इकबाल और उसका एस्कॉर्ट जुगुत सिंह की भीड़ से अलग खड़े थे। घायल गरिमा पर युवक की नज़र थी। सबइंस्पेक्टर ने सोचा कि उससे बात न की जाए।

'इस आदमी के कपड़े खोजो। उसे एक क्वार्टर के अंदर ले जाएं और उसे पट्टी करें। मैं खुद उनकी जांच करूंगा। '

इकबाल का नियोजित भाषण पूर्ववत रहा। कांस्टेबल ने लगभग एक कमरे में हथकड़ी द्वारा उसे घसीटा। उसका प्रतिरोध हो गया था। उसने अपनी शर्ट उतार कर पुलिसवाले को दे दी। सबइंस्पेक्टर अंदर आ गया और बिना शर्ट की जाँच के आदेश दिए:

'अपना पजामा उतारो!'

इकबाल ने अपमानित महसूस किया। उसमें कोई लड़ाई नहीं बची थी। 'पाजामे की जेबें नहीं होतीं। मैं उनमें कुछ भी छिपा नहीं सकता। '

'उन्हें उतार दो और बहस मत करो।' सबसिनेक्टर ने आदेश पर जोर देने के लिए अपनी स्वैगर स्टिक से खाकी पतलून को थप्पड़ मारा।

इकबाल ने नाल को ढीला कर दिया। पाजामा उसके टखनों के आसपास एक ढेर में गिर गया। वह अपनी कलाई पर हथकड़ियों के लिए नग्न बचा था। उन्होंने पुलिसकर्मियों की जांच करने के लिए पजामा से बाहर कदम रखा।

'नहीं, यह जरूरी नहीं है,' सबइंस्पेक्टर में टूट गया। 'मैंने वह सब देखा है जो मैं देखना चाहता था। आप अपने कपड़े पर रख सकते हैं। आप कहते हैं कि आप एक सामाजिक कार्यकर्ता हैं। मनो माजरा में आपका व्यवसाय क्या था? '

'मैं अपने पक्ष द्वारा भेजा गया था,' जवाब इकबाल, फिर से बांधने अपना पजामा की हड्डी में गाँठ।

'कैसी पार्टी?'

'पीपुल्स पार्टी ऑफ इंडिया।'

सबइंस्पेक्टर ने इकबाल की ओर एक भयावह मुस्कान के साथ देखा। 'द पीपुल्स पार्टी ऑफ इंडिया', उन्होंने धीरे-धीरे दोहराया, प्रत्येक शब्द को स्पष्ट रूप से सुनाया। 'आपको

यकीन है कि यह मुस्लिम लीग नहीं थी?'

इकबाल ने सवाल के महत्व को नहीं पकड़ा।

'नहीं, मुझे मुस्लिम लीग का सदस्य क्यों होना चाहिए? मैं ...'

इकबाल के सजा पूरी करने से पहले सबइंस्पेक्टर कमरे से बाहर चला गया। उन्होंने कांस्टेबलों को कैदियों को पुलिस स्टेशन ले जाने का आदेश दिया।

वह मजिस्ट्रेट को अपनी खोज की रिपोर्ट देने के लिए रेस्ट हाउस वापस चला गया। उसके चेहरे पर एक अजीब सी मुस्कान थी।

Cher गरीबों का पालनहार, यह सब ठीक है। उनका कहना है कि उन्हें पीपुल्स पार्टी ने भेजा है। लेकिन मुझे यकीन है कि वह एक मुस्लिम लीडर है। वे बहुत समान हैं। हमें किसी भी मामले में उसे गिरफ्तार करना होगा यदि वह सीमा के पास शरारत करता है। हम उसे बाद में या किसी और चीज से चार्ज कर सकते हैं। '

'तुम्हें कैसे पता कि वह एक मुस्लिम लीडर है?'

सबइंस्पेक्टर आत्मविश्वास से मुस्कराया। 'मैंने उसे छीन लिया था।'

हुकुम चंद ने चाक के नीचले हिस्से पर मंथन करने के लिए अपना गिलास हिलाया और धीरे-धीरे सेल्टर के बचे हुए हिस्से को पी लिया। उसने खाली टम्बलर में सोच-समझकर जोड़ा:

'गिरफ्तारी के वारंट को सही ढंग से भरें। नाम: मोहम्मद इकबाल, मोहम्मद समथिंग का बेटा -या-अन्य, या सिर्फ पिता अज्ञात। जाति: मुसुल्मन। पेशा: मुस्लिम लीग कार्यकर्ता। '

सबइंस्पेक्टर ने नाटकीय ढंग से सलामी दी।

'रूको रूको। चीजों को आधा न छोड़ें। राम लाल के हत्यारों का अभी तक पता नहीं चला है लेकिन उनके बारे में जल्द ही उम्मीद की जा रही है कि इस प्रभाव के लिए अपनी पुलिस डायरी शब्दों में दर्ज करें। क्या आपने नहीं कहा कि जुग्गा का इससे कोई लेना-देना है? '

'जी श्रीमान। डकैतों ने जाने से पहले उसके आंगन में कांच की चूड़ियां फेंक दीं। जाहिर तौर पर उन्होंने उन्हें अपने उद्यम में शामिल होने से मना कर दिया था। '

'अच्छा, उससे जल्दी से नाम निकालो। यदि आवश्यक हो तो उसे मारो। '

सबइंस्पेक्टर मुस्कराया। 'मुझे चौबीस घंटे में और बिना किसी पिटाई के डकैतों के नाम मिल जाएंगे। '

हुकुम चंद ने अधीरता से जवाब दिया, 'हां, हां, उन्हें किसी भी तरह से पसंद करें।' 'इसके अलावा, पुलिस स्टेशन की डायरी के अलग-अलग पन्नों पर बीच में अन्य वस्तुओं के साथ आज की दो गिरफ्तारियां दर्ज करें। कहीं और बड़बड़ाहट न होने दें। '

सबइंस्पेक्टर ने फिर से सलामी दी।

'मैं अच्छी देखभाल करूंगा, सर।'

इकबाल और जुग्गा को एक टोंगा के चुंदुनगनगर पुलिस स्टेशन ले जाया गया। इकबाल को आगे की सीट के बीच में सम्मान का स्थान दिया गया था। चालक ने घोड़े की पीठ के साथ लकड़ी के शाफ्ट पर खुद को गिरा दिया, जिससे उसकी सीट खाली हो गई। जुगुत सिंह दो पुलिसकर्मियों के बीच पीछे की सीट पर बैठे। यह एक लंबी और धूल भरी ड्राइव थी, जो बिना ट्रैक वाली सड़क पर चलती थी, जो रेलवे ट्रैक के समानांतर चलती थी। आराम से एकमात्र व्यक्ति जुग्गा था। वह पुलिसकर्मियों और उन्हें जानता था

उसे पता था। और न ही स्थिति उसके लिए अपरिचित थी।

उन्होंने कहा, 'इन दिनों आपके पास थाने में कई कैदी होने चाहिए।' 'नहीं, एक नहीं,' एक कॉन्स्टेबल ने जवाब दिया। 'हम दंगाइयों को गिरफ्तार नहीं करते। हम केवल उन्हें तितर-बितर करें। और अन्य अपराधों से निपटने के लिए समय नहीं है। आपकी पिछले सात दिनों में पहली गिरफ्तारी हुई है। दोनों सेल खाली हैं। आप सभी को अपना बना सकते हैं।'

'बाबूजी को अच्छा लगेगा,' जुग्गा ने कहा। 'तुम नहीं करोगे, बाबूजी?' इकबाल ने जवाब नहीं दिया। जुग्गा ने थोड़ा ठिठका हुआ महसूस किया, और जल्दी से विषय बदलने की कोशिश की।

उन्होंने कहा, " इस हिंदुस्तान-पाकिस्तान के व्यापार के लिए आपके पास बहुत काम होना चाहिए, " उन्होंने कॉन्स्टेबल से टिप्पणी की।

'हाँ। यह सब हत्या है और पुलिस बल आधे से भी कम हो गया है।'

'क्यों, क्या वे पाकिस्तान के साथ जुड़ गए हैं?'

'हम नहीं जानते कि क्या वे दूसरी तरफ जुड़ गए हैं - वे विरोध करते रहे कि वे बिल्कुल नहीं जाना चाहते। स्वतंत्रता के दिन, अधीक्षक साहब ने सभी मुस्लिम पुलिसकर्मियों को निर्वस्त्र कर दिया और वे भाग गए। उनके इरादे बुरे थे। मुसलमान ऐसे ही हैं। आप उन पर कभी भरोसा नहीं कर सकते।'

'हां,' ने एक और पुलिसकर्मी जोड़ा, 'यह मुस्लिम पुलिस का पक्ष था जिसने दंगों में फर्क किया। लाहौर के हिंदू लड़कों ने मुसलमानों को नरक दिया होता अगर यह उनकी पुलिस के लिए नहीं होता। उन्होंने काफी जुल्म किया।'

'उनकी सेना भी ऐसी ही है। बलूच सैनिक लोगों को गोली मारते रहे हैं जब भी उन्हें यकीन हुआ कि सिख या गोरखा सैनिकों में भागने का कोई मौका नहीं है।'

'वे भगवान से बच नहीं सकते। कोई भी भगवान से बच नहीं सकता है,' जुगुत सिंह ने सख्ती से कहा। सब लोग थोड़े हैरान हुए। यहां तक कि इकबाल ने यह सुनिश्चित करने के लिए गोल किया कि आवाज जुगुत सिंह की थी।

'यह सही नहीं है, बाबूजी? तुम चतुर आदमी हो, तुम मुझे बताओ, क्या कोई परमेश्वर के क्रोध से बच सकता है?'

इकबाल ने कुछ नहीं कहा।

'नहीं, बिल्कुल नहीं,' जुग्गा ने खुद जवाब दिया। 'मैं आपको कुछ बताता हूं जो भाई मीत सिंह ने मुझे बताया था। यह सुनने लायक है, बाबूजी। यह पूरी तरह से सोलह वर्ष का है।

हर रूपया सोलह साल का है, सोचा इकबाल ने। उन्होंने रुचि लेने से इनकार कर दिया। जुग्गा चली।

'भाई ने मुझे बलूच सैनिकों के एक ट्रक के बारे में बताया जो अमृतसर से लाहौर जा रहे थे। जब वे पाकिस्तान की सीमा के पास हो रहे थे,

सैनिकों ने सड़क के किनारे जा रहे सिखों में संगीनें चिपकानी शुरू कर दीं। चालक एक साइकिल चालक या पैदल यात्री के पास धीमा हो जाता है, फुटबोर्ड पर सैनिक उसे पीछे से ठोकर मारते हैं और फिर चालक तेजी से भाग जाता है। उन्होंने इस तरह से कई लोगों को मार डाला और पाकिस्तान के नजदीक आते ही खुश और खुश महसूस कर रहे थे। वे सीमा के एक मील के भीतर थे और बड़ी तेजी से यात्रा कर रहे थे। आपको क्या लगता है तब क्या हुआ?'

'क्या?' एक बाध्य पुलिसकर्मी से पूछा। उन्होंने सभी को ध्यान से सुना - इकबाल को छोड़कर। यहां तक कि चालक ने घोड़े को रोककर पीछे देखा।

'सुनो बाबूजी, यह सुनने लायक है। एक पारिया कुत्ता सड़क पर भाग गया। टुक का एक ही ड्राइवर, जो इतने लोगों को मारने के लिए जिम्मेदार था, कुत्ते से बचने के अधिकार के लिए तेजी से झुका, एक पागल पारिया कुत्ता। वह एक पेड़ से टकरा गया। चालक और दो सैनिक मारे गए। अन्य सभी गंभीर रूप से घायल हो गए। उस बारे में आप क्या कहेंगे?'

पुलिसकर्मियों ने किया मंजूर इकबाल चिढ़ गए।

'दुर्घटना का कारण कौन है, कुत्ता या भगवान?' उन्होंने निडर होकर पूछा।

'भगवान, निश्चित रूप से,' पुलिसवालों में से एक ने जवाब दिया। 'इंसान को मारने का आनंद क्यों लेना चाहिए जो एक आवारा कुत्ते द्वारा उसके पहियों के नीचे घुसने से परेशान है?'

'आप मुझे बताएं,' इकबाल ने ठंड से कहा। उन्होंने जुग्गा को छोड़कर सभी को चौंका दिया, जो अपूरणीय थी। जुग्गा ने टोंगा चालक की ओर रुख किया। उस आदमी ने अपने घोड़े को फिर से मारना शुरू कर दिया था।

'भोला, क्या तुम्हें भगवान का कोई डर नहीं है कि तुमने अपने जानवर को इतनी बेरहमी से पीटा?' भोला ने घोड़े को पीटना बंद कर दिया। उसके चेहरे पर अभिव्यक्ति नाराजगी थी: यह

उसका घोड़ा था और वह वही कर सकता था जो उसे पसंद था।

'भोले, इन दिनों व्यापार कैसा है?' जुग्गा से पूछा, बनाने की कोशिश कर रहा हूं।

'भगवान दयालु हैं,' ने ड्राइवर को अपने कोड़े से आकाश की ओर इशारा करते हुए उत्तर दिया,

फिर जल्दी से कहा, 'इंस्पेक्टर साहब भी मेहरबान हैं। हम जीवित हैं और अपनी बेलों को भरने का प्रबंधन करते हैं।'

'क्या आप इन शरणार्थियों को पैसा नहीं देते जो पाकिस्तान जाना चाहते हैं?'

'और पैसे के लिए अपनी जान गंवा दी?' भोला ने गुस्से से पूछा। 'नहीं, धन्यवाद, भाई, आप अपनी सलाह अपने पास रखिए। जब लोग हमला करते हैं तो वे यह पता लगाने के लिए इंतजार नहीं करते कि आप कौन हैं, हिंदू या मुस्लिम; वे मार डालते हैं। दूसरे दिन जीप में सवार चार सिख सरदारों ने सड़क पर चलते हुए मुस्लिम शरणार्थियों के एक मील लंबे कॉलम के साथ यात्रा की। बिना चेतावनी दिए उन्होंने अपनी स्टेन गन से गोलियां चला दीं। चार स्टेन गन! भगवान ही जानते हैं कि उन्होंने कितने लोगों को मारा। अगर मुस्लिमों से भरी मेरी टोंगा पर भीड़ जमा हो जाती तो क्या होता? वे मुझे पहले मारते और पूछते

बाद में।'

'एक कुत्ते को जीप के नीचे क्यों नहीं डाला और उसे परेशान किया?' इकबाल से व्यंग्यपूर्वक पूछा। एक अजीब-सा ठहराव था। कोई नहीं जानता था कि इस खटास का क्या कहना है-

स्वभाव वाले बाबू। जुग्गा ने भोलेपन से पूछा: 'बाबूजी, क्या आप नहीं मानते कि बुरे कामों से कड़वी फसल पैदा होती है? यह कर्म का नियम है। तो भई हमेशा कह रहे हैं। गुरु ने भी किताब में यही कहा है।'

" हाँ, बिल्कुल, रुपये में सोलह आना, " इकबाल ने कहा।

'अच्चाजी, इसका अपना तरीका है,' जुग्गा ने मुस्कराते हुए कहा। 'आप आम लोगों से कभी सहमत नहीं होंगे।' उसने फिर से ड्राइवर का रुख किया।

'भोलेया, मैंने सुना है कि बहुत सी महिलाओं का अपहरण किया जाता है और उन्हें सस्ते में बेच दिया जाता है। आप अपने लिए एक पत्नी पा सकते हैं।'

'क्यों, सरदारा, अगर आप मुसुल्लमन्त्री को उसके लिए भुगतान किए बिना पा सकते हैं, तो क्या मैं नपुंसक हूँ कि मुझे एक अगवा महिला को खरीदना चाहिए?' भोला ने जवाब दिया।

जुग्गा को दबोच लिया गया। उसका गुस्सा बढ़ने लगा। पुलिसकर्मी, जो छींटाकशी करने लगे थे, जुगुत सिंह को देखकर घबरा गए। भोला को अपनी गलती पर पछतावा हुआ।

'क्यों, जुगिया,' उसने अपना स्वर बदलते हुए कहा। 'आप दूसरों का मज़ाक उड़ाते हैं, लेकिन गुस्सा हो जाता है जब कोई पीछे हट जाता है।'

जुग्गा ने कहा, 'अगर ये हथकड़ियाँ और भ्रूण मुझ पर नहीं होते, तो मैं आपके शरीर की हर हड्डी तोड़ देता।' 'आप आज भाग्यशाली हैं कि आप बच गए, लेकिन अगर मैंने आपको इस बात को दोबारा सुना तो मैं आपके मुंह से अपनी जीभ निकाल दूंगा।' जुग्गा जोर से चिल्लाई।

भोला बुरी तरह से घबरा गया। 'अपना आपा नहीं खोना है। मेरे पास क्या है ... ' कमीने।'

यह बातचीत का अंत था। टोंगा में बेचैनी का सन्नाटा भोला ने अपने घोड़े पर शपथ लेते ही तोड़ दिया था। जुगाड़ क्रोधित विचारों में खो गया था। उन्हें आश्चर्य हुआ कि उनकी गुप्त बैठकें सार्वजनिक ज्ञान थीं।

किसी ने शायद उसे और नूरन को एक-दूसरे से बात करते हुए देखा था। वह गपशप शुरू कर चुका होगा। अगर चुंदुनुगगर के एक टोंगा ड्राइवर को पता था, तो मनो माजरा में हर कोई कुछ समय के लिए बात कर रहा होगा। गपशप सीखने के लिए अंतिम संबंधित पक्ष हैं। शायद इमाम बख्श और उनकी बेटी नूरान गाँव के इकलौते थे जिन्हें कुछ भी पता नहीं था कि क्या कहा जा रहा है।

दोपहर के बाद पार्टी चुंदुनुगनगर पहुंची। टोंगा पुलिस स्टेशन के बाहर एक पड़ाव पर आया, जो शहर से दूर दूर तक फैले हुए दंपतियों में से एक था। कैदियों को एक धनुषाकार प्रवेश द्वार के माध्यम से निकाला गया था जिसका बड़े अक्षरों में WELCOME चित्रित किया गया था। उन्हें पहले रिपोर्टिंग में ले जाया गया

कक्षा। हेड कांस्टेबल ने एक बड़ा रजिस्टर खोला और अलग-अलग पृष्ठों पर दिन की घटनाओं की प्रविष्टियाँ कीं। टेबल के ठीक ऊपर उर्दू में एक प्लेकार्ड के साथ किंग जॉर्ज VI की पुरानी फ्रेम वाली तस्वीर थी, BRIBERY IS A CRIME। एक अन्य दीवार पर एक कैलेंडर से फटे गांधी के रंगीन चित्र लगाए गए थे। इसके नीचे अंग्रेजी में लिखा एक आदर्श वाक्य था, ईमानदारी सबसे अच्छी नीति है। कमरे में मौजूद अन्य चित्र फरारियों, बुरे चरित्रों और गुमशुदा व्यक्तियों के थे।

दैनिक डायरी प्रविष्टियाँ किए जाने के बाद, कैदियों को आंगन में अपनी कोशिकाओं में ले जाया गया। थाने में केवल दो सेल थे। ये आंगन के एक तरफ पुलिसवालों की बैरक का सामना कर रहे थे। चौक के दूर के छोर की दीवार को एक रेलवे लता द्वारा कवर किया गया था।

जुग्गा का आगमन बहुत ही उल्लास का विषय था।

'ओये, तुम फिर से वापस आ गए। आपको लगता है कि यह आपके ससुर का घर है, उनके बैरक से एक कांस्टेबल चिल्लाया।

जुगुत सिंह ने अपनी आवाज के शीर्ष पर उत्तर दिया, "यह है कि मैंने पुलिसकर्मियों की बेटियों की संख्या को देखकर बहकाया है।" वह टोंगा की अप्रियता को भूल गया था।

'ओये, बदमाश, तुम अपनी बदमाशी से नहीं बचोगे। इंस्पेक्टर साहब आपकी कही गई बातों को सुनें और तब तक इंतजार करें, जब तक वह आपके नीचे गर्म मिर्च डाल देंगे।'

'आप अपने दामाद के साथ ऐसा नहीं कर सकते !'

इकबाल के साथ यह अलग था। माफी के साथ उसके हथकंडे हटा दिए गए। उनके कक्ष में एक कुर्सी, एक मेज और एक चारपाई रखी गई थी। हेड कांस्टेबल ने सभी दैनिक समाचार पत्रों और पत्रिकाओं, अंग्रेजी और उर्दू को इकट्ठा किया, जिसे वह सेल में पा सकता था और छोड़ सकता था। इकबाल का खाना पीतल की थाली में परोसा गया और उनकी चरसई के बगल में मेज पर एक छोटा सा घड़ा और एक गिलास गिलास रखा गया। जुग्गा को उसके सेल में कोई फर्नीचर नहीं दिया गया था। उसका भोजन वस्तुतः उसी पर चढ़ा हुआ था और उसने अपने हाथ से उसकी चपातियाँ खा लीं। एक कांस्टेबल ने लोहे की सलाखों के माध्यम से अपनी क्यूब्ड हथेली पर पानी डाला। जुग्गा का बिस्तर कठोर सीमेंट का फर्श था।

उपचार के अंतर ने इकबाल को आश्चर्यचकित नहीं किया। ऐसे देश में जिसने कई शताब्दियों तक जाति भेद स्वीकार किया था, असमानता एक जन्मजात मानसिक अवधारणा बन गई थी। यदि जाति को कानून द्वारा समाप्त कर दिया गया था, तो यह वर्ग भेद के अन्य रूपों में आया। दिल्ली में सरकारी सचिवालय में सिविल सेवकों की तरह पश्चिमी क्षेत्रों में, पार्किंग कारों के लिए स्थान वरिष्ठता के अनुसार चिह्नित किए गए थे, और कार्यालयों के कुछ प्रवेश द्वार उच्च अधिकारियों के लिए आरक्षित थे। प्रयोगशालाओं को रैंक के अनुसार वर्गीकृत किया गया और वरिष्ठ अधिकारियों, जूनियर अधिकारियों, क्लर्कों और लेबल किए गए

STENOGRAPHERS और अन्य रन। एक मानसिक मेकअप के साथ इतनी अच्छी तरह से अनुभागीय, उनकी सामाजिक स्थिति के अनुसार ग्रेडिंग जो एक ही अपराध के आरोपित या दोषी थे, असंगत नहीं दिखे। इकबाल ए-क्लास था। जुग्गा रॉक- सी सी थी।

अपने मध्याह्न भोजन के बाद, इकबाल चारपाई पर लेट गया। उन्होंने जुग्गा की कोठरी से खरटि सुने। लेकिन वह खुद भी सोने के लिए बहुत परेशान था। उसका मन एक घड़ी के नाजुक झरने की तरह था, जो छूने के बाद कई घंटों तक चलता है। वह उठ बैठा और अखबारों के ढेर को पलटने लगा, हेड कांस्टेबल ने उसे छोड़ दिया। वे सभी एक जैसे थे: एक ही खबर, एक ही बयान, एक ही संपादकीय। सुर्खियों के शब्दों को छोड़कर, वे सभी एक ही हाथ से लिखे गए हो सकते हैं। यहां तक कि तस्वीरें भी वही थीं। घृणा में, उसने वैवाहिक विज्ञापनों की ओर रुख किया। वहां कभी-कभी मनोरंजन होता था। लेकिन पंजाब के युवा इस खबर के समान थे। पत्नी में उनके लिए आवश्यक गुण समान थे। सभी कुंवारी चाहते थे। बाकी की तुलना में अधिक व्यापक, विधवाओं पर विचार करने के लिए तैयार थे, लेकिन केवल अगर उन्हें अपवित्र नहीं किया गया था। सभी मांग करने वाली महिलाएं जो हाहा, या घरेलू मामलों में अच्छी थीं। उन्नत और धर्मार्थ के लिए, सी। और डी। [जाति और दहेज] कोई रोक नहीं थी। कई ने अपनी भावी पत्नियों की तस्वीरें नहीं मांगीं। सौंदर्य, उन्होंने पहचाना, केवल त्वचा गहरी थी। अधिकांश 'कुंडली के अनुरूप' चाहते थे। खगोलीय सद्भाव खुशी की गारंटी थी। इकबाल ने पत्रों को फेंक दिया, और पत्रिकाओं के माध्यम से अफवाह उड़ाई। कुछ भी हो, वे अखबारों से भी बदतर थे। अजंता गुफा भित्तिचित्रों पर अपरिहार्य लेख था। भारतीय बैले पर लेख था। टैगोर पर लेख था। प्रेम चंद की कहानियों पर लेख था।

फिल्म सितारों के निजी जीवन पर लेख थे। इकबाल ने हार मान ली, और फिर से लेट गया। वह हर चीज के बारे में उदास महसूस करता था। उसके साथ ऐसा हुआ कि वह मुश्किल से तीन दिन सो पाया था। वह सोचता था कि क्या इसे 'बलिदान' माना जाएगा। यह संभव था। उन्हें पार्टी में शब्द भेजने का कोई तरीका खोजना होगा। फिर, शायद... वह अपनी गिरफ्तारी, अपनी रिहाई, एक नेता के रूप में अपने विजयी उद्घोषणा की घोषणा के बैनर सुर्खियों के साथ सो गया। शाम को एक पुलिसकर्मी एक और कुर्सी लेकर इकबाल के कक्ष में आया।

'क्या कोई मेरा सेल साझा करने जा रहा है?' इकबाल से थोड़ा आशंकित होकर पूछा।

'नहीं, बाबूजी। केवल इंस्पेक्टर साहब। वह आपके साथ एक शब्द रखना चाहता है। वह अभी आ रहा है।'

इकबाल ने जवाब नहीं दिया। पुलिसकर्मी ने एक पल के लिए कुर्सी की स्थिति का अध्ययन किया। फिर वह पीछे हट गया। गलियारे में आवाज़ की आवाज़ आ रही थी, और सबइन्स्पेक्टर दिखाई दिया।

'क्या मुझे आपके प्रवेश की अनुमति है?'

इकबाल ने सिर हिलाया। 'मैं तुम्हारे लिए क्या कर सकता हूँ, इंस्पेक्टर साहब?'

'हम आपके गुलाम हैं, मिस्टर इकबाल। आप हमें आज्ञा दें और हम आपकी सेवा करेंगे, ' सबइन्स्पेक्टर ने मुस्कराते हुए उत्तर दिया। उसे अपने लहजे और तरीके को बदलने की क्षमता पर गर्व था क्योंकि परिस्थितियों की आवश्यकता थी। वह कूटनीति थी।

'मुझे नहीं पता था कि तुम लोगों की हत्या के लिए इतने दयालु थे। यह हत्या के आरोप में है कि आप मुझे यहां लाए हैं, है न? मुझे नहीं लगता कि आपके पुलिसकर्मियों ने कहा था कि मैं कल ही मनोहर माजरा में आया था।

'हमने कोई शुल्क नहीं लगाया है। वह अदालत के लिए है। हम केवल आपको संदेह के आधार पर हिरासत में ले रहे हैं। हम सीमावर्ती क्षेत्रों में राजनीतिक आंदोलनकारियों को अनुमति नहीं दे सकते। ' सबइन्स्पेक्टर मुस्कुराता रहा। 'आप पाकिस्तान में क्यों नहीं जाते हैं और अपना प्रचार करते हैं।'

इकबाल गुस्से में आग बबूला हो गए, लेकिन उन्होंने अपने गुस्से के किसी भी संकेत को दबाने की कोशिश की। ' पाकिस्तान से संबंधित ', इंस्पेक्टर साहब? 'आप एक मुस्लिम हैं। आप पाकिस्तान जाएं।'

इकबाल ने विस्फोट किया, यह एक खूनी झूठ है। 'क्या अधिक है, आप जानते हैं कि यह एक झूठ है। आप सिर्फ झूठे केस में फंसाकर अपनी मूर्खता को कवर करना चाहते हैं।'

इंस्पेक्टर वापस खट्टा बोला।

'आपको अपनी जीभ का इस्तेमाल किसी भेदभाव, मि। इकबाल के साथ करना चाहिए। मैं आपके पिता के " खून " के लिए भुगतान करने के लिए नहीं हूँ। आपका नाम इकबाल है और आपका खतना किया गया है। मैंने स्वयं तुम्हारी परीक्षा ली है। इसके अलावा, आप मनो माजरा में अपनी उपस्थिति के लिए कोई स्पष्टीकरण नहीं दे सकते हैं। वह पर्याप्त है।'

'यह पर्याप्त नहीं होगा जब यह अदालत में, और अखबारों में आएगा। मैं कर रहा हूँ नहीं एक मुस्लिम नहीं है कि मायने रखती है और क्या मैं के लिए मनो माजरा के लिए आया था अपने व्यापार में से कोई भी नहीं है। यदि आप मुझे चौबीस घंटे के भीतर रिहा नहीं करते हैं तो मैं बंदी प्रत्यक्षीकरण याचिका दायर करूंगा और अदालत को आपके कर्तव्यों के बारे में बताऊंगा।'

'बंदी प्रत्यक्षीकरण याचिका?' सबइंस्पेक्टर हंसी के साथ दहाड़ा। 'ऐसा लगता है कि आप विदेशी भूमि में लंबे समय से रह रहे हैं, श्री इकबाल। अब भी तुम मूर्ख के स्वर्ग में रहते हो। आप जिएंगे और सीखेंगे।'

सबइंस्पेक्टर ने अचानक सेल छोड़ दी, और स्टील बार गेट पर ताला लगा दिया। उसने बगल में एक ताला खोला, जिसमें जुग्गा बंद था।

'सत श्री अकाल, इंस्पेक्टर साहब।'

सबइंस्पेक्टर ने अभिवादन स्वीकार नहीं किया।

'क्या आप कभी बदमाश होना छोड़ देंगे?'

'मोती के राजा, आप कह सकते हैं कि आपको क्या पसंद है, लेकिन इस बार मैं निर्दोष हूँ। मैं गुरु की कसम खाकर कहता हूँ कि मैं निर्दोष हूँ।'

जुग्गा फर्श पर बैठी रही। सबइंस्पेक्टर दीवार के पास झुक गया।

'डकैती की रात तुम कहाँ थे?'

'मुझे डकैतों से कोई लेना-देना नहीं था,' जुग्गा ने उत्तर दिया। 'डकैती की रात तुम कहाँ थे?' सबइंस्पेक्टर को दोहराया। जुग्गा ने नीचे फर्श पर देखा। 'मैं अपने खेतों में चला गया था। मेरी बारी थी

पानी।'

सबइंस्पेक्टर जानता था कि वह झूठ बोल रहा है। 'मैं नहर के आदमी के साथ पानी की बारी की जाँच कर सकता हूँ। क्या आपने लंबरदार को सूचित किया कि आप गाँव से बाहर जा रहे थे?'

जुग्गा ने केवल अपने पैरों को हिला दिया और फर्श पर देखती रही।

'तुम्हारी माँ ने कहा कि तुम जंगली सुअर को भगाने चले थे।'

जुग्गा ने अपने पैर हिलाना जारी रखा। एक लंबे विराम के बाद उन्होंने फिर कहा, 'मुझे डकैतों से कोई लेना-देना नहीं था। मैं निर्दोष हूँ।'

'डकैत कौन थे?'

'मोती के राजा, मुझे कैसे पता चलेगा कि डकैत कौन थे? मैं उस समय गाँव से बाहर था, अन्यथा आपको लगता है कि किसी ने भी मनो माजरा में लूटने और मारने की हिम्मत की होगी?'

'डकैत कौन थे?' सबइंस्पेक्टर मासिक धर्म दोहराया। 'मुझे पता है आप उन्हें जानते हैं। वे निश्चित रूप से आपको जानते हैं। उन्होंने आपके लिए कांच की चूड़ियों का तोहफा छोड़ा।'

जुग्गा ने कोई जवाब नहीं दिया।

'आप अपने नितंबों पर चाबुक मारना चाहते हैं या बात करने से पहले लाल मिर्च आपके मलाशय में डाल दिया है?'

जुग्गा ने जीत दर्ज की। उसे पता था कि सबइंस्पेक्टर का मतलब क्या है। वह इसके माध्यम से किया गया था - एक। चार दर्जन पुलिसकर्मियों के साथ हाथ और पैर चारपाइयों के नीचे रखे थे। अंडकोष मुड़ और निचोड़ जब तक एक दर्द के साथ संवेदनहीन हो गया। पाउडर लाल मिर्च मोटे हाथों से मलाशय को जोर देती है, और कई दिनों तक पूंछ पर आग लगाने की सनसनी होती है। यह सब, और कोई भोजन या पानी, या गर्म मसालेदार भोजन के साथ झिलमिलाता ठंडा पानी, जो किसी की पहुंच से परे सेल के बाहर डाला जाता है। स्मृति ने उसे हिला दिया।

'नहीं,' उन्होंने कहा। 'भगवान की खातिर, नहीं।' उसने खुद को फर्श पर गिरा दिया और अपने दोनों हाथों से सबइंस्पेक्टर के जूते पकड़ लिए। 'कृपया, हे मोती के राजा।' उसे खुद



पर शर्म आ रही थी, लेकिन वह जानता था कि वह फिर कभी ऐसी यातना नहीं सह सकता।  
'मैं निर्दोष हूँ। गुरु के नाम से, मेरा कोई लेना-देना नहीं था

डकैती। '

छह फुट चार पैर की मांसपेशियों को अपने पैरों पर रेंगते देख सबइंस्पेक्टर को उत्थान की अनुभूति हुई। वह किसी को भी शारीरिक दर्द के खिलाफ नहीं जानता था, न कि किसी को। यातना के पैटर्न को सावधानी से चुना जाना था। कुछ ने भुखमरी के शिकार हुए, दूसरों ने इकबाल के प्रकार - पुलिसकर्मियों के सामने शौच करने की असुविधा के लिए। उनके चेहरे पर बैठी कुछ मक्खियाँ उनके पीछे बंधे हुए हाथों से छल से मुस्कराती थीं। नींद की कमी कुछ अंत में उन्होंने सब दिया।

उन्होंने कहा, "मैं आपको डकैतों के नाम बताने के लिए दो दिन का समय दूंगा।"  
'नहीं तो, मैं तुम्हारे पीछे तब तक मारूँगा, जब तक वह राम की पूँछ की तरह न दिखे।'

सबइंस्पेक्टर ने अपने पैर जुगगा के हाथों से मुक्त किए और बाहर चला गया। उनके दौरे असफल रहे थे। उसे अपनी रणनीति बदलनी होगी। यह दो लोगों के साथ इतने अलग तरीके से निपटने के लिए निराशाजनक था।



## कलयुग

सितंबर की शुरुआत में मनो माजरा में समय निर्धारित करने की प्रक्रिया गलत हो गई। ट्रेनों पहले से कम समय की पाबंद हो गई और कई और रात में चलने लगीं। कुछ दिनों से ऐसा लग रहा था कि अलार्म घड़ी गलत घंटे के लिए लगाई गई थी। दूसरों पर, यह ऐसा था जैसे किसी ने इसे हवा देने के लिए याद नहीं किया। इमाम बख्श ने पहली मुलाकात करने के लिए मीट सिंह का इंतजार किया। मीट सिंह उठने से पहले मुल्ला की प्रार्थना के लिए इंतजार कर रहा था। लोग इस बात को समझे बगैर देर से बिस्तर पर पड़े थे कि समय बदल गया है और मेल ट्रेन बिल्कुल नहीं चल सकती है। बच्चों को पता नहीं था कि कब भूख लग जाए, और हर समय भोजन के लिए लिपटे रहें। शाम में, हर कोई सूर्यास्त से पहले और बिस्तर में था, इससे पहले कि एक्सप्रेस द्वारा - अगर यह आया था। माल गाड़ियों ने पूरी तरह से चलना बंद कर दिया था, इसलिए उन्हें सोने के लिए लालच देने के लिए कोई लोरी नहीं थी। इसके बजाय, मनोहर माजरा के सपनों को विचलित करते हुए, मध्यरात्रि और भोर के बीच भूत की ट्रेनें विषम समय में चली गईं।

यह सब नहीं था जिसने गांव का जीवन बदल दिया। सिख सैनिकों की एक टुकड़ी वहां पहुंची और रेलवे स्टेशन के पास टेंट लगा दिया। उन्होंने पुल के पास सिग्नल के आधार के बारे में सैंडबैग के छह फुट ऊंचे वर्ग का निर्माण किया, और प्रत्येक चेहरे में एक मशीन गन लगाई। प्लेटफॉर्म पर सशस्त्र संतरी गश्त करने लगे और किसी भी ग्रामीण को रेलिंग के पास जाने की अनुमति नहीं थी। दिल्ली से आने वाली सभी ट्रेनों ने पाकिस्तान जाने से पहले अपने ड्राइवर और गार्ड को रोक दिया। पाकिस्तान से आने वाले लोग अपने इंजनों के माध्यम से भागते हैं और रिहाई और राहत के साथ चिल्लाते हैं।

एक सुबह, पाकिस्तान से एक ट्रेन मनो माजरा रेलवे स्टेशन पर रुकी। पहली नज़र में, यह शांति के दिनों में रेलगाड़ियों का रूप था। कोई छत पर नहीं बैठा। बोगियों के बीच कोई नहीं चढ़ता। फुटबोर्ड पर कोई भी संतुलित नहीं था। लेकिन किसी तरह यह अलग था। इसे लेकर कुछ असहजता थी। इसमें एक भूतिया गुण था। जैसे ही यह प्लेटफॉर्म तक पहुंचा, गार्ड ट्रेन के टेल एंड से उभरा और स्टेशनमास्टर के कार्यालय में चला गया। फिर दोनों सैनिकों के तंबू में गए और प्रभारी अधिकारी से बात की। सैनिकों को बाहर बुलाया गया और ग्रामीणों ने मनोहर माजरा को वापस करने का आदेश दिया। एक आदमी को मोटरसाइकिल पर चुंदनुगनगर के लिए रवाना किया गया। एक

घंटे भर बाद, लगभग पचास सशस्त्र पुलिसकर्मियों के साथ सबइंस्पेक्टर स्टेशन पर पलट गया। उनके तुरंत बाद, श्री हुकुम चंद ने अपनी अमेरिकी कार में यात्रा की।

दिन के उजाले में भूत ट्रेन के आगमन ने मनो माजरा में एक हंगामा पैदा कर दिया। लोग अपनी छतों पर खड़े होकर यह देखने के लिए खड़े थे कि स्टेशन पर क्या हो रहा है। वे जो कुछ भी देख सकते थे, वह प्लेटफॉर्म के एक छोर से दूसरे हिस्से तक फैले ट्रेन के काले शीर्ष पर था। स्टेशन की इमारत और रेलिंग ने ट्रेन के बाकी हिस्सों को देखने से रोक दिया। कभी-कभी कोई सिपाही या पुलिसकर्मी स्टेशन से बाहर निकलता और फिर वापस चला जाता।

दोपहर में, पुरुषों ने छोटे समूहों में ट्रेन पर चर्चा की। समूह पीपल के पेड़ के नीचे एक दूसरे के साथ विलय हो गए, और फिर सभी गुरुद्वारे में चले गए। महिलाएं, जो घर-घर जाकर, गपशप की बिटस इकट्ठा करके, मुखिया के घर में इकट्ठा हुईं और अपने घर आने के लिए इंतजार कर रही थीं और उन्हें बताया कि उन्होंने ट्रेन के बारे में क्या सीखा है।

मनो माजरा में चीजों का यही पैटर्न था जब परिणाम का कुछ भी हुआ। महिलाएं मुखिया के घर गईं, पुरुष मंदिर में। गाँव का कोई भी मान्यता प्राप्त नेता नहीं था। बंता सिंह, मुखिया, वास्तव में केवल एक राजस्व कलेक्टर थे - एक लंबरदार। उनके परिवार में कई पीढ़ियों से यह पद था। उसके पास दूसरों से ज्यादा कोई जमीन नहीं थी। न ही वह किसी अन्य तरीके से सिर था। उसके पास उसके बारे में कोई हवा नहीं थी: वह अपने बाकी ग्रामीणों की तरह एक मामूली मेहनती किसान था। लेकिन चूंकि सरकारी अधिकारी और पुलिस उससे निपटते थे, इसलिए उन्हें आधिकारिक दर्जा प्राप्त था। उनके नाम से किसी ने उन्हें नहीं बुलाया। वह 'ओ लम्बरदार' था, उसके पिता के रूप में, उसके पिता के पिता और उसके पिता के पिता उसके पहले थे।

गाँव की सभाओं में अपनी राय देने वाले एकमात्र पुरुष इमाम बख्श, मस्जिद के मुल्ला और भाई मीत सिंह थे। इमाम बख्श एक बुनकर थे, और बुनकर पारंपरिक रूप से पंजाब में चुटकुले हैं। वे पवित्र और कायर माने जाते हैं - कोयल की एक जाति जिसकी स्त्रियाँ हमेशा दूसरों के साथ संबंध रखती हैं। उनके परिवार में त्रासदियों की एक श्रृंखला ने उन्हें दया की वस्तु बना दिया था, और फिर स्नेह का। पंजाबियों को उन लोगों से प्यार है, जिन्हें वे दया कर सकते हैं। उनकी पत्नी और इकलौता बेटा एक दूसरे के कुछ दिनों के भीतर ही मर गया था। उसकी आँखें, जो कभी बहुत अच्छी नहीं थीं, अचानक खराब हो गईं और वह अपने करघों को और अधिक काम नहीं कर सका। उसकी देखभाल करने के लिए एक बच्ची नूरान के साथ भिखारी बन गया। उन्होंने मस्जिद में रहना और मुस्लिम बच्चों को कुरान पढ़ाना शुरू किया। उन्होंने गांव के लोगों के लिए कुरान से छंद के रूप में पहनने के लिए या बीमारों के लिए दवा के रूप में निगलने के लिए छंद लिखे। आटे, सब्जियाँ, भोजन और अरंडी के कपड़े का छोटा सा प्रसाद उन्हें और उनकी बेटी को जीवित रखता था। वह

उपाख्यानों और कहावतों का एक अद्भुत कोष था जिसे किसान सुनना पसंद करते थे। उनकी उपस्थिति ने सम्मान की आज्ञा दी। वह एक लंबा, दुबला-पतला आदमी था, सफेद बालों की एक पंक्ति के लिए गंजा बचा था, जो उसके सिर के पीछे से कान तक गोल-गोल भागता था, और उसके पास बड़ी करीने से सिल्की सफेद दाढ़ी थी जिसे वह कभी-कभी मेंहदी से गहरे नारंगी-लाल रंग में रंगता था। उनकी आंखों में मोतियाबिंद ने उन्हें एक दार्शनिक रूप दिया। अपने साठ साल के बावजूद, उन्होंने खुद को सीधा रखा। इस सबने उनके असर को एक धार्मिकता और धार्मिकता की आभा प्रदान की। उन्हें ग्रामीणों को इमाम बख्श या मुल्ला के रूप में नहीं बल्कि एक चाचा या 'अंकल' के रूप में जाना जाता था।

मीत सिंह ने इस तरह के स्नेह और सम्मान के लिए प्रेरित नहीं किया। वह केवल एक किसान था जिसने काम से भागने के रूप में धर्म को अपना लिया था। उनके पास अपनी थोड़ी सी जमीन थी जिसे उन्होंने पट्टे पर दे दिया था, और यह, मंदिर में प्रसाद के साथ, उन्हें एक आरामदायक जीवन दिया। उनकी कोई पत्नी या बच्चे नहीं थे। उन्हें शास्त्रों में नहीं सीखा गया था, न ही उनके पास बातचीत के लिए कोई संकाय था। यहां तक कि उनकी शक्ति भी उनके खिलाफ थी। वह छोटा, मोटा और बालों वाला था। वह इमाम बख्श के रूप में एक ही उम्र का था, लेकिन उसकी दाढ़ी में दूसरे की शांति नहीं थी। यह काले रंग की थी, जिसमें धारियाँ थीं। और वह अछूता था। उन्होंने शास्त्र पढ़ते समय ही अपनी पगड़ी पहनी थी। अन्यथा, वह अपने लंबे बालों के साथ लकड़ी की कंघी द्वारा रखे ढीले गाँठ में बंधे हुए

थे। उसकी गर्दन के नाखून पर लगभग आधे बाल बिखरे हुए थे। उन्होंने शायद ही कभी एक शर्ट पहनी हो और उनका एकमात्र कपड़ा - शॉर्ट्स की एक जोड़ी - हमेशा गंदगी के साथ चिकना था। लेकिन मीत सिंह शांति का आदमी था। ईमाम बक्श के प्रति ईर्ष्या ने उनके स्नेह को कभी जहर नहीं दिया। उन्होंने केवल यह महसूस किया कि इमाम बक्श ने कोई सुझाव देने के लिए कुछ कहने के लिए अपने समुदाय के लिए इसे बकाया कर दिया। उनकी बातचीत में हमेशा दोस्ताना प्रतिद्वंद्विता थी।

गुरुद्वारे में बैठक से उदासी का माहौल था। लोगों के पास कहने के लिए बहुत कम थे, और जो लोग धीरे-धीरे बोलते थे, नबियों की तरह।

इमाम बक्श ने चर्चा खोली। 'अल्लाह रहम करे। हम बुरे वक्त में जी रहे हैं।'

कुछ लोगों ने पूरी गंभीरता से कहा, 'हाँ, बुरे दिन।'

मीत सिंह ने कहा, 'हां, चाचा- यह कलयुग है, काला युग है।'

एक लंबी खामोशी थी और लोगों ने अपने कुबड़ेपन पर बेचैनी से चिल्लाया। कुछ चिल्लाते हुए, भगवान को जोर से आह्वान के साथ अपना मुंह बंद करते हुए: 'अल्लाह। वाह गुरु, वाहे गुरु।'

'लम्बरदार,' ने इमाम बक्श को फिर से शुरू किया, 'आपको पता होना चाहिए कि क्या हो रहा है। डिप्टी साहब ने आपके लिए क्यों नहीं भेजा है?'

'मुझे कैसे पता चलेगा, चचा? जब वह मेरे लिए भेजेगा तो मैं जाऊंगा। वह स्टेशन पर भी है और किसी को भी इसके पास जाने की अनुमति नहीं है।'

एक युवा ग्रामीण ने तेज़ आवाज़ में कहा: 'हम मरने वाले नहीं हैं'

बस अभी तक। हमें जल्द ही पता चल जाएगा कि क्या चल रहा है। यह सब के बाद एक ट्रेन है। यह सरकारी खजाने या हथियारों को ले जाने वाला हो सकता है। इसलिए वे इसकी रखवाली करते हैं। तुमने सुना नहीं, बहुतों को लूटा गया है?'

'चुप रहो,' गुस्से में अपने दाढ़ी वाले पिता को फटकार लगाई। 'जहाँ बुजुर्ग हैं, आपको बात करने की क्या ज़रूरत है?'

'मैं केवल ...'

'वह सब है,' पिता ने सख्ती से कहा। कुछ देर तक कोई कुछ नहीं बोला।

इमाम बक्श ने कहा, "मैंने सुना है, धीरे-धीरे अपनी दाढ़ी को अपनी उंगलियों से मिलाते हुए," कि गाड़ियों के साथ कई घटनाएं हुई हैं।'

शब्द 'घटना' ने दर्शकों में एक असहज भावना पैदा की। "हां, बहुत सी घटनाओं के बारे में सुना है, " मीत सिंह थोड़ी देर बाद सहमत हुए।

इमाम बक्श ने कहा, "हम केवल अल्लाह से रहम की माँग करते हैं।"

सिंह से मिलें, ईश्वर के लिए आह्वान का अर्थ यह नहीं है कि, 'वाहे गुरु, वाहे गुरु।'

वे 'ये अल्लाह' और 'हे वाहे गुरु' के जम्हाई और बड़बड़ाते हुए चुप्पी साध गए।

विधानसभा के बाहरी किनारे पर कई लोग, फर्श पर खुद को फैलाकर सो गए।

गुरुद्वारे के द्वार पर अचानक एक पुलिस वाला दिखाई दिया। लंबरदार और तीन-चार ग्रामीण खड़े हो गए। जो लोग सो रहे थे उन्हें उठने-बैठने में दिक्कत हुई। जो दर्जन भर हो गए थे, वे अचंभित होकर बोले, 'यह क्या है? क्या हो रहा है?', फिर जल्दी से अपनी पगड़ी लपेटकर अपना सिर गोल कर रहे थे।

'गाँव का लम्बरदार कौन है?'

बंता सिंह दरवाजे तक गया। पुलिसवाला उसे एक तरफ ले गया और कुछ फुसफुसाया। फिर जैसे ही बंता सिंह पीछे मुड़े, उन्होंने जोर से कहा: 'जल्दी से, आधे

घंटे के भीतर। स्टेशन की तरफ दो सैन्य ट्रक इंतज़ार कर रहे हैं। मैं वहां रहूंगा। '

पुलिसकर्मी बड़ी मुश्किल से चले।

ग्रामीणों ने गोल बंता सिंह को भीड़ दी। एक गुप्त के कब्जे ने उसे महत्व की एक हवा दी थी। उनकी आवाज़ में अधिकार का स्वर था।

'हर किसी को अपने घर में सभी लकड़ी मिलती है और सभी मिट्टी के तेल वह स्पेयर कर सकते हैं और स्टेशन की तरफ मोटर ट्रकों में ला सकते हैं। आपको भुगतान किया जाएगा। '

ग्रामीण उन्हें इंतज़ार कर रहे थे कि वह उन्हें क्यों बताए। उसने उन्हें निर्दयतापूर्वक आदेश दिया। 'क्या आप बहरे हैं? तुमने सुना नहीं? या आप चाहते हैं कि पुलिस आपके कदम से पहले आपके नितंबों को कोड़े मारे? जल्दी से आओ। '

लोग एक-दूसरे से फुसफुसाते हुए गाँव की गलियों में चले गए। लंबरदार अपने घर चला गया।

कुछ मिनटों के बाद, लकड़ी के बंडलों और तेल की बोतलों के साथ ग्रामीणों ने स्टेशन के बाहर गांव के बाहर इकट्ठा होना शुरू कर दिया। दो बड़े मिट्टी-हरे सेना के ट्रकों को एक-दूसरे के साथ पार्क किया गया था। एक खाली दीवार के डिब्बे की एक मिट्टी की दीवार के खिलाफ खड़ा था। एक बंदूकधारी एक सिख सैनिक बंदूक लिए खड़ा था। एक अन्य सिख, जो अपनी दाढ़ी के साथ बड़े करीने से बालों के जाल में लुढ़का हुआ था, अपने पैरों के झूलते हुए ट्रकों में से एक के पीछे बैठ गया। उसने लकड़ी को दूसरे ट्रक में देखा और ग्रामीणों के अभिवादन के जवाब में सिर हिला दिया। लंबरदार उसके बगल में खड़ा था, ग्रामीणों के नाम और उनके द्वारा लाई गई मात्रा को लेकर। ट्रक पर लकड़ी के अपने बंडलों को डंप करने और मिट्टी के बोतलों को पेट्रोल के डिब्बे में खाली करने के बाद, ग्रामीणों ने अधिकारी से सम्मानजनक दूरी पर एक छोटे समूह में एकत्र किया।

इमाम बख्श ने अपने सिर पर रखी लकड़ी को ट्रक पर रखा और अपनी तेल की बोतल लंबरदार को सौंप दी। उन्होंने अपनी पगड़ी को फिर से बांधा , फिर अधिकारी को जोर से सलाम किया, 'सलाम, सरदार साहब।'

अधिकारी ने दूर देखा।

इमान बक्श फिर से शुरू किया, 'सब कुछ ठीक है, है ना सरदार साहब?' अधिकारी

अचानक पलट गया और बोला, 'साथ जाओ। क्या तुम मुझे नहीं देखते?

व्यस्त हूँ?'

इमाम बख्श, अभी भी अपनी पगड़ी को समायोजित कर रहे हैं, नम्रता से ग्रामीणों में शामिल हो गए।

जब दोनों ट्रकों को लोड किया गया, तो अधिकारी ने बंता सिंह को पैसे के लिए अगली सुबह शिविर में आने के लिए कहा। ट्रक रुक-रुक कर स्टेशन की ओर भागे।

बंता सिंह उत्सुक ग्रामीणों से घिरा हुआ था। उसने महसूस किया कि वह इमाम बख्श के अपमान के लिए किसी तरह जिम्मेदार था। गाँव वाले उसके साथ अधीर थे।

'हे लंबरदार, आप हमें कुछ क्यों नहीं बताते? यह सब बड़ा रहस्य क्या है जिसके बारे में आप बता रहे हैं? आपको लगता है कि आप किसी के लिए बहुत महत्वपूर्ण हो गए हैं और हमें और बात करने की आवश्यकता नहीं है, 'सिंह ने गुस्से से कहा।

'नहीं, भई, नहीं। अगर मुझे पता होता, तो मैं आपको क्यों नहीं बताता? आप बच्चों की तरह बात करते हैं। मैं सैनिकों और पुलिसकर्मियों के साथ कैसे बहस कर सकता हूँ? उन्होंने मुझे कुछ नहीं बताया। और क्या तुमने नहीं देखा कि कैसे सुअर के लिंग ने चाचा से बात

की? एक का स्वाभिमान अपने हाथों में है। मुझे अपनी पगड़ी उतार कर खुद का अपमान क्यों करना चाहिए था? '

इमाम बख्श ने इशारे को इनायत से स्वीकार किया। 'लम्बरदार सही है। जब आप उससे बात करते हैं तो यह किसी को भौंकता है, चुप रहना सबसे अच्छा है। हम सबको जाने दो

हमारे घर। आप देख सकते हैं कि वे आपकी छतों के शीर्ष से क्या कर रहे हैं। ' ग्रामीणों

ने अपनी छतों से खदेड़ दिया। वहां से ट्रक जा सकते थे स्टेशन के पास शिविर में देखा। वे फिर से शुरू हुए और रेलवे ट्रक के साथ पूर्व तक चले गए जब तक कि वे सिग्नल से परे नहीं थे। फिर वे तेजी से बाएं मुड़ गए और पटरियों के पार टकरा गए। वे फिर से बाईं ओर मुड़ गए, स्टेशन की ओर लाइन के साथ वापस आए, और ट्रेन के पीछे गायब हो गए।

पूरी दोपहर, ग्रामीण एक दूसरे से चिल्लाते हुए अपनी छतों पर खड़े थे, यह पूछते हुए कि क्या किसी ने कुछ भी देखा है। अपने उत्साह में वे मध्याह्न भोजन तैयार करना भूल गए थे। माताओं ने अपने बच्चों को पहले ही दिन से बासी बचे हुए बच्चों को खिलाया। उनके पास अपने चूल्हा जलाने का समय नहीं था। पुरुषों ने अपने मवेशियों को चारा नहीं दिया और न ही उन्हें दूध पिलाने के लिए याद किया, क्योंकि शाम ढल चुकी थी। जब सूर्य पहले से ही पुल के मेहराब के नीचे था, हर कोई दैनिक कार्यों की अनदेखी करने के प्रति सचेत हो गया। यह जल्द ही अंधेरा हो जाएगा और बच्चे भोजन के लिए चट कर जाएंगे, लेकिन फिर भी महिलाएं देखती रहीं, उनकी आंखें स्टेशन की ओर घूम गईं। गायों और भैंसों को खलिहानों में उतारा गया, लेकिन फिर भी आदमी स्टेशन की तरफ छतों पर रुके रहे। सभी को कुछ होने की उम्मीद थी।

सूर्य पुल के पीछे डूब गया, आसमान में दिखाई देने वाले सफेद बादलों को रोशन, तांबा और नारंगी रंग के साथ देखा। फिर शाम को चमक के साथ भूरे रंग के रंगों को जोड़ा गया और गोधूलि और धुंधलका अंधेरे में डूब गया। स्टेशन एक काली दीवार बन गया। धीरे-धीरे, पुरुष और महिलाएं अपने आंगन में चले गए, दूसरों को भी ऐसा करने के लिए कहा। वे कुछ भी याद नहीं करना चाहते थे।

उत्तरी क्षितिज, जो एक धूसर ग्रे हो गया था, फिर से नारंगी दिखा। नारंगी तांबे में बदल गया और फिर एक चमकदार चूहे में। लाल आकाश की लाल जीभ ने काले आकाश में छलांग लगा दी। गाँव की ओर एक हल्की हवा चलने लगी। यह लकड़ी की, फिर मिट्टी के तेल की गंध की गंध लाया। और फिर-एक मांस की तीखी गंध।

गाँव में अभी भी सन्नाटा पसरा हुआ था। किसी और से नहीं पूछा कि गंध क्या थी। वे सब जानते थे। वे इसे हर समय जानते थे। जवाब इस तथ्य में निहित था कि ट्रेन पाकिस्तान से आई थी।

उस शाम, पहली बार मनो माजरा की याद में, इमाम बख्श के पुत्र के रोने की आवाज़ ईश्वर की महिमा का बखान करने के लिए स्वर्ग तक नहीं पहुंची।

दिन की घटनाओं ने रेस्ट हाउस में अपनी चमक बिखेरी। हुकुम चंद सुबह से ही बाहर थे। चाय और सैंडविच के थर्मस फ्लास्क के लिए जब उनका अर्दली दोपहर के समय स्टेशन से आया, तो उसने भालू और स्वीपर को बताया

ट्रेन के बारे में। शाम को, नौकरों और उनके परिवारों ने पेड़ों की लाइन के ऊपर आग की लपटों को देखा। आग ने बंगले की खाकी दीवारों पर एक उदासी से भरी अम्बर रोशनी डाली।

दिन के काम ने हुकुम चंद को बाहर कर दिया था। उसकी थकान शारीरिक नहीं थी। इतने सारे मृतकों की दृष्टि ने पहली बार एक ठंडा सुन्नता पैदा की थी। कुछ घंटों के भीतर, उनकी सभी भावनाएं मर गईं, और उन्होंने पुरुषों और महिलाओं और बच्चों की लाशों को घसीटते हुए देखा, जैसे कि वे चड़ी या बिस्तर पर थे। लेकिन शाम तक, वह खुद के लिए क्षमा और खेद महसूस करने लगा। जब वह कार से बाहर निकला तो वह थका हुआ और भिखारी लग रहा था। आग की लपटों को देख भालू, सफाईकर्मी, और उनके परिवार छत पर थे। उन्हें नीचे आने और दरवाजे खोलने के लिए इंतजार करना पड़ा। उसका स्नान नहीं किया गया था। हुकुम चंद उपेक्षित और अधिक उदास महसूस करते थे। वह अपने बिस्तर पर लेट गया, नौकरों के ध्यान को अनदेखा कर रहा था। एक ने अपने जूते उतार दिए और अपने पैर रगड़ने लगा। दूसरे को पानी की बाल्टी में लाया और बाथटब में भर दिया। मजिस्ट्रेट अचानक उठ गया, लगभग नौकर को लात मारी, और बाथरूम में चला गया।

स्नान और कपड़े बदलने के बाद, हुकुम चंद ने कुछ ताज़ा महसूस किया। पंकहा की हवा ठंडी और सुखदायक थी। वह फिर से अपनी आँखों पर हाथ रखकर लेट गया। उसकी बंद आँखों के अंधेरे कक्षों के भीतर, दिन के दृश्य मनोरम उत्तराधिकार में वापस आने लगे। उसने अपनी उंगलियों को उसकी आँखों में दबाकर उन्हें कुचलने की कोशिश की। चित्र केवल काले और लाल हो गए और फिर वापस आ गए। एक आदमी अपनी आंतों को पकड़े हुए था, उसकी आँखों में एक अभिव्यक्ति थी जिसमें कहा गया था: 'देखो मुझे क्या मिला है!' वहाँ एक कोने में महिलाएँ और बच्चे गिड़गिड़ा रहे थे, उनकी आँखें डरावनी हो गई थीं, उनके मुँह अभी भी खुले थे, जैसे कि उनकी चीखें अभी हाल ही में सुनाई पड़ी हों। उनमें से कुछ के शरीर पर खरोंच नहीं थी। डिब्बे की सबसे दूर की दीवार के खिलाफ शव पड़े थे, खाली खिड़कियों पर आतंक की तलाश में जिसके माध्यम से शॉट्स, भाले और स्पाइक्स आए होंगे। वहाँ उन लोगों की लाशों के साथ जाम लगाए गए थे, जिन्होंने तुलनात्मक सुरक्षा के लिए रास्ता बनाया था। और मांस, मल और पेशाब की सिकाई करने की सारी मादक गंध। बहुत सोच समझकर हुकुम चंद के मुँह में उल्टी आ गई। सबसे ज्वलंत तस्वीर लंबी सफेद दाढ़ी वाले एक पुराने किसान की थी; वह बिल्कुल भी मरा हुआ नहीं दिखता था। वह सामान के लिए ऊपरी रैक पर बिस्तर के रोल के बीच जाम बैठ गया, उसके नीचे के दृश्य को पूरी तरह से देख रहा था। जमा हुआ रक्त की एक पतली क्रिमसन रेखा उसकी दाढ़ी पर उसके कान से निकली। हुकुम चंद ने उन्हें कंधा देते हुए कहा, 'बाबा, बाबा!' विश्वास है कि वह जीवित था। वह जीवित था। उनके ठंडे हाथ ने अपने आप को फैलाया और मजिस्ट्रेट के दाहिने पैर को पकड़ लिया। सर्दी

हुकुम चंद के शरीर में से सारा पसीना निकल आया। उसने चिल्लाने की कोशिश की लेकिन केवल अपना मुँह खोल सका। हाथ टखने से बछड़े तक, बछड़े से घुटने तक, धीरे-धीरे ऊपर की ओर बढ़ता गया। हुकुम चंद ने फिर से चिल्लाने की कोशिश की। उसकी आवाज उसके गले में अटक गई। हाथ ऊपर की ओर बढ़ता रहा। जैसे-जैसे यह उसकी जांघ के मांसल हिस्से को छूता गया, इसकी पकड़ ढीली होती गई। हुकुम चंद विलाप करने लगे और फिर एक अंतिम प्रयास के साथ दुःस्वप्न के साथ एक तड़पती हुई चीख निकली। वह उसकी आँखों में दहशत का नजारा लेकर बैठ गया।



भालू उसके पास खड़ा था जो समान रूप से भयभीत लग रहा था। 'मुझे लगा कि साहब थके हुए हैं और चाहेंगे कि उनके पैर दब जाएँ।' हुकुम चंद बोल नहीं सकते थे। उसने अपने माथे से पसीना पोंछ लिया और तकिया पर वापस आकर, 'राम, है राम।' घबराहट के प्रकोप ने उसे भय से मुक्त कर दिया। वह कमजोर और मूर्ख महसूस करता था। कुछ समय बाद उस पर शांत भाव आ गया।

'मुझे कुछ व्हिस्की पिलाओ।'

भालू ने उसे व्हिस्की, सोडा और एक गिलास के साथ एक ट्रे लाकर दी। हुकुम चंद ने कांच के एक चौथाई भाग को शहद के रंग के तरल से भर दिया। भालू ने बाकी को सोडा से भर दिया। मजिस्ट्रेट ने एक गिलास में आधा गिलास पी लिया और वापस लेट गया। शराब ने उसकी प्रणाली में डाल दिया, उसके जख्मी तंत्रिकाओं को जीवन के लिए गर्म कर दिया। नौकर ने फिर से उसके पैर दबाने शुरू कर दिए। उसने छत पर देखा, आराम और बस सुखद थकान महसूस कर रहा था। सफाईकर्मी ने कमरों में दीपक जलाना शुरू कर दिया। उसने हुकुम चंद के बिस्तर के पास एक मेज पर रख दिया। एक पतंगा चिमनी के चारों ओर फड़फड़ाया और सर्पिलों में छत तक उड़ गया। जेकॉस ने दीवार से अलग किया। माँथ ने जियोक्स की पहुंच से बाहर छत को अच्छी तरह से मारा और वापस दीपक को सर्पिल किया। छिपकली अपनी चमकदार काली आँखों से देखती थी। पतंगा फिर से ऊपर और नीचे उड़ गया। हुकुम चंद को पता था कि अगर यह एक सेकंड के लिए छत पर चढ़ता है, तो जेकॉस में से एक इसे अपने छोटे मगरमच्छ के जबड़े के बीच फड़फड़ाता हुआ मिलेगा। शायद यही उसकी नियति थी। यह हर किसी की नियति थी। चाहे वह अस्पतालों, ट्रेनों में या सरीसृपों के जबड़े में था, सभी समान था। यहां तक कि कोई अकेले बिस्तर में भी मर सकता था और किसी को भी तब तक पता नहीं चलता था जब तक कि बदबू पूरे दौरे में न फैल जाए और मैगॉट आंखों के सॉकेट से बाहर और अंदर चले जाते थे और जेकॉस अपनी घिनौनी क्लैमी बेलियों के साथ चेहरे पर दौड़ते थे। हुकुम चंद ने अपने हाथों से अपना चेहरा पोंछ लिया। कोई अपने मन से कैसे बच सकता है! उन्होंने व्हिस्की के बाकी हिस्सों को कुतर दिया और खुद को एक और डाला।

मृत्यु हमेशा हुकुम चंद के प्रति एक जुनून था। एक बच्चे के रूप में, उसने एक मृत बच्चे के जन्म के बाद अपनी चाची को मरते देखा था। उसके पूरे सिस्टम में ज़हर भर गया था। दिनों के लिए उसके पास मतिभ्रम था और मृत्यु की भावना को दूर करने के लिए उसने अपने हथियार लहराए थे जो उसके बिस्तर के पैर पर खड़ा था।

वह दीवार पर आतंक, घूर और इशारा करते हुए मर गई थी। दृश्य ने हुकुम चंद के दिमाग को कभी नहीं छोड़ा था। बाद में अपनी युवावस्था में, उन्होंने विश्वविद्यालय के पास एक श्मशान घाट पर कई घंटे बिताकर मृत्यु के भय का सामना किया। उन्होंने कच्चे बांस के स्ट्रेचर पर लाए गए युवा और वृद्धों को देखा था, और फिर उन्हें जलाया गया था। श्मशान घाट की यात्रा ने उन्हें शांति की भावना के साथ छोड़ दिया। वह मृत्यु के तत्काल आतंक से भर गया था, लेकिन परम विघटन का विचार हमेशा उसके दिमाग में मौजूद था। इसने उसे दयालु, धर्मार्थ और सहनशील बना दिया। इसने उन्हें प्रतिकूल परिस्थितियों में भी खुश किया। उन्होंने अपने बच्चों को कफजन्म इस्तीफे के साथ नुकसान उठाया था। उन्होंने बिना किसी शिकायत के एक अनपढ़, बदसूरत पत्नी के साथ जन्म लिया था। यह सब उनके विश्वास से आया था कि एकमात्र पूर्ण सत्य मृत्यु थी। बाकी प्यार, महत्वाकांक्षा, अभिमान, के सभी मानों प्रकार-गया था नमक की एक चुटकी के साथ लिया जाना चाहिए। उसने स्पष्ट विवेक के साथ ऐसा किया। हालाँकि उन्होंने उपहार स्वीकार किए और दोस्तों को मुसीबत में पड़ने के लिए बाध्य किया, लेकिन वह भ्रष्ट नहीं थे। वह कभी-कभार पार्टियों में शामिल हुआ, गाने

और नाचने की व्यवस्था की और कभी - कभी सेक्स भी किया लेकिन वह अनैतिक नहीं था। आखिर में क्या बात हुई? वह हुकुम चंद के जीवन के दर्शन का मूल था, और वह अच्छी तरह से रहता था।

लेकिन हुकुम चंद की नियतिवाद के लिए मृतकों का एक ट्रेन लोड बहुत अधिक था। वह मृत्यु की अनिवार्यता में एक दार्शनिक विश्वास के साथ नरसंहार को नहीं कर सकता था। इसकी हिंसा और इसकी भयावहता से वह भयभीत और भयभीत था। उसकी चाची की जीभ काटने और मुंह से खून बहने की तस्वीर, अंतरिक्ष में घूरने वाली उसकी आँखें, उसके सभी विकराल आतंक में उसके पास वापस आ गईं। व्हिस्की ने इसे दूर ले जाने में मदद नहीं की।

कमरे को कार की हेडलाइट्स द्वारा जलाया गया था और फिर पहले की तुलना में गहरा छोड़ दिया गया था; कार शायद गैरेज में डाल दी गई थी। हुकुम चंद आने वाली रात के लिए सचेत हो गए। नौकर जल्द ही अपने क्वार्टर के लिए सेवानिवृत्त हो जाते हैं ताकि वे अपनी महिलाओं और बच्चों से घिरे सो सकें। वह बंगले में अकेला रह जाता, जिसके खाली कमरे में उसकी अपनी रचना के प्रेत रहते थे। नहीं! नहीं! उसे आस-पास कहीं सोने के लिए आज्ञा लेनी होगी। बरामदे पर शायद? या वे शक करेंगे कि वह डर गया था? वह उन्हें बताएगा कि वह रात के दौरान वांछित हो सकता है और उन्हें उनके हाथों में होना चाहिए; यह किसी का ध्यान नहीं जाएगा।

'Bairah!'

'साहिब।' भालू तार-धुंध दरवाजे से अंदर आया। 'रात को तुमने मेरी चारपाई कहाँ रखी है?'

'साहब का बिस्तर अभी तक नहीं बिछाया गया है। बादल छाए हुए हैं और बारिश हो सकती है। क्या हुजूर बरामदे में सोना चाहेंगे?'

'नहीं, मैं अपने कमरे में रहूँगा। लड़का ठंडा होने तक एक या दो घंटे के लिए पंकहा खींच सकता है। बरामदे पर सोने के लिए आर्डर बताओ। मैं उन्हें तत्काल काम के लिए आज रात चाहता हूँ, 'उन्होंने कहा, आदमी को देखे बिना।

'हां, साहब। बिस्तर पर जाने से पहले मैं उन्हें सीधे बताऊँगा। क्या मुझे साहिब का खाना लाना चाहिए?'

हुकुम चंद रात के खाने के बारे में भूल गए थे।

'नहीं, मुझे कोई डिनर नहीं चाहिए। बस आदेशों को अपने बिस्तर बरामदे पर लगाने के लिए कहें। ड्राइवर को भी वहीं रहने को कहो। अगर बरामदे में पर्याप्त जगह नहीं है, तो उसे अगले कमरे में सोने के लिए कहें।'

वाहक बाहर चला गया। हुकुम चंद ने राहत महसूस की। उसने चेहरा बचा लिया था। वह इन सभी लोगों के बारे में शांति से सो सकता था। उन्होंने मानव गतिविधि की आश्वस्त ध्वनियों को सुना - नौकरों ने बरामदे पर स्थानों के बारे में बहस करते हुए, अपने दरवाजे के ठीक बाहर बेड बिछाए, एक दीपक अगले कमरे में लाया जा रहा था, और फर्नीचर को चारपाई के लिए जगह बनाने के लिए स्थानांतरित किया गया।

कार की हेडलाइट्स, कमरे को एक बार फिर से जलाती हैं। कार बरामदे के बाहर रुक गई। हुकुम चंद ने पुरुषों और महिलाओं की आवाज़ सुनी, फिर घंटियाँ बजाईं। वह बैठ गया और तार-धुंध दरवाजे से देखा। यह संगीतकारों, बूढ़ी औरत और लड़की की वेश्या की पार्टी थी। वह उनके बारे में भूल गया था।

'Bairah!'

'हुजूर।'

'ड्राइवर को संगीतकारों और बूढ़ी औरत को वापस ले जाने के लिए कहें। और ... नौकरों को उनके क्वार्टर में सोने दें। अगर मुझे उनकी जरूरत होगी तो मैं उनके लिए भेजूंगा।'

हुकुम चंद को ऐसा लग रहा था कि वह थोड़ा बेवकूफ है। नौकर ज़रूर हँसते थे। लेकिन उसने परवाह नहीं की। उसने खुद को एक और व्हिस्की डाली। नौकर उनसे बात करने से पहले ही बाहर निकलने लगे।

बगल के कमरे में दीपक को हटा दिया गया था। ड्राइवर ने फिर से गाड़ी स्टार्ट की। उन्होंने हेडलाइट्स पर स्विच किया और उन्हें फिर से बंद कर दिया। बूढ़ी औरत कार में नहीं बैठी और भालू के साथ बहस करने लगी। उसकी आवाज तब तक ऊंची और ऊंची होती चली गई जब तक कि वह तर्क की सीमा से गुजर नहीं गई और उसने कमरे के अंदर मजिस्ट्रेट को संबोधित किया।

'आपकी सरकार हमेशा के लिए चल सकती है। आपकी कलम हजारों- सैकड़ों, सैकड़ों हजारों का आंकड़ा लिख सकती है।'

हुकुम चंद अपना आपा खो बैठे। 'जाओ!' वह चिल्लाया। 'आपको दूसरे दिन का मेरा कर्ज चुकाना होगा। जाओ! बेयरर, उसे भेज दो!'

महिला की आवाज कम हुई। उसे जल्दी से कार में बिठाया गया। कार बाहर चली गई, केवल तेल के दीपक की टिमटिमाती पीली रोशनी को छोड़कर

हुकुम चंद का बिस्तर। वह उठे, दीपक और मेज उठाया, और दरवाजे से उन्हें कोने में रख दिया। मोथ ने ग्लास चिमनी के चारों ओर चक्कर लगाया, दोनों तरफ दीवार को मारते हुए। जेकॉस छत से दीवार के पास दीपक के पास नीचे रेंग गया। जैसे ही वह मोहरा दीवार पर चढ़ा, जेकोज़ में से एक उसके पीछे चुपके से चढ़ गया, उछल पड़ा और उसे अपने जबड़ों में फड़फड़ाते हुए पकड़ लिया। हुकुम चंद ने पूरी बात को निंदनीय भाव से देखा।

दरवाजा खोला और धीरे से बंद कर दिया। एक छोटा अंधेरा आंकड़ा कमरे में घुस गया। लड़की की साड़ी पर लगे सिल्वर सेमिनल ने लैम्पलाइट में ट्विंकल किया और दीवारों और छत पर सौ प्रकाश की भूमिका निभाई। हुकुम चंद पलट गए। लड़की अपनी बड़ी-बड़ी काली आँखों से उसे घूर रही थी। उसकी नाक में हीरे की चमक चमकी। वह पूरी तरह से घबराई हुई लग रही थी।

'आओ,' मजिस्ट्रेट ने कहा, उसके बगल में उसके लिए जगह बना रही है और उसका हाथ पकड़ रही है।

लड़की दूर जाकर बिस्तर के किनारे पर बैठ गई, दूर देख रही थी। हुकुम चंद ने उसकी कमर पर हाथ रखा। उसने अपनी जाँघों और पेट पर हाथ फेरा और अपने छोटे छोटे स्तनों के साथ खेला। वह बेसुध और कठोर बैठ गई। हुकुम चंद ने और दूर हटकर मुसकरा कर कहा, 'आओ और लेट जाओ।' मजिस्ट्रेट के पास लड़की ने खुद को फैलाया। उसकी साड़ी पर सेक्विन उसके चेहरे पर गुदगुदी करता था। उसने खस से बना इत्र पहना; इसमें सूखी धरती की ताज़ा गंध थी जब इस पर पानी छिड़का गया है। उसकी साँसों से इलायची की खुशबू आ रही थी, मधु की भोसड़ी। हुकुम चंद एक बच्चे की तरह उसके खिलाफ झपटा और तेजी से सो गया।

बारिश के लिए मानसून दूसरा शब्द नहीं है। जैसा कि इसका मूल अरबी नाम इंगित करता है, यह एक मौसम है। वहाँ एक गर्मियों मानसून के साथ ही एक सर्दियों मानसून है, लेकिन यह गर्मी का केवल nimbused दक्षिण पश्चिम हवाओं कि एक बनाते हैं *mausem* -इस

बारिश के मौसम। सर्दियों में बस मानसून की बारिश होती है। यह ठंडी सुबह की ठंडी फुहार की तरह है। यह एक ठंडा और कंपकंपी छोड़ देता है। हालांकि यह फसलों के लिए अच्छा है, लोग इसे खत्म करने के लिए प्रार्थना करते हैं। सौभाग्य से, यह बहुत लंबे समय तक नहीं रहता है।

गर्मियों में मानसून काफी अन्य है। प्यास लगने के कई महीनों से पहले से यह काम किया जाता है ताकि जब पानी आये तो वे गहरे और नीरस हो जाएँ। फरवरी के अंत से, सूरज गर्म होना शुरू हो जाता है और वसंत गर्मी का रास्ता देता है। फूल मुरझा गया। फिर फूलों के पेड़ उनकी जगह लेते हैं। सबसे पहले जंगल की लौ की नारंगी वर्षा, प्रवाल वृक्ष का सिंदूर, और चंपक का पौरुष सफेद आते हैं। उनके बाद माउव जैकरंडा, तेजतर्रार गुल मोहुर, और लेबरनम के नरम सोने के कैस्केड हैं। फिर पेड़ भी अपने फूल खो देते हैं। उनके पत्ते झड़ जाते हैं। जो अपने

नंगे शाखाएं पानी के लिए भीख माँगती हुई आकाश तक जाती हैं, लेकिन पानी नहीं है। सूरज पहले की तुलना में पहले आता है और बुखार की धरती से पहले अपने होंठों को नम कर सकता है, ओस की बूंदों को चाटता है। यह पूरे दिन बादल रहित धूसर आकाश में उड़ता रहता है, जो कुओं, नालों और झीलों को सुखा देता है। यह घास और कंटीली झाड़ियों को तब तक बहाता है जब तक वे आग पकड़ लेते हैं। आग फैलती है और सूखे जंगल मैचवुड की तरह जलते हैं।

सूरज दिन पर दिन, पूर्व से पश्चिम तक, लगातार चिलचिलाती है। पृथ्वी टूट जाती है और गहरी दरारें पानी की मांग करते हुए मुंह खोलती हैं; लेकिन कोई पानी नहीं है - दोपहर के समय केवल झिलमिलाता धुन्ध। गरीब ग्रामीण अपने प्यासे मवेशियों को पीने के लिए बाहर ले जाते हैं और मारे जाते हैं। अमीर धूप का चश्मा पहनते हैं और खुस फाइबर के चूजों के पीछे छिप जाते हैं, जिस पर उनके नौकर पानी डालते हैं।

सूरज हवा का एक सहयोगी बनाता है। यह हवा को तब तक गर्म करता है जब तक कि यह लून बन जाए और फिर उसे अपनी गलती पर भेज देता है। भीषण गर्मी में भी लू के थपेड़े सहते जानदार और सुखद होते हैं। यह कांटेदार गर्मी लाता है। यह एक सुन्नता पैदा करता है जो नींद के साथ सिर को भारी और आंखों को भारी बनाता है। यह एक झटके पर लाता है जो अपने शिकार को धीरे-धीरे हवा देता है जैसे कि थिसलडाउन का एक झोंका।

फिर झूठी आशाओं का दौर आता है। लू चलती है। हवा फिर भी बन जाती है। दक्षिणी क्षितिज से एक काली दीवार शुरू होती है। आगे सैकड़ों पतंगों और कौवे उड़ते हैं। यह हो सकता है ...? नहीं, यह धूल भरी आंधी है। एक महीन पाउडर गिरने लगता है। टिड्डियों का एक ठोस द्रव्यमान सूर्य को कवर करता है। वे पेड़ों और खेतों में जो कुछ भी बचा है, उसे खा लेते हैं। उसके बाद ही तूफान आता है। उग्र झाड़ू में, यह खुले दरवाजों और खिड़कियों को तोड़ता है, उन्हें आगे और पीछे पीटता है, उनके कांच के शीशे को तोड़ता है। खपरैल की छत और नालीदार लोहे की चादरों को कागज के टुकड़ों की तरह आसमान में उतारा जाता है। पेड़ जड़ से उखड़ जाते हैं और बिजली लाइनों में गिर जाते हैं। पेचीदा तार लोगों को बिजली देते हैं और घरों में आग लगाते हैं। तूफान तब तक आग की लपटों को दूसरे घरों तक ले जाता है जब तक कि कोई टकराव नहीं हो जाता। यह सब कुछ सेकंड में होता है। इससे पहले कि आप *चक्रवर्तीराजगोपालाचारी* कह सकें, आंधी चली गई। हवा में लटकी हुई धूल आपकी किताबों, फर्नीचर और भोजन पर जम जाती है; यह आपकी आंखों और कानों और गले और नाक में जाता है।

यह तब तक बार-बार होता है जब तक कि लोगों को पूरी उम्मीद न हो जाए। वे मोहभंग, निर्वासित, प्यासे और पसीने से तरबतर हैं। उनकी गर्दन के पीछे कांटेदार गर्मी एमरी पेपर की तरह होती है। एक और लुल्ला है। एक गर्म शांत मौन प्रबल होता है। फिर एक पक्षी की अजीबोगरीब कॉल आती है। क्यों यह अपनी शांत बोस्की छाया छोड़ कर धूप में निकल आया है? बेजान आसमान में लोग थके हुए लगते हैं। हाँ, वहाँ यह अपने साथी के साथ है! वे बड़े काले और सफेद बल्बों की तरह हैं

विस्मयकारी crests और लंबी पूंछ के साथ। वे पाई-क्रेस्टेड कोयल हैं, जो मॉनसून से पहले अफ्रीका से पूरे रास्ते बह चुके हैं। क्या कोई कोमल हवा नहीं चल रही है? और यह एक नम गंध नहीं है? और वह गड़गड़ाहट नहीं थी जो पक्षियों की पीड़ा को रोने की आवाज़ में डुबो देती थी? लोग छतों को देखने के लिए जल्दी करते हैं। वही आबनूस की दीवार पूरब से आ रही है। बगुलों का झुंड उड़ जाता है। बिजली की एक चमक है जो दिन के उजाले को रेखांकित करती है। हवा बादलों की काली पाल को भर देती है और वे सूरज के पार निकल जाती हैं। एक गहरा छाया पृथ्वी पर पड़ता है। गड़गड़ाहट का एक और ताली है। बारिश की बड़ी बूंदें गिरने और धूल में सूख जाती हैं। पृथ्वी से एक सुगंधित गंध उठती है। बिजली का एक और फ्लैश और एक भूखे बाघ की दहाड़ की तरह गड़गड़ाहट की एक और दरार। यह आ गया है! पानी की चादर, लहर के बाद लहर। लोग बादलों के पास अपना चेहरा उठाते हैं और पानी की बहुतायत को ढक देते हैं। स्कूल और कार्यालय बंद। सभी काम रुक जाते हैं। मानसून के चमत्कार के लिए पुरुष, महिलाएं और बच्चे अपनी बाहों को लहराते हुए सड़कों पर दौड़ते हैं और 'हो, हो, हो' जैसे नारे लगाते हैं।

मानसून सामान्य बारिश की तरह नहीं है जो आता है और चला जाता है। एक बार चालू होने के बाद, यह दो महीने या उससे अधिक समय तक रहता है। इसके आगमन का स्वागत खुशी से किया जाता है। आमों की खाल और पत्थरों से देश-विदेश की सैर-सपाटे के लिए पार्टियाँ निकलती हैं। महिलाएं और बच्चे पेड़ों की शाखाओं पर झूले बनाते हैं और खेल और गीत में दिन बिताते हैं। मोर अपनी पूंछ फैलाते हैं और अपने साथियों के साथ घूमते हैं; जंगल उनके झुंड के साथ गूंज उठता है।

लेकिन कुछ दिनों के बाद उत्साह का प्रवाह चला जाता है। पृथ्वी दलदल और कीचड़ का बड़ा केंद्र बन जाती है। कुएँ और झीलें भर जाती हैं और उनकी सीमाएँ फट जाती हैं। कस्बों में, नाले बंद हो जाते हैं और सड़कें अशांत धारा बन जाती हैं। गाँवों में, झोपड़ियों की मिट्टी की दीवारें पानी में पिघल जाती हैं और छज्जे छतिग्रस्त हो जाते हैं और कैदियों पर चढ़ जाते हैं। गर्मियों की गर्मी के समय से नदियाँ लगातार बढ़ने लगती हैं, जिससे साँप पिघलने लगते हैं, अचानक से बाढ़ आ जाती है क्योंकि मानसून पहाड़ों पर ही बीतता है। सड़क, रेलवे ट्रैक और पुल पानी के नीचे चले जाते हैं। नदी के किनारे के मकान समुद्र में बह गए हैं।

मानसून के साथ, जीवन और मृत्यु का गति बढ़ता है। लगभग रात भर, घास बढ़ने लगती है और पत्ती रहित पेड़ हरे हो जाते हैं। साँप, सेंटीपीड और बिच्छू कुछ भी नहीं पैदा होते हैं। जमीन केंचुओं, भिंडी और छोटे मेंढकों के साथ बिखरी हुई है। रात में, पतंगों के झुंड दीयों के आसपास बहते हैं। वे हर किसी के भोजन और पानी में गिर जाते हैं। गेकोस ने खुद को कीड़े से भरने के बारे में डार्ट किया जब तक कि वे भारी न हो जाएं और छत से गिर न जाएं। कमरों के अंदर, मच्छरों का कहर मदहोश कर देने वाला है। लोग कीटनाशक के बादलों को छिड़कते हैं, और फर्श पिंडों और पंखों की एक परत बन जाता है। अगली शाम, दीपक रंगों के आसपास कई और झांकियां हैं और खुद को आग की लपटों में जला रही हैं।

जबकि मानसून रहता है, वर्षा शुरू होती है और बिना किसी चेतावनी के रुक जाती है। जब तक वे हिमालय तक नहीं पहुँचते, तब तक मैदानी इलाकों में बारिश को रोकते हुए बादल उड़ जाते हैं। वे पर्वतों पर चढ़ते हैं। फिर ठंड उनमें से पानी की आखिरी बूंदों को निचोड़ती है। बिजली और गरज कभी भी खत्म नहीं होती। यह सब अगस्त के अंत या सितंबर की शुरुआत में होता है। फिर बारिश का मौसम पतझड़ का रास्ता देता है।

थंडर के एक रोल ने हुकुम चंद्र को जगा दिया। उन्होंने आँखें खोलीं। कमरे में एक ग्रे लाइट थी। कोने में, एक गहरी पीली लौ दीपक चिमनी के कालिख के माध्यम से टिमटिमाती थी। बिजली की एक चमक थी जिसके बाद एक और गड़गड़ाहट हुई। पूरे कमरे में ठंडी, नम हवा का झोंका आया। दीपक हड़बड़ा गया और बाहर चला गया। कोमल आँगन में वर्षा होने लगी।

बारिश! लंबे समय तक बारिश के बाद, मजिस्ट्रेट ने सोचा। मानसून एक गरीब था। बादल आ गए थे, लेकिन वे ऊँचे थे और पहले की तुलना में भूमि के प्यासे को छोड़ कर भाग गए थे। सितंबर बारिश के लिए बहुत देर हो चुकी थी, लेकिन इसने इसका अधिक स्वागत किया। यह अच्छा गंध, यह अच्छा लग रहा था, यह अच्छा लग रहा था - और सबसे ऊपर, यह अच्छा किया। आह, लेकिन यह किया था? हुकुम चंद्र को बुखार लगा। लाशें! एक हजार जले लाशों को छलनी और धूम्रपान करते हुए बारिश ने आग में डाल दिया। सौ गज की चरखी लाशें! उनके मंदिरों पर पसीने की बूंदें फूट पड़ीं। उसे ठंड और डर लगा। वह पलंग के पार पहुँच गया। लड़की को छोड़ दिया था। वह बंगले में अकेला था। उन्होंने अपनी कलाई घड़ी तकिए के नीचे से निकाली और अपने हाथों को डायल के चारों ओर घुमाया। रेडियम हाथों की चमक-दमक हरे रंग की ओर इशारा करते हुए 6:30 तक थी। उसे सुकून महसूस हुआ। सुबह काफी देर हो चुकी थी। आसमान भारी होना चाहिए। फिर उसने बरामदे पर खांसने की आवाज सुनी, और आश्वस्त महसूस किया। वह झटके से उठ बैठा।

एक सुस्त दर्द ने उसके माथे को हिला दिया। उसने अपनी आँखें बंद कर लीं और अपने हाथों के बीच अपना सिर रखा। धड़कनें तेज हो गईं। कुछ मिनटों के बाद, उसने अपनी आँखें खोलीं, कमरे के चारों ओर देखा - और लड़की को देखा। वह नहीं बचा था। वह काले गन्ने की साड़ी में लिपटी बड़ी बेंत की कुर्सी पर सो रही थी। हुकुम चंद्र को थोड़ी मूर्खता महसूस हुई। लड़की को दो रातें हो चुकी थीं, और वहाँ वह एक कुर्सी पर खुद सो रही थी। वह अब भी थी, अपनी भोसड़ी की कोमल तपिश के लिए।

वह बूढ़ा और अशुद्ध लगा। वह इस बच्चे के लिए कुछ भी कैसे कर सकता था? अगर उनकी बेटी रहती, तो वह लगभग उसी उम्र की होती। उसे पश्चाताप का एक आघात लगा। वह यह भी जानता था कि उसका पछतावा और अच्छा संकल्प हैंगओवर के साथ चला गया। उन्होंने हमेशा किया। वह शायद फिर से पीएगा और उसी लड़की को पालेगा और उसके साथ सोएगा -और उसके बारे में बुरा महसूस करेगा। यह जीवन था, और यह निराशाजनक था।

वह धीरे से उठे और टेबल पर लेटे हुए अटैच केस को खोला। उसने ढक्कन के अंदर लगे शीशे में खुद को देखा। उसकी आँखों के कोनों में एक पीला रंग था। उनके बालों की जड़ें सफेद और बैंगनी दिखाई दे रही थीं। उसके अनचाहे जबड़े के नीचे मांस की कई परतें थीं। वह बूढ़ा और बदसूरत था। उसने अपनी जीभ बाहर निकाली। इसे बीच से पीछे की तरफ एक चिकनी हल्के पीले रंग के साथ लेपित किया गया था। ड्रिबल टेबल पर टिप नीचे भागा। वह अपनी साँसों को सूँघ सकता था। यह लड़की के लिए मचल रहा होगा! कोई आश्चर्य नहीं कि उसने एक असहज कुर्सी में रात बिताई। हुकुम चंद्र ने लिवर साल्ट की एक

बोतल निकाली और एक गिलास में कई बड़े चम्मच डाले। उन्होंने थर्मस प्लास्क को हटा दिया और पानी में डाल दिया। मेज पर टंबलर के सभी पक्षों से बुदबुदाहट। उसने पानी को तब तक हिलाया जब तक कि फ़िज़ मर नहीं गया, फिर उसे जल्दी से पिया। कुछ समय के लिए वह अपने सिर को झुकाए खड़ा था और उसके हाथ मेज पर आराम कर रहे थे।

लवण की खुराक सुखद रूप से कम हो गई। उसके पेट के गड्ढे से उसके गले तक एक हवादार फुल उठता था और एक लंबे समय तक संतुष्ट रहने वाली पीठ में दब जाता था। धड़कनें तेज हो गई और दर्द उसके सिर के पिछले हिस्से में जा गिरा। मजबूत गर्म चाय के कुछ कप और वह फिर से खुद होगा। हुकुम चंद बाथरूम गया। दरवाज़े से नौकरों के क्वार्टर की ओर खुलते हुए वह अपने भालू के लिए चिल्लाया।

'शेविंग का पानी लाओ और मेरी चाय लाओ। उसे यहाँ लाओ। मैं इसे अपने आप में ले लूंगा।'

जब भालू आया, तो हुकुम चंद ने चाय की ट्रे और गर्म शेविंग के पानी को बेडरूम में ले गए और उन्हें मेज पर रख दिया। उन्होंने खुद को एक कप चाय पिलाई और अपनी हजामत बनाने का काम किया। उसने अपनी ठुड्डी को हिलाया और मुंडा और चाय की चुस्की ली। चीन और चांदी की छेड़छाड़ ने लड़की को परेशान नहीं किया। वो मुँह खोल कर थोड़ा सो गई। वह अपने स्तनों को आवधिक रूप से ऊपर की ओर छोड़ती हुई मृत दिखती है, जिससे वह अपने शरीर को भरने की कोशिश करती है। उसके बाल पूरे चेहरे पर बिखरे हुए थे। एक तितली के आकार का एक गुलाबी सेल्युलॉइड क्लिप जो कुर्सी के पैर से खतरे में है। उसकी साड़ी को कुचल दिया गया था और बढ़ गया था, और फर्श पर सीक्विन के टुकड़े चमक गए थे। हुकुम चंद अपनी आँखें बंद नहीं कर सके, जबकि उन्होंने अपनी चाय की चुस्की ली। वह अपनी भावनाओं का विश्लेषण नहीं कर सकता था सिवाय इसके कि वह उसे बनाना चाहता था। यदि वह साथ सोना चाहती थी, तो वह उसके साथ सोती थी। विचार ने उसे असहज कर दिया। उसे अब उसे करने के लिए मुश्किल से पीना होगा।

बरामदे में पैर फेरने और खांसने की आवाज ने हुकुम चंद के विचारों को विचलित कर दिया। यह ध्यान आकर्षित करने के उद्देश्य से एक खांसी थी। इसका मतलब था सबइंस्पेक्टर। हुकुम चंद ने अपनी चाय खत्म की और अपने कपड़े अंदर ले गए

बाथरूम बदलने के लिए। बाद में, वह दरवाजे से बाहर चला गया, जो क्वार्टर की ओर खुल गया और बरामदे की तरफ बढ़ा। सबइंस्पेक्टर एक अखबार पढ़ रहा था। उन्होंने अपनी कुर्सी से कूदकर सलामी दी।

'क्या आपका सम्मान बारिश में चलने से बाहर हो गया है?'

'नहीं नहीं। मैं बस नौकरों के क्वार्टर के चक्कर लगाता रहा। आप जल्दी आये। मैं आशा करता हूँ कि सब ठीक है।'

'इन दिनों किसी को जीवित रहने के लिए आभारी होना चाहिए। कहीं भी शांति नहीं है। एक के बाद एक मुसीबत ...'

मजिस्ट्रेट ने अचानक लाशों के बारे में सोचा। 'क्या रात में बारिश हुई थी? यह रेलवे स्टेशन के पास कैसे चल रहा है?'

'मैं आज सुबह गया था जब बारिश शुरू हुई थी। वहाँ बहुत कुछ नहीं बचा था - बस राख और हड्डियों का एक बड़ा ढेर। कई खोपड़ियाँ पड़ी हुई हैं। मुझे नहीं पता कि हम उनके बारे में क्या कर सकते हैं। मैंने लंबरदार को शब्द भेजा है कि किसी को पुल या रेलवे स्टेशन के पास जाने की अनुमति नहीं है।'

'कितने थे? तुमने गिन लिया?'

'नहीं साहब। सिख अधिकारी ने कहा कि एक हजार से अधिक थे। मुझे लगता है कि उन्होंने सिर्फ गणना की कि कितने लोग एक बोगी में जा सकते हैं और इसे बोगियों की संख्या से गुणा किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि छतों पर, फुटबोर्डों पर और भैंसों के बीच एक और चार या पाँच सौ मारे गए होंगे। हमला होने पर वे गिर गए होंगे। छत निश्चित रूप से सूखे हुए खून से ढकी थी।'

'हरे राम, हरे राम। पंद्रह सौ निर्दोष लोग! और क्या कलयुग है? जमीन पर अंधेरा है। यह सीमांत पर केवल एक जगह है। मुझे लगता है कि अन्य जगहों पर भी ऐसी ही चीजें हो रही हैं। और अब मुझे विश्वास है कि हमारे लोग भी ऐसा ही कर रहे हैं। इन गाँवों में मुसलमानों का क्या?'

'यही तो मैं रिपोर्ट करने आया था, सर। कुछ गाँवों के मुसलमानों ने शरणार्थी शिविरों के लिए जाना शुरू कर दिया है। चुंदुनगर को आंशिक रूप से खाली कर दिया गया है। जब भी जानकारी लाई गई है बलूची और पठान सैनिकों के साथ पाकिस्तानी सेना लॉरी उठा रही है। लेकिन मनो माजरा मुसलमान अभी भी हैं और आज सुबह लम्बरदार ने चालीस या पचास सिख शरणार्थियों के आने की सूचना दी, जो सुबह के समय नदी के किनारे से नदी पार कर गए थे। वे मंदिर में डाल रहे हैं।'

'उन्हें क्यों रुकने दिया गया?' हुकुम चंद से तेज पूछा। 'आप अच्छी तरह से जानते हैं कि आदेश यह है कि आने वाले सभी शरणार्थियों को जुलुंडुर में शिविर में जाना चाहिए। यह गंभीर है। वे मनो माजरा में हत्या शुरू कर सकते हैं।'

नहीं सर, अभी तक की स्थिति हाथ में है। इन शरणार्थियों को पाकिस्तान में ज्यादा नुकसान नहीं हुआ है और जाहिर तौर पर किसी ने भी रास्ते में उनसे छेड़छाड़ नहीं की।

मनो माजरा के मुसलमान उन्हें मंदिर में भोजन लाते रहे हैं। यदि अन्य लोग ऐसा करते हैं जो नरसंहारों के माध्यम से गए हैं और संबंध खो चुके हैं, तो यह एक अलग मामला होगा। मैंने नदी पार करने के बारे में नहीं सोचा था। आमतौर पर, बारिश के बाद नदी चौड़ाई में एक मील होती है और नवंबर या दिसंबर तक कोई जंगल नहीं होते हैं। इस साल हमने शायद ही कोई बारिश की हो। कई बिंदु हैं जहां लोग पार कर सकते हैं और मुझे नदी किनारे गश्त करने के लिए पर्याप्त पुलिसकर्मी नहीं मिले हैं।'

हुकुम चंद ने रेस्ट हाउस के मैदानों को देखा। बारिश लगातार गिर रही थी। छोटे-छोटे कुंडों ने खाई में बनना शुरू कर दिया था। आकाश स्लेट ग्रे का एक सपाट खिंचाव था।

'बेशक, अगर बारिश होती रही, तो नदी बढ़ जाएगी और पार करने के लिए बहुत सारे जंगल नहीं होंगे। एक पुल पर शरणार्थी आंदोलनों को नियंत्रित करने में सक्षम होगा।'

बिजली की गड़गड़ाहट और गड़गड़ाहट ने बारिश के टेम्पो पर जोर दिया। हवा ने बरामदे पर एक पतला स्प्रे उड़ा दिया।

'लेकिन हमें मुसलमानों को इस क्षेत्र से बाहर निकालना चाहिए कि वे इसे पसंद करते हैं या नहीं। जितनी जल्दी हो, उतना अच्छा।'

बातचीत में एक लंबा विराम था। दोनों आदमी बारिश में घूर कर बैठ गए। हुकुम चंद फिर बोलने लगे।

'तूफान के गुजरने तक पहले झुकना चाहिए। पम्पास घास देखें! इसके पत्ते हवा के आगे झुक जाते हैं। तना अपने घमंडी अभिमान में कठोर खड़ा है। जब तूफान आता है तो यह फट जाता है और हवा के झोंके से इसकी सफेद रंगत उड़ जाती है। एक ठहराव के बाद उन्होंने कहा, 'एक बुद्धिमान व्यक्ति वर्तमान के साथ तैरता है और फिर भी पार हो जाता है।'

सबइंस्पेक्टर ने विनम्र ध्यान से पठार को सुना। उन्होंने अपनी तात्कालिक समस्या के लिए उनके महत्व को नहीं देखा। हुकुम चंद ने पुलिस अधिकारी के चेहरे पर खाली भाव



देखा। उसे चीजों को अधिक सादा बनाना था।

'आपने राम लाल की हत्या के बारे में क्या किया है? क्या आपने कोई और गिरफ्तारी की है?'

'हां, सर, जुग्गा बदमाश ने हमें कल नाम दिए थे। वे पुरुष हैं जो एक समय अपने गिरोह में थे: मल्ली और गांव कपुरा से चार अन्य लोग नदी से दो मील नीचे थे। लेकिन जुग्गा उनके साथ नहीं थे। मैंने उन्हें आज सुबह गिरफ्तार करने के लिए कुछ कांस्टेबल भेजे हैं।'

हुकुम चंद की दिलचस्पी नहीं दिख रही थी। उसने अपनी आँखें कहीं दूर पर टिका दी थीं।

'हम जुग्गा और दूसरे साथी दोनों के बारे में गलत थे।' इंस्पेक्टर चला गया: 'मैंने आपको मुस्लिम बुनकर लड़की के साथ जुग्गा के संपर्क के बारे में बताया। वह रखा

उसे ज्यादातर रातें व्यस्त रहती हैं। डकैती के बाद मल्ली ने जुग्गा के आंगन में चूड़ियां फेंक दीं।'

हुकुम चंद अभी भी दूर की कौड़ी लग रहा था।

'अगर आपका सम्मान सहमत है, तो मल्ली और उसके साथियों को मिल जाने के बाद हम जुग्गा और इकबाल को छोड़ सकते हैं।'

'मल्ली और उसके साथी, सिख या मुस्लिम कौन हैं?' हुकुम चंद ने अचानक पूछा।

'सभी सिख।'

मजिस्ट्रेट एक बार फिर अपने विचारों में ढल गया। कुछ समय बाद वह खुद से बात करने लगा। 'अगर वे मुसलमान होते तो ज्यादा सुविधाजनक होता। उस और आंदोलनकारी साथी के एक लीडर होने की जानकारी ने मनोहर माजरा सिखों को अपनी बात कहने के लिए मना लिया होगा।'

एक और लंबा विराम था। योजना ने धीरे-धीरे सब-इंस्पेक्टर के दिमाग में एक साथ प्रवेश किया। वह बिना कोई टिप्पणी किए उठ गया। हुकुम चंद कोई भी चांस नहीं लेना चाहता था।

'सुनो,' उसने कहा। 'मल्ली और उसके गिरोह को कहीं भी बिना किसी प्रविष्टि के प्रवेश करने दें। लेकिन उनकी हरकतों पर नजर रखें। जब हम चाहते हैं तो हम उन्हें गिरफ्तार कर लेंगे ... और बदमाश या अन्य को अभी तक नहीं छोड़ेंगे। हमें उनकी जरूरत पड़ सकती है।'

सबइंस्पेक्टर ने सलामी दी।

'रुको। मैं खत्म नहीं हुआ।' हुकुम चंद ने हाथ उठाया। 'जरूरतमंद होने के बाद, आप मुस्लिम शरणार्थी शिविर के कमांडर को ट्रक भेजकर मनो माजरा मुसलमानों को निकालने के लिए कहें।'

सबइंस्पेक्टर ने एक बार फिर सलामी दी। वह सम्मान के प्रति सचेत थे हुकुम चंद ने उन्हें एक नाजुक और जटिल योजना के क्रियान्वयन पर भरोसा करके सम्मानित किया था। उसने अपना रेनकोट पहन लिया।

हुकुम चंद ने कहा, "मुझे इस बारिश में आपको जाने नहीं देना चाहिए, लेकिन यह मामला इतना महत्वपूर्ण है कि आपको किसी भी समय नहीं खोना चाहिए।"

'मुझे पता है, सर।' सबइंस्पेक्टर ने फिर से सलामी दी। 'मैं एक बार में कार्रवाई करूंगा।' उसने अपनी साइकिल पर सवारी की और मैला सड़क पर रेस्ट हाउस से दूर चला गया।

हुकुम चंद शीशों पर गिरने वाली बारिश में खाली पड़े बरामदे में बैठ गए। उनके निर्देशों का सही और गलत होना भी उन पर भारी नहीं पड़ा। वह एक मजिस्ट्रेट था, न कि एक मिशनरी। यह दिन-प्रतिदिन की समस्याएं थीं जिनके लिए उन्हें जवाब तलाशना था। उन्हें कुछ अज्ञात पूर्ण मानक के बराबर करने की कोई आवश्यकता नहीं थी। उनके जीवन में बहुत सारे Ough नहीं थे। वहाँ थे बस 'है। उसने जैसे-तैसे जान ली। वह इसे वापस नहीं लेना चाहता था या इसके खिलाफ विद्रोह नहीं करना चाहता था। वहाँ

इतिहास की प्रक्रियाएँ थीं जिनमें मानव ने विली-निली का योगदान दिया। उनका मानना था कि किसी व्यक्ति के सचेत प्रयास को तत्काल समाप्त करने के लिए निर्देशित किया जाना चाहिए जैसे कि जीवन को खतरे में डालना, सामाजिक संरचना को संरक्षित करना और इसके नियमों का सम्मान करना। उनकी तत्काल समस्या मुस्लिम जीवन को बचाने की थी। वह किसी भी तरह से वह कर सकता था। उसके द्वारा हस्ताक्षरित वारंट के बल पर गिरफ्तार किए गए दो लोगों को किसी भी मामले में गिरफ्तार किया जाना चाहिए था। एक आंदोलनकारी था, दूसरा एक बुरा चरित्र। परेशान समय में, उन्हें हिरासत में लेना आवश्यक होगा। यदि वह एक बड़े निवेश में एक छोटी सी त्रुटि कर सकता है, तो इसे वास्तव में गलती कहना गलत होगा। हुकुम चंद को यह महसूस हुआ। अगर उनकी योजना को कुशलता से पूरा किया जा सकता है! यदि केवल वह खुद ही विवरणों को निर्देशित कर सकता है, तो कोई पर्ची नहीं होगी! उनके अधीनस्थ अक्सर उनके मन को नहीं समझते थे और उन्हें जटिल परिस्थितियों में उतारा करते थे।

रेस्ट हाउस के अंदर से बाथरूम का दरवाजा बंद होने और खुलने की आवाज आई। नाशते में लाने के लिए हुकुम चंद उठा और भालू पर चिल्लाया।

लड़की बिस्तर के किनारे पर अपने हाथों में ठोड़ी के साथ बैठी। उसने खड़े होकर साड़ी के ढीले सिरे से अपना सिर ढँक लिया। जब हुकुम चंद कुर्सी पर बैठ गए, तो वह फर्श पर अपनी आँखों के साथ फिर से बिस्तर पर बैठ गए। एक अजीब सी खामोशी थी। कुछ समय बाद हुकुम चंद ने साहस किया, अपना गला साफ किया और कहा, 'तुम्हें भूख लगी होगी। मैंने कुछ चाय के लिए भेजा है।'

लड़की ने उस पर अपनी बड़ी उदास आँखें घुमाईं। 'मुझे घर जाना है।'

'खाने के लिए कुछ है और मैं ड्राइवर से कहूँगा कि आप घर ले जाएं। आप कहाँ रहते हैं?'

'Chundunnugger। जहाँ इंस्पेक्टर साहब का अपना पुलिस स्टेशन है।'

एक और लंबा विराम था। हुकुम चंद ने फिर अपना गला साफ किया। 'तुम्हारा नाम क्या है?'

'हसीना। हसीना बेगम।'

'हसीना। आप हसीन हैं। आपकी माँ ने आपका नाम अच्छी तरह से चुना है। क्या वह बुढ़िया तुम्हारी माँ है?'

लड़की पहली बार मुस्कुराई। इससे पहले किसी ने उसकी तारीफ नहीं की थी। अब सरकार ने ही उसे सुंदर कहा था और उसके परिवार में दिलचस्पी थी।

'नहीं सर, वह मेरी दादी हैं। मेरे जन्म के तुरंत बाद मेरी माँ की मृत्यु हो गई।' 'कितने साल के हो?'

'मुझे नहीं पता। सोलह या सत्रह। शायद अठारह। मैं साक्षर नहीं हुआ था। मैं अपनी जन्मतिथि दर्ज नहीं कर सका।'

वह अपने छोटे से मजाक पर मुस्कुराया। मजिस्ट्रेट भी मुस्कुराया। वाहक

चाय, टोस्ट और अंडे की एक ट्रे में लाया गया।

लड़की चाय की चुस्कियों का इंतजाम करने के लिए उठी और टोस्ट का एक टुकड़ा भिगो दिया। उसने इसे तश्तरी पर रख दिया और हुकुम चंद के सामने मेज पर रख दिया।

'मैं कुछ नहीं खाऊँगा। मैंने अपनी चाय पी ली है।

'लड़की ने पार होने का नाटक किया।

'अगर तुम नहीं खाओगे, तो मैं भी नहीं खाऊँगा,' उसने कहा। उसने चाकू निकाल दिया जिसके साथ वह टोस्ट को मक्खन लगा रही थी, और बिस्तर पर बैठ गई।

मजिस्ट्रेट प्रसन्न हुआ। 'अब, मुझसे नाराज़ मत हो,' उन्होंने कहा। वह उसके पास गया और उसकी बाहों को अपने कंधों पर रख लिया। 'तुम्हें खाना चाहिए। कल रात आपके पास कुछ नहीं था।'

लड़की ने उसे अपनी बाहों में जकड़ लिया। 'तुम खाओगे, तो मैं खाऊँगा। अगर आप नहीं करेंगे, तो मैं भी नहीं करूँगा।'

'ठीक है, अगर तुम जिद करो।' हुकुम चंद ने लड़की को उसकी कमर के चारों ओर बाँहों के सहारे खड़ा किया और उसे मेज के किनारे ले आया। 'हम दोनों खाएँगे। आओ और मेरे साथ बैठो।'

लड़की अपनी घबराहट पर काबू पाकर उसकी गोद में बैठ गई। उसने अपने मुँह में घिसा हुआ मक्खन भरा टोस्ट डाला और उसके भरे हुए मुँह से 'पर्याप्त, पर्याप्त,' कहते हुए हंसी। उसने अपनी मूछों से मक्खन पोछ लिया।

'आप इस पेशे में कब से हैं?'

'क्या मूर्खतापूर्ण सवाल पूछना है! क्यों, जब से मैं पैदा हुआ था। मेरी मां एक गायिका थीं और जब तक हम जानते हैं तब तक उनकी मां एक गायिका थीं।'

'मेरा मतलब गायन से नहीं है। अन्य बातें, 'दूर देख रहे हुकुम चंद ने समझाया।

'तुम्हारा क्या मतलब है, दूसरी बातें?' लड़की से हैवानियत से पूछा। 'हम पैसे के लिए दूसरे काम करने से नहीं चूकते। मैं एक गायक हूँ और मैं नृत्य करता हूँ। मुझे नहीं लगता कि आपको पता है कि नृत्य और गायन क्या हैं। आप सिर्फ अन्य चीजों के बारे में जानते हैं। व्हिस्की और अन्य चीजों की एक बोतल। बस इतना ही!'

हुकुम चंद ने घबराहट के साथ अपना गला साफ किया। 'अच्छा ... मैंने कुछ नहीं किया।'

लड़की ने हंसते हुए अपना हाथ मजिस्ट्रेट के चेहरे पर दबाया। 'गरीब मजिस्ट्रेट साहब। आपके बुरे इरादे थे, लेकिन आप थके हुए थे। आपने रेलवे इंजन की तरह खरटि लिए।' लड़की ने शोर में उसकी सांस खींची और उसके खरटों की नकल की। वह और जोर से हंसी।

हुकुम चंद ने लड़की के बाल काट दिए। उनकी बेटी सोलह, सत्रह, या अठारह की रही होगी, अगर वह रहती। लेकिन उसे अपराधबोध की कोई अनुभूति नहीं थी, केवल तृप्ति का एक अस्पष्ट अर्थ था। उन्होंने कहा कि होठों पर उसे चूमने और उसके शरीर को महसूस करने के लिए उसकी लड़की के साथ नींद, या मेकअप प्यार नहीं करना चाहता, या यहाँ तक था। वह बस उसे चाहता था।

उसके सीने में आराम कर उसके सिर के साथ उसकी गोद में सो जाओ।

'वहाँ तुम फिर से अपने गहरे विचारों के साथ जाते हो,' लड़की ने अपनी उंगली से सिर खुजलाते हुए कहा। उसने एक कप चाय निकाली और फिर उसे तश्तरी में डाला।

'थोड़ी चाय पियो। यह आपको सोचना बंद कर देगा।' वह उस पर चाय की तश्तरी फेंकता है।

'नहीं नहीं। मैंने चाय पी है। तुम्हारे पास है।'

'ठीक है। मेरे पास चाय होगी और तुम्हारे पास अपने विचार हैं।'

'लड़की ने चाय पीना शुरू कर दिया।'

'हसीना।' उसे नाम दोहराना पसंद था। 'हसीना', उन्होंने फिर से शुरुआत की। 'हाँ। लेकिन हसीना केवल मेरा नाम है। आप कुछ क्यों नहीं कहते?' हुकुम चंद ने खाली तश्तरी अपने हाथ से ली और मेज पर रख दी।

उसने लड़की को पास खींच लिया और उसके खिलाफ अपना सिर दबा दिया। उसने अपने बालों के माध्यम से अपनी उंगलियां चलाईं।

'आप मुसलमान हैं?'

'हां, मैं मुसलमान हूँ। हसीना बेगम के अलावा और क्या हो सकता है? एक दाढ़ी वाले सिख?' 'मुझे लगा कि चुन्दुनुगर से मुसलमानों को निकाला गया है। आप कैसे है पर बने रहने में कामयाब रहे?'

'बहुत से लोग चले गए हैं, लेकिन इंस्पेक्टर साहब ने कहा कि हम तब तक रुक सकते हैं जब तक वह हमें जाने के लिए नहीं कहता। उस तरह से गायक न तो हिंदू हैं और न ही मुस्लिम। सभी समुदाय मुझे सुनने आते हैं।'

'क्या चुन्दुनुगर में कोई और मुसलमान हैं?'

'अच्छा ... हाँ,' वह लड़खड़ा गई। 'आप उन्हें मुस्लिम, हिंदू या सिख या कुछ भी कह सकते हैं, पुरुष या महिला। हिजड़ों की एक पार्टी [हिरामप्रोडाइट्स] अभी भी है।' वह शरमा गई।

हुकुम चंद ने उसकी आँखों के सामने अपना हाथ रख दिया।

'बेचारी हसीना शर्मिदा है। मैं वादा करता हूँ कि मैं नहीं हँसूँगा। आप हिंदू या मुसलमान नहीं हैं, लेकिन उसी तरह नहीं जैसे कि हिजड़ा हिंदू या मुसलमान नहीं होता।'

'मुझे मत छोड़ो।'

'मैं तुम्हें तंग नहीं करूँगा,' उसने अपना हाथ हटाते हुए कहा। वो अब भी शरमा रही थी।

'मुझे बताओ कि हिजड़ों को क्यों बर्खास्त किया गया।'

'अगर आप मुझसे हँसने का वादा नहीं करेंगे तो

मैं करूँगा।' 'मे वादा करता हूँ।'

लड़की एनिमेटेड हो गई।

'हिंदू इलाके में रहने वाले एक बच्चे के लिए एक बच्चा पैदा हुआ था। सांप्रदायिक परेशानियों के बारे में सोचने के बिना भी हिजड़े गाने के लिए वहाँ थे। हिंदू और सिख- मुझे सिख पसंद नहीं हैं - उन्हें पकड़ लिया और उन्हें मारना चाहते थे क्योंकि वे मुस्लिम थे।' वह जानबूझ कर रुक गई।

'क्या हुआ?' हुकुम चंद ने उत्सुकता से पूछा।

लड़की ने हंसते हुए अपने हाथों को जिस तरह से हिजड़ा किया, उसकी उंगलियों को चौड़ा किया। 'उन्होंने अपने ढोल पीटना शुरू कर दिया और अपनी कर्कश आवाज में गाना गाया। उन्होंने इतनी तेजी से गोल घुमाया कि उनकी स्कर्ट हवा में उड़ गई। फिर वे रुक गए और भीड़ के नेताओं से पूछा, "अब तुमने हमें देखा है, हमें बताओ, क्या हम हिंदू या मुसलमान हैं?" और पूरी भीड़ हंसने लगी- सिखों को छोड़कर पूरी भीड़।'

हुकुम चंद भी हंस पड़े।

'वह सब नहीं है। सिख अपने किरपान के साथ आए और उन्हें धमकाते हुए कहा, "हम आपको इस बार जाने देंगे, लेकिन आपको चुंदेगार से बाहर निकलना होगा या हम आपको मार देंगे।" हिजड़ों में से एक ने फिर से अपने हाथों को ताली बजाई और एक सिख की दाढ़ी में अपनी उंगलियां चलाई और पूछा, "क्यों? क्या तुम सब हमारे जैसे बन जाओगे और बच्चे पैदा करना बंद कर दोगे?" यहाँ तक कि सिख भी हंसने लगे। '

'यह अच्छा है,' हुकुम चंद ने कहा। 'लेकिन आपको सावधान रहना चाहिए जबकि यह सब गड़बड़ी चल रही है। कुछ दिन घर पर रहिए। '

'मैं भयभीत नहीं हूँ। हम इतने सारे लोगों को अच्छी तरह से जानते हैं और फिर मेरी रक्षा के लिए मेरे पास एक बड़ा शक्तिशाली मजिस्ट्रेट है। जब तक वह है कोई भी मेरे सिर के एक भी बाल को नुकसान नहीं पहुंचा सकता। '

हुकुम चंद बिना कुछ बोले लड़की के बालों में हाथ फेरता रहा। लड़की ने शरारत से मुस्कराते हुए उसे देखा। 'आप चाहते हैं कि मैं पाकिस्तान जाऊँ?'

हुकुम चंद ने उसे करीब से दबाया। उसके ऊपर एक गर्म बुखार का एहसास हुआ। 'हसीना।' उसने फिर अपना गला साफ किया। 'हसीना।' उसके मुँह से शब्द नहीं निकलेंगे।

'हसीना, हसीना, हसीना। मैं बहरा नहीं हूँ। आप कुछ क्यों नहीं कहते? ' 'आज तुम यहीं रहोगे, नहीं? आप अभी दूर नहीं जाना चाहते हैं? ' 'क्या यह सब आप कहना चाहते थे? यदि आप मुझे अपनी कार नहीं देते हैं, तो मैं नहीं जा सकता

बारिश में पाँच मील। लेकिन अगर आप मुझे गाते हैं या एक और रात यहां बिताते हैं तो आपको मुझे नोटों का एक बड़ा बंडल देना होगा। '

हुकुम चंद ने राहत महसूस की।

'पैसा क्या है?' उन्होंने नकली वीरता के साथ कहा। 'मैं तुम्हारे लिए अपनी जान देने को तैयार हूँ।'

एक हफ्ते के लिए, इकबाल को उसके सेल में अकेला छोड़ दिया गया था। उनके एकमात्र साथी अखबारों और पत्रिकाओं के ढेर थे। उसके सेल में कोई रोशनी नहीं थी, न ही उसे एक दीपक प्रदान किया गया था। उसे रात की शोर-शोर, कभी-कभार बंदूक की नोक और फिर अधिक खरटि सुनकर तेज गर्मी में झूठ बोलना पड़ा। बारिश होना कब प्रारंभ हुई,

पुलिस स्टेशन पहले से अधिक निराशाजनक हो गया। बारिश के अलावा लगातार देखने के लिए कुछ भी नहीं था, या कभी-कभी रिपोर्टिंग रूम और बैरक के बीच एक कांस्टेबल दौड़ता रहता था। बारिश की बूंदों के नीरस गपशप के अलावा कुछ सुनने को नहीं था, कभी-कभार गरज और फिर अधिक बारिश। उन्होंने पड़ोसी सेल में जुग्गा को बहुत कम देखा। पहली दो शाम को, कुछ कांस्टेबलों ने जुग्गा को अपने सेल से बाहर निकाल लिया था। वे एक घंटे के बाद उसे वापस ले आए। इकबाल को नहीं पता था कि उन्होंने उसके साथ क्या किया है। उन्होंने पूछा नहीं और जुग्गा ने कुछ नहीं कहा। लेकिन पुलिसकर्मियों के साथ उसकी प्रतिक्रान्ति पहले से ज्यादा अशिष्ट और अधिक परिचित हो गई।

एक सुबह पांच पुरुषों की एक पार्टी को हथकड़ी में स्टेशन पर लाया गया। जैसे ही जुग्गा ने उन्हें देखा उन्होंने अपना आपा खो दिया और उनके साथ दुर्व्यवहार किया। उन्होंने विरोध किया और रिपोर्टिंग रूम का बरामदा छोड़ने से इनकार कर दिया। इकबाल ने सोचा कि नए कैदी कौन थे। बातचीत के स्नैचरों से, जो उसने सुना था, ऐसा लग रहा था कि हर कोई होड़, हत्या और लूट पर था। यहां तक कि थाने से कुछ गज की दूरी पर चुन्दुनगर में भी हत्या हुई थी। इकबाल ने आग की गुलाबी चमक देखी थी और लोगों को चिल्लाते हुए सुना था, लेकिन पुलिस ने कोई गिरफ्तारी नहीं की थी। कैदियों को सामान्य से काफी बाहर होना

चाहिए। जब वह यह पता लगाने की कोशिश कर रहा था कि नए लोग कौन हैं, तो उसकी सेल अनलॉक हो गई और जुग्गा एक कॉन्स्टेबल के साथ आया। जुग्गा एक अच्छे हास्य में थी।

'सत श्री अकाल, बाबूजी,' उन्होंने कहा। 'मैं आपके चरणों का सेवक बनने जा रहा हूँ। मैं कुछ सीखूंगा।'

'इकबाल साहब,' कांस्टेबल ने कहा, सेल को फिर से खोलना, 'इस बदमाश को सिखाना कि कैसे सीधे और संकीर्ण रास्ते पर जाना है।'

'तुम दूर हटो,' जुग्गा ने कहा। 'बाबूजी सोचते हैं कि यह आप और सरकार हैं जिन्होंने मुझे बदमाश बनाया है। क्या ऐसा नहीं है, बाबूजी?'

इकबाल ने जवाब नहीं दिया। उसने अपने पैरों को अतिरिक्त कुर्सी पर रखा और कागजों के ढेर पर टकटकी लगाई। जुग्गा ने इकबाल के पैरों को कुर्सी से हटा लिया और अपने भारी हाथों से उन्हें दबाने लगा।

'बाबूजी, मेरा क्रिस्मत आखिर में जाग गया है। अगर आप मुझे कुछ अंग्रेजी सिखाते हैं तो मैं आपकी सेवा करूंगा। बस कुछ वाक्य ताकि मैं थोड़ा *गिट मिट कर सकूँ*।'

'अगली कोठरी पर कौन कब्जा करने वाला है?'

जुग्गा ने इकबाल के पैर और टांगों को दबाना जारी रखा।

'मुझे नहीं पता,' उसने झिझकते हुए जवाब दिया। 'वे बताते हैं कि उन्होंने राम लाल के हत्यारों को गिरफ्तार कर लिया है।'

इकबाल ने कहा, "मुझे लगा कि उन्होंने आपको हत्या के आरोप में गिरफ्तार किया है।"

'मी, भी,' जुग्गा मुस्कराया, सोने के बिंदुओं से जड़ी सफेद दांतों की अपनी पंक्ति को रोकते हुए। 'वे हमेशा मुझे गिरफ्तार करते हैं जब मनो माजरा में कुछ भी गलत होता है।'

तुम देखो, मैं बदमाश हूँ। 'क्या

तुमने राम लाल को नहीं मारा?'

जुग्गा ने दबाना बंद कर दिया। उसने अपने कानों को अपने हाथों से पकड़ा और अपनी जीभ बाहर निकाल ली। 'तोबा, तोबा! मेरे अपने गाँव बनिया को मार डालो? बाबूजी, जो मुर्गी को मारता है जो अंडे देती है? इसके अलावा, मेरे पिता के जेल में होने पर राम लाल ने मुझे वकीलों को भुगतान करने के लिए पैसे दिए। मैं कमीने की तरह काम नहीं करूंगा।'

'मुझे लगता है कि वे तुम्हें अब बंद कर देंगे।'

'पुलिस देश के राजा है। जब वे ऐसा महसूस करेंगे तो वे मुझे छोड़ देंगे। अगर वे मुझे अंदर रखना चाहते हैं, तो वे बिना लाइसेंस के भाला रखने या बिना अनुमति के गाँव से बाहर जाने के मामले को रफा-दफा कर देंगे।'

'लेकिन तुम उस रात गाँव से बाहर थे। क्या तुम नहीं थे?'

जुग्गा अपने कुल्हे पर बैठ गई, इकबाल के पैरों को अपनी गोद में ले लिया और उसके तलवों की मालिश करने लगी।

मैं गाँव से बाहर था, 'उसने एक शरारती ट्विंकल को आँख मारते हुए जवाब दिया, 'लेकिन मैं किसी की हत्या नहीं कर रहा था। मेरी हत्या की जा रही थी।'

इकबाल अभिव्यक्ति जानते थे। वह आगे के खुलासे के लिए जुग्गा को प्रोत्साहित नहीं करना चाहता था। लेकिन एक बार जब विषय का सुझाव दिया गया था, तब जुग्गा को वापस नहीं रखा गया था। उसने इकबाल के पैरों को अधिक जोर से दबाना शुरू कर दिया।

'आप यूरोप में कई साल रहे हैं?' जुग्गा ने अपनी आवाज कम करते हुए पूछा। 'हाँ, कई,' इकबाल ने जवाब दिया, व्यर्थ ही अपरिहार्य से बचने की कोशिश कर रहा है। 'फिर, बाबूजी,' जुग्गा ने अपनी आवाज़ को और कम करते हुए पूछा, 'आप कई मेमसाहब के साथ सोए होंगे। हाँ?'

इकबाल चिढ़ गए। भारतीयों को लंबे समय तक सेक्स के विषय से दूर रखना संभव नहीं था। इसने उनके मन को मोह लिया। यह उनकी कला, साहित्य और धर्म में सामने आया। एक ने इसे हस्तमैथुन के बुरे प्रभावों के लिए कामोत्तेजक और उपचारात्मक विज्ञापनों वाले शहरों में होर्डिंग्स पर देखा। एक ने इसे कानून अदालतों और बाजारों में देखा, जहां फेरीवालों ने रेत के छिपकलियों की त्वचा से बने तेल बेचने का एक थका देने वाला व्यापार किया, जिससे जीवन को थका हुआ पानी में डाल दिया और फाल्स का आकार बढ़ा दिया। एक ने इसे उन क्वैक्स के विज्ञापनों में पढ़ा जिन्होंने दावा किया था कि नर बच्चों की उपज के लिए महिलाओं को बांझपन और दवाओं के लिए उपाय करने के लिए प्रेरित करना है। एक ने इसके बारे में हर समय सुना। किसी भी व्यक्ति ने अभद्र गाली का इस्तेमाल उतना लापरवाही से नहीं किया जितना कि भारतीयों ने किया। जैसे शब्दों *साला*, पत्नी के भाई, और ( 'मैं अपनी बहन के साथ सोने के लिए चाहते हैं') *susra*, पिता जी ( 'मैं अपनी बेटी के साथ सोने के लिए चाहते हैं') थे, जैसा कि अक्सर किसी के दोस्तों और रिश्तेदारों के लिए स्नेह के मामले क्रोध के भाव के रूप में दुश्मनों का अपमान करना। किसी भी विषय पर बातचीत- राजनीति, दर्शन, खेल- जल्द ही सेक्स के लिए नीचे आ गए, जिसका सभी ने भरपूर आनंद लिया और

हाथ से थप्पड़ मारने।

'हां, मेरे पास है,' इकबाल ने कहा, लापरवाही से। 'अनेक के साथ।'

'वाह, वाह,' इकबाल के पांवों में जोश और जोरदार दबाव के साथ जुग्गा का उद्गार। 'वाह, बाबूजी-महान। आपने बहुत मस्ती की होगी। *मेमसाबाह* स्वर्ग से घंटे की तरह हैं - सफेद और नरम, रेशम की तरह। हमारे यहां सभी काली भैंस हैं। '

'महिलाओं में कोई अंतर नहीं है। वास्तव में, सफेद महिलाएं बहुत रोमांचक नहीं हैं। क्या तुम शादीशुदा हो?'

'नहीं, बाबूजी। कौन अपनी बेटी को बदमाश देगा? मुझे अपनी खुशी वहीं मिलनी है, जहां मैं इसे पा सकता हूं। '

'क्या आपको इसका ज्यादा फायदा है?'

'कभी-कभी ... जब मैं एक सुनवाई के लिए फिरोजपुर जाता हूं और अगर मैं वकीलों और उनके क्लर्कों से पैसे बचाता हूं, तो मेरे पास अच्छा समय है। मैं पूरी रात के लिए मोलभाव करता हूं। महिलाओं को लगता है, अन्य पुरुषों के साथ, इसका मतलब है कि दो, या सबसे अधिक तीन बार। ' उसने अपनी मूंछें घुमा लीं। 'लेकिन जब जुगुत सिंह उन्हें छोड़ देते हैं, तो वे "है, है" कहते हैं, उनके कानों को छूते हैं, कहते हैं, "तोबा, तोबा" और मुझे भगवान के नाम पर उन्हें छोड़ने और पैसे वापस लेने के लिए विनती करते हैं।'

इकबाल जानता था कि यह झूठ है। ज्यादातर नौजवानों ने बात की।

इकबाल ने कहा, " जब आप शादी करेंगे, तो आप अपनी पत्नी को अपने लिए मैच पाएंगे। 'आप अपने कान पकड़ कर "टूबा, टूबा" कह रहे होंगे।

'शादी में कोई मजा नहीं है, बाबूजी। मौज-मस्ती के लिए समय या स्थान कहां है? गर्मियों में, हर कोई बाहर खुले में सोता है और आप जो कुछ भी कर सकते हैं, वह थोड़ी देर के लिए खत्म हो जाता है और आपकी याद आने से पहले चीजों के साथ खत्म हो जाता है। सर्दियों

में, पुरुष और महिलाएं अलग-अलग सोते हैं। आपको रात में एक ही समय पर प्रकृति की कॉल का जवाब देने का नाटक करना होगा। '

'तुम इसके बारे में बहुत कुछ जानती हो, बिना शादी किए।'

जुग्गा हँसा। 'मैं अपनी आँखें बंद नहीं रखता। इसके अलावा, भले ही मैं शादीशुदा नहीं हूँ, मैं शादीशुदा आदमी का काम करती हूँ। '

'आप भी व्यवस्था से प्रकृति की पुकार का जवाब देते हैं?'

जुग्गा ने जोर से ठहाका लगाया। 'हाँ, बाबूजी, मैं करता हूँ। यही मुझे इस लॉकअप में ले आया है। लेकिन मैं खुद से कहता हूँ: अगर मैं उस रात बाहर नहीं होता, तो मुझे आपसे मिलने का सौभाग्य नहीं मिलता, बाबूजी। मुझे आपसे अंग्रेजी सीखने का मौका नहीं मिलेगा। मुझे "गुड मॉर्निंग" जैसे कुछ गीट मिट सिखाओ। क्या आप, बाबूजी-साहब? '

'आप अंग्रेजी के साथ क्या करेंगे?' इकबाल ने पूछा। 'साहब निकल गए। आपको अपनी भाषा सीखनी चाहिए। '

जुग्गा सुझाव से प्रसन्न नहीं हुई। उसके लिए शिक्षा का मतलब था

अंग्रेजी जानना। उर्दू या गुरुमुखी लिखने वाले क्लर्क और पत्र लेखक साक्षर थे, लेकिन शिक्षित नहीं थे।

'मैं किसी से भी यह सीख सकता हूँ। भाई मीत सिंह ने मुझे गुरुमुखी सिखाने का वादा किया है, लेकिन मुझे लगता है कि यह शुरू नहीं होगा। बाबूजी, आपने कितनी कक्षाएँ पढ़ी हैं? आपने दसवीं पास कर ली होगी? '

दसवीं की स्कूल छोड़ने वाली परीक्षा थी।

'हाँ, मैंने दसवीं पास की है। वास्तव में मैं सोलह पास हूँ। 'सोलह! वाह वाह! मैं

कभी किसी से नहीं मिला जिसने ऐसा किया हो। हमारे में गाँव के केवल राम लाल ने चार किए हैं। अब वह मर चुका है, जो कुछ भी पढ़ सकता है वह मीट सिंह है। पड़ोसी गाँवों में उन्हें भाई भी नहीं मिले। हमारे इंस्पेक्टर साहब केवल सात तक पढ़े हैं और डिप्टी साहब दस तक। सोलह! आपके पास बहुत दिमाग होना चाहिए। '

इकबाल को जोशीली तारीफ पर शर्मिंदगी महसूस हुई।

'क्या आप कुछ पढ़ या लिख सकते हैं?' उसने पूछा।

'मैं? नहीं, मेरे चाचा के बेटे ने मुझे स्कूल में सीखा एक छोटा सा वचन पढ़ाया। यह आधी अंग्रेजी और आधी हिंदुस्तानी है:

*कबूतर -kabootur, oodan- fly*

*देखो -देखो, usman- आकाश*

क्या आपको ये पता है?'

'नहीं। क्या उसने तुम्हें वर्णमाला नहीं सिखाई? '

'एबीसी? उसे खुद नहीं पता था। वह जानता था कि मैं जितना करता हूँ:

*एबीसी तुम कहाँ हो?*

*एडवर्ड की मौत, मैं शोक मनाने गया था।*

आपको यह पता होना चाहिए? '

'नहीं, मैं यह नहीं जानता।'

'अच्छा, आप मुझे अंग्रेजी में कुछ बताइए।'

इकबाल ने बाध्य किया। उन्होंने जुग्गा को morning गुड मॉर्निंग 'और 'गुडनाइट' कहना सिखाया। जब जुग्गा ने जीवन के कुछ महत्वपूर्ण कार्यों के लिए अंग्रेजी जानना



चाहा, तो इकबाल अधीर हो गए। फिर पांच नए कैदियों को पड़ोसी सेल में लाया गया। जुगा का जोवियल मूड उतनी ही तेजी से गायब हो गया जितना कि वह आया था।

ग्यारह बजे तक बारिश एक बूदाबांदी तक घट गई थी। दिन तेज हो गया। सबइंस्पेक्टर ने अपनी साइकिल से देखा। उसके आगे कुछ दूर, बादलों ने खोल दिया, एक अमीर नीले आकाश को उजागर करता है। सूरज की रोशनी का एक झोंका बारिश के पार फिसल गया। इसके केसरिया बीमों ने सॉडेन खेतों पर खेला। रेनबो ने एक बहुरंगी चाप में चुंडुनुगर शहर को बनाते हुए, आकाश को फैलाया।

सबइंस्पेक्टर तेजी से चला। मल्ली की गिरफ्तारी के बारे में उसके हेड कांस्टेबल के प्रवेश करने से पहले वह पुलिस स्टेशन जाना चाहता था। स्टेशन डायरी के पन्नों को फाड़ देना और फिर कुछ असंगत वकील से बहुत सारे सवालों का सामना करना अजीब होगा। हेड कांस्टेबल अनुभव का आदमी था, लेकिन जुगा और इकबाल की गिरफ्तारी के बाद सबइंस्पेक्टर का उस पर से भरोसा कुछ हिल गया था। उसे ऐसी स्थिति से निपटने के लिए भरोसा नहीं किया जा सकता था जो नियमित नहीं थी। क्या वह जानता होगा कि कैदियों को कहां बंद करना है? वह एक किसान था, जो शिक्षित मध्यवर्ग की खौफ से भरा था। वह इकबाल को परेशान करने के लिए तंत्रिका नहीं होगा (जिसके सेल में उसने एक चारपाई और एक कुर्सी और मेज रखी थी)। और अगर उन्होंने जुगागा और मल्ली को दूसरे सेल में एक साथ रखा होता, तो वे अब तक हत्या और डकैती पर चर्चा करते और एक दूसरे की मदद करने का फैसला करते।

सबइंस्पेक्टर के थाने में घुसते ही, बरामदे में एक बेंच पर बैठे कुछ पुलिसवाले उसे लेने के लिए उठे। एक ने अपना चक्र लिया; दूसरे ने उसे अपने रेनकोट के साथ मदद की, जिससे बारिश में बाहर जाने के बारे में कुछ सोचते हुए।

'ड्यूटी', सब-इंस्पेक्टर ने धूमधाम से कहा, 'ड्यूटी। बारिश कुछ भी नहीं है। भूकंप आने पर भी पहले ड्यूटी! क्या हेड कांस्टेबल वापस आ गया है? '

'जी श्रीमान। वह कुछ मिनट पहले मल्ली के गिरोह में लाया और चाय पीने के लिए अपने क्वार्टर गया। '

'क्या उसने दैनिक डायरी में कोई प्रविष्टि की है?'

'नहीं, सर, उन्होंने कहा कि वह आपके लिए ऐसा करने का इंतजार करेंगे।'

सबइंस्पेक्टर को राहत मिली। वह रिपोर्टिंग कक्ष में गया, अपनी पगड़ी खूटी पर लटका दी और एक कुर्सी पर बैठ गया। तालिका को सभी प्रकार के रजिस्ट्रों के साथ ढेर किया गया था। स्तंभों में विभाजित उसके पीले पन्नों के साथ एक बड़ा एक उसके सामने खुला है। उन्होंने अंतिम प्रविष्टि पर नज़र डाली। यह उनके स्वयं के हाथ में था, उस सुबह मनो माजरा के घर छोड़ने के बारे में।

'अच्छा,' उसने जोर से कहा, अपने हाथ रगड़। उसने अपनी जांघों को थप्पड़ मारा और अपने दोनों हाथों को अपने माथे पर और अपने बालों के माध्यम से चलाया। 'ठीक है,' उसने जोर से खुद से कहा। 'सही।'

एक कांस्टेबल ने उसे चाय पिलाई, जिससे वह हर समय हड़कंप मचा रहा।

'तुम्हारे कपड़े भीगने चाहिए!' उन्होंने कहा, चाय को मेज पर रखा और इसे एक आखिरी हिंसक हलचल दी।

सबइंस्पेक्टर ने कांस्टेबल की तरफ देखे बिना उसे उठा लिया। 'क्या आपने मल्ली के गैंग को जुगागा के समान सेल में बंद कर दिया है?'

'तोबा! तोबा!' कांस्टेबल को धन्यवाद दिया, अपने हाथ उसके कंधे तक पकड़े। 'सर, थाने में हत्या हुई होगी। आपको होना चाहिए

जब हम मल्ली को अंदर लाए, तो जैसे ही जुग्गा ने उसे देखा वह पागल हो गया। मैंने कभी ऐसी गाली नहीं सुनी। माँ, बहन, बेटी — उसने एक को भी नहीं छोड़ा। उसने सलाखों को तब तक हिलाया जब तक कि वे हड़बड़ा गए। हमने सोचा कि दरवाज़ा बंद हो जाएगा। मल्ली को वहां बिठाने का सवाल ही नहीं था। और मल्ली अंदर नहीं गया होगा, किसी भी मेमने से ज्यादा एक शेर के पिंजरे में होगा। '

सबइंस्पेक्टर मुस्कुराया। 'मल्ली ने कसम नहीं खाई?'

'नहीं। वह वास्तव में भयभीत दिखे और यह कहते रहे कि उनका मनोहर डकैत से कोई लेना-देना नहीं है। जुग्गा यह कहते हुए पीछे हट गया कि उसने उसे अपनी आँखों से देखा है और वह एक बार बाहर होने पर अपनी माँ, बहनों और बेटियों के साथ स्कोर तय करेगा। मल्ली ने कहा कि वह उससे ज्यादा नहीं डरता था क्योंकि जुगाड़ करने के बाद वह अपनी बुनकर लड़की के साथ सो सकता था। तुम सच में देखा जाना चाहिए तब! उसने एक जानवर की तरह व्यवहार किया। उसकी आँखें लाल हो गईं; उसने अपना हाथ उसके मुंह पर रखा और चिल्लाया; उसने अपनी छाती पीट ली और लोहे की सलाखों को हिला दिया; उन्होंने शपथ ली कि वह मल्ली अंग को अंग से फाड़ देंगे। मैंने कभी किसी को उस तरह गुस्से में नहीं देखा। हम कोई चांस नहीं ले सकते थे, इसलिए हमने जुली का गुस्सा कम होने तक मल्ली को रिपोर्टिंग रूम में रखा। फिर हमने जुग्गा को बाबू की कोठरी में घुमाया और मल्ली के लोगों को जुग्गा में डाल दिया। '

'यह एक अच्छा तमाशा रहा होगा,' सबइंस्पेक्टर ने मुस्कराहट के साथ कहा। 'हमारे पास कुछ और होगा। मैं मल्ली के आदमियों को रिहा करने जा रहा हूँ। '

कांस्टेबल हैरान रह गया। इससे पहले कि वह कोई सवाल पूछ पाता, सबइंस्पेक्टर ने उसे हाथ की लचर लहर के साथ खारिज कर दिया।

'नीति, तुम्हें पता है! जब आप सेवा में रहेंगे तब तक आप सीखेंगे। जाओ और देखो कि हेड कांस्टेबल ने उसकी चाय पी है। कहो कि यह महत्वपूर्ण है। '

थोड़ी देर बाद हेड कांस्टेबल आ गया, संतोष झल्ला उठा। उनके पास अपनी दक्षता के किसी भी प्रशंसा के खिलाफ विरोध करने के लिए तैयार एक की स्मॉग अभिव्यक्ति थी। सबइंस्पेक्टर ने मामूली मुस्कुराते हुए दूसरे पहनावे को नजरअंदाज किया और उसे दरवाजा बंद करके बैठने को कहा। हेड कांस्टेबल की अभिव्यक्ति संतोष से चिंता में बदल गई। उसने दरवाजा बंद किया और मेज के दूसरी तरफ खड़ा हो गया। 'जी श्रीमान। क्या आदेश हैं? '

'बैठ जाओ। बैठो,' सबइंसपेक्टर ने कहा। उसकी आवाज मस्त थी। 'कोई जल्दी नहीं है।'

हेड कांस्टेबल बैठ गया।

सबइंसपेक्टर ने अपने कान में एक पेंसिल के तेज छोर को घुमाया और भूरे रंग के मोम की जांच की, जो उससे चिपक गया। उसने अपनी जेब से एक सिगरेट निकाली और उसकी बत्ती जला देने से पहले माचिस की नोक पर कई बार टैप किया। उसने उसे जोर से चूसा। धुआं उसके नथुने से बाहर निकला, मेज से पलट कर कमरे में फैल गया।

'हेड कांस्टेबल साहब,' उन्होंने अपनी जीभ से तंबाकू का एक छोटा सा हिस्सा निकालते हुए कहा। 'हेड कांस्टेबल साहब, आज बहुत सारी चीजें होनी हैं, और मैं चाहता हूँ कि आप उन्हें व्यक्तिगत रूप से करें।'

'हां, सर,' ने हेड कांस्टेबल को गंभीर जवाब दिया।

'पहले, मल्ली और उसके आदमियों को मनो माजरा पर ले चलो। उन्हें छोड़ दें जहां ग्रामीण उन्हें रिहा होते हुए देख सकते हैं। मंदिर के पास, शायद। तब ग्रामीणों से लापरवाही से पूछें कि क्या किसी ने सुल्ताना या उसके किसी गिरोह के बारे में देखा है। आपको यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि क्यों। सिर्फ पूछताछ करो।'

'लेकिन, साहब, सुल्ताना और उनका बहुत कुछ पाकिस्तान में चला गया। हर कोई जानता है कि।' इंस्पेक्टर ने अपनी पेंसिल का अंत फिर से उसके कान में रखा और मोम को मेज पर रगड़ा। उन्होंने सिगरेट में कुछ खींच लिया और इस बार अपने होठों को थपथपाया और हेड कांस्टेबल के रजिस्टर में धुआं भरते हुए जेट्स भेजे

चेहरा।

'मुझे नहीं पता कि सुल्ताना पाकिस्तान गई है। वैसे भी, उन्होंने मनो माजरा में डकैती के बाद छोड़ दिया। ग्रामीणों से यह पूछने में कोई हर्ज नहीं है कि क्या उन्हें पता है कि जब वह चले गए, तो क्या वहां है?'

हेड कांस्टेबल का चेहरा जल उठा।

'मैं समझता हूँ, सर। क्या कोई अन्य आदेश हैं?'

'हाँ। ग्रामीणों से भी पूछताछ करें कि क्या वे मुस्लिम उपद्रवी इकबाल की शरारत के बारे में कुछ जानते हैं, जब वह मनो माजरा में थे।'

हेड कांस्टेबल फिर से हैरान रह गया।

'सर, बाबू का नाम इकबाल सिंह है। वह सिख हैं। वह इंग्लैंड में रह रहे हैं और उनके लंबे बाल कटे हुए हैं।'

सबइंस्पेक्टर ने हेड कांस्टेबल को घूरने के साथ तय किया और मुस्कुराया। 'कई इकबाल हैं। मैं मोहम्मद इकबाल की बात कर रहा हूँ, आप इकबाल सिंह के बारे में सोच रहे हैं। मोहम्मद इकबाल मुस्लिम लीग के सदस्य हो सकते हैं।'

'मैं समझता हूँ, सर,' ने हेड कांस्टेबल को दोहराया, लेकिन वह वास्तव में समझ नहीं पाया था। उन्हें उम्मीद थी कि वह इस योजना के साथ नियत समय में पकड़ लेंगे। 'आपके आदेश होंगे।'

'बस एक बात और,' सबइंस्पेक्टर को जोड़ा, टेबल से उठते हुए। 'To मुस्लिम शरणार्थी शिविर के कमांडर को मुझसे एक पत्र लेने के लिए एक कॉन्स्टेबल मिलें। इसके अलावा, मुझे याद दिलाएं कि कल जब पाकिस्तानी सेना की टुकड़ियां मुस्लिम ग्रामीणों को निकालने के लिए आती हैं तो मैं मानो माजरा में कुछ कांस्टेबलों को भेज सकता हूँ।'

हेड कांस्टेबल को एहसास हुआ कि यह उसे योजना को समझने में मदद करने के लिए था। उन्होंने इसके बारे में एक मानसिक टिप्पणी की, दूसरी बार सलाम किया और अपनी एड़ी पर क्लिक किया। 'हाँ, सर,' उसने कहा, और बाहर चला गया।

सबइंस्पेक्टर ने उसकी पगड़ी उतार दी। वह स्टेशन के आंगन में दरवाजे की तरफ देखकर खड़ा हो गया। उसके सामने की दीवार पर रेलवे लता बारिश से धोया गया था। इसकी पत्तियाँ धूप में चमकती हैं। बाईं ओर पुलिसकर्मियों के शयनकक्ष में चारपाई की पंक्तियाँ थीं, जिनके ऊपर बड़े करीने से लुढ़का हुआ था। डॉरमेट्रीज स्टेशन की दो कोशिकाएँ थीं - वास्तव में सामने की दीवार के लिए ईंटों के बजाय लोहे की सलाखों वाले साधारण कमरे। कोई भी आंगन में कहीं से भी उनके अंदर सब कुछ देख सकता था। पास की कोठरी में

इकबाल एक पत्रिका पढ़ते हुए, चारपाई पर अपने पैरों के साथ एक कुर्सी पर बैठे थे। कई अखबार फर्श पर बिखरे पड़े थे। जुगुत सिंह बैठा था, अपने हाथों से सलाखों को पकड़े हुए, आलसी रूप से पुलिसकर्मियों के क्वार्टर को घूर रहा था। दूसरे सेल में, मल्ली और उसके साथी एक-दूसरे से बात करते हुए फर्श पर लेट गए। वे हेड कांस्टेबल के रूप में उठे और राइफल के साथ तीन पुलिसकर्मी हथकड़ी डालकर घुस गए। जुगुत सिंह ने आसपास के सेल में जाने वाले पुलिसकर्मियों की कोई सूचना नहीं ली। उसने सोचा कि शायद मल्ली को सुनवाई के लिए अदालत ले जाया जा रहा है।

जुगुत सिंह के प्रकोप से मल्ली हिल गया था। वह जुगुत सिंह से भयभीत था और हिंसा के डर से जल्दी ही दूसरे की शर्तों पर शांति बना लेता था - क्योंकि जुगागा जिले का सबसे हिंसक आदमी था। जुगुत सिंह के दुर्व्यवहार ने असंभव बना दिया था। मल्ली अपने स्वयं के बैंड का नेता था और उसने महसूस किया कि जुगागा के अपमान के बाद उसे अपने साथियों की आँखों में अपनी प्रतिष्ठा वापस पाने के लिए कुछ कहना था। उसने कई गंदी बातों के बारे में सोचा जो वह कह सकता था, अगर वह जानता था कि जुगुत सिंह दुर्व्यवहार के साथ दोस्ती की अपनी पेशकश वापस करने जा रहा है। वह आहत और गुस्से में था। अगर उसे एक और मौका मिलता तो वह उसे जुगागा को वापस दे देता, गालियाँ देता। लोहे की सलाखों ने उन्हें अलग कर दिया और किसी भी मामले में सशस्त्र पुलिसकर्मियों के बारे में पता चला।

पुलिसकर्मियों ने मल्ली और उसके साथियों को हथकड़ी पहनाई और सभी हथकड़ियों को एक कांस्टेबल के बेल्ट से जुड़ी एक लंबी श्रृंखला से जोड़ दिया। हेड कांस्टेबल ने उन्हें भगा दिया। राइफलों से लैस दो लोगों ने पीछे की ओर रखा। जैसे ही वे अपनी कोठरी से निकले, जुगागा ने मल्ली को देखा और फिर दूर देखा।

'आप पुराने दोस्तों को भूल जाते हैं,' मल्ली ने मॉक फ्रेंडली होकर कहा। 'तुम भी हमारी ओर नहीं देखते और हम तुम्हारे लिए चीड़ते हैं।'

उसके साथी हंस पड़े। 'उसे रहने दो। उसे रहने दो।' जुगागा अपनी आँखों को जमीन पर टिकाए बैठी रही।

'तुम इतने गुस्से में क्यों हो, मेरे प्यारे? इतने दुखी क्यों हो? क्या यह किसी का प्यार है जो आपकी आत्मा को पीड़ा देता है?'

'साथ चलो, चलते रहो,' पुलिसकर्मियों ने अनिच्छा से कहा। वे दृश्य का आनंद ले रहे थे।

'हम अपने पुराने मित्र को सत श्री अकाल क्यों नहीं कह सकते? सत श्री अकाल, सरदार

जुगुत सिंहजी। क्या कोई संदेश है जो हम आपके लिए बता सकते हैं? एक प्रेम संदेश शायद? बुनकर की बेटी को?'

जुगागा बारों को ऐसे घूरता रहा जैसे उसने सुना ही न हो। वह गुस्से से पीला पड़ गया। उसके चेहरे से सारा खून निकल गया। उसके हाथ लोहे की सलाखों के चारों ओर कस गए।

मल्ली अपने मुस्कराते हुए साथियों के साथ घूमता रहा। 'सरदार जुगुत सिंह आज थोड़े परेशान हैं। वह हमारे सत श्री अकाल का जवाब नहीं देगा। हम कोई आपत्ति नहीं है। हम उन्हें फिर से सत श्री अकाल कहेंगे।'

मल्ली अपने मनचले हाथों में शामिल हो गया और जुगुत सिंह के लोहे के दरवाजे के पास नीचे झुक गया और जोर से 'सत श्री...' करने लगा।

जुगागा के हाथों को सलाखों के माध्यम से गोली मार दी गई और उसकी पगड़ी के पीछे से बाल काटकर मल्ली को जकड़ लिया। मल्ली की पगड़ी उतर गई। जुगागा जान से मार दिया और एक झटके के साथ मल्ली के सिर को सलाखों के पीछे दुर्घटनाग्रस्त कर दिया। उन्होंने

मल्ली को एक टेरियर के रूप में किनारे से आगे और पीछे की तरफ चीर के एक टुकड़े को हिलाया, बार-बार उसके सिर को बार-बार हिलाते हुए। प्रत्येक झटके के साथ दुर्व्यवहार किया गया था: 'यह तुम्हारी माँ का बलात्कार करने के लिए। यह तुम्हारी बहन यह तुम्हारी बेटी। अपनी माँ के लिए फिर से। और यह ... और यह। '

इकबाल, जो अपनी कुर्सी से पहले की कार्यवाही देख रहे थे, एक कोने में खड़े हो गए और पुलिसकर्मियों से चिल्लाने लगे: 'तुम कुछ क्यों नहीं करते? क्या तुम नहीं देखते कि वह आदमी को मार डालेगा? '

पुलिसकर्मी चिल्लाने लगे। उनमें से एक ने अपनी राइफल के बट के छोर को जुग्गा के चेहरे पर धकेलने की कोशिश की, लेकिन जुग्गा चकमा खा गया। मल्ली का सिर खून से लथपथ था। उसकी खोपड़ी और माथे पर चोट के निशान थे। वह डगमगाने लगा। सबइंस्पेक्टर ने सेल तक दौड़ लगाई और जुग्गा को हिंसक छड़ी के साथ हाथ पर कई बार मारा। जुग्गा को नहीं जाने देंगे। सबइंस्पेक्टर ने अपनी रिवाल्वर खींची और जुग्गा को इशारा किया। 'जाने दो, तुम स्वाइन करो, या मैं गोली मार दूंगा। '

जुग्गा ने अपने हाथों से मल्ली के सिर को पकड़ लिया और उसके चेहरे पर थूक दिया। उसने उसे और गालियां दीं। मल्ली अपने चेहरे और कंधों पर अपने बालों के साथ एक ढेर में गिर गया। उनके साथियों ने उनकी मदद की और खून पोंछा और उनकी पगड़ी से उनका चेहरा थूक दिया। वह एक बच्चे की तरह रोया, हर समय कसम खाता था, 'तुम्हारी माँ मर सकती है ... तुम एक सुअर के बेटे ... मैं तुम्हारे साथ यह करूँगा।' मल्ली और उसके लोग अगुवाई कर रहे थे। मल्ली को तब तक रोते हुए सुना जा सकता है जब तक वह थाने से काफी दूर था।

इससे पहले कि वह अपना आपा खोता, जुग्गा वापस उसी मूर्खता में डूब गया। उन्होंने जांच की कि सबइंस्पेक्टर की स्वैगर स्टिक उसके हाथों की पीठ पर छोड़ दी गई थी। इकबाल लगातार तड़पते रहे। जुग्गा गुस्से में गोल हो गई। 'चुप रहो, तुम बाबू! मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है कि तुम इतनी बातें करते हो? '

जुग्गा ने उससे पहले अशिष्टता से बात नहीं की थी। इससे इकबाल और अधिक डर गया। 'इंस्पेक्टर साहब, अब जब दूसरी सेल खाली हो गई है, तो क्या आप मुझे वहां शिफ्ट नहीं कर सकते?'

उसने निवेदन किया

सबइंस्पेक्टर ने तिरस्कारपूर्वक मुस्कराया। 'निश्चित रूप से, श्री इकबाल, हम आपको सहज बनाने के लिए हर संभव प्रयास करेंगे। टेबल्स, कुर्सियाँ — शायद बिजली का पंखा? '



## मनो माजरा

जब यह पता चला कि ट्रेन लाशों से भरा हुआ है, तो गाँव में भारी उमस भरी सन्नाटा पसर गया। लोगों ने अपने दरवाजे बंद कर लिए और कई रात भर फुसफुसाते हुए बात करते रहे। सभी ने अपने पड़ोसी के हाथ को उसके खिलाफ महसूस किया, और दोस्तों और सहयोगियों को खोजने के बारे में सोचा। उन्होंने नोटिस नहीं किया कि बादल तारों को फोड़ते हैं और न ही शांत नम हवा को सूँघते हैं। जब वे सुबह उठे और देखा कि बारिश हो रही है, तो उनका पहला विचार ट्रेन और जलती हुई लाशों के बारे में था। पूरा गाँव छतों पर था जो स्टेशन की ओर देख रहा था।

ट्रेन आते ही रहस्यमय तरीके से गायब हो गई थी। स्टेशन सुनसान था। सिपाही के टेंट पानी से लथपथ थे और निराशाजनक लग रहे थे। न सुलगती आग थी और न ही धुआँ। वास्तव में जीवन का कोई संकेत नहीं था — या मृत्यु। फिर भी लोग देखते थे: शायद अधिक लाशों के साथ एक और ट्रेन होगी!

दोपहर तक बादल पश्चिम की ओर लुढ़क गए थे। बारिश ने वातावरण को साफ कर दिया था और कोई मीलों तक चारों ओर देख सकता था। ग्रामीणों ने अपने घरों से पता लगाया कि क्या किसी को उनसे ज्यादा पता था। फिर वे अपनी छतों पर वापस चले गए। हालांकि बारिश होना बंद हो गई थी, लेकिन स्टेशन के प्लेटफार्म पर या यात्री शेड या सैन्य शिविर में किसी को भी नहीं देखा जा सकता था। स्टेशन की इमारत के परपेट पर गिद्धों की एक पंक्ति बैठी थी और उसके ऊपर की ओर घेरे में पतंगें उड़ रही थीं।

पुलिसकर्मियों और कैदियों की अपनी भीड़ के साथ हेड कांस्टेबल को गांव से काफी दूर देखा गया। लोगों ने एक-दूसरे को सूचना दी। लंबरदार को तलब किया गया।

जब हेड कांस्टेबल अपनी पार्टी के साथ पहुंचे तो मंदिर के पास पीपल के पेड़ के नीचे काफी भीड़ जमा थी।

हेड कांस्टेबल ने ग्रामीणों के सामने कैदियों की हथकड़ी खोल दी। उन्हें अपने अंगूठे के निशान को कागज के टुकड़ों पर रखने के लिए बनाया गया था और सप्ताह में दो बार पुलिस स्टेशन को रिपोर्ट करने के लिए कहा गया था। ग्रामीणों की निगाहें टेढ़ी हो गईं। वे जानते थे कि जुग्गा बदमाश और अजनबी का डकैत से कोई लेना-देना नहीं है। वे भी उतने ही निश्चित थे कि मल्ली के गिरोह को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया

सही रास्ते पर थे। शायद वे सभी शामिल नहीं थे; पांच में से कुछ को गलती से गिरफ्तार किया जा सकता था। यह बहुत संभव था कि उनमें से किसी का भी इससे कोई लेना-देना नहीं था। फिर भी पुलिस उन्हें अपने ही गाँव में नहीं, बल्कि मनो माजरा में बंद कर रही थी, जहाँ उन्होंने हत्या को अंजाम दिया था। इस तरह का जोखिम उठाने के लिए पुलिस को अपनी बेगुनाही के बारे में निश्चित होना चाहिए।

हेड कांस्टेबल ने लंबरदार को अलग ले लिया और दोनों ने कुछ समय के लिए एक-दूसरे से बात की। लंबरदार वापस आया और उसने ग्रामीणों को संबोधित करते हुए कहा: 'संतरी साहब जानना चाहते हैं कि यहाँ किसी ने सुल्ताना बदमाश या उसके किसी गिरोह के बारे में कुछ देखा या सुना है या नहीं।'

कई ग्रामीण खबर लेकर बाहर आए। वह अपने गिरोह के साथ पाकिस्तान चले गए थे। वे सभी मुसलमान थे, और उनके गाँव के मुसलमानों को निकाला गया था।

'क्या लाला की हत्या के पहले या बाद में वह चला गया था?' हेड कांस्टेबल से पूछताछ की, लंबरदार के पास आकर।

'के बाद,' वे एक कोरस में जवाब दिया। काफी लंबा विराम था। ग्रामीण एक-दूसरे को देखकर कुछ हैरान हुए। क्या यह वे थे? इससे पहले कि वे पुलिसकर्मियों से कोई सवाल पूछ पाते, हेड कांस्टेबल फिर से बोल रहा था।

'क्या आप में से किसी ने मुस्लिम मुसलामान के सदस्य रहे मोहम्मद इकबाल नामक एक युवा मुसलमान बाबू को देखा या उनसे बात की थी?'

लंबरदार को दबोच लिया गया। वह नहीं जानता था कि इकबाल मुसलमान था। उन्होंने मीत सिंह और इमाम बख्श को इकबाल सिंह कहकर याद किया। उन्होंने इमाम बख्श के लिए भीड़ में देखा, लेकिन उन्हें नहीं पाया। कई ग्रामीणों ने हेड कांस्टेबल को उत्साह से कहना शुरू कर दिया कि इकबाल को खेतों में जाते देखा जाए और पुल के पास रेलवे ट्रैक के बारे में बताया जाए।

'क्या तुमने उसके बारे में कुछ संदिग्ध देखा?' 'संदिग्ध?

कुंआ ...'

'क्या आपने साथी के बारे में कुछ संदिग्ध देखा?' 'क्या तुमने किया?'

किसी को यकीन नहीं हो रहा था। एक शिक्षित लोगों के बारे में निश्चित नहीं हो सकता है; वे सभी संदिग्ध रूप से चालाक थे। निश्चित रूप से मीत सिंह बाबू के बारे में सवालों के जवाब देने वाले थे; बाबू की कुछ बातें अभी भी गुरुद्वारे में उनके साथ थीं।

मीत सिंह को सामने की ओर धकेल दिया गया।

हेड कांस्टेबल ने मीत सिंह की अनदेखी की और फिर से उस समूह को संबोधित किया जो उसका जवाब दे रहा था। 'मैं बाद में भाई से बात करूंगा,' उन्होंने कहा। 'क्या आप में से कोई कह सकता है कि यह आदमी डकैती से पहले या बाद में मनो माजरा में आया था?' यह एक और झटका था। एक शहरी बाबू को डकैती या हत्या के साथ क्या करना होगा? शायद यह सब पैसे के लिए नहीं था! किसी को पूरा यकीन नहीं था। अभी

उन्हें कुछ भी निश्चित नहीं था। हेड कांस्टेबल ने इस बैठक को खारिज कर दिया: 'अगर किसी के पास साहूकार की हत्या या सुल्ताना के बारे में या मोहम्मद इकबाल के बारे में कोई प्रामाणिक जानकारी है, तो एक बार पुलिस स्टेशन में रिपोर्ट करें।'

भीड़ छोटे समूहों में टूट गई, बात कर रही थी और एनिमेटेड रूप से कीटनाशक बना रही थी। मीत सिंह हेड कांस्टेबल के पास गए जो अपने कांस्टेबलों को वापस मार्च करने के लिए तैयार कर रहे थे।

'संतरी साहब, जिस युवक को आपने दूसरे दिन गिरफ्तार किया, वह मुसलमान नहीं है। वह सिख हैं- इकबाल सिंह।'

हेड कांस्टेबल ने उसकी कोई सुध नहीं ली। वह पीले कागज के टुकड़े पर कुछ लिखने में व्यस्त था। मीत सिंह ने धैर्य से इंतजार किया।

'संतरी साहिब,' वह फिर से शुरू कर दिया क्योंकि दूसरे ने कागज को मोड़ दिया था। हेड कांस्टेबल ने उसकी तरफ देखा भी नहीं। उन्होंने कांस्टेबलों में से एक को दबोच लिया और उसे यह कहते हुए कागज सौंप दिया:

'साइकिल या टोंगा जाओ और इस पत्र को पाकिस्तान की सैन्य इकाई के कमांडेंट के पास ले जाओ। खुद भी उसे बताएं कि आप मनो माजरा से आए हैं और स्थिति गंभीर



है। उसे अपने ट्रकों और सैनिकों को मुसलमानों को जल्द से जल्द निकालने के लिए भेजना चाहिए। तुरंत।'

'हां, सर,' ने कांस्टेबल को अपनी एड़ी पर क्लिक करके जवाब दिया। 'संतरी साहिब,' ने सिंह से मुलाकात की।

'संतरी साहब, संतरी साहब, संतरी साहिब' ने हेड कॉन्स्टेबल को गुस्से में दोहराया। 'आप अपने "संतरी साहब" के साथ मेरे कान खा रहे हैं। तुम क्या चाहते हो?'

'इकबाल सिंह सिख हैं।'

'क्या आपने यह देखने के लिए कि क्या वह सिख था या मुसुलमैन था, उसने अपने पैट के फ्लाइ-बटन खोल दिए ? आप एक मंदिर के सरल भाई हैं। जाकर प्रार्थना करो। '

डबल फाइल में खड़े पुलिसकर्मियों के सामने हेड कांस्टेबल ने उनकी जगह ली।

'ध्यान! बाईं ओर, त्वरित मार्च। '

मीत सिंह ने ग्रामीणों के उत्सुक सवालियों के जवाब के बिना मंदिर का रुख किया।

हेड कांस्टेबल की यात्रा ने मक्खन के पैट के माध्यम से चाकू की कटौती के रूप में मनो माजरा को दो हिस्सों में विभाजित किया था।

मुसलमान अपने घरों में बैठकर मोपेड चलाते थे। पटियाला, अंबाला और कपूरथला में मुसलमानों पर सिखों द्वारा किए गए अत्याचारों की अफवाहें, जिन्हें उन्होंने सुना और खारिज किया, उनके दिमाग में वापस आ गए। उन्होंने सज्जन लोगों के बारे में सुना था कि उनकी नसें उखड़ी हुई थीं, उन्हें छीन लिया गया और भीड़-भाड़ वाली सड़कों पर उतार दिया गया

बाजार में बलात्कार करने के लिए। बहुतों ने आत्म - हत्या करके अपनी इच्छाशक्ति का हनन किया। उन्होंने परिसर में सूअरों के वध से मस्जिदों को उजाड़ने के बारे में सुना था, और पवित्र कुरान की प्रतियों को काफिरों द्वारा फाड़ा जा रहा था। काफी अचानक, मनो माजरा में हर सिख एक दुष्ट इरादे के साथ एक अजनबी बन गया। उनके लंबे बाल और दाढ़ी बर्बर दिखाई दे रही थी, उनके किरपान मासिक -धर्म विरोधी थे। पहली बार, पाकिस्तान नाम उनके लिए कुछ मायने रखता था - एक शरण जहां सिख नहीं थे।

सिख नाराज और गुस्से में थे। उन्होंने कहा, " कभी भी एक मुसुल्मान पर भरोसा मत करो। अंतिम गुरु ने उन्हें चेतावनी दी थी कि मुसलमानों की कोई वफादारी नहीं है। वह सही था। भारतीय इतिहास के मुस्लिम काल के दौरान, बेटों ने अपने ही पिता को कैद या मार डाला था और भाइयों ने सिंहासन प्राप्त करने के लिए भाइयों को अंधा कर दिया था। और उन्होंने सिखों के साथ क्या किया था? अपने गुरुओं में से दो को मार डाला, दूसरे की हत्या कर दी और अपने नवजात बच्चों को मौत के घाट उतार दिया; इस्लाम को स्वीकार करने से इंकार करने के अलावा किसी अन्य अपराध के लिए सैकड़ों हजारों को तलवार डाल दी गई थी; उनके मंदिर परिजनों के वध से जर्जर हो गए थे; पवित्र ग्रन्थ बिट्स के लिए फाड़ दिया गया था। और मुस्लिम कभी भी महिलाओं का सम्मान करने वाले नहीं थे। सिख शरणार्थियों ने मुस्लिमों के हाथों में पड़ने के बजाय महिलाओं के कुएं में कूदने और खुद को जलाने की बात कही थी। जिन लोगों ने आत्महत्या नहीं की, उन्हें सड़कों पर नग्न होकर सार्वजनिक रूप से बलात्कार किया गया और फिर उनकी हत्या कर दी गई। अब मनो माजरा में मुस्लिमों द्वारा सिखों के नरसंहार का एक ट्रेन लोड किया गया था। हिंदू और सिख पाकिस्तान में अपने घरों से भाग रहे थे और मनो माजरा में आश्रय पा रहे थे। तब राम लाल की हत्या हुई थी। किसी को नहीं पता था कि उसे किसने मारा था, लेकिन सभी जानते थे कि राम लाल हिंदू थे; सुल्ताना और उसका गिरोह मुस्लिम थे और पाकिस्तान भाग गए थे।

एक अनजान चरित्र-बिना पगड़ी या दाढ़ी- गाँव के बारे में बात करते हुए। ये किसी के नाराज होने के लिए पर्याप्त कारण थे। इसलिए उन्होंने मुसलमानों से नाराज होने का फैसला किया; मुसलमान बहुत हद तक कृतघ्न थे। तर्क सिखों के साथ एक मजबूत बिंदु नहीं था; जब वे रूठे हुए थे, तो तर्क बिल्कुल भी मायने नहीं रखता था।

यह एक उदास रात थी। बादलों से बहने वाली हवा ने उन्हें फिर से उड़ा दिया। सबसे पहले वे सफेद रंग के अजीब किस्सों में आए। चंद्रमा ने उन्हें अपने चेहरे से मिटा दिया। फिर वे बड़े बिलों में आ गए, चांदनी को उड़ा दिया और आकाश को एक सुस्त ग्रे रंग में बदल दिया। चंद्रमा ने अपने रास्ते से लड़ाई लड़ी, और कभी-कभी, मैदान के पैच चांदी की तरह चमकते थे। बाद में, राक्षसी काले संरचनाओं में बादल आ गए और पूरे आकाश में फैल गए। फिर बिना किसी बिजली या गड़गड़ाहट के बारिश होने लगी।

सिख किसानों का एक समूह लंबरदार के घर में एकत्र हुआ। वे एक तूफान लालटेन के चारों ओर एक चक्र में बैठे थे - कुछ एक चारपाई पर, दूसरे पर

मंज़िल। मीत सिंह उनमें से थे।

लंबे समय तक किसी ने दोहराने के अलावा कुछ नहीं कहा, 'भगवान हमें हमारे पापों की सजा दे रहे हैं।'

'हाँ, भगवान हमें हमारे पापों की सजा दे रहे

हैं।' 'पाकिस्तान में बहुत जुल्म है।'

'ऐसा इसलिए है क्योंकि वह हमें हमारे पापों की सजा देना चाहता है। बुरे कृत्य से कटु उपज मिलती है।'

फिर एक जवान आदमी बोला। 'इसके लायक हमने क्या किया है? हमने मुसलमानों को अपने भाइयों और बहनों के रूप में देखा है। वे हम पर जासूसी करने के लिए किसी को क्यों भेजें?'

'आपका मतलब इकबाल है?' मीत सिंह ने कहा। 'मैंने उनसे काफी लंबी बातचीत की। उसने हम सभी सिखों की तरह अपनी कलाई पर एक लोहे की चूड़ी लगाई थी और मुझे बताया था कि उसकी माँ चाहती थी कि वह उसे पहने, इसलिए उसने यह पहना था। वह एक मुंडा सिख है। वह धूम्रपान नहीं करता। और वह साहूकार की हत्या के अगले दिन आया था।'

'भई, आप आसानी से ले जाते हैं, 'उसी युवा ने उत्तर दिया। 'क्या यह एक मुसलमान को लोहे की चूड़ी पहनने या एक दिन के लिए धूम्रपान नहीं करने के लिए चोट पहुंचाता है - खासकर अगर उसके पास कुछ महत्वपूर्ण काम करने के लिए है?'

'मैं एक साधारण भाई हो सकता हूँ,' मीत सिंह का गर्मजोशी से विरोध किया, 'लेकिन मैं आपके साथ-साथ यह भी जानता हूँ कि बाबू का हत्या से कोई लेना-देना नहीं था; अगर वह होता तो बाद में गाँव में नहीं होता। कि कोई भी पिता समझ जाएगा।'

युवक को लगा कि वह थोड़ा हतोत्साहित है।

'इसके अलावा,' मीत सिंह को और अधिक आत्मविश्वास से जारी रखा, 'उन्होंने पहले ही मल्ली को डकैती के लिए गिरफ्तार कर लिया था ...'

'आप कैसे जानते हैं कि उन्होंने मल्ली को किस लिए गिरफ्तार किया था?' युवाओं को विजयी रूप से बाधित किया।

'हां, तुम्हें कैसे पता कि पुलिस को क्या पता? उन्होंने मल्ली को रिहा कर दिया है। क्या आपने कभी उन्हें बिना मुकदमा और बरी किए हत्यारों को रिहा करने के लिए जाना है?' कुछ और लोगों से पूछा।

'भई, तुम हमेशा बिना वजह बात करते हो।'

'अच्चा, अगर तुम सब कारण वाले हो, तो मुझे बताओ कि चूड़ियों के पैकेट को जुग्गा के घर में किसने फेंका।'

'हमें कैसे पता होना चाहिए?' एक कोरस का जवाब दिया।

'मै तुम्हे बताऊंगा। यह जुग्गा का दुश्मन मल्ली था। आप सभी जानते हैं कि वे बाहर गिर गए थे। उसके सिवा जुग्गा का अपमान दूसरा कौन करेगा? '

किसी ने सवाल का जवाब नहीं दिया। मीत सिंह आक्रामक तरीके से अपनी बात घर चलाने गए। 'और यह सब सुल्ताना, सुल्ताना के बारे में! डकैती से उसका क्या लेना-देना? '

एक अन्य युवा ने कहा, " भाईजी, आप सही हो सकते हैं। 'लेकिन लाल मर चुका है: उसके बारे में परेशान क्यों? पुलिस ऐसा करेगी। बता दें कि जुग्गा, मल्ली और सुल्ताना ने अपने झगड़े सुलझा लिए। बाबू के लिए, हम सभी की परवाह है कि वह अपनी माँ के साथ सो सके। हमारी समस्या यह है कि हम अपने साथ इन सभी सूअरों के साथ क्या करें? वे पीढ़ियों से हमारे नमक खाते रहे हैं और देखें कि उन्होंने क्या किया है! हमने उन्हें अपने भाइयों की तरह माना है। उन्होंने सांप की तरह व्यवहार किया है। '

बैठक का तापमान अचानक बढ़ गया। मीत सिंह गुस्से से बोला। 'उन्होंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है? क्या उन्होंने आपको अपनी जमीन से बेदखल कर दिया है या अपने घरों पर कब्जा कर लिया? क्या उन्होंने आपकी महिलाओं के साथ छेड़खानी की है? बताओ, उन्होंने क्या किया है? '

Ent शरणार्थियों से पूछें कि उन्होंने उनके साथ क्या किया है, 'उस तर्कहीन युवक ने जवाब दिया जिसने तर्क शुरू किया था। 'आप हमें बताने का मतलब है कि वे झूठ बोल रहे हैं जब वे कहते हैं कि गुरुद्वारे जला दिए गए हैं और लोगों ने नरसंहार किया है?'

'मैं केवल मनो माजरा की बात कर रहा था। हमारे किरायेदारों ने क्या किया है? ' 'वे मुसलमान हैं।'

मीत सिंह ने अपने कंधे उचकाये।

लंबरदार को लगा कि तर्क को सुलझाना उसके ऊपर है।

'जो होना था हो चुका,' उसने समझदारी से कहा। 'हमें तय करना होगा कि अब हमें क्या करना है। मंदिर में घुसे ये शरणार्थी कुछ ऐसा कर सकते हैं जिससे गांव पर बुरा असर पड़े। '

'कुछ' के संदर्भ ने बैठक के मूड को बदल दिया। बाहरी लोग अपने साथी ग्रामीणों को 'कुछ' करने की हिम्मत कैसे कर सकते थे? यहाँ तर्क करने के लिए एक और ठोकर थी। समूह की वफादारी कारण से ऊपर थी। जिन युवाओं ने सूअरों के रूप में मुसलमानों का जिक्र किया था, वे फफक कर बोले: 'हम चाहते हैं कि कोई हमारे जीवित रहते अपने किरायेदारों के खिलाफ अपनी छोटी उंगली उठाए!'

लंबरदार ने उसे दबोच लिया। 'तुम एक होथेड हो। कभी-कभी आप मुसलमानों को मारना चाहते हैं। कभी-कभी आप शरणार्थियों को मारना चाहते हैं। हम कुछ कहते हैं और आप बात को कुछ और खींचते हैं। '

'सब ठीक है, सब ठीक है, लंबरदार,' युवक ने कहा, 'अगर तुम सब होशियार हो, तो तुम कुछ कहोगे।'

'सुनो भाई,' लंबरदार ने अपनी आवाज कम करते हुए कहा। 'यह कोई समय नहीं है कि टेंपरर्स खो दें। यहां कोई किसी को मारना नहीं चाहता। लेकिन दूसरे लोगों के इरादों को कौन जानता है? आज हमारे पास चालीस या पचास शरणार्थी हैं, जो गुरु की कृपा से शांतिप्रिय हैं

और वे केवल बात करते हैं। कल हम उन अन्य लोगों को प्राप्त कर सकते हैं जिन्होंने अपनी माता या बहनों को खो दिया है। क्या हम उन्हें बताने जा रहे हैं: "इस गाँव में मत आना"? और अगर वे आते हैं, तो क्या हम उन्हें अपने किरायेदारों पर प्रतिशोध लेने देंगे? '

तुमने सौ हजार रुपये की कोई बात कही है, 'एक बूढ़े व्यक्ति ने कहा। 'हमें इसके बारे में सोचना चाहिए।'

किसानों ने उनकी समस्या के बारे में सोचा। वे शरणार्थियों को आश्रय देने से इनकार नहीं कर सकते थे: आतिथ्य एक शगल नहीं था, लेकिन एक पवित्र कर्तव्य था जब इसे मांगने वाले लोग बेघर थे। क्या वे अपने मुसलमानों को जाने के लिए कह सकते थे? बहुत जोर से नहीं! एक साथी ग्रामीण के प्रति वफादारी अन्य सभी विचारों से ऊपर थी। उन शब्दों के बावजूद, जो उन्होंने इस्तेमाल किए थे, किसी को भी उन्हें बाहर फेंकने का सुझाव देने के लिए तंत्रिका नहीं थी, यहां तक कि शुद्ध रूप से सिख सभा में भी। असेंबली का मूड गुस्से से भयावहता में बदल गया।

कुछ देर बाद लंबरदार बोला।

'पड़ोस के गाँवों के सभी मुसलमानों को निकाल लिया गया और चुन्दुनगर के पास शरणार्थी शिविर में ले जाया गया। कुछ पहले ही पाकिस्तान चले गए हैं। दूसरों को जुलुंदुर के बड़े शिविर में भेज दिया गया है।'

'हाँ,' एक और जोड़ा। कपूर और गुज्जू मटका को पिछले सप्ताह खाली कर दिया गया था। मनो माजरा एकमात्र स्थान बचा है जहां मुसलमान हैं। मैं जानना चाहूंगा कि कैसे इन लोगों ने अपने साथी ग्रामीणों को छोड़ने के लिए कहा। हम अपने किरायेदारों को कभी भी ऐसा कुछ नहीं कह सकते, जितना हम अपने बेटों को हमारे घरों से बाहर निकलने के लिए कह सकते हैं। क्या यहां कोई है जो मुसलमानों से कह सकता है, "भाइयों, आपको मनो माजरा से दूर जाना चाहिए"?

इससे पहले कि कोई जवाब दे पाता, एक और ग्रामीण अंदर आ गया और खड़ा हो गया सीमा। हर कोई देखने के लिए चक्कर लगा रहा था, लेकिन वे उसे मंद धुंधली रोशनी में नहीं पहचान सके।

'यह कौन है?' लंबरदार से पूछा, दीपक से अपनी आँखें मिलाते हुए। 'अन्दर आइए।'

इमाम बक्श अंदर आए। दो अन्य उनके पीछे हो लिए। वे भी मुसलमान थे। 'सलाम, चाचा इमाम बख्श। सलाम, खैर दीना। सलाम, सलाम।'

'सत श्री अकाल, लम्बोदर। सत श्री अकाल, 'मुसलमानों ने जवाब दिया।

लोगों ने उनके लिए जगह बनाई और इमाम बख्श के शुरू होने का इंतजार किया। इमाम बख्श ने अपनी उंगलियों से अपनी दाढ़ी को कंघी किया।

'अच्छा, भाइयों, आपका हमारे बारे में क्या फैसला है?' उसने चुपचाप पूछा। एक अजीब सी खामोशी थी। सभी ने लंबरदार को देखा। 'हमसे क्यों पूछते हो?' लंबरदार ने जवाब दिया। 'यह तुम्हारा गाँव जितना है

हमारा।'

'तुमने सुना है जो कहा जा रहा है! सभी पड़ोसी गाँवों को खाली करा लिया गया है। केवल हम बचे हैं। अगर आप चाहते हैं कि हम भी जाएं, तो हम जाएंगे।'

मीत सिंह को सूँघने लगा। उसे लगा कि यह उसके लिए बोलना नहीं है। उसने अपनी बात कही थी। इसके अलावा, वह केवल एक पुजारी था जो ग्रामीणों ने उसे दिया था। एक जवान आदमी बोला।

'ऐसा है, अंकल इमाम बख्श। जब तक हम यहां हैं, कोई भी आपको छूने की हिम्मत नहीं करेगा। हम पहले मर जाते हैं और फिर आप अपनी देखभाल कर सकते हैं।'

'हाँ,' ने एक और गर्मजोशी से कहा, 'हम पहले, फिर आप। अगर कोई आपकी भौंहें उठाता है तो हम उसकी मां का बलात्कार करेंगे।'

'माँ, बहन और बेटी,' ने दूसरों को जोड़ा।

इमाम बख्श ने अपनी आंखों से एक आंसू पोंछे और अपनी शर्ट के हेम में अपनी नाक को उड़ा दिया।

'पाकिस्तान के साथ हमारा क्या संबंध है? हम यहां पैदा हुए थे। तो हमारे पूर्वज थे। हम आप भाइयों के बीच रहते हैं।' इमाम बख्श टूट गए। मीत सिंह ने उसे अपनी बांहों में जकड़ लिया और आहें भरने लगा। बहुत से लोग चुपचाप रोने लगे और अपनी नाक बहाने लगे।

लंबरदार बोला: 'हाँ, आप हमारे भाई हैं। जहां तक हमारा संबंध है, आप और आपके बच्चे और आपके पोते जब तक चाहें तब तक यहां रह सकते हैं। अगर कोई भी आपके, आपकी पत्नियों या आपके बच्चों के लिए अशिष्टता से बोलता है, तो यह हमारे और हमारी पत्नियों और बच्चों के सिर के एक भी बाल को छूने से पहले होगा। लेकिन चाचा, हम बहुत कम हैं और पाकिस्तान से आने वाले अजनबी हजारों में हैं। वे क्या करते हैं, इसके लिए कौन जिम्मेदार होगा?'

'हां,' अन्य लोगों से सहमत थे, 'जहां तक हम चिंतित हैं आप सब ठीक हैं, लेकिन इन शरणार्थियों के बारे में क्या?'

'मैंने सुना है कि कुछ गाँव कई हजारों मज़बूत लोगों से घिरे थे, सभी बंदूक और भाले से लैस थे। प्रतिरोध का कोई सवाल ही नहीं था।'

हम माँ से डरते नहीं हैं, 'दूसरे ने जल्दी से उत्तर दिया। 'उन्हें आने दो! हम उन्हें इस तरह की धड़कन देगा कि वे फिर से मनो माजरा को देखने की हिम्मत नहीं करेंगे।'

'किसी ने भी चुनौती देने वाले का ध्यान नहीं रखा; घमंड बहुत गंभीरता से लिया जा खोखला लग रहा था। इमाम बख्श ने फिर अपनी नाक फोड़ ली, 'आप हमें क्या सलाह देते हैं

तब करो, भाइयों?' उसने भावना के साथ घुटते हुए पूछा।

'अंकल,' ने भारी आवाज में लंबरदार से कहा, 'मेरे लिए यह कहना बहुत कठिन है, लेकिन जिस तरह का समय हम जीते हैं, उसे देखते हुए मैं आपको शरणार्थी शिविर में जाने की सलाह दूंगा, जबकि यह परेशानी जारी है। आप अपने घरों को अपने सामानों से बंद कर देते हैं। जब तक आप वापस नहीं आएंगे हम आपके मवेशियों की देखभाल करेंगे।'

लंबरदार की आवाज ने तनाव पैदा कर दिया। सुनाई देने के डर से ग्रामीणों ने सांस रोक ली। लंबरदार को खुद महसूस हुआ कि उसे अपने शब्दों के प्रभाव को दूर करने के लिए जल्दी से कुछ कहना चाहिए।

'कल तक,' वह फिर से जोर से शुरू हुआ, 'मुसीबत के मामले में हम आपको कांटे से नदी पार करने में मदद कर सकते थे। अब दो दिन से बारिश हो रही है; नदी बढ़ गई है। ट्रेनों और सड़क पुलों से एकमात्र क्रॉसिंग हैं - आप जानते हैं कि वहां क्या हो रहा है! यह आपकी अपनी सुरक्षा के लिए है जिसे मैं आपको लेने की सलाह देता हूँ

शिविर में कुछ दिनों के लिए आश्रय, और फिर आप वापस आ सकते हैं। जहां तक हमारा सवाल है, 'उसने गर्मजोशी से दोहराया,' अगर आप रहने का फैसला करते हैं, तो ऐसा

करने के लिए आपका स्वागत है। हम अपनी जान से तुम्हारा बचाव करेंगे। '

लंबरदार के शब्दों के आयात पर किसी को कोई संदेह नहीं था। वे अपने सिर झुकाए तब तक बैठे रहे जब तक इमाम बख्श उठ खड़े नहीं हुए।

'ठीक है,' उसने पूरी गंभीरता से कहा, " अगर हमें जाना है, तो हम अपने बिस्तर और सामान को बेहतर तरीके से पैक करते हैं। घरों से बाहर निकलने में हमें एक रात से ज्यादा का समय लगेगा, इसे हमारे पिता और दादा को बनाने में सैकड़ों साल लग गए। '

लंबरदार ने अपराध की भावना को महसूस किया और भावना के साथ दूर हो गया। उसने उठकर इमाम बख्श को गले लगा लिया और जोर-जोर से रोने लगा। सिख और मुस्लिम ग्रामीण एक दूसरे की बांहों में समा गए और बच्चों की तरह रोने लगे। इमाम बख्श धीरे से लंबरदार के गले से निकल गया। उन्होंने कहा, "रोने की कोई जरूरत नहीं है।"

'यही दुनिया का दस्तूर है-

हमेशा के लिए बुलबुल नहीं गाती है

बाँड़ी के बाँड़ी शेड्स में,

हमेशा के लिए वसंत नहीं रहता

न ही कभी फूल खिलते हैं।

हमेशा के लिए खुशी का राज नहीं,

आनंद के दिनों में सूर्य को सेट करता है,

दोस्ती हमेशा के लिए नहीं,

वे जीवन को नहीं जानते, जो यह नहीं जानते।

'वे जीवन को नहीं जानते हैं, जो यह नहीं जानते हैं,' कई अन्य लोगों को उच्छ्वास के साथ दोहराया। 'हां, अंकल इमाम बख्श। बस इसे जीना।'

इमाम बख्श और उनके साथी आँसू में बैठक छोड़ गए।

अन्य मुस्लिम घरों के चक्कर लगाने से पहले, इमाम बख्श मस्जिद से जुड़ी अपनी झोपड़ी में गए। नूरन पहले से ही बिस्तर पर थी। दीवार में एक तेल का दीपक जल गया।

'नूरो, नूरो,' वह चिल्लाया, उसे कंधे से हिलाकर। 'उठो नूरो।' लड़की ने अपनी आँखें खोलीं। 'क्या बात है आ?'

'उठो और पैक करो। हमें कल सुबह दूर जाना है।' उन्होंने नाटकीय रूप से घोषणा की।

'चले जाओ? कहाँ पे?'

'मुझे नहीं पता ... पाकिस्तान!'

लड़की झटके से उठ बैठी। उन्होंने कहा, "मैं पाकिस्तान नहीं जाऊंगी।" इमाम बख्श ने नाटक किया उसने सुना नहीं था। 'सारे कपड़े चूड़ी में डाल दिए और बंदूक की थैली में खाना पकाने के बर्तन। भैंस के लिए भी कुछ ले लो। हम

उसे भी लेना पड़ेगा। '

'मैं पाकिस्तान नहीं जाऊंगी,' लड़की ने जमकर दोहराया।

'तुम जाना नहीं चाह सकते, लेकिन वे तुम्हें बाहर फेंक देंगे। सभी मुसलमान कल शिविर के लिए रवाना हो रहे हैं। '

'हमें बाहर कौन फेंकेगा? यह हमारा गाँव है। क्या पुलिस और सरकार मर चुके हैं? '

'मूर्ख मत बनो, लड़की। जैसा बताया गया है वैसा करो। सैकड़ों हजारों लोग पाकिस्तान जा रहे हैं और जितने भी बाहर आ रहे हैं। जो पीछे रहते हैं वे मारे जाते हैं। जल्दी करो और पैक करो। मुझे दूसरों को जाकर बताना होगा कि वे तैयार हो जाएं।'

इमाम बक्श ने बिस्तर पर बैठी लड़की को छोड़ दिया। नूरन ने अपना चेहरा अपने हाथों से रगड़ा और दीवार की तरफ देखा। उसे नहीं पता था कि क्या करना है। वह रात बाहर बिता सकती थी और वापस आ सकती थी जब बाकी सभी जा चुके थे। लेकिन वह इसे अकेले नहीं कर सकती थी; और बारिश हो रही थी। उसका एकमात्र मौका जुग्गा था। मल्ली रिलीज़ हो चुकी थी, शायद जुग्गा भी घर आ गया था। वह जानती थी कि यह सच नहीं है, लेकिन आशा बनी रही और उसने उसे कुछ करने को दिया।

नूरन बारिश में बह गया। उसने गलियों में कई लोगों को गुज़रते हुए देखा उनके सिर और कंधों को कवर करने वाले गन्नी बैग के बारे में। पूरा गाँव जाग गया था। अधिकांश घरों में वह तेल के लैंप की मंद झिलमिलाहट देख सकती थी। कुछ पैकिंग कर रहे थे; अन्य उन्हें पैक करने में मदद कर रहे थे। ज्यादातर सिर्फ अपने दोस्तों से बात करते थे। महिलाएं एक दूसरे को गले लगाकर और रोते हुए फर्श पर बैठ गईं। यह ऐसा था जैसे हर घर में एक मौत हुई हो।

नूरन ने जुग्गा के घर का दरवाजा हिलाया। दूसरी तरफ की चेन टूट गई लेकिन कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई। ग्रे लाइट में उसने देखा कि दरवाजा बाहर से बोल्ट किया हुआ था। उसने लोहे की अंगूठी को खोल दिया और अंदर चला गया। जुग्गा की माँ बाहर थी, शायद कुछ मुस्लिम दोस्तों से मिलने जा रही थी। वहाँ रोशनी बिल्कुल नहीं थी। नूरन एक चारपाई पर बैठ गया। वह अकेले जुग्गा की माँ का सामना नहीं करना चाहती थी और न ही घर वापस जाना चाहती थी। उसे उम्मीद थी कि कुछ होगा -ऐसा कुछ जो जुग्गा से चलता है। वह बैठी और इंतजार कर रही थी।

एक घंटे तक नूरन ने एक दूसरे का पीछा करते हुए बादलों की ग्रे छाया देखी। यह टपकता है और डाला और डाला जाता है और वैकल्पिक रूप से टपकता है। उसने मैला गली से पैदल निकलने की आवाज सुनी। वे दरवाजे के बाहर रुक गए। किसी ने दरवाजा हिलाया।

'यह कौन है?' एक बूढ़ी औरत की आवाज़ में पूछा। नूरन ने अपनी तंत्रिका खो दी; वह नहीं चली।

'यह कौन है?' गुस्से से आवाज़ दी। 'तुम बोलते क्यों नहीं?' नूरन ने खड़े होकर 'बियाबे' नाम के एक शख्स को जमकर लताड़ा।

बुढ़िया ने अंदर कदम रखा और जल्दी से उसके पीछे का दरवाजा बंद कर दिया। 'Jugga! जुग्गा, यह तुम हो?' वह फुसफुसाई। 'क्या उन्होंने तुम्हें छोड़ दिया है?'

'नहीं, बेयबी, यह मैं है- नूरन। चाचा इमाम बक्श की बेटी, 'ने लड़की को डरपोक जवाब दिया।

'Nooro? इस घंटे में यहाँ क्या लाता है?' बुढ़िया ने गुस्से से पूछा। 'क्या जुग्गा वापस आ गया है?'

'जुग्गा के साथ क्या करना है?' उसकी माँ तड़क गई। 'आपने उसे जेल भेज दिया है। तुमने उसे बदमाश बना दिया है। क्या आपके पिता को पता है कि आप आधी रात को अजनबियों के घरों में जाते हैं?'

नूरन रोने लगी। 'हम कल चले जा रहे हैं।' इससे बुढ़िया का दिल नरम नहीं हुआ।

आप हमसे क्या रिश्ता रखते हैं कि आप आकर हमें देखना चाहते हैं? आप जहां चाहें वहां जा सकते हैं। '

नूरन ने अपना आखिरी कार्ड खेला। 'मैं नहीं छोड़ सकता। जुग्गा ने मुझसे शादी करने का वादा किया है। '

'बाहर निकालो, तुम कुतिया!' बूढ़ी औरत hissed। 'तुम, एक मुस्लिम बुनकर की बेटी, एक सिख किसान से शादी कर लो! बाहर निकलो, या मैं जाऊंगा और तुम्हारे पिता और पूरे गांव को बताऊंगा। पाकिस्तान जाओ! मेरी जुग्गा को अकेला छोड़ दो। '

नूरन भारी और बेजान महसूस करती थी। 'सब ठीक है, बेबे, मैं जाऊंगा। मुझसे नाराज मत होना। जब जुग्गा वापस आता है तो उसे बताएं कि मैं सत श्री अकाल कहने आया था। ' लड़की अपने घुटनों पर बैठ गई, बूढ़ी औरत के पैर पकड़ लिए और सिसकने लगी। 'बेबे, मैं दूर जा रहा हूं और फिर कभी वापस नहीं आऊंगा। मेरे जाने के समय कठोर मत बनो। '

जुग्गा की माँ सख्त हो गई थी, उसके चेहरे पर भावनाओं का कोई निशान नहीं था। उसके अंदर, वह थोड़ा कमजोर और नरम महसूस करती थी। 'मैं जुग्गा को बताऊंगा। '

नूरन ने रोना बंद कर दिया। उसके स्तन लंबे अंतराल पर आए। वह अभी भी जुग्गा की मां के पास है। उसका सिर तब तक नीचा और नीचा था, जब तक वह बूढ़ी महिला के पैरों को छू नहीं गया।

'बाय बाय।'

'अब क्या कहना है?' उसे इस बात का अंदाजा था कि क्या आ रहा है। 'बाय बाय।'

'बाय बाय! बाय बाय! आप कुछ क्यों नहीं कहते?' नूरन को धकेलते हुए महिला ने पूछा। 'यह क्या है?'

लड़की ने उसके मुंह में छींटे मारे।

'बेबे, मेरे अंदर जुग्गा का बच्चा है। अगर मैं पाकिस्तान जाता हूं तो वे इसे मार देंगे जब उन्हें पता होगा कि यह एक सिख पिता है। '

बूढ़ी औरत ने नूरन का सिर अपने पैरों पर गिरा दिया। नूरन को जकड़ लिया

उन्हें कड़ी मेहनत और फिर से रोना

शुरू कर दिया। 'ये तुम्हारे पास

कबसे है?'

'मुझे अभी पता चला है। यह दूसरा महीना है। '

जुग्गा की माँ ने नूरन की मदद की और दोनों चारपाई पर बैठ गए। नूरन ने सिसकना बंद कर दिया।

'मैं तुम्हें यहाँ नहीं रख सकता,' बूढ़ी औरत ने कहा। 'मुझे पहले से ही पुलिस से काफी परेशानी है। जब यह सब खत्म हो जाता है और जुग्गा वापस आ जाता है, तो वह जाएगा और आप जहां भी हैं, वहां से आपको ले जाएंगे। तुम्हारे पापा को पता है? '

'नहीं! अगर उसे पता चलता है कि वह मुझसे किसी से शादी करेगा या मेरी हत्या कर देगा। ' वह फिर रोने लगी।

'ओह, इस रोना बंद करो,' बूढ़ी औरत को सख्ती से आज्ञा दी। 'जब आप शरारत पर थे तब आपने ऐसा क्यों नहीं सोचा? मैंने आपको पहले ही बता दिया है कि जैसे ही वह बाहर होगा, आपको जुग्गा मिल जाएगी। '

नूरन ने अपने होठों को थाम लिया।

'बेबे, उसे बहुत लंबा मत रहने दो।'



'वह अपनी खातिर जल्दबाजी करेगा। यदि वह आपको नहीं मिलता है तो उसे एक पत्नी खरीदनी पड़ेगी और हमारे पास कोई पिस या ट्रिंकट नहीं बचा है। वह आपको मिल जाएगा अगर वह एक पत्नी चाहता है। कोई डर नहीं है।'

एक अस्पष्ट आशा ने नूरन के होने को भर दिया। उसे लगा जैसे वह घर और उसके घर की है; चारपाई पर वह बैठी, भैंस, जुग्गा की माँ, सभी उसके थे। अगर जुग्गा भी पलटने में नाकाम रही तो भी वह वापस आ जाएगी। वह उन्हें बता सकती थी कि वह शादीशुदा है। उसके पिता की सोच उसकी चंद्र आशाओं पर काले बादल की तरह आ गई। वह बिना बताए ही खिसक जाती। चाँद फिर चमक उठा।

'बेबे, अगर मुझे मौका मिला तो मैं सुबह-सुबह सत श्री अकाल कहने आऊंगा। सत श्री अकाल। मुझे जाना चाहिए और पैक करना चाहिए।' नूरन ने बुढ़िया को आवेशपूर्वक गले लगाया। 'सत श्री अकाल,' उसने फिर से थोड़ा साँस लेते हुए कहा।

जुग्गा की माँ अपने चारपाई पर बैठकर अंधेरे में कई घंटों तक घूरती रही।

उस रात मनो माजरा में बहुत से लोग नहीं सोए थे। वे घर-घर जाकर बात करते, रोते, प्यार और दोस्ती की कसम खाते, एक-दूसरे को भरोसा दिलाते कि यह जल्द ही खत्म हो जाएगा। जीवन, उन्होंने कहा, जैसा कि हमेशा होता था।

इमाम बख्श नूरान के लौटने से पहले मुस्लिम घरों के अपने दौर से वापस आ गए थे। कुछ भी पैक नहीं किया गया था। वह उससे नाराज होने के लिए बहुत उदास था। यह युवा पर उतना ही कठोर था जितना कि बूढ़ा। वह अपने कुछ दोस्तों को देखने गई होगी। उसने गुड़ी के बैग, टिन के कनस्तरों और चड्डी की तलाश में कुम्हार बनाना शुरू कर दिया। कुछ मिनट बाद नूरन अंदर आ गया।

'क्या आपने अपनी सभी गर्ल फ्रेंड्स को देखा है? इमाम बख्श ने कहा कि हम सोने से पहले इसे पूरा कर लें।

'अपने बिस्तर पर जाओ। मैं चीजों को अंदर रखूंगा। बहुत कुछ करना बाकी नहीं है - और आपको थक जाना चाहिए।

'हाँ, मैं थोड़ा थक गया हूँ,' उसने अपनी चारपाई पर बैठते हुए कहा। 'तुम अब कपड़े पैक करो। यात्रा के लिए कुछ पकाने के बाद हम सुबह खाना पकाने के बर्तन में रख सकते हैं।' इमाम बख्श ने खुद को बिस्तर पर फैला लिया और सो गए।

नूरन के लिए करने के लिए बहुत कुछ नहीं था। एक पंजाबी किसान के सामान में कपड़े, एक रजाई और एक तकिया, घड़े के एक जोड़े, खाना पकाने के बर्तन और शायद एक पीतल की थाली और एक तांबे का गिलास या दो के अलावा बहुत कुछ होता है। वे सभी फर्नीचर के एक टुकड़े पर रखे जा सकते हैं जो उनके पास हैं - एक चारपाई। नूरान ने अपने और अपने पिता के कपड़ों को एक भूरे रंग की पस्त स्टील की डिक्की में रख दिया, जो तब से उनके पास थी जब से वह याद कर सकती हैं। उसने अगले दिन के लिए कुछ चपातियों को सेंकने के लिए चूल्हा में आग जलाई। आधे घंटे के भीतर उसने खाना बना लिया था। उसने बर्तन उतारे और उन्हें एक बंदूक की थैली में रख दिया। आटा, नमक और मसाले जो कि बिस्किट और सिगरेट के डिब्बे में रह गए, जो उनकी बारी में लकड़ी के शीर्ष के साथ एक खाली मिट्टी के तेल के अंदर चले गए। पैकिंग खत्म हो चुकी थी। जो कुछ भी रह गया था वह उसकी रजाई को तकिये के ऊपर से लुढ़कने के लिए था, बाधाओं और छोरों और भैंस पर चारपाई पर डाल दिया। वह टूटे हुए दर्पण के टुकड़े को हाथ में ले सकती थी।

पूरी रात रुक-रुक कर बारिश होती रही। सुबह जल्दी उठना एक नियमित मंदी बन गया। अधिकांश ग्रामीण जो रात भर रुक गए थे, वे बारिश के नीरस संरक्षक और ताजा सुबह की हवा के झोंके में सो गए।

मोटर हॉर्न की टोटिंग और निचले गियर में ट्रक इंजन के उच्च नोट ने स्लश और कीचड़ के माध्यम से अपना रास्ता पूरे गांव को जगा दिया। काफिला मनोहर माजरा के आसपास चला गया, जो अपने ट्रकों को अंदर जाने के लिए काफी चौड़ा रास्ता तलाश रहा था। सामने एक जीप थी जिसमें लाउड-स्पीकर लगे हुए थे। इसमें दो अधिकारी थे- एक सिख (एक जो भूत ट्रेन के बाद आया था) और एक मुसलमान। जीप के पीछे एक दर्जन ट्रक थे। ट्रकों में से एक पठान सैनिकों से भरा था और दूसरा सिखों से भरा हुआ था। वे सभी स्टेन गन से लैस थे।

काफिला गाँव के बाहर रुका। केवल जीप ही अपना रास्ता बना सकती थी। यह केंद्र तक चला गया और पीपल के पेड़ के नीचे मंच के पास रुक गया। दोनों अधिकारी बाहर निकल गए। सिख ने ग्रामीणों में से एक को लंबरदार लाने के लिए कहा। पठान द्वारा मुस्लिम को शामिल किया गया

सैनिकों। उसने उन्हें हर दरवाजे पर दस्तक देने और मुसलमानों को बाहर आने के लिए कहने के लिए तीन के बैचों में बाहर भेज दिया। कुछ मिनटों के लिए मनो माजरा ने रोते हुए कहा कि 'पाकिस्तान जाने वाले सभी मुसलमान एक ही बार में बाहर आते हैं। आइए! सभी मुसलमान। एक बार में बाहर।'

धीरे-धीरे मुसलमानों ने अपने घरों से बाहर निकलना शुरू कर दिया, अपने मवेशियों और उनकी बैलगाड़ियों को चारपाई, बिस्तर के रोल, टिन की चड्डी, मिट्टी के तेल के टिन, मिट्टी के घड़े और पीतल के बर्तनों से भर दिया। बाकी मनो माजरा उन्हें देखने के लिए बाहर आया।

दो अधिकारी और लंबरदार गांव से बाहर आने वाले अंतिम व्यक्ति थे। जीप ने उनका पीछा किया। वे बात कर रहे थे और एनिमेटेड रूप से कीटनाशक। ज्यादातर बात मुस्लिम अधिकारी और लंबरदार के बीच थी।

Have मेरे पास बैलगाड़ी, बिस्तर, बर्तन और धूपदान के साथ यह सब सामान ले जाने की कोई व्यवस्था नहीं है। यह काफिला सड़क मार्ग से पाकिस्तान नहीं जा रहा है। हम उन्हें चुन्दुगुगर शरणार्थी शिविर में ले जा रहे हैं और वहां से ट्रेन से लाहौर तक ले जा रहे हैं। वे केवल अपने कपड़े, बिस्तर, नकदी और आभूषण ले सकते हैं। उनसे कहो कि यहां सब कुछ छोड़ दो। आप इसकी देखभाल कर सकते हैं।'

मनो माजरा मुसलमानों के पाकिस्तान जाने की खबर अचानक आई। लंबरदार ने माना था कि वे केवल कुछ दिनों के लिए आए शरणार्थी के पास जाएंगे और फिर लौट आएंगे।

"नहीं, साहब, हम कुछ नहीं कह सकते," लंबरदार ने जवाब दिया। 'अगर यह एक या दो दिन के लिए होता तो हम उनके सामान की देखरेख कर सकते थे। जैसा कि आप पाकिस्तान जा रहे हैं, उनके लौटने से कई महीने पहले हो सकता है। संपत्ति बुरी चीज है; यह लोगों के मन को जहर देता है। नहीं, हम कुछ भी नहीं छूएंगे। हम केवल उनके घरों की देखभाल करेंगे।'

मुस्लिम अधिकारी चिढ़ गया था। 'मेरे पास बहस करने का समय नहीं है। आप खुद देखिए कि मेरे पास एक दर्जन ट्रक हैं। मैं उनमें भैंस और बैलगाड़ी नहीं डाल सकता।'

'नहीं, साहिब,' ने लंबरदार को हठपूर्वक पीछे हटा दिया। 'आप कह सकते हैं कि आपको क्या पसंद है और आप हमसे नाराज हो सकते हैं, लेकिन हम अपने भाइयों के

गुणों को नहीं छूएंगे। आप चाहते हैं कि हम दुश्मन बनें? '

'वाह, वाह, लम्बरदार साहब,' ने मुस्लिम को जोर से हंसते हुए जवाब दिया। 'Shabash! कल तुम उन्हें मारना चाहते थे, आज तुम उन्हें भाई कहते हो। आप कल फिर से अपना विचार बदल सकते हैं। '

'हमें इस तरह मत तड़पाओ, कप्तान साहब। हम भाई हैं और हमेशा भाई रहेंगे। '

अधिकारी ने कहा, "ठीक है, सब ठीक है, लम्बरदार। आप भाई हैं।" 'मैं तुम्हें वह अनुदान देता हूँ, लेकिन मैं अब भी यह सब नहीं कर सकता। आप सरदार अधिकारी से सलाह लें और

अपने साथी ग्रामीणों के बारे में। मैं मुसलमानों से निपटूंगा। '

मुस्लिम अधिकारी जीप पर चढ़ा और भीड़ को संबोधित किया। उसने अपने शब्दों को ध्यान से चुना।

'हमारे पास एक दर्जन ट्रक हैं और आप सभी लोग जो पाकिस्तान जा रहे हैं, उन पर दस मिनट में पहुंचना चाहिए। हमारे पास बाद में खाली करने के लिए अन्य गाँव हैं। एकमात्र सामान जिसे आप अपने साथ ले जा सकते हैं, वही है जिसे आप ले जा सकते हैं - और कुछ नहीं। आप अपने मवेशियों, बैलगाड़ी, चारपाई, घड़े, और इतने पर अपने दोस्तों के साथ गाँव में छोड़ सकते हैं। अगर हमें मौका मिलता है, तो हम इन चीजों को बाद में आपके लिए लाएंगे। मैं आपको अपने मामलों को निपटाने के लिए दस मिनट का समय देता हूँ। फिर काफिला चल पड़ेगा। '

मुसलमानों ने अपनी बैलगाड़ी छोड़ दी और जोर-जोर से बातें करते हुए, विरोध करते हुए, जीप को गोल-गोल घुमाया। जीप से आगे बढ़ने वाले मुस्लिम अधिकारी वापस माइक्रोफोन में चले गए।

'शांति! मैं आपको चेतावनी देता हूँ, काफिला दस मिनट में चला जाएगा; आप इस पर हैं या नहीं, इसकी कोई चिंता नहीं होगी। '

सिख किसान जो अलग खड़े थे, उन्होंने आदेश सुना और सलाह के लिए सिख अधिकारी के पास गए। अधिकारी ने उनकी कोई सुध नहीं ली; वह लगातार बारिश और बारिश में भाप से चलने वाले आदमियों, मवेशियों, गाड़ियों और ट्रकों पर अपने रेनकोट के उलटे कॉलर को घूरता रहा।

'क्यों, सरदार साहब,' मीट सिंह से घबराकर पूछा, 'क्या लंबरदार सही नहीं है? एक दूसरे की संपत्ति को नहीं छूना चाहिए। हमेशा गलतफहमी का खतरा रहता है। '

अधिकारी ने मीट सिंह को ऊपर और नीचे देखा।

'आप बिलकुल सही कह रहे हैं भाईजी, गलतफहमी होने का कुछ खतरा है। किसी दूसरे की संपत्ति को कभी नहीं छूना चाहिए; व्यक्ति को दूसरे की स्त्री की ओर कभी नहीं देखना चाहिए। एक को सिर्फ दूसरों का सामान लेने देना चाहिए और एक की बहनों के साथ सोना चाहिए। जिस तरह से आप जैसे लोगों को कुछ भी समझ में आएगा, वह पाकिस्तान में भेजे जाने से है: क्या आपकी बहनों और माताओं ने आपके सामने बलात्कार किया है, क्या आपके कपड़े उतार दिए गए हैं और आपको लात मारकर वापस भेजा जा रहा है।

अधिकारी का भाषण सभी किसानों के सामने एक थप्पड़ था। लेकिन किसी ने छींटाकशी की। हर कोई नजर घुमाता रहा। यह मल्ली अपने पांच साथियों के साथ था। उनके साथ कुछ युवा शरणार्थी भी थे जो सिख मंदिर में ठहरे थे। उनमें से कोई भी मनो माजरा का नहीं था।

" सर, इस गाँव के लोग अपनी दानशीलता के लिए प्रसिद्ध हैं, " मल्ली ने मुस्कुराते हुए कहा। 'वे खुद की देखभाल नहीं कर सकते, वे अन्य लोगों की देखभाल कैसे कर सकते हैं? लेकिन परेशान मत होइए, सरदार साहब, हम मुस्लिम संपत्ति की देखभाल करेंगे। आप दूसरे अधिकारी से कह सकते हैं कि इसे हमारे साथ छोड़ दें। यह काफी सुरक्षित होगा यदि आप अपने कुछ सैनिकों को इन लोगों द्वारा लूटपाट को रोकने के लिए विस्तृत कर सकते हैं। '

पूरा भ्रम था। लोग भागते हैं और उनकी आवाज़ के शीर्ष पर चिल्लाते हैं। मुस्लिम अधिकारी के अंतिम रूप देने के बावजूद, ग्रामीणों ने उसका विरोध किया और सुझावों से भरा। वह अपने सिख सहकर्मी के साथ आकर घबराए हुए सह-धर्मावलंबियों से घिर गए।

'जो पीछे छूट गया है उसे लेने की क्या आप व्यवस्था कर सकते हैं?'

सिख जवाब दे पाते, उससे पहले ही चारों तरफ से विरोध प्रदर्शनों की एक बयार फूट पड़ी। सिख चुस्त-दुरूस्त रहा और अलग रहा।

मुस्लिम अधिकारी तेजी से घूमा। 'चुप रहो!' वह चिल्लाया।

बड़बड़ाते हुए मर गया। वह फिर से बोला, प्रत्येक शब्द को उसकी तर्जनी के तने से दबाकर।

'मैं आपको ट्रकों में आने के लिए पांच मिनट देता हूँ, जितना आप अपने हाथों में ले जा सकते हैं। जो अंदर नहीं हैं, वे पीछे रह जाएंगे। और यह आखिरी बार है जब मैं इसे कहूँगा।'

सिख अधिकारी ने पंजाबी में धीरे से कहा, 'यह सब तय हो गया है।' 'मैंने यह व्यवस्था की है कि अगले गाँव के लोग मवेशी, गाड़ियाँ, और घरों के खत्म होने तक उसकी देखभाल करेंगे। मेरे पास आपके द्वारा बनाई और भेजी गई एक सूची होगी।'

उनके सहयोगी ने कोई जवाब नहीं दिया। उसके चेहरे पर एक सर्द मुस्कान थी। मनो माजरा सिखों और मुसलमानों ने बेबसी से देखा।

व्यवस्था करने का समय नहीं था। अलविदा कहने का भी समय नहीं था। ट्रक के इंजन चालू हो गए। पठान सैनिकों ने मुसलमानों को गोल कर दिया, उन्हें एक-दो मिनट के लिए गाड़ियों में वापस लाया और फिर ट्रकों पर चढ़ा दिया। बारिश की उलझन में, कीचड़ और सैनिकों ने अपनी पीठ में चिपकी हुई बंदूक की छंटाई के साथ किसानों को झुंड में ले जाते हुए देखा, ग्रामीणों ने एक दूसरे को कम देखा। वे सभी कर सकते थे कि ट्रकों से उनकी अंतिम विदाई दी जाए। मुस्लिम अधिकारी ने यह देखने के लिए अपने जीप के काफिले को गोल-गोल घुमाया कि यह सब क्रम में है और फिर अपने सिख सहयोगी को अलविदा कहने आया। दोनों मुस्कुराते हुए या भावनाओं का पता लगाए बिना, यंत्रवत हाथ हिलाते थे। ट्रकों की कतार के सामने जीप ने अपनी जगह बना ली। माइक्रोफोन ने एक बार फिर घोषणा की कि वे स्थानांतरित करने के लिए तैयार हैं। अधिकारी चिल्लाया 'पाकिस्तान!' उनके सैनिकों ने एक कोरस में जवाब दिया 'हमेशा के लिए!' काफिले ने चुंदुनुगर की ओर अपना रास्ता गिरा दिया। सिखों ने उन्हें तब तक देखा जब तक वे दृष्टि से बाहर नहीं हो गए। उन्होंने अपने चेहरे से आँसू पोछे और भारी मन से अपने घरों को लौट गए।

मनो माजरा का प्याला अभी भी भरा नहीं था। सिख अधिकारी ने लंबरदार को तलब किया। सभी गाँव वाले उसके साथ आए-कोई भी अकेला नहीं रहना चाहता था। सिख सैनिकों ने उन्हें घेरा डालकर घेरा। अधिकारी ने ग्रामीणों से कहा कि उन्होंने खाली मुस्लिमों के मल्ली रक्षक को नियुक्त करने का फैसला किया है।'

संपत्ति। जो भी उसके या उसके आदमियों के साथ हस्तक्षेप करता था उसे गोली मार दी जाती थी।  
मल्ली के गिरोह और शरणार्थियों ने बैलगाड़ियों को उतार दिया, गाड़ियां लूट लीं और  
गायों और भैंसों को भगा दिया।



कर्मा

उस सुबह सभी लोग अपने घरों में बैठे रहे और अपने खुले दरवाजों के माध्यम से घृणा से देखते रहे। उन्होंने मल्ली के पुरुषों और शरणार्थियों को मुस्लिम घरों में तोड़फोड़ करते देखा। उन्होंने देखा कि सिख सैनिक आते हैं और जाते हैं जैसे कि उनकी धड़कनों पर। उन्होंने मवेशियों के चिड़चिड़ेपन को सुना क्योंकि उन्हें पीटा गया और साथ ले जाया गया। उन्होंने मुर्गों और बदमाशों के जोरदार तमाचे को चाकू से मारे जाने की आवाज सुनी। लेकिन उन्होंने बैठकर आहें भरने के अलावा कुछ नहीं किया।

एक चरवाहा लड़का, जो मशरूम इकट्ठा कर रहा था, इस खबर के साथ वापस आया कि नदी बढ़ गई थी। किसी ने उसकी कोई सुध नहीं ली। वे केवल यह चाहते थे कि यह और अधिक बढ़े और पूरे मनो माजरा को उनके साथ, उनकी महिलाओं, बच्चों, और मवेशियों के साथ डुबो दिया - बशर्ते उन्होंने मल्ली, उनके गिरोह, शरणार्थियों और सैनिकों को भी डुबो दिया।

जबकि लोग आहें भर रहे थे और कराह रहे थे, बारिश लगातार कम हो रही थी और सतलुज का बढ़ना जारी था। यह केंद्रीय पियर्स के दोनों ओर फैला था, जिसमें आम तौर पर शीतकालीन चैनल होते थे, और अन्य पियर्स को एक व्यापक धारा में गोल करने वाले पूल में शामिल हो जाते थे। यह पुल के ठीक सामने तक फैला हुआ था, इस बांध को चाटने से जो इसे मनो माजरा के खेतों से अलग करता था। यह नदी के तल में कई छोटे द्वीपों पर दौड़ा, जब तक कि उन पर उगने वाली झाड़ियों के शीर्ष को नहीं देखा जा सकता था। कोमरेंट और टर्न की कॉलोनियां जो वहां घूमने के लिए इस्तेमाल की जाती थीं, बैंकों के ऊपर उड़ गईं और फिर पुल तक - जिस पर कई दिनों तक कोई ट्रेन नहीं चली थी।

दोपहर में, एक अन्य ग्रामीण चिल्लाता हुआ घरों में गया, 'ओय बंता सिंह, नदी बढ़ रही है! ओई दलीप सिंगा, नदी बढ़ गई है! ओई सुनो, यह पहले से ही बांध पर है!' लोग उनकी उदासी भरी आँखों से देखते थे, 'हमने पहले भी सुना है।' फिर एक और आदमी एक ही संदेश लेकर आया, 'नदी बह गई है'; तब तक एक और, और जब तक हर कोई कह रहा था, 'क्या आप जानते हैं, नदी बढ़ गई है!'

आखिर में लंबरदार खुद को देखने के लिए निकल पड़ा। हां, नदी बढ़ गई थी। दो दिन की बारिश इसकी वजह नहीं बन सकती थी; यह पहाड़ों में साँपों के पिघलने के बाद डाला गया होगा। बाढ़ को रोकने के लिए नहरों के स्लूस फाटकों को संभवतः बंद कर दिया गया था; इसलिए इसके अलावा कोई आउटलेट नहीं था

नदी। मैला भूरा की मैत्रीपूर्ण सुस्त धारा मैला भूरा का एक menacing और tumultuous फैल बन गया था। पुल के खंभे सभी ठोस थे और नदी की अवमानना करते थे। उनके नुकीले किनारों को पानी की चादर के माध्यम से लौंग दिया जाता है और इसे अपने नपुंसक गुस्से को एडी और व्हर्लपूल के एक भंवर में बाहर निकलने देता है। सतह पर बारिश ने हरा दिया, यह सब खत्म कर दिया। सतलुज एक भयानक दृश्य था।

शाम तक, मनो माजरा अपने मुसलमानों और मल्ली के कुकर्मों के बारे में भूल गया था। नदी बातचीत का मुख्य विषय बन गई थी। एक बार और महिलाएं छत पर पश्चिम की ओर देख रही थीं। पुरुषों ने स्थिति की रिपोर्ट करने के लिए तटबंध की ओर जाना शुरू कर दिया।

सूर्यास्त से पहले मेमना नदी को देखने के लिए फिर से ऊपर चला गया। दोपहर में उनकी यात्रा के बाद से यह अधिक बढ़ गया था। पम्पास के कुछ समूह जो जल स्तर से ऊपर थे, अब आंशिक रूप से जलमग्न हो गए थे। उनके डंठल जलकर मर गए थे और उनके पतित - पावन बर्फ के सफेद पानी पर तैरने लगे। उसने इतना कम समय में सतलुज को इतना ऊँचा

उठाने के लिए कभी नहीं जाना था। मनो माजरा अभी भी एक लंबा रास्ता तय कर रहा था और कीचड़ बांध ठोस और सुरक्षित दिख रहा था। फिर भी उसने रात भर एक घड़ी की व्यवस्था की। तीन आदमियों में से चार दलों को बारी-बारी से सूर्यास्त से सूर्योदय तक और हर घंटे रिपोर्ट करना था। बाकी लोगों को अपने घरों में रहना था।

लंबरदार का फैसला एक रजाई थी जिसके तहत गाँव में सोता और सुरक्षित रहता था। स्वयं लंबरदार को बहुत कम नींद आती थी। आधी रात के बाद, घड़ी पर मौजूद तीन लोग जोर-जोर से उत्तेजना की एक उच्च अवस्था में बात करते हुए वापस आए। वे धूसर ढलती चांदनी में यह नहीं बता सकते थे कि क्या नदी अधिक बढ़ गई है, लेकिन उन्होंने मानवीय आवाज़ों को मदद के लिए पुकारते हुए सुना था। पानी के ऊपर से रोना आ गया। वे दूसरी तरफ से या नदी से ही रहे होंगे। लंबरदार उनके साथ बाहर गया। उन्होंने अपना क्रोमियम-प्लेटेड टॉर्च लिया।

चारों लोग तटबंध पर खड़े हो गए और सतलज का सर्वेक्षण किया, जो काली चादर की तरह दिख रहा था। लंबरदार की मशाल की सफेद किरण ने नदी की सतह को स्कैन किया। वे घूमते पानी के अलावा कुछ नहीं देख सकते थे। उन्होंने अपनी सांस ली और सुना, लेकिन वे बारिश के पानी पर गिरने के शोर के अलावा कुछ नहीं सुन सके। हर बार लंबरदार ने पूछा कि क्या उन्हें यकीन है कि उन्होंने जो सुना था वह मानवीय आवाज़ें थीं और गीदड़ नहीं, वे अधिक से अधिक अनिश्चित महसूस करते थे और एक-दूसरे से पूछना चाहते थे: 'यह स्पष्ट था, यह नहीं था, कर्नेला?'

'अरे हाँ। यह काफी स्पष्ट था। "है, है" - किसी को दर्द में पसंद है।'

चारों लोग एक पेड़ के नीचे बैठे थे, एक तूफान दीपक के चारों ओर। वे बरसाती बोरे जो रेनकोट के रूप में इस्तेमाल किए जाते थे, वे भीग रहे थे; तो उनके सारे कपड़े थे। एक घंटे बाद बादलों में विराम हुआ। रिमझिम बारिश से बारिश धीमी हो गई

और फिर रुक गया। पश्चिमी क्षितिज के ठीक ऊपर बादलों के माध्यम से चंद्रमा टूट गया। नदी पर इसके प्रतिबिंब ने पेड़ के नीचे पुरुषों के विपरीत बैंक से चलने वाले टिनफ़ोइल को झिलमिलाते हुए एक व्यापक मार्ग बना दिया। चांदनी के इस चमकते हुए पैच पर पानी के छोटे-छोटे लहर भी साफ देखे जा सकते हैं।

एक काले अंडाकार वस्तु ने पुल के घाट पर प्रहार किया और मानो माजरा तटबंध की ओर बह गई। यह अपने किनारों पर लाठी के साथ एक बड़े ड्रम की तरह लग रहा था। यह आगे, पीछे और बगल में चला गया, जब तक कि वर्तमान ने इसे फिर से नहीं पकड़ा और इसे उस शौर्य पथ में लाया, जहाँ से पुरुष नहीं बैठे थे। यह एक मरी हुई गाय थी जिसके पेट एक बड़े पैमाने पर बैरल की तरह फूला हुआ था और इसके पैर सख्त होकर ऊपर की ओर खिंचे हुए थे। फिर थैच पुआल और कपड़ों के बंडलों के कुछ ब्लॉकों का पालन किया।

लंबरदार ने कहा, " ऐसा लग रहा है जैसे बाढ़ से कोई गाँव बह गया है।

'शांत! सुनो, 'एक ग्रामीण ने कानाफूसी में कहा। पानी में एक कराहने की बेहोश आवाज़ थी।

'तुमने सुना?'

'शांत!'

उन्होंने अपनी सांस रोककर सुनी।

नहीं, यह मानव नहीं हो सकता था। बड़बड़ाती आवाज थी। उन्होंने फिर से बात सुनी। बेशक, यह एक गड़गड़ाहट थी; यह एक ट्रेन थी। इसकी गूढ़ता और स्पष्ट होती गई। तब उन्होंने इंजन और ट्रेन की रूपरेखा देखी। इसकी कोई रोशनी नहीं थी। इंजन पर हेडलाइट भी नहीं थी। स्पावर्स ने इंजन कीप से आतिशबाजी की तरह उड़ान भरी। जैसे ही ट्रेन पुल पर



आई, कॉमरेंट्स ने चुपचाप नदी के नीचे उड़ान भरी और टर्न ने तीखे रोने के साथ उड़ान भरी। ट्रेन मानो माजरा स्टेशन पर रुकी। यह पाकिस्तान का था।

'ट्रेन में लाइट नहीं हैं।' 'इंजन में सीटी नहीं लगी।' 'यह भूत की तरह है।'

'प्रभु के नाम पर इस तरह की बात मत करो,' लंबरदार ने कहा। 'यह मालगाड़ी हो सकती है। यह सुना हुआ सायरन रहा होगा। ये नए अमेरिकी इंजन किसी की हत्या किए जाने की तरह हैं।'

'नहीं, लंबोदर, हमने एक घंटे से अधिक समय पहले ध्वनि सुनी थी; और ट्रेन के आने से पहले फिर से वही हुआ, 'एक ग्रामीण ने जवाब दिया।

'आप इसे और नहीं सुन सकते। ट्रेन अब शोर नहीं मचा रही है।'

रेलवे लाइन के उस पार, जहां कुछ दिन पहले एक हजार से ज्यादा शव जलाए जा चुके थे, एक सियार ने एक लंबी वादी को भेजा। एक पैकेट उसके साथ जुड़ गया। पुरुष थर-थर कांपने लगे।

'सियार रहे होंगे। उन्होंने महिलाओं के रोने की आवाज की, जब किसी की मौत हो गई, 'लंबरदार ने कहा।

नहीं, नहीं, 'दूसरे ने विरोध किया। 'नहीं, यह एक मानवीय आवाज़ थी जैसा कि आप अभी मुझसे बात कर रहे हैं।'

वे बैठते और सुनते थे और बाढ़ के पानी पर तैरते हुए अजीबो-गरीब रूपों को देखते थे। चाँद नीचे चला गया। अंधेरे की एक संक्षिप्त अवधि के बाद पूर्वी क्षितिज ग्रे हो गया। चमगादड़ों की लंबी लाइनें नीरवता से उड़ गईं। उनकी नींद में कौवे कौवे होने लगे। कोइल का तीखा रोना पेड़ों के झुरमुट से फट गया और सारी दुनिया जाग गई।

बादल उत्तर की ओर लुढ़क गए थे। धीरे-धीरे सूरज ऊपर आया और एक चमकदार नारंगी चमक के साथ बारिश से लथपथ मैदान में बाढ़ आ गई ; सूरज की रोशनी में सब कुछ चमक गया। नदी और तेज हो गई थी। इसके अशांत जल ने बैल के फूले हुए शवों के साथ गाड़ियां चलाई, जो अभी भी उनके पास हैं। घोड़े अपनी ओर से इस तरह से लुढ़कते थे मानो वे अपनी पीठ खुजला रहे हों। उनके कपड़े पहने हुए उनके शरीर के साथ पुरुष और महिलाएं भी थीं; छोटे बच्चे अपनी बांहों में अपनी बांहों के बल सोते हुए पानी और अपने छोटे नितंबों को अंदर-बाहर डुबोते हैं। आसमान जल्द ही पतंगों और गिद्धों से भरा था। वे नीचे उतरा और तैरते हुए शवों पर चढ़ा। वे तब तक चोंच मारते रहे जब तक लाशें खुद लुढ़क कर हाथ से बंद नहीं हो गईं, जो हवा में बहुत तेजी से उठीं और पानी में वापस जा गिरीं।

लंबरदार ने गंभीर रूप से कहा, 'रात में कुछ गांवों में बाढ़ आ गई होगी।' 'कौन रात को गाड़ी में बैल को मारता है?' अपने एक साथी से पूछा।

'हाँ वह सच है। बैलों को क्यों पालना चाहिए?'

पुल के मेहराब के माध्यम से अधिक मानवीय रूपों को आते देखा जा सकता है। उन्होंने पिघर्स बंद कर दिया, रोके गए, भँवरों में पिरोएटेड थे, और फिर नदी के नीचे उछलते हुए आए। पुरुष कुछ लाशों को देखने के लिए पुल की ओर बढ़े जो बैंक के पास बह गई थीं।

वे खड़े रहे और घूरते रहे।

'लंबरदार, वे डूब नहीं रहे थे। उनकी हत्या कर दी गई।'

भूरे रंग की दाढ़ी के साथ एक बूढ़ा किसान पानी पर सपाट पड़ा था। उसकी बाहें खिंची हुई थीं जैसे कि उसे सूली पर चढ़ाया गया हो। उसका मुँह चौड़ा था और उसके दाँत रहित

मसूड़े दिखाई दे रहे थे, उसकी आँखें फिल्म से ढँकी हुई थीं, उसके बाल उसके सिर पर एक प्रभामंडल की तरह तैर रहे थे। उसकी गर्दन पर एक गहरा घाव था जो नीचे की ओर से छाती की ओर झुका हुआ था। एक बच्चे का सिर बूढ़े आदमी के कांख में जा लगा। इसके पिछले हिस्से में एक छेद था। कई अन्य लोग नदी के नीचे आ रहे थे जैसे पहाड़ों पर लॉग्स डालकर मैदानों में ले जाया जाता था। कुछ मेहराबों के बीच से होकर गुज़रे और आगे-पीछे हो गए

और तेज। दूसरों ने पियर्स में टक्कर मारी और अपने घावों को दिखाने के लिए पलट गए, जब तक कि करंट ने उन्हें फिर से चालू नहीं कर दिया। कुछ बिना अंगों के थे, कुछ में उनकी बेलें फटी हुई थीं, कई महिलाओं के स्तन फिसले हुए थे। वे ऊपर और नीचे धूप में सुस्ताते हुए नदी के ऊपर तैरने लगे। ओवरहेड ने पतंग और गिद्धों को लटका दिया। लंबरदार और ग्रामीणों ने अपने चेहरे पर पगड़ी के सिरों को खींचा। 'गुरु ने हम पर दया की,' किसी ने फुसफुसाकर कहा। 'कहीं नरसंहार हुआ है। हमें पुलिस को सूचित करना चाहिए।'

'पुलिस?' एक छोटे आदमी ने कड़वाहट से कहा। 'वे क्या करेंगे? पहली सूचना रिपोर्ट लिखिए?'

बीमार और भारी दिलों के साथ, पार्टी ने वापस मनो माजरा की ओर रुख किया। उन्हें पता नहीं था कि जब वे वापस आए तो लोगों को क्या कहना था। नदी और बढ़ गई थी? कुछ गांवों में पानी भर गया था? कहीं ऊपर कहीं नरसंहार तो नहीं हुआ? सतलज पर सैकड़ों लाशें तैर रही थीं? या, बस चुप रहो?

जब वे गाँव वापस आए तो कोई भी सुनने वाला नहीं था कि उन्हें क्या कहना है। वे सभी स्टेशन पर छतों पर देख रहे थे। कई दिनों के बाद दिन में एक ट्रेन मानो माजरा में खड़ी हुई थी। चूंकि इंजन पूर्व की ओर मुंह करता है, यह पाकिस्तान से आया होगा। इस बार भी जगह सैनिकों और पुलिसकर्मियों से भरी हुई थी और स्टेशन को बंद कर दिया गया था। नदी पर लाशों की खबर से घरवालों की चीख-पुकार मच गई। लोगों ने महिलाओं और बच्चों के आपसी तालमेल के बारे में एक-दूसरे को बताया। कोई भी यह जानना नहीं चाहता था कि मृत लोग कौन थे और न ही यह जानने के लिए नदी पर जाना चाहते थे। पिछले स्टेशन की तुलना में बदतर भयावहता के वादे के साथ स्टेशन पर एक नई रुचि थी।

किसी के मन में कोई संदेह नहीं था कि ट्रेन में क्या था। उन्हें यकीन था कि सैनिक तेल और लकड़ी के लिए आएंगे। उनके पास अतिरिक्त तेल नहीं था और उनके पास जो लकड़ी बची थी वह जलने के लिए बहुत नम थी। लेकिन सैनिक नहीं आए। इसके बजाय, एक बुलडोजर कहीं से आया। इसने अपने निचले जबड़े को मानो माजरा की तरफ स्टेशन के बाहर जमीन पर खींचना शुरू कर दिया। यह साथ गया, पृथ्वी को खा गया, इसे चबाते हुए, इसे एक तरफ कर दिया। इसने कई घंटों तक ऐसा किया, जब तक कि लगभग पचास गज लंबी एक आयताकार खाई थी, जिसके दोनों ओर धरती के टीले थे। फिर यह एक विराम के लिए रुक गया। सिपाही और पुलिसकर्मी जो काम पर बुलडोजर को देख रहे थे, उन्हें आदेश देने के लिए बुलाया गया और वापस मंच पर ले गए। वे कैनवास स्ट्रेचर ले जाने वाले दोहों में वापस आए। उन्होंने स्ट्रेचर को गड्डे में फेंक दिया और अधिक के लिए ट्रेन में वापस चले गए। यह सारा दिन सूर्यास्त तक चलता था। फिर बुलडोजर फिर से जाग उठा। इसने अपने जबड़े खोले और पृथ्वी को पहले खा लिया और जमीन से समतल होने तक उसे खाई में उलट दिया। जगह देखी

एक के निशान की तरह चंगा-अप घाव। गीदड़ और बदमाशों के उत्पीड़न से कब्र की रक्षा के लिए दो सैनिकों को छोड़ दिया गया था।

उस शाम, गुरुद्वारे में शाम की प्रार्थना के लिए पूरा गाँव उमड़ पड़ा। ऐसा पहले कभी नहीं हुआ था, सिवाय गुरु के जन्मदिन पर या अप्रैल में नए साल के दिन पर। मंदिर के एकमात्र नियमित आगंतुक बूढ़े और महिलाएं थे। बपतिस्मा, शादियों और अंतिम संस्कार के लिए अन्य लोग अपने बच्चों का नाम रखते हैं। साहूकार की हत्या के बाद से प्रार्थनाओं में उपस्थिति लगातार बढ़ रही थी; लोग अकेले नहीं रहना चाहते थे। चूँकि मुसलमान जा चुके थे, इसलिए उनके सून घरों में दरवाज़े खुले थे, जिन पर झूलते हुए एक भयानक, प्रेतवाधित रूप धारण किए हुए थे। ग्रामीणों ने अपना सिर घुमाए बिना उन्हें जल्दी से चला दिया। जिस स्थान पर लोग बिना किसी स्पष्टीकरण के जा सकते थे, वह गुरुद्वारा था। पुरुष नाटक करते हुए आए कि उन्हें जरूरत होगी; महिलाओं को सिर्फ उनके साथ रहना है, और वे बच्चों को ले आए। मुख्य हॉल जहां पर शास्त्र रखे गए थे और किनारे पर दो कमरे शरणार्थियों और ग्रामीणों के साथ थे। उनके जूते बड़े करीने से दूसरी तरफ की पंक्तियों में व्यवस्थित थे।

मीत सिंह ने तूफान दीपक की रोशनी से शाम की प्रार्थना पढ़ी। एक आदमी उसके पीछे एक मक्खी की तरह लहराता हुआ खड़ा था। जब प्रार्थना समाप्त हो गई, तो मण्डली ने एक भजन गाया, जबकि मीत सिंह ने भड़कीले रेशमी स्कार्फ में ग्रन्थ को मोड़ दिया और रात को आराम करने के लिए उसे रख दिया। उपासक हाथ जोड़कर खड़े हो गए। मीत सिंह ने उनकी जगह ली। उन्होंने दस गुरुओं, सिख शहीदों और सिखों के नामों को दोहराया और उनका आशीर्वाद प्राप्त किया; भीड़ ने प्रत्येक प्रार्थना के अंत में जोर से 'वाह गुरुओं' के साथ अपने अमन को चिल्लाया। वे अपने घुटनों पर बैठ गए, अपने माथे को जमीन पर रगड़ दिया, और समारोह समाप्त हो गया। मीत सिंह आए और आदमियों में शामिल हो गए।

यह एक गंभीर सभा थी। केवल बच्चे ही खेलते थे। उन्होंने कमरे के चारों ओर एक-दूसरे का पीछा किया, हंसते हुए और बहस करते हुए। वयस्कों ने बच्चों को डांटा। एक-एक करके, बच्चे अपनी माताओं की गोद में लौट आए और सो गए। फिर पुरुषों और महिलाओं ने भी कमरे के विभिन्न हिस्सों में फर्श पर खुद को फैलाया।

दिन की घटनाओं को नींद में भूलने की संभावना नहीं थी। कई तो सो ही नहीं पाए। दूसरे लोग फिट होकर सोते थे और चौंकाते हुए रोते थे अगर किसी पड़ोसी का पैर या हाथ उन्हें छू जाए। यहां तक कि जो लोग स्पष्ट परित्याग के साथ खरटि लेते हैं, उन्होंने सपने देखे और दिन के दृश्यों को फिर से जारी किया। उन्होंने मोटर वाहनों की आवाज सुनी, मवेशियों के रोने और लोगों के रोने की आवाज सुनी। वे अपनी नींद में डूबे हुए थे और उनकी दाढ़ी उनके आँसुओं से नम थी।

जब मोटर हॉर्न की आवाज़ एक बार फिर सुनाई दी, तो जो लोग जाग रहे थे, लेकिन उन्हें लगा कि वे सपने देख रहे हैं। जो लोग सपने देख रहे थे उन्होंने सोचा कि वे इसे अपने सपनों में सुन रहे हैं। अपने सपनों में उन्होंने आवाज़ के लिए 'हाँ, हाँ' भी कहा जो पूछते रहे 'क्या तुम सब मर चुके हो?'

देर रात आगंतुक एक जीप की तरह था जिसमें सुबह सेना के अधिकारी आए थे। गाँव के बारे में इसका तरीका मालूम पड़ता था। यह पूछते हुए आवाज के साथ घर-घर गया, 'वहाँ कोई है?' जवाब में केवल कुत्ते भौंकते रहे। फिर यह मंदिर में आया और इंजन बंद कर दिया गया। दो आदमी आँगन में घुसे और फिर चिल्लाए: 'यहाँ कोई है या तुम सब मर गए हो?'

सब लोग उठ गए। कुछ बच्चे रोने लगे। मीत सिंह ने अपने तूफान लालटेन की बाती को पलट दिया। वह और लंबरदार आगंतुकों से मिलने के लिए बाहर गए।

पुरुषों ने उनके द्वारा बनाए गए हंगामे को देखा। उन्होंने लंबरदार और मीत सिंह की उपेक्षा की और बड़े कमरे की दहलीज तक चले गए। एक ने भरी भीड़ को देखा और पूछा:

'क्या तुम सब मर चुके हो?'

'आपमें से कोई जिंदा है?' दूसरे को जोड़ा।

लंबरदार ने गुस्से से जवाब दिया, 'इस गाँव में कोई मरा नहीं है। तुम क्या चाहते हो?'

इससे पहले कि पुरुष जवाब दे पाते उनके दो साथी उनके साथ ही लिए। सभी सिख थे। उन्होंने खाकी वर्दी पहनी थी और राइफलें अपने कंधे पर लादे थे।

'यह गाँव काफी मरा हुआ लग रहा है,' एक अजनबी ने दोहराया, ज़ोर से अपने ही साथियों को संबोधित कर रहा है।

'गुरु इस गाँव पर मेहरबान रहा है। यहां किसी की मौत नहीं हुई है,' मीत सिंह को शांत भाव से जवाब दिया।

'अच्छा, अगर गाँव मरा नहीं है, तो यह होना चाहिए। इसे एक खजूर के पानी में डुबो देना चाहिए। इसमें यमदूत शामिल हैं,' आगंतुक ने अपने हाथ के पनपने के साथ जमकर कहा।

अजनबी अपने जूते उतार कर बड़े हॉल के अंदर आ गए। लंबरदार और मीत सिंह ने उनका पीछा किया। पुरुषों ने बैठकर अपनी पगड़ी बाँधी। महिलाओं ने अपने बच्चों को अपनी गोद में रखा और उन्हें फिर से सोने के लिए पत्थर मारने की कोशिश की।

समूह में से एक, जो नेता के रूप में दिखाई दिया, दूसरों को बैठने के लिए प्रेरित किया। सब लोग बैठ गए। नेता के पास आक्रामक आडंबरपूर्ण तरीके थे। वह अपनी किशोरावस्था में एक लड़का था जिसकी छोटी दाढ़ी थी जो कि उसकी ठुड़ी पर चमकीली थी। वह आकार में छोटा था, बिल्ड से थोड़ा और पूरी तरह से कुछ हद तक पवित्र था; एक चमकदार लाल रिबन उसकी नीली पगड़ी के तीव्र कोण के नीचे दिखाया गया है। उनकी खाकी सेना की शर्ट उनके गोल मटोल कंधों से ढीली थी।

उन्होंने एक काले रंग का चमड़े सैम ब्राउन पहना था: उनकी संकीर्ण छाती पर पट्टा गोलियों से लगाया गया था और चौड़ी बेल्ट उनकी अभी भी संकीर्ण कमर के बारे में थी। एक तरफ रिवॉल्वर के बट के साथ उसके पास एक पिस्तौलदान था, जिसमें एक रिवॉल्वर था; दूसरी तरफ एक खंजर था। उन्होंने देखा कि उनकी माँ ने उन्हें एक अमेरिकी चरवाहे के रूप में तैयार किया था।

लड़के ने अपने रिवॉल्वर के होलस्टर को सहलाया और अपनी उंगलियों को गोलियों की नोक पर दौड़ाया। उसने पूरे आत्मविश्वास के साथ उसके चारों ओर देखा।

'क्या यह सिख गाँव है?' उसने ढीठ होकर पूछा। ग्रामीणों के लिए यह स्पष्ट था कि वह एक शिक्षित शहरवासी था। ऐसे लोग हमेशा किसानों से बात करते समय एक बेहतर हवा मानते थे। उन्हें उम्र या रुतबे की कोई परवाह नहीं थी।

'हां, सर,' लंबरदार ने जवाब दिया। 'यह हमेशा एक सिख गाँव रहा है। हमारे पास मुस्लिम किरायेदार थे लेकिन वे चले गए हैं।'

'आप किस तरह के सिख हैं?' लड़के से पूछा, माहवारी की झलक। उन्होंने अपने प्रश्न का विस्तार किया: 'शक्तिशाली या नपुंसक?'

कोई नहीं जानता था कि क्या कहना है। किसी ने विरोध नहीं किया कि यह गुरुद्वारा में महिलाओं और बच्चों के साथ बैठकर इस्तेमाल की जाने वाली भाषा नहीं

है।

'क्या आप जानते हैं कि मृत सिखों और हिंदुओं के कितने ट्रेन लोड आए हैं? क्या आप रावलपिंडी और मुल्तान, गुजरांवाला और शेखूपुरा में हुए नरसंहारों के बारे में जानते हैं? आप इस बारे में क्या कर रहे हैं? आप बस खाते हैं और सोते हैं और आप अपने आप को सिख कहते हैं- बहादुर सिख! मार्शल क्लास! ' उन्होंने कहा, अपने दोनों हाथों को ऊपर उठाते हुए अपने व्यंग्य पर जोर दिया। उन्होंने अपने दर्शकों का सर्वेक्षण किया कि उज्ज्वल आँखें किसी को भी उनके विरोध करने की हिम्मत कर रही हैं। लोग कुछ हद तक खुद पर शर्म करते दिखे।

'हम क्या कर सकते हैं, सरदारजी?' लंबरदार से पूछताछ की। 'अगर हमारी सरकार पाकिस्तान के खिलाफ युद्ध में जाती है, तो हम लड़ेंगे। हम मनो माजरा में बैठकर क्या कर सकते हैं? '

'सरकार!' लड़के की अवमानना की। 'आपको उम्मीद है कि सरकार कुछ भी करेगी? कायर साहूकारों से मिलकर बनी सरकार! क्या पाकिस्तान में मुसलामान अपनी सरकार से अनुमति के लिए आवेदन करते हैं जब वे आपकी बहनों का बलात्कार करते हैं? क्या वे अनुमति के लिए आवेदन करते हैं जब वे गाड़ियों को रोकते हैं और सभी को मारते हैं, बूढ़े, युवा, महिलाएं और बच्चे? आप चाहते हैं कि सरकार कुछ करे! यह बहुत बढ़िया बात है! Shabash! बहादुर!' उन्होंने होल्स्टर को अपनी तरफ से एक छोटी सी स्मैक दी।

'लेकिन, सरदार साहब,' लंबरदार ने लड़खड़ाते हुए कहा, 'हमें बताएं कि हम क्या कर सकते हैं।'

'यह बेहतर है,' बालक ने उत्तर दिया। 'अब हम बात कर सकते हैं। सुनो और बहुत ध्यान से सुनो। ' उसने थपथपाया, इधर-उधर देखा और फिर शुरू हो गया। वह धीरे से बोला,

प्रत्येक वाक्य को उसकी तर्जनी से हवा में दबाकर जोर देना। 'प्रत्येक हिंदू या सिख के लिए वे दो मुसलामानों को मारते हैं। प्रत्येक महिला के लिए वे अपहरण या बलात्कार करते हैं, दो का अपहरण करते हैं। प्रत्येक घर के लिए वे लूटते हैं, दो लूटते हैं। मृतकों के प्रत्येक ट्रेन लोड के लिए वे दो को भर भेजते हैं। प्रत्येक सड़क काफिले पर हमला किया जाता है, दो के लिए। वह दूसरी तरफ हत्या बंद कर देगा। यह उन्हें सिखाएगा कि हम हत्या और लूट का यह खेल भी खेलें। '

उसने अपने द्वारा बनाए गए प्रभाव को नापना बंद कर दिया। लोगों ने उन्हें खुले दिल से ध्यान से सुना। केवल मीत सिंह ने नहीं लिया; उसने अपना गला साफ किया लेकिन रुक गया।

'अच्छा, भाई, तुम चुप क्यों रहते हो?' बालक से पूछा, एक चुनौती फेंकी। 'मैं कहने जा रहा था,' मीट सिंह को रुकते हुए कहा, 'मैं कहने जा रहा था,' वह दोहराया, 'पाकिस्तान में मुसलमानों ने जो किया है, उसका बदला लेने के लिए हमारे यहाँ मुसलमानों ने उन्हें मारने के लिए क्या किया है। केवल अपराध करने वाले लोगों को दंडित किया जाना चाहिए। '

मीट सिंह को देखकर लड़का गुस्से से लाल हो गया। 'पाकिस्तान में सिखों और हिंदुओं ने ऐसा क्या किया था कि वे कसाई हो गए थे? क्या वे निर्दोष नहीं थे? क्या महिलाओं ने उन अपराधों को अंजाम दिया था जिनके लिए उन्हें तबाह किया गया था? क्या बच्चों ने हत्या की थी जिसके लिए उन्हें अपने माता-पिता के सामने उकसाया गया था? '

मीत सिंह दब गए थे। वह लड़का उसे और भी मारना चाहता था। 'क्यों भाई? अब बोलो और बोलो कि तुम क्या चाहते हो। '

'मैं पुराना भई हूं; मैं किसी के खिलाफ हाथ नहीं उठा सकता था - लड़ाई में लड़ना या हत्यारे को मारना। निहत्थे निर्दोष लोगों को मारने में क्या बहादुरी है? जैसा कि महिलाओं के लिए, आप जानते हैं कि अंतिम गुरु, गोबिंद सिंह ने इसे एक बपतिस्मा देने की शपथ का हिस्सा बनाया था कि कोई भी सिख मुस्लिम महिला के व्यक्ति को छूने के लिए नहीं था। और ईश्वर ही जानता है कि मुसलामानों के हाथों उसे कैसा नुकसान उठाना पड़ा! उन्होंने अपने सभी चार बेटों को मार डाला। '

'सिख धर्म के इस प्रकार को किसी और को सिखाओ,' लड़के ने अवमानना की। 'यह आपकी तरह के लोग हैं जो इस देश का अभिशाप रहे हैं। आप महिलाओं के बारे में गुरु को उद्धृत करते हैं; आप हमें यह क्यों नहीं बताते कि उन्होंने मुसलामानों के बारे में क्या कहा? "केवल तुर्क से मित्रता तब करें जब अन्य सभी समुदाय मर चुके हों।" क्या वो सही है?'

'हां,' मीट सिंह से नम्रतापूर्वक जवाब दिया, 'लेकिन कोई भी आपको उनसे दोस्ती करने के लिए नहीं कह रहा है। इसके अलावा, गुरु ने खुद अपनी सेना में मुसलमानों ...

'और उनमें से एक ने उसे सोते समय चाकू मार दिया।'

मीट सिंह को बेचैनी महसूस हुई।

लड़के के बार-बार कहने पर उनमें से एक ने उसे चाकू मार दिया। 'हां

... लेकिन बुरे हैं और ...'

'मुझे एक अच्छा दिखाओ।'

मीट सिंह रेपिस्ट के साथ नहीं रह सकते थे। उसने बस अपने पैरों की तरफ देखा। उनकी चुप्पी को हार के प्रवेश के रूप में लिया गया था।

'उसे रहने दो। वह एक पुराना भाई है। उसे अपनी प्रार्थनाओं से चिपके रहने दो, 'एक कोरस में कई ने कहा।

बोलने वाला तुष्ट था। उन्होंने फिर से धूमधाम से विधानसभा को संबोधित किया। 'याद रखें,' उन्होंने एक नकाब की तरह कहा, 'याद रखें और कभी न भूलें- एक मुसलमान जानता है कि कोई तर्क नहीं बल्कि तलवार है।'

भीड़ ने अनुमोदन की बड़बड़ाया।

? क्या यहाँ गुरु का कोई प्रिय है? जो कोई भी सिख समुदाय के लिए अपना जीवन बलिदान करना चाहता है? किसी में हिम्मत है? ' उन्होंने प्रत्येक वाक्य को एक चुनौती की तरह उछाल दिया।

ग्रामीण बहुत असहज महसूस कर रहे थे। हरनाम ने उन्हें नाराज कर दिया था और वे अपनी मर्दानगी साबित करना चाहते थे। उसी समय मीट सिंह की मौजूदगी ने उन्हें असहज कर दिया और उन्हें लगा कि वे उनके प्रति बेचैन हो रहे हैं।

'हमसे क्या करने की अपेक्षा की जाती है?' लंबरदार से विनम्रतापूर्वक पूछा।

'मैं आपको बताऊंगा कि हम क्या कर रहे हैं,' लड़के ने खुद को इशारा करते हुए जवाब दिया। 'अगर आपमें यह करने की हिम्मत है।' वह ठहराव के बाद भी जारी रहा। कल मुसलमानों का एक ट्रेन लोड पाकिस्तान को पुल पार करना है। यदि आप पुरुष हैं, तो इस ट्रेन को उतने लोगों को ले जाना चाहिए, जिन्हें आपने प्राप्त किया है। '

दर्शकों के बीच एक ठंडी छटपटाहट का एहसास फैल गया। लोगों को घबराहट हुई।

मीट सिंह ने कहा, " ट्रेन में मनो माजरा मुस्लिम होगा।

'भई, तुम्हें तो सब मालूम होता है न?' युवक की जमकर धुनाई कर दी। 'क्या आपने उन्हें टिकट दिया या आपका बेटा रेलवे बाबू है? मुझे नहीं पता कि ट्रेन में मुसलमान कौन हैं; मुझे

परवाह नहीं है। मेरे लिए यह जानना काफी है कि वे मुसलमान हैं। वे इस नदी को जीवित नहीं पार करेंगे। यदि आप लोग मुझसे सहमत हैं, तो हम बात कर सकते हैं; यदि आप भयभीत हैं, तो ऐसा कहें और हम आपको सत श्री अकाल कहेंगे और वास्तविक पुरुषों की तलाश करेंगे।'

सन्नाटे का एक और लंबा दौर। बालक ने अपने पिस्तौलदान पर एक टैटू को हराया और धैर्यपूर्वक उसके चारों ओर के चेहरे को स्कैन किया।

'पुल पर एक सैन्य गार्ड है।' यह मल्ली था। वह बाहर अंधेरे में खड़ा था। उन्होंने अकेले मनो माजरा में वापस आने की हिम्मत नहीं की होगी। फिर भी वह गुरुद्वारे में साहसपूर्वक कदम रख रहा था। उसके गिरोह के कई सदस्य दरवाजे पर दिखाई दिए।

'आपको सेना या पुलिस के बारे में परेशान होने की जरूरत नहीं है। कोई दखल नहीं देगा।

हम उसी को देखेंगे, 'उसने बालक की ओर देखते हुए उत्तर दिया। 'क्या कोई स्वयंसेवक हैं?'

मल्ली ने वीरतापूर्वक कहा, 'मेरा जीवन आपके निपटान में है।' जुग्गा की कहानी पिटाई से वह गांव के चक्कर लगा गया। उनकी प्रतिष्ठा को भुनाना पड़ा। 'ब्रावो,' वक्ता ने कहा। 'कम से कम एक आदमी। गुरु ने पाँच जीवन मांगे जब उसने सिख बनाए। वे सिख सुपरमून थे। हमें पाँच से अधिक की आवश्यकता है। और कौन अपनी जान देने को तैयार है?'

मल्ली के चार साथियों ने दहलीज पर कदम रखा। उनके बाद कई अन्य लोग थे, जिनमें ज्यादातर शरणार्थी थे। कुछ ग्रामीण जो हाल ही में अपने मुस्लिम दोस्तों के जाने पर रोए थे, वे भी स्वयंसेवक के लिए खड़े थे। जब भी किसी ने हाथ उठाया तो युवक ने कहा 'ब्रावो', और उसे अलग आकर बैठने को कहा। पचास से अधिक लोग पलायन में शामिल होने के लिए सहमत हुए।

'यह काफी है,' बालक ने हाथ उठाते हुए कहा। 'अगर मुझे किसी और स्वयंसेवक की जरूरत है, तो मैं उनके लिए पूछूंगा। हम अपने उद्यम की सफलता के लिए प्रार्थना करें।'

सब लोग खड़े हो गए। महिलाओं ने अपने बच्चों को फर्श पर लिटा दिया और मेनफोक में शामिल हो गईं। असेंबली ने छोटी खाट का सामना किया, जिस पर ग्रन्थ लिपटे हुए थे, और प्रार्थना में उनके हाथ मुड़े। लड़के ने मीत सिंह से चक्कर लगाया।

'आप प्रार्थना का नेतृत्व करेंगे, भाईजी?' उसने ताना मारते हुए पूछा।

मीट सिंह ने विनम्रता से जवाब दिया, 'यह आपका मिशन है, सरदार साहब।' 'आप प्रार्थना का नेतृत्व करते हैं।'

लड़के ने अपना गला साफ किया, अपनी आँखें बंद कीं और गुरुओं के नाम सुनाना शुरू किया। वह उद्यम के लिए गुरुओं का आशीर्वाद माँगकर समाप्त हो गया। असेंबली अपने घुटनों पर बैठ गई और अपने माथे को जमीन पर रगड़ा, जोर से घोषणा की:

*नानक के नाम पर,*

*इस उम्मीद से कि विश्वास डगमगाता है,*

*ईश्वर की कृपा से,*

*हम दुनिया को अच्छी इच्छा के अलावा और कुछ नहीं देते।*

भीड़ फिर से खड़ी हो गई और चिल्लाने लगी:

*सिख राज करेंगे*

*उनके दुश्मन बिखर जाएंगे*

केवल वे जो शरण चाहते हैं, वे बच जाएंगे!

थोड़ा सा समारोह सत श्री अकाल के विजयी संकट के साथ समाप्त हुआ। लड़का नेता को छोड़कर सभी बैठ गए। प्रार्थना ने उसे विनम्रता का लिबास दिया था। उन्होंने अपने हाथ जोड़े और विधानसभा से माफी मांगी।

'बहनों और भाइयों, मुझे इस देर से परेशान करने के लिए क्षमा करें; आप भी,

भाईजी, और आप, लम्बरदार साहब, कृपया हमें इस असुविधा के लिए क्षमा करें और मेरे द्वारा बोले गए किसी भी गुस्से वाले शब्द के लिए; लेकिन यह गुरु की सेवा में है। स्वयंसेवक अब दूसरे कमरे में स्थगन करेंगे; बाकी लोग आराम कर सकते हैं। सत श्री अकाल। '

'सत श्री अकाल' ने कुछ दर्शकों को जवाब दिया।

आंगन के किनारे सिंह के कमरे से महिलाओं और बच्चों को साफ किया गया। आगंतुक स्वयंसेवकों के साथ चले गए। अधिक लैप लाए गए। नेता ने एक बेड पर एक नक्शा फैलाया। उन्होंने एक तूफान लालटेन का आयोजन किया। स्वयंसेवकों ने नक्शे का अध्ययन करने के लिए उसे भीड़ दिया।

'क्या आप सभी पुल और नदी की स्थिति देख सकते हैं कि आप कहाँ हैं?' उसने पूछा।

'हाँ, हाँ,' उन्होंने अधीरता से उत्तर दिया।

'क्या आपमें से किसी को बंदूक मिली है?'

वे सभी एक-दूसरे को देखते थे। नहीं, किसी के पास बंदूक नहीं थी।

'इससे कोई फर्क नहीं पड़ता,' नेता ने जारी रखा। 'हमारे पास अभी भी छह या सात राइफलें हैं, और संभवतः स्टेन गन के एक जोड़े के रूप में भी। अपनी तलवारें और भाले लाओ। वे बंदूकों से ज्यादा उपयोगी होंगे।' वह ठहर गया।

'योजना यह है। कल सूर्यास्त के बाद, जब अंधेरा होगा, हम पुल के पहले हिस्से में एक रस्सी फैलाएंगे। यह इंजन के फनल की ऊंचाई से एक फीट ऊपर होगा। जब ट्रेन इसके नीचे से गुजरेगी, तो यह ट्रेन की छत पर बैठे सभी लोगों को हटा देगी। जो कम से कम चार से पांच सौ का हिसाब देगा। '

श्रोताओं की आंखें प्रशंसा से चमक उठीं। उन्होंने एक-दूसरे को सिर हिलाया और चारों ओर देखा। लम्बरदार और मीत सिंह दरवाजे पर खड़े सुन रहे थे। लड़का गुस्से में गोल हो गया:

'भाईजी, इससे आपको क्या लेना-देना? आप क्यों नहीं जाते और अपनी प्रार्थनाएँ कहते हैं? '

लम्बरदार और मीत सिंह दोनों ही भेड़चाल में चले गए। लम्बरदार जानता था कि अगर वह चारों ओर लटका हुआ है तो उसे भी बंद कर दिया जाएगा।

'और तुम, लम्बरदार साहब,' लड़के ने कहा। 'आपको रिपोर्ट करने के लिए पुलिस स्टेशन जाना चाहिए।'

सब लोग हँसे।

लड़के ने हाथ उठाकर अपने दर्शकों को चुप कराया। उन्होंने जारी रखा: 'ट्रेन आधी रात के बाद चुंदुनुगर को छोड़ने के कारण है। इसमें कोई रोशनी नहीं होगी, इंजन पर भी नहीं। हम ट्रैक पर हर सौ गज की दूरी पर फ्लैशलाइट के साथ लोगों को पोस्ट करेंगे। प्रत्येक व्यक्ति अगले व्यक्ति को संकेत देगा क्योंकि ट्रेन उसे पास करती है। किसी भी मामले में, आप इसे सुन सकेंगे। तलवार वाले लोग और



ट्रेन की छत से गिरने वालों से निपटने के लिए पुल पर भाले सही होंगे। उन्हें मारकर नदी में फेंकना होगा। बंदूकों वाले पुरुष ट्रैक से कुछ गज की दूरी पर होंगे और खिड़कियों पर गोली मारेंगे। आग लगने का कोई खतरा नहीं होगा। ट्रेन में केवल एक दर्जन पाकिस्तानी सैनिक हैं। अंधेरे में, वे नहीं जान पाएंगे कि शूटिंग कहाँ करनी है। उनके पास अपनी बंदूकें लोड करने का समय नहीं होगा। अगर वे ट्रेन रोकते हैं, तो हम उनकी देखभाल करेंगे और कई और लोगों को मार सकते हैं। '

प्रतिशोध की थोड़ी सी भी आशंका के बिना यह एक सही योजना थी। सभी लोग प्रसन्न थे।

" यह आधी रात पहले से ही है, " लड़के ने कहा, नक्शे को मोड़ते हुए। 'तुम सब बेहतर कुछ नींद मिल जाएगा। कल सुबह हम पुल पर जाएंगे और तय करेंगे कि प्रत्येक को कहाँ तैनात किया जाना है। सिख भगवान के चुने हुए हैं। विजय हमारे भगवान की हो। '

'हमारे भगवान के लिए विजय,' दूसरों को जवाब दिया।

बैठक तितर-बितर हो गई। श्रद्धालुओं को गुरुद्वारे में कमरा मिला। तो क्या मल्ली और उसका गिरोह। ग्रामीणों में से बहुत से लोग अपने घरों में चले गए थे, ऐसा नहीं था कि जब उन्हें साजिश रची जा रही थी, तब वे मंदिर में मौजूद थे। लंबरदार दो ग्रामीणों को अपने साथ ले गया और चुंडुनगर में पुलिस स्टेशन के लिए रवाना हुआ।

'अच्छा, इंस्पेक्टर साहब, उन्हें मारने दो,' हुकुम चंद ने कहा। 'सबको मारने दो। बस अन्य स्टेशनों से मदद मांगें और आपके द्वारा भेजे गए संदेशों का रिकॉर्ड रखें। हमें यह साबित करने में सक्षम होना चाहिए कि हमने उन्हें रोकने की पूरी कोशिश की। '

हुकुम चंद को एक थका हुआ आदमी दिख रहा था। मान्यता से परे एक सप्ताह की आयु थी। उसके बालों की जड़ों पर सफेद रंग लंबे हो गए थे। वह जल्दी में शेविंग कर चुका था और उसने कई जगहों पर खुद को काट लिया था। उसके गाल छिल गए और मांस की सिलवटें उसकी ठोड़ी के बारे में ओस की बूंदों की तरह गिर गईं। वह पीले रंग के लिए अपनी आंखों के कोनों को रगड़ता रहा जो वहाँ नहीं था।

'मुझे क्या करना है?' वह चला गया। 'सारी दुनिया पागल हो गई है। पागल हो जाने दो! एक और हज़ार मारे जाने से क्या फ़र्क पड़ता है? हम एक बुलडोजर प्राप्त करेंगे और उन्हें दफन कर देंगे जैसा हमने दूसरों को किया। यदि इस समय यह नदी पर होने जा रहा है तो हमें बुलडोजर की आवश्यकता भी नहीं हो सकती है। बस लाशों को पानी में फेंक दो। वैसे भी चार सौ मिलियन में से कुछ सौ क्या है? एक महामारी दस गुना संख्या लेती है और कोई परेशान भी नहीं करता है। '

सबइंस्पेक्टर जानता था कि यह असली हुकुम चंद नहीं था। वह केवल अपने सिस्टम से मेलानोचोलिया को बाहर निकालने की कोशिश कर रहा था। सबइंस्पेक्टर ने इंतजार किया

धैर्यपूर्वक, और फिर एक विचारक को गिरा दिया।

'जी श्रीमान। मैं उन सभी का रिकॉर्ड रख रहा हूँ जो हो रहे हैं और हम क्या कर रहे हैं। कल शाम, हमें चुन्दुनगर को खाली करना था। मैं सेना पर और न ही अपने कांस्टेबलों पर भरोसा नहीं कर सकता था। सबसे अच्छा मैं हमलावरों को यह बताने के लिए कर सकता था कि पाकिस्तान के सैनिक कस्बे में हैं। इससे उन्हें डर लगने लगा और मैंने मुसलमानों को समय रहते बाहर निकाल दिया। जब हमलावरों ने चाल का पता लगाया, तो उन्होंने लूटा और हर मुस्लिम घर को जला दिया जो वे कर सकते थे। मेरा मानना है कि उनमें से कुछ ने मेरे लिए पुलिस स्टेशन आने की योजना बनाई, लेकिन बेहतर वकील मौजूद रहे। तो आप देखिए, श्रीमान, मुझे उनके घरों से बेदखल करने के लिए मुसलमानों से दुर्व्यवहार हुआ;

सिखों से लूट के लिए लूटपाट की उम्मीद की गई थी। अब मुझे लगता है कि सरकार किसी ना किसी बात के लिए मुझे गाली भी देगी। मेरे पास वास्तव में मेरा बड़ा अंगूठा है। ' सबइंस्पेक्टर ने अपना अंगूठा बाहर निकाला और मुस्कराया।

हुकुम चंद का मन उस सुबह खुद नहीं था। उन्हें सब-इंस्पेक्टर की रिपोर्ट के पूर्ण आयात का एहसास नहीं हुआ।

'हां, इंस्पेक्टर साहब, आप और मैं एक बुरे नाम के अलावा इससे कुछ भी हासिल नहीं करेंगे। हम क्या कर सकते हैं? हर कोई ट्रिगर-खुश हो गया है। लोगों ने अपनी राइफल पत्रिकाओं को घनी पैक गाड़ियों, मोटर काफिलों, मार्चिंग शरणार्थियों के स्तंभों में खाली कर दिया, जैसे कि वे होली के त्योहार पर लाल पानी की फुहार मार रहे हों; यह एक खूनी होली है। उस जगह पर जाने में क्या समझदारी है जहां गोलियां उड़ती हैं? गोली रुकती नहीं है और विचार करती है, "यह हुकुम चंद है, मुझे उसे नहीं छूना चाहिए।" न ही एक बुलेट पर कोई नाम लिखा होता है, जो " सो-एंड-सो द्वारा भेजा जाता है"। यहां तक कि अगर इसने एक नाम भी धारण किया है - एक बार अंदर, तो हमें यह पता चलेगा कि किसने इसे निकाल दिया? नहीं, इंस्पेक्टर साहब, एक अकेला व्यक्ति जो एक पागल आश्रय में रह सकता है, वह यह दिखावा करता है कि वह दूसरों की तरह पागल है और पहले मौके पर दीवारों को तोड़कर बाहर निकल जाता है। '

इन उपदेशों के लिए सबइंस्पेक्टर का उपयोग किया गया था और उन्हें पता था कि वे मजिस्ट्रेट के वास्तविक स्वयं का कितना कम प्रतिनिधित्व करते हैं। लेकिन संकेत लेने में हुकुम चंद की स्पष्ट असमर्थता आश्चर्यजनक थी। वह कभी सीधी बात न कहने के लिए जाने जाते थे; उन्होंने इसे बेवकूफी भरा माना। उनके लिए कूटनीति की कला को सम्मिलित रूप से एक साधारण बात बताना था। यह कभी किसी मुसीबत में नहीं पड़ा। यह या यह निहित होने के रूप में उद्धृत नहीं किया जा सकता है। इसी समय, इसने एक चतुर और चतुर होने की प्रतिष्ठा दी। हुकुम चंद मासूमों की खोज करने में उतने ही माहिर थे, जितने उन्हें बनाने में थे। आज सुबह वह अपने दिमाग को आराम दे रहा था।

" आपको कल चंडुनुगनगर में होना चाहिए था, " सबइंस्पेक्टर ने कहा, बातचीत को वास्तविक समस्या में वापस लाकर उसका सामना किया। 'अगर मैं पाँच मिनट बाद आता, तो एक भी मुसलमान जिंदा नहीं बचा होता। यह रूप

कोई नहीं मारा गया था। मैं उन सभी को बाहर निकालने में सक्षम था। '

सबइंस्पेक्टर ने 'एक नहीं' और 'सभी' पर जोर दिया। उन्होंने हुकुम चंद की प्रतिक्रिया देखी।

इसने काम कर दिया। हुकुम चंद ने अपनी आंखों के कोनों को रगड़ना बंद कर दिया और लापरवाही से पूछा, जैसे कि वे केवल जानकारी मांग रहे थे, 'आपको बताने का मतलब है कि चंडुनुगर में एक भी मुस्लिम परिवार नहीं बचा है?'

'नहीं, सर, एक नहीं।'

'मुझे लगता है,' हुकुम चंद ने अपना गला साफ करते हुए कहा, 'जब ये सब खत्म हो जाएगा तो वे वापस आएंगे?'

'हो सकता है,' सबइंस्पेक्टर ने जवाब दिया। 'उनके पास वापस आने के लिए बहुत कुछ नहीं है। उनके घरों को जला दिया गया है या कब्जा कर लिया गया है। और यदि कोई वापस आया, तो उसका जीवन समुद्र के सबसे नन्हें खोल के लायक नहीं होगा। '

'यह हमेशा नहीं रहेगा। आप देखें कि चीजें कैसे बदलती हैं। एक हफ्ते के भीतर वे वापस चंडुनुगर में आ जाएंगे और सिख और मुसलमान एक ही घड़े से पानी निकालेंगे। ' हुकुम

चंद ने अपनी आवाज़ में झूठी आशा के नोट का पता लगाया। तो सबइंस्पेक्टर किया।

'आप ठीक कह सकते हैं, सर। लेकिन ऐसा होने में निश्चित रूप से एक सप्ताह से अधिक समय लगेगा। आज रात ट्रेन से चुंडुनगर शरणार्थियों को पाकिस्तान ले जाया जा रहा है। अकेले भगवान जानता है कि कितने जीवित पुल के पार जाएंगे; जो लोग जल्दबाजी में वापस नहीं आना चाहते हैं।'

सबइंस्पेक्टर ने निशान मारा था। हुकुम चंद का चेहरा पीला पड़ गया। वह अब दिखावा नहीं कर सकता था।

'आप कैसे जानते हैं कि चुंडुनगर शरणार्थी रात की ट्रेन से जा रहे हैं?' उसने पूछा।

'मुझे यह कैप कमांडर से मिला। शिविर पर ही हमले का खतरा था, इसलिए उन्होंने शरणार्थियों को बाहर निकालने के लिए पहली ट्रेन उपलब्ध कराने का फैसला किया। यदि वे नहीं जाते हैं, तो शायद कोई भी जीवित नहीं छोड़ा जाएगा। यदि वे करते हैं, तो कुछ कम से कम हो सकता है, अगर ट्रेन कुछ गति से चल रही है। वे ट्रेन को पटरी से उतारने की योजना नहीं बना रहे हैं; वे चाहते हैं कि यह लाशों के एक माल के साथ पाकिस्तान जाए।'

हुकुम चंद ने अपनी कुर्सी की बाहों को कसकर पकड़ लिया।

'आप इसके बारे में कैप कमांडर को चेतावनी क्यों नहीं देते? वह न जाने का फैसला कर सकता है।'

'गरीबों के चिरिशेर,' ने सबइंस्पेक्टर को धैर्यपूर्वक समझाया, 'मैंने उसे ट्रेन में प्रस्तावित हमले के बारे में कुछ नहीं बताया है क्योंकि अगर वह नहीं गया तो पूरा कैप नष्ट हो सकता है। बीस से तीस हज़ार सशस्त्र ग्रामीणों के खून के प्यासे हैं। मेरे साथ पचास पुलिसकर्मी हैं और उनमें से एक भी सिख पर गोली नहीं चलाएगा। लेकिन अगर आपका सम्मान प्रभाव का उपयोग कर सकता है

इन भीड़ को, मैं कैप कमांडर को ट्रेन में घात लगाने और उसे नहीं जाने के लिए राजी करने के बारे में बता सकता हूँ।'

सबइंस्पेक्टर बेल्ट से नीचे टकरा रहा था।

'नहीं, नहीं,' ने मजिस्ट्रेट को चौंका दिया। 'सशस्त्र भीड़ के साथ क्या प्रभाव डाल सकता है? नहीं। हमें सोचना चाहिए।'

हुकुम चंद वापस अपनी कुर्सी पर बैठ गए। उसने अपना चेहरा हाथों में छिपा लिया। वह अपने माथे को अपनी मुट्ठी से धीरे से मारता है। उन्होंने अपने बालों को ऐसे उलझाया जैसे वे अपने मस्तिष्क से विचारों को खींच सकते हैं।

'उन दो आदमियों का क्या हुआ, जिन्हें आपने साहूकार की हत्या के लिए गिरफ्तार किया था?' उसने कुछ देर बाद पूछा।

सबइंस्पेक्टर ने जांच की प्रासंगिकता नहीं देखी।

'वे अभी भी लॉकअप में हैं। आपने मुझे आदेश दिया कि जब तक समस्या खत्म न हो जाए, तब तक उन्हें रखूँ। इस दर पर ऐसा लगता है कि मुझे उन्हें कुछ महीनों तक रखना होगा।'

'क्या कोई मुस्लिम महिलाएं, या कोई आवारा मुसलमान हैं जिन्होंने मनो माजरा छोड़ने से इनकार कर दिया है?'

'नहीं, साहब, कोई नहीं रहता। पुरुषों, महिलाओं, बच्चों, सब छोड़ दिया है, 'सबस्पेक्टर का जवाब दिया। वह अभी भी हुकुम चंद की विचारधारा को पकड़ने में असमर्थ था।

Me जुग्गा की बुनकर लड़की के बारे में आपने मुझे क्या बताया? उसका क्या नाम था?' 'Nooran!'

Or आह हां, नूरां। वौ कहा हे?'

'वह चली गयी। उसके पिता मनो माजरा के मुसलमानों के नेता थे। लंबरदार ने मुझे उसके बारे में बहुत कुछ बताया। उनका सिर्फ एक बच्चा था, यह लड़की नूरान; वह एक कथित डकैत जुग्गा के साथ ले जाने वाला है।'

'और यह अन्य साथी, क्या आपने नहीं कहा कि वह किसी तरह का राजनीतिक कार्यकर्ता था?'

'जी श्रीमान। पीपुल्स पार्टी या ऐसा कुछ। मुझे लगता है कि वह एक झूठे लेबल के तहत एक मुस्लिम लीडर है। मैंने जांच की ...'

'क्या आपको ऑर्डर के लिए कोई खाली आधिकारिक पेपर मिला है?' हुकुम चंद को अधीरता में काट दिया।

'हां, सर,' सबइंस्पेक्टर ने जवाब दिया। उन्होंने पीले रंग के मुद्रित कागज के कई टुकड़े निकाले और उन्हें मजिस्ट्रेट को सौंप दिया।

हुकुम चंद ने अपना हाथ बढ़ाया और सब-इंस्पेक्टर के फाउंटेन पेन को अपनी जेब से निकाल दिया।

'कैदियों के नाम क्या हैं?' उसने मेज पर चादरें फैलाकर पूछा।

'जुग्गा बदमाश और ...'

'जुग्गा बदमाश,' हुकुम चंद को बाधित करते हुए, एक रिक्त स्थान को भरने और उस पर हस्ताक्षर करने में। 'जुग्गा बदमाश, और ...?' उसने दूसरा पेपर लेने को कहा।

'इकबाल मोहम्मद या मोहम्मद इकबाल। मुझे यकीन नहीं है जो।'

'इकबाल मोहम्मद नहीं, इंस्पेक्टर साहब। और न ही मोहम्मद इकबाल। इकबाल सिंह, 'उन्होंने एक उत्कर्ष के साथ लिखते हुए कहा। सबइंस्पेक्टर थोड़ा बेवकूफ लग रहा था। हुकुम चंद को कैसे पता चला? मीत सिंह मजिस्ट्रेट को बुलाने वाले थे?

'सर, आपको हर किसी पर विश्वास नहीं करना चाहिए। मैंने जांच की ...'

'क्या आप वास्तव में मानते हैं कि एक शिक्षित मुसलमान इन भागों में इन दिनों की तरह आने की हिम्मत करेगा? क्या आपको लगता है कि कोई भी दल इतना मूर्ख होगा जितना कि मुस्लिम किसानों को मुस्लिम खून की प्यासी, इंस्पेक्टर साहब को शांति का उपदेश देने के लिए भेजेगा? तुम्हारी कल्पना कहाँ है?'

सबइंस्पेक्टर वश में था। ऐसा प्रतीत नहीं होता था कि एक शिक्षित व्यक्ति किसी भी कारण से अपनी गर्दन को जोखिम में डालेगा। इसके अलावा, उन्होंने इकबाल की दाहिनी कलाई पर स्टील की चूड़ी पहन रखी थी, जिसे सभी सिख पहनते हैं।

'आपका सम्मान सही होना चाहिए, लेकिन ट्रेन पर हमले को रोकने के साथ इसका क्या करना है?'

'मेरा सम्मान है ठीक है,' हुकुम चंद विजयी होकर कहा। 'और आपको जल्द ही पता चल जाएगा कि क्यों। चंडुनुगगर के रास्ते पर इसके बारे में सोचें। जैसे ही आप वहां पहुंचते हैं, दोनों पुरुषों को रिहा करें और देखें कि वे तुरंत मनो माजरा के लिए निकल जाते हैं। यदि आवश्यक हो, तो उन्हें एक टोंगा प्राप्त करें। उन्हें शाम तक गाँव में रहना होगा।'

सबइंस्पेक्टर ने कागजात ले लिए, और सलामी दी। वह अपने चक्र पर थाने में वापस चला गया। धीरे-धीरे उसके मन से भ्रम के बादल उठ गए। हुकुम चंद की योजना भारी बारिश के एक दिन बाद क्रिस्टल की तरह साफ हो गई।

" आपको मानो माजरा कुछ बदला हुआ सा लगेगा, " सबइंस्पेक्टर ने टिप्पणी की, लापरवाही से उसके सामने टेबल को संबोधित किया। इकबाल और जुग्गा दूसरी तरफ उसका सामना कर रहे थे।

'आप क्यों नहीं बैठते, बाबू साहब?' सबइंस्पेक्टर ने कहा। इस बार उन्होंने सीधे इकबाल से बात की। 'कृपया एक कुर्सी लें। ओई, आपका नाम क्या है? आप बाबू साहब के लिए कुर्सी क्यों नहीं लाते?' वह एक कांस्टेबल पर चिल्लाया। 'मुझे पता है कि आप मुझसे नाराज हैं, लेकिन यह मेरी गलती नहीं है,' उन्होंने जारी रखा। 'मुझे अपना कर्तव्य निभाना है। आप एक शिक्षित व्यक्ति के रूप में जानते हैं कि अगर मैं लोगों से अलग तरह से पेश आऊं तो क्या होगा।'

कांस्टेबल इकबाल के लिए एक कुर्सी लाया।

'बैठ जाओ। जाने से पहले क्या मैं तुम्हें एक कप चाय या कुछ और दूंगा?'

सबइंस्पेक्टर ने अनायास ही मुस्कुरा दिया।

'मेहरबानी आपकी। मैं नहीं बल्कि खड़े रहना होगा; मैं इन दिनों सेल में बैठा हूँ। अगर आप बुरा न मानें, तो औपचारिकताओं के साथ जैसे ही आप समाप्त होते हैं, मैं छोड़ना चाहूंगा, दूसरे के मुस्कुराने का जवाब दिए बिना इकबाल ने जवाब दिया।

'आप जब भी और जहां भी जाना चाहें, जाने के लिए स्वतंत्र हैं। मैंने आपको मानो माजरा ले जाने के लिए एक टोंगा भेजा है। मैं आपके साथ एक सशस्त्र कांस्टेबल को भेजूंगा। चुंदनुगनगर के बारे में होना या बिना यात्रा के यात्रा करना सुरक्षित नहीं है।'

सबइंस्पेक्टर ने एक पीला कागज उठाया और पढ़ा: 'आलम सिंह का पुत्र जुगुत सिंह, चौबीस साल का, गांव मनो माजरा का जाति सिख, बदमाश नंबर दस।'

'हां, सर,' जुग्गा ने मुस्कुराते हुए कहा। पुलिस से उन्हें जो इलाज मिला था, उससे उन्हें कोई फर्क नहीं पड़ा था। अधिकार के साथ उसका समीकरण सरल था: वह दूसरी तरफ था। व्यक्तित्व इसमें नहीं आए। सबइंस्पेक्टर और पुलिसकर्मी खाकी में शामिल लोग थे जो उसे अक्सर गिरफ्तार करते थे, हमेशा उसके साथ दुर्व्यवहार करते थे, और कभी-कभी उसकी पिटाई भी करते थे। चूंकि उन्होंने बिना गुस्से या नफरत के उनके साथ दुर्व्यवहार और मारपीट की, वे नाम वाले इंसान नहीं थे। वे केवल संप्रदाय थे जो एक बेहतर होने की कोशिश करते थे। यदि कोई असफल हो गया, तो यह सिर्फ दुर्भाग्य था।

'आपको रिहा किया जा रहा है, लेकिन आपको अक्टूबर 1947 की पहली तारीख को डिप्टी कमिश्नर श्री हुकुम चंद के सामने दस बजे अपना अंगूठा छाप दिखाना होगा।'

सबइंस्पेक्टर ने एक काले रंग की जाली के साथ एक फ्लैट टिन बॉक्स खोला। उसने जुगुत सिंह के अंगूठे को अपने हाथ में पकड़ा, उसे नम पैड पर रगड़ा और कागज पर दबाया।

'क्या मुझे जाने की अनुमति है?' जुग्गा से पूछा।

'आप टोंगा में बाबू साहब के साथ जा सकते हैं; वरना तुम्हें अंधेरे से पहले घर नहीं मिलेगा।' उन्होंने जुग्गा की तरफ देखा और धीरे से दोहराया, 'आपको मनो माजरा वैसा नहीं मिलेगा।'

मनो माजरा के बारे में सबइंस्पेक्टर की टिप्पणी में किसी भी पुरुष ने कोई दिलचस्पी नहीं दिखाई। सबइंस्पेक्टर ने कागज का एक और टुकड़ा फैलाया और पढ़ा: 'श्री इकबाल सिंह, सामाजिक कार्यकर्ता।'

इकबाल ने निडर होकर कागज को देखा।

'मुस्लिम लीग के सदस्य मोहम्मद इकबाल नहीं? आप तथ्यों और दस्तावेजों को गढ़ते हैं क्योंकि यह आपको प्रसन्न करता है।'

सबइंस्पेक्टर ने मुस्कुरा कर कहा। 'गलतियां सबसे होती हैं। गलती करना मानवीय है, परमात्मा को क्षमा करना, उन्होंने अंग्रेजी में जोड़ा। 'मैं अपनी गलती मानता हूँ।'

इकबाल ने जवाब दिया, 'यह आपके लिए बहुत उदार है।' 'मेरा हमेशा से मानना था कि भारतीय पुलिस अचूक है।'

'अगर तुम चाहो तो मेरा मजाक उड़ा सकते हो; आपको एहसास नहीं है कि यदि आप अपने इरादों के अनुसार व्याख्यान देने जा रहे थे और सिख भीड़ के हाथों में पड़ गए थे, तो उन्होंने आपके तर्क नहीं सुने होंगे। उन्होंने यह पता लगाने के लिए आपसे छीन लिया होगा कि क्या आपका खतना हुआ था या नहीं। यह एकमात्र परीक्षण है जो इन दिनों एक ऐसे व्यक्ति के लिए है जिसे लंबे बाल और दाढ़ी नहीं मिली है। फिर वे मार देते हैं। आपको मेरा आभारी होना चाहिए।'

इकबाल बात करने के मूड में नहीं था। इसके अलावा, विषय वह नहीं था जिसे वह किसी के साथ चर्चा करना चाहते थे। उन्होंने जिस तरह से सबइंस्पेक्टर ने इसका उल्लेख करने की स्वतंत्रता ली, उससे नाराजगी जताई।

'आपको मनो माजरा में बड़े बदलाव देखने को मिलेंगे!' तीसरी बार सबइंस्पेक्टर को चेतावनी दी; न तो जुग्गा और न ही इकबाल ने कोई प्रतिक्रिया दी। इकबाल ने जिस पुस्तक को रखा था, उसे मेज पर रख दिया और धन्यवाद या विदाई के एक शब्द के बिना दूर हो गया। जुग्गा ने अपने जूते के लिए अपने पैरों के साथ फर्श को महसूस किया।

'सब मुसलामान मानो माजरा से चले गए,' सबइंस्पेक्टर ने नाटकीय ढंग से कहा।

जुग्गा ने अपने पैर हिलाना बंद कर दिया। 'वे कहाँ चले गए हैं?'

'कल उन्हें शरणार्थी शिविर में ले जाया गया। आज रात वे ट्रेन से पाकिस्तान जाएंगे।'

'क्या गाँव में कोई परेशानी थी, इंस्पेक्टर साहब? उन्हें क्यों जाना पड़ा?'

Have अगर वे न गए होते तो शायद होता। मुसलमानों को मारने वाली बंदूकों के साथ बहुत सारे बाहरी लोग जा रहे हैं; मल्ली और उनके लोग उनके साथ जुड़ गए हैं। अगर मुसलमानों ने मनो माजरा नहीं छोड़ा होता तो मल्ली अब तक उन्हें खत्म कर देते। वह उनकी सभी चीजें ले गया है - गाय, भैंस, बैल, मार, चिकन, बर्तन। मल्ली ने अच्छा किया है।'

जुग्गा का गुस्सा एक बार में बढ़ गया। 'सुअर का वह लिंग जो अपनी माँ के साथ सोता है, अपनी बहन और बेटी के लिए फुदकता है, अगर वह मनो माजरा में अपना पैर रख दे तो मैं अपने बांस के खंभे को उसके पीछे चिपका दूंगा!'

सबइंस्पेक्टर ने एक ताना भरी मुस्कान में अपने होंठों को शुद्ध किया। 'आप बड़ी बात करते हैं सरदार। सिर्फ इसलिए कि आपने उसे अपने बालों से अनजान पकड़ा और उसे पीटा, आपको लगता है कि आप शेर हैं। मल्ली अपनी हथेलियों या हाथों की चूड़ियों पर मेहंदी लगाने वाली महिला नहीं है। वह मनो माजरा में रहे हैं और वे सभी चीजें ले गए जो वह चाहते थे; वह अभी भी वहाँ है। जब आप वापस आएंगे तो आप उसे देखेंगे।'

'मेरा नाम सुनते ही वह सियार की तरह दौड़ेगा।'

'उसके गिरोह के लोग उसके साथ हैं। तो कई अन्य, सभी बंदूक और हथियारों से लैस हैं

पिस्तौल। यदि आप अपना जीवन प्रिय मानते हैं तो आपने समझदारी से व्यवहार किया है।'

जुग्गा ने सिर हिलाया। 'सही, इंस्पेक्टर साहब। हम फिर मिलेंगे। फिर मुझसे मल्ली के बारे में पूछें।' उसका स्वभाव उससे बेहतर हो गया। 'अगर मैं उसके तलवे में नहीं थूकता तो मेरा नाम जुगुत सिंह नहीं होता।' उसने अपने मुँह को अपने हाथ के पिछले हिस्से से रगड़ा।

'अगर मैं मल्ली के मुँह में नहीं थूकता, तो मेरा नाम जुगुत सिंह नहीं है।' इस बार जुगुत सिंह ने अपने हाथ पर थूक दिया और उसे अपनी जाँघ पर रगड़ा। ताप उबलने के लिए उनका स्वभाव बढ़ गया। उन्होंने कहा, "अगर यह आपकी वर्दी में आपके पुलिसकर्मियों के लिए

नहीं होता, तो मैं एक बेटे के पिता से मिलना चाहता हूँ, जो जुगुत सिंह से पहले पलक झपकने की हिम्मत कर सकता है," उन्होंने कहा, अपनी छाती को बाहर फेंकते हुए।

'ठीक है, सब ठीक है, सरदार जुगुत सिंह, हम सहमत हैं कि आप एक बड़े बहादुर आदमी हैं। कम से कम आप ऐसा सोचते हैं, 'सबइंसपेक्टर मुस्कुराया। Had अंधेरा होने से पहले आप घर से बेहतर हो गए थे। बाबू साहब को अपने साथ ले चलो। बाबू साहब, आपको कोई डर नहीं है। आपके पास देखने के लिए आपके पास जिले का सबसे बहादुर आदमी है। '

इससे पहले कि जुगुत सिंह सबइंसपेक्टर के कटाक्ष का जवाब दे पाता, एक कांस्टेबल यह घोषणा करने के लिए आया कि उसे एक टोंगा मिला है।

'सत श्री अकाल, इंसपेक्टर साहब। जब मल्ली मेरे खिलाफ रिपोर्ट दर्ज करने के लिए रोने लगता है, तो आप विश्वास करेंगे कि जुगुत सिंह खोखले शब्दों का आदमी नहीं है। '

सबइंसपेक्टर हँसा। 'सत श्री अकाल, जुगुत सिंहा। सत श्री अकाल, इकबाल सिंहजी। ' इकबाल बिना पीछे मुड़े वहां से चला गया।

टोंगा ने दोपहर में चुंदुनुगनगर छोड़ा। यह एक लंबी, असमान यात्रा थी। इस बार जुग्गा पुलिसकर्मी और ड्राइवर के साथ आगे की सीट पर बैठ गया, और पीछे की सीट को इकबाल के पास छोड़ दिया। कोई बात करने के मूड में नहीं था। भोला, चालक, को पुलिस द्वारा उस समय सेवा में दबाया गया था जब घर से बाहर निकलना सुरक्षित नहीं था। वह इसे अपनी पतली भूरी घोड़े पर ले गया, लगातार मार रहा था और शपथ ले रहा था। दूसरे अपने विचारों में लीन थे।

देहात तब भी था। पानी के बड़े विस्तार थे जो सामान्य से अधिक चापलूसी करते थे। खेतों में कोई पुरुष या महिला नहीं थे। मवेशी चराने भी नहीं। जिन दो गाँवों से वे गुजरे, वे कुत्तों को छोड़कर निर्जन लग रहे थे। एक या दो बार उन्होंने किसी को एक दीवार के पीछे कदम रखते हुए या एक कोने को सहलाते हुए एक क्षणभंगुर झलक पकड़ी- और किसी ने बंदूक या भाला चलाया।

इकबाल ने महसूस किया कि यह जुग्गा और कॉन्स्टेबल की कंपनी थी, जो सिख थे, जो वास्तव में उन्हें रोकने और पूछताछ करने से बचते थे। वह

काश वह इस स्थान से बाहर निकल पाता, जहाँ उसे अपनी जान बचाने के लिए सिख धर्म को साबित करना पड़ा। वह अपनी चीजों को मनो माजरा से उठाएगा और पहली ट्रेन पकड़ेगा। शायद ट्रेनें नहीं थीं। और अगर वहाँ थे, तो वह एक पर होने का जोखिम उठा सकता था? उन्होंने इकबाल जैसा नाम रखने के लिए अपनी किस्मत को कोसा, और फिर एक होने के लिए शाप दिया

... भारत में पृथ्वी को छोड़कर कहाँ एक आदमी का जीवन इस बात पर निर्भर करेगा कि उसकी चमड़ी को हटाया गया था या नहीं? यह दुखद होगा अगर यह दुखद न हो। उसे कई दिनों तक मनो माजरा में रहना होगा और सुरक्षा के लिए मीट सिंह के करीब रहना होगा - सिंह से उसकी अस्वाभाविक उपस्थिति और शौच करने के लिए एक दिन में दो यात्राएँ करनी होंगी। विचार विद्रोह कर रहा था। यदि केवल वह दिल्ली के लिए और सभ्यता के लिए निकल सकता था! वह अपनी गिरफ्तारी पर रिपोर्ट करेगा; पार्टी का पेपर उनकी तस्वीर के साथ समाचार को आगे बढ़ाएगा : ANGLO-AMERICAN CAPITALIST CONSPIRACY TO CREATE CHAOS (प्यारा गठजोड़)। बॉर्डर पर COMRADE IQBAL इम्प्रूटड। यह सब उसे हीरो बनाने के लिए जाता।

जुगगा की तात्कालिक चिंता नूरन की किस्मत थी। वह अपने साथियों को टोंगा या गाँव में नहीं देखता था। वह मल्ली के बारे में भूल गया था। उसके दिमाग में सबसे पहले एक भावना बनी रही कि नूरां मनो माजरा में होगी। कोई भी नहीं चाह सकता था कि इमाम बकश जायें। यहां तक कि अगर वह अन्य मुसलमानों के साथ नूरन को छोड़ देता, तो खेतों में कहीं छिप जाता, या अपनी मां के पास आ जाता। उन्होंने उम्मीद जताई कि उनकी मां ने उन्हें बाहर नहीं निकाला है। अगर वह होता, तो वह उसे रहने देती। वह बाहर घूमता और कभी वापस नहीं आता। वह अपने बाकी दिनों को पछतावा करने में व्यतीत करती थी।

जुगगा अपने विचारों में खो गया, चिंतित और गुस्से में वैकल्पिक रूप से, जब टोंगा धीमा होकर लेन से सिकंदर मंदिर तक गया। वह चलती गाड़ी से कूद गया और विदाई के शब्द के बिना अंधेरे में गायब हो गया।

इकबाल ने टोंगा से कदम बढ़ाया और अपने अंग फैला लिए। ड्राइवर और कांस्टेबल ने फुसफुसाहट की।

'क्या मैं आपके लिए कोई और सेवा कर सकता हूँ, बाबू साहब?' पुलिस वाले से पूछा।

'नहीं। नहीं धन्यवाद। मैं ठीक हूँ। मेहरबानी आपकी।' इकबाल को पसंद नहीं आया अकेले गुरुद्वारे में जाने की संभावना, लेकिन वह खुद को दूसरों के साथ आने के लिए कहने के लिए नहीं ला सका।

'बाबूजी, हमें अभी लंबा रास्ता तय करना है। मेरा घोड़ा पूरे दिन बिना किसी भोजन या पानी के बाहर रहा है; और आप समय को जानते हैं।'

'हाँ, तुम वापस जा सकते हो। धन्यवाद। सत श्री अकाल।' 'सत श्री अकाल।'

गुरुद्वारे के आंगन को प्रकाश कलाकारों के छल्ले के साथ देखा गया था

तूफान के लैंप और आग पर सुधरा हुआ चूल्हा जिस पर महिलाएं शाम का खाना पका रही थीं। मुख्य हॉल के अंदर मीट सिंह के आसपास लोगों का एक समूह था, जो शाम की प्रार्थना का पाठ कर रहा था। जिस कमरे में इकबाल ने अपनी चीजें छोड़ी थीं, वह बंद था।

इकबाल ने अपने जूते उतार दिए, अपने सिर को रूमाल से ढँक लिया और सभा में शामिल हो गया। कुछ लोग उसके लिए जगह बनाने के लिए शिफ्ट हो गए। इकबाल ने देखा कि लोग उसे देख रहे थे और एक-दूसरे को देख रहे थे। उनमें से ज्यादातर बूढ़े लोग शहर के लोगों की तरह कपड़े पहने थे। यह स्पष्ट था कि वे शरणार्थी थे।

जब प्रार्थना समाप्त हो गई, तो मीट सिंह ने भारी मात्रा में मखमल लपेटा और उसे उस खाट पर आराम करने के लिए बिछाया, जिस पर वह खुला पड़ा था। इससे पहले कि वह कोई और सवाल पूछ पाता, उसने इकबाल से बात की।

'सत श्री अकाल, इकबाल सिंहजी। मुझे खुशी है कि आप वापस आ गए हैं। आप भूखे होंगे।' इकबाल ने महसूस किया कि मीट सिंह ने जानबूझकर अपने उपनाम का उल्लेख किया था। वह

तनाव को आराम महसूस कर सकता था। कुछ लोगों ने कहा और 'सत श्री अकाल' कहा।

'सत श्री अकाल' ने इकबाल को जवाब दिया और मीट सिंह से जुड़ने के लिए उठ गया।

'सरदार इकबाल सिंह,' मीट सिंह ने कहा, उन्हें दूसरों से मिलवाया, 'एक सामाजिक कार्यकर्ता हैं। वह कई सालों से इंग्लैंड में हैं।'

'इंग्लैंड लौट आए' इकबाल पर निगाहें जमाई हुई थीं। 'सत श्री अकाल' को दोहराया गया। इकबाल को शर्मिंदगी महसूस हुई।

'आप सिख हैं, इकबाल सिंहजी?' एक आदमी से पूछताछ की।



'हाँ।' एक पखवाड़े पहले उन्होंने जोर से जवाब दिया था 'नहीं', या 'मेरा कोई धर्म नहीं है' या 'धर्म अप्रासंगिक है।' अब स्थिति अलग थी, और किसी भी मामले में यह सच था कि वह एक सिख पैदा हुआ था।

'क्या इंग्लैंड में आपने अपने बाल कटवाए थे?' उसी व्यक्ति से पूछा।

'नहीं, सर,' ने इकबाल को जवाब दिया, पूरी तरह से भ्रमित। 'मैंने कभी अपने बाल लंबे नहीं किए। मैं लंबे बालों और दाढ़ी के बिना सिर्फ एक सिख हूँ।'

मीट सिंह ने उनकी सहायता के लिए कहा, 'आपके माता-पिता अपरंपरागत रहे होंगे।'

बयान ने संदेह व्यक्त किया लेकिन इकबाल ने एक असहज विवेक के साथ छोड़ दिया।

मीट सिंह ने अपने शॉर्ट्स की नाल से ठोकर खाई और एक झुंड को खींच लिया चाबी अंत में झूलने। उन्होंने धर्मग्रंथों के पास स्टूल से तूफान लालटेन उठाया और आंगन से कमरे तक का रास्ता तय किया।

'मैंने तुम्हारी बातों को कमरे में बंद कर रखा था। आप उन्हें ले जा सकते हैं। मुझे कुछ खाने को मिलेगा।'

'नहीं, भाईजी, परेशान न हों, मेरे साथ काफी है। बताओ, मेरे जाने के बाद से गाँव में क्या हुआ है? ये सब कौन है?'

भाई ने दरवाजा खोला और आला में एक तेल का दीपक जलाया। इकबाल ने अपना लोकार्पण किया

किट बैग और एक चारपाई पर अपनी सामग्री खाली कर दी। मछली के पेस्ट, मक्खन और पनीर के कई तांबे-सोने के टिन थे; एल्यूमीनियम कांटे, चाकू और चम्मच, और सेल्युलाइड कप और साँसर।

'भाईजी, क्या हो रहा है?' इकबाल ने फिर पूछा।

'क्या हो रहा है? मुझसे पूछो क्या नहीं हो रहा है। मृतक लोगों के ट्रेन का भार मनोहर माजरा पर आ गया। हमने एक को जलाया और दूसरे को दफनाया। नदी लाशों से भर गई थी। मुसलमानों को निकाला गया और उनकी जगह पर पाकिस्तान से शरणार्थी आए हैं। आप और क्या जानना चाहते हैं?'

इकबाल ने अपने रूमाल से एक सेल्युलाइड प्लेट और टम्बलर मिटा दिया। उसने अपने चांदी के कूल्हे की कुप्पी उधेड़ कर रख दी। यह भरा हुआ था।

'उस चांदी की बोतल में तुम्हारा क्या है?'

'अरे ये? चिकित्सा, 'इकबाल लड़खड़ाया। 'यह मुझे भोजन की भूख देता है,' उन्होंने एक मुस्कान के साथ जोड़ा।

'और फिर आप इसे पचाने के लिए गोलियां लेते हैं?'

इकबाल हँसा। 'हाँ, और अधिक करने के लिए आंत्र काम करते हैं। बताओ, क्या गाँव में कोई हत्या कर रहा था?'

'नहीं,' भाई ने लापरवाही से कहा। वह हवाई गद्दे को फुलाते हुए इकबाल को देखने में अधिक रुचि रखते थे। 'लेकिन वहाँ होगा। क्या इस पर सोना अच्छा है? क्या इंग्लैंड में हर कोई इन पर सोता है?'

'तुम्हारा क्या मतलब है - वहाँ हत्या होगी?' इकबाल से पूछा, गद्दी के अंत में प्लग। 'सभी मुसलमानों को छोड़ दिया है, वे नहीं है?'

'हां, लेकिन वे आज रात पुल के पास ट्रेन पर हमला करने वाले हैं। यह चुंदनुगनगर और मनो माजरा के मुसलमानों को पाकिस्तान ले जा रहा है। तुम्हारा तकिया भी हवा से भरा है।'

'हाँ। वे कौन हैं? गाँव वाले नहीं?'

'मैं उन सभी को नहीं जानता। वर्दी में कुछ लोग सैन्य कारों में आए। उनके पास पिस्तौल और बंदूकें थीं। शरणार्थी उनके साथ जुड़ गए हैं। इसलिए मल्ली बदमाश और उसका गिरोह और कुछ ग्रामीण हैं। अगर कोई भारी व्यक्ति इस पर सोया तो यह फट नहीं जाएगा?' गद्दे का दौहन करते हुए मीट सिंह से पूछा।

मीट सिंह के सवाल को नजरअंदाज करते हुए इकबाल ने कहा, 'मैं देखता हूँ।' 'मैं अब चाल देखती हूँ। इसीलिए पुलिस ने मल्ली को रिहा किया। अब मुझे लगता है कि जुग्गा उनसे भी जुड़ जाएगा। यह सब व्यवस्थित है।' उसने खुद को गद्दे पर फैला लिया और तकिया को अपनी कांख के नीचे दबा दिया। 'भाईजी, क्या आप इसे रोक नहीं सकते? वे सब आपकी बात सुनते हैं।'

सिंह से मिले और हवा के गद्दे को चिकना किया और फर्श पर बैठ गए। 'बूढ़े भाई की कौन सुनता है? ये बुरे वक्त हैं, इकबाल सिंहजी, बहुत बुरे वक्त हैं। कोई विश्वास या धर्म नहीं है।

सभी एक सुरक्षित कोने में झुकना है

जब तक तूफान खत्म नहीं हो जाता। यह एक नवविवाहित जोड़े के लिए नहीं होगा, 'वह

जोड़ा, गद्दे को प्यार से थप्पड़ मारा।

इकबाल तड़प रहे थे। 'आप इस तरह की बात नहीं होने दे सकते! आप नहीं बता सकते उन्हें लगता है कि ट्रेन में वे लोग वही लोग हैं जिन्हें वे चाचा, चाची, भाई और बहन के रूप में संबोधित कर रहे थे।'

सिंह से मिला। उसने अपने कंधे पर दुपट्टे से आंसू पोंछे। 'मेरे कहने से उन्हें क्या फर्क पड़ेगा? वे जानते हैं कि वे क्या हैं करते हुए। वे मार देंगे। यदि यह सफल होता है, तो वे धन्यवाद के लिए गुरुद्वारे में आएंगे। वे अपने पापों को धोने के लिए प्रसाद भी बनाएंगे। इकबाल सिंहजी, मुझे अपने बारे में बताइए। यदि तुम स्वस्थ होते? क्या उन्होंने पुलिस स्टेशन में आपके साथ सही व्यवहार किया?'

'हाँ, हाँ, मैं बिलकुल ठीक था,' इकबाल ने अधीरता से बोला। 'तुम कुछ क्यों नहीं करते? तुम्हें अवश्य करना चाहिए!'

'मैंने वह सब किया है जो मैं कर सकता था। मेरा कर्तव्य लोगों को बताना है कि क्या सही है और क्या नहीं। यदि वे बुराई करने पर ज़ोर देते हैं, तो मैं परमेश्वर से उन्हें क्षमा करने के लिए कहता हूँ। मैं केवल प्रार्थना कर सकता हूँ; बाकी पुलिस और मजिस्ट्रेट के लिए है। और आपके लिए।'

'मुझे? मैं ही क्यों?' इकबाल से एक चौंका देने वाली मासूमियत के साथ। 'मुझे इससे क्या लेना-देना? मैं इन लोगों को नहीं जानता। उन्हें किसी अजनबी की बात क्यों सुननी चाहिए?'

Something जब तुम आए थे तो तुम उनसे कुछ बोलने जा रहे थे। अब आप उन्हें क्यों नहीं बताते?'

इकबाल चिंतित महसूस करते हैं। 'भाईजी, जब लोग बंदूक और भाले लेकर चलते हैं तो आप केवल बंदूक और भाले के साथ ही बात कर सकते हैं। यदि आप ऐसा नहीं कर सकते हैं, तो उनके रास्ते से बाहर रखना सबसे अच्छा है।'

'ठीक यही मैं कहता हूँ। मुझे लगा कि आप अपने यूरोपीय विचारों के साथ कुछ और उपाय करेंगे। मुझे तुम्हें कुछ गर्म पालक मिलता है। मैंने सिर्फ इसे पकाया है, 'मीट सिंह उठ रहा है।

'नहीं, नहीं, भाईजी, मेरे पास जो कुछ भी है, मैं अपने टिन्स में चाहता हूँ। अगर मुझे कुछ चाहिए तो मैं आपसे इसके लिए पूछूंगा। मुझे खाने से पहले थोड़ा काम करना है।'

मीत सिंह ने तूफान वाले लालटेन को एक स्टूल पर बिस्तर पर रख दिया और वापस हॉल में चले गए।

इकबाल ने अपनी प्लेटें, चाकू, कांटा और टिन वापस हावरैक में डाल दिए। वह थोड़ा बुखार महसूस करता था, जिस तरह का बुखार महसूस करता है जब कोई प्यार की घोषणा करने वाला होता है। किसी चीज की घोषणा का समय था। केवल वह निश्चित नहीं था कि यह क्या होना चाहिए।

क्या उसे बाहर जाना चाहिए, भीड़ का सामना करना चाहिए और उन्हें स्पष्ट रिंग टोन में बताना चाहिए कि यह गलत था - अनैतिक? उनकी आँखों के साथ एक फ्रेम में सशस्त्र भीड़ को ठीक करने के लिए उनके पास चलो - बिना पलकें झपकाए, बिना हीरो की तरह

स्क्रीन जो बड़े और बड़े हो जाते हैं जैसे वे कैमरे में चलते हैं। फिर गरिमा के साथ धमाकों के एक वॉली के नीचे आते हैं, या अधिमानतः राइफलशॉट की एक वॉली। एक ठंडा रोमांच इकबाल की रीढ़ में चला गया।

बलिदान के इस सर्वोच्च कार्य को देखने वाला कोई नहीं होगा। वे उसे वैसे ही मार डालेंगे जैसे वे दूसरों को मारेंगे। उनकी नजर में वह तटस्थ नहीं था। वे बस उसे पट्टी करते और देखते थे। खतना हुआ, इसलिए मुसलमान। यह जीवन की पूरी बर्बादी होगी! और इससे क्या लाभ होगा? कुछ अमानवीय प्रजातियाँ अपने ही कुछ प्रकारों का वध करने जा रही थीं - चार मिलियन की वार्षिक वृद्धि के लिए एक हल्का झटका। ऐसा नहीं था कि आप अच्छे लोगों को बुरे से बचाने जा रहे थे। दूसरों के पास मौका होता तो वे उतना ही करते। वास्तव में वे ऐसा कर रहे थे, नदी से थोड़ा ही आगे। यह व्यर्थ था। अराजकता की स्थिति में आत्म-संरक्षण सर्वोच्च कर्तव्य है।

इकबाल ने अपने कूल्हे कुप्पी के शीर्ष को हटा दिया और एक सेल्युलाइड टंबलर में एक बड़ी व्हिस्की डाली। उन्होंने इसे नीरसता से भरा।

जब गोलियों के बारे में उड़ता है, तो आपके सिर को बाहर निकालने और गोली मारने का क्या मतलब है? गोली तटस्थ है। यह अंतर के बिना अच्छे और बुरे, महत्वपूर्ण और महत्वहीन को मारता है। यदि सिनेमा स्क्रीन पर, आत्म-हनन के कार्य को देखने के लिए लोग थे, तो बलिदान के लायक हो सकता है: एक नैतिक सबक से अवगत कराया जा सकता है। अगर यह सब होने की संभावना थी, तो अगली सुबह आपकी लाश हजारों अन्य लोगों के बीच में मिलेगी, उनकी तरह दिखने वाले बाल- मुड़े हुए बाल, मुड़ी हुई ठुड़ी ... यहां तक कि खतना भी किया गया था - कौन जानता होगा कि आप एक नरसंहार के शिकार मुस्लिम नहीं थे? कौन जानता होगा कि आप एक सिख थे, जो परिणामों की पूरी जानकारी के साथ, फायरिंग दस्ते के चेहरे पर चले गए थे ताकि यह साबित हो सके कि अच्छाई बुराई पर विजय प्राप्त करना चाहिए? और भगवान - नहीं, भगवान नहीं; वह अप्रासंगिक था।

इकबाल ने एक और व्हिस्की डाली। इससे उसका दिमाग तेज हो गया था।

बलिदान की बात, उसने सोचा, उद्देश्य है। इस उद्देश्य के लिए, यह पर्याप्त नहीं है कि कोई चीज आंतरिक रूप से अच्छी हो: यह अच्छा होना चाहिए। यह केवल स्वयं के भीतर जानने के लिए पर्याप्त नहीं है कि कोई सही में है: संतुष्टि मरणोपरांत होगी। किसी दोस्त को बचाने के लिए स्कूल में सजा लेने जैसी बात नहीं थी। उस मामले में आप अच्छा महसूस कर सकते हैं और बलिदान का आनंद लेने के लिए जी सकते हैं; इसमें तुम मारे जा रहे थे। इससे समाज का भला नहीं होगा: समाज कभी नहीं जान पाएगा। न ही अपने आप को: आप मर जाएगा। स्क्रीन पर वह आंकड़ा, उन हजारों लोगों का सामना कर रहा है जो तनावग्रस्त और चिंतित दिखते हैं! वे सबक प्राप्त करने के लिए तैयार थे। वह तो पूरी बात

का क्रेज था। प्राप्तकर्ता को प्राप्त करने के लिए तैयार होने पर ही कर्ता को करना चाहिए। अन्यथा, अधिनियम व्यर्थ है।

उसने गिलास फिर से भर दिया। सब कुछ स्पष्ट हो रहा था।

यदि आप वास्तव में मानते हैं कि चीजें इतनी सड़ी हुई हैं कि आपका पहला कर्तव्य नष्ट करना है - स्लेट को साफ करना - तब आपको विनाश के छोटे कामों में हरा नहीं होना चाहिए। अपने कर्तव्य जो लोग आग बनाने के साथ आनाकानी करने के लिए है, एक नैतिक चालू करने के लिए नहीं नली-पाइप पर करने के लिए उन्हें- इस तरह के एक शक्तिशाली अराजकता है कि सभी कि स्वार्थ, असहिष्णुता, लालच, झूठ, चाटुकारिता की तरह सड़ा हुआ है, डूब गया है पैदा करते हैं। रक्त में, यदि आवश्यक हो।

भारत काफ़ी हद तक कब्ज़ है। धर्म को लें। हिंदू के लिए, यह जाति और गौ-संरक्षण के अलावा बहुत कम है। मुस्लिम, खतना और कोषेर मांस के लिए। सिखों के लिए, लंबे बाल और मुसलमान से घृणा। ईसाई, हिंदू धर्म के लिए एक सोला टोपे के साथ। पारसी के लिए, अग्नि-पूजा और गिद्धों को खिलाना। नैतिकता, जो एक धार्मिक कोड की कर्नेल होनी चाहिए, सावधानीपूर्वक हटा दी गई है। दर्शन लो, जिसके बारे में इतना हू-ब-हू है। यह रहस्यवाद के रूप में सिर्फ अव्यवस्था की ओर अग्रसर है। और योग, विशेष रूप से योग, डॉलर का वह उत्कृष्ट अर्जक! अपने सर के बल खड़े हो जाओ। क्रॉस-लेग्ड बैठें और अपनी नाभि को अपनी नाक से गुदगुदी करें। इंद्रियों पर पूर्ण नियंत्रण रखें। महिलाओं को तब तक रोते हैं जब तक कि वे 'पर्याप्त!' और आप अपनी आँखें खोले बिना 'नेक्स्ट, प्लीज' कह सकते हैं। और पुनर्जन्म के सभी मम्मो-जंबो। आदमी को आठ लाख चार सौ हजार प्रकार की चेतन चीजों में बीटल में बैल में डाल दिया। प्रमाण? हम सबूत के रूप में ऐसे पैदल यात्रियों के लिए नहीं जाते हैं! वह पश्चिमी है। हम रहस्यमयी पूर्व के हैं। कोई प्रमाण नहीं, सिर्फ विश्वास। कोई कारण नहीं, सिर्फ विश्वास। सोचा, जो दार्शनिक संहिता की साइन क्वालिफिकेशन नॉन होनी चाहिए, से डिसाइड किया जाता है। हम कल्पना के पंखों पर उदात्त ऊंचाइयों पर चढ़ते हैं। हम रचनात्मक जीवन के सभी क्षेत्रों में रस्सी चाल करते हैं। जब तक दुनिया एक रस्सी को आसमान की ओर बनाने की हमारी क्षमता पर विश्वास करती है और एक छोटा लड़का इसे तब तक चढ़ता है जब तक वह देखने से बाहर नहीं हो जाता है, तब तक हमारा ब्रांड हंबग होगा।

कला और संगीत को लें। समकालीन भारतीय चित्रकला, संगीत, वास्तुकला और मूर्तिकला क्यों इतनी फ्लॉप रही है? क्योंकि यह ई.पू. को नुकसान पहुंचाता रहता है। अगर यह एक पैटर्न न बन जाए तो हार्किंग वापस आ जाएगी। यदि ऐसा होता है, तो हम कला रूपों के एक अपराध-डी-सैक में हैं। हम अनाकर्षक को दिखावा करके समझाते हैं कि यह गूढ़ है। या हम पूरी तरह से टूट जाते हैं - फिल्मों के आधुनिक भारतीय संगीत की तरह। यह सभी टैगो और रूंबा या सांबा है, जो हवाई गिटार, वायलिन, अकॉर्डियन और शहनाई पर बजाया जाता है। यह बदसूरत है। इसे बाकियों की तरह बिखरा हुआ होना चाहिए।

वह निश्चित नहीं था कि उसका क्या मतलब है। उसने एक और व्हिस्की पी। बुरे की चेतना को बढ़ावा देने के लिए एक आवश्यक शर्त है अच्छा। यह कोई उपयोग नहीं है एक घर पर दूसरी मंजिल बनाने की कोशिश कर रहा है जिसकी दीवारें हैं

साडी गली। इसे ध्वस्त करना सबसे अच्छा है। समाज में न तो समाज के मानकों पर और न ही अपने मानकों में विश्वास करने पर यह सामाजिक मानकों के लिए कायरतापूर्ण और मूर्खतापूर्ण दोनों है। उनका साहस आपकी कायरता है, उनकी कायरता आपका साहस। यह सब नामकरण का मामला है। कोई कह सकता है कि यह कायर होने के लिए साहस की आवश्यकता है। एक पहली, लेकिन एक उद्धरण। इसे नोट कर लें।

और एक और व्हिस्की है। व्हिस्की पानी की तरह थी। इसका कोई स्वाद नहीं था। इकबाल ने कुप्पी हिला दी। उसने एक बेहोश फुहार सुनी। यह खाली नहीं था। भगवान का शुक है, यह खाली नहीं था।

यदि आप चीजों को देखते हैं जैसे कि वे हैं, तो उन्होंने खुद को बताया, ऐसा प्रतीत नहीं होता कि कोई कोड या तो मनुष्य या भगवान का है, जिस पर किसी के आचरण का पैटर्न हो सकता है। गलत पर जितना सही, उतने पर गलत जीतता है। कभी-कभी इसकी विजय अधिक होती है। आखिरकार क्या होता है, आप नहीं जानते। ऐसी परिस्थितियों में आप क्या कर सकते हैं लेकिन सभी मूल्यों के प्रति पूरी तरह से उदासीनता पैदा करते हैं? कुछ भी मायने रखती है। कुछ भी नहीं...

इकबाल सो गया, उसके हाथ में सेल्युलाइड ग्लास और उसके पास स्टूल पर जलता हुआ दीपक था।

गुरुद्वारे के प्रांगण में, चूल्हों पर लगी आग जलकर राख हो गई थी। हवा का एक झोंका कभी-कभी एक चमकता हुआ अंगार निकाल देता है। लैंप्स मंद पड़ गए थे। पुरुष, महिलाएं और बच्चे मुख्य कमरे के फर्श पर बिखरे हुए थे। मीत सिंह जाग गया था। वह फर्श पर झाड़ू लगा रहा था और गंदगी को देख रहा था।

किसी ने दरवाजे पर उसकी मुट्ठी से पीटना शुरू कर दिया। मीत सिंह ने झाड़ू लगाना बंद कर दिया और आंगन में घूमते हुए बोला, 'कौन है?'

उसने कुंडी खोल दी। जुगगा ने अंदर कदम रखा। अंधेरे में वह पहले से कहीं ज्यादा बड़ा दिख रहा था। उसके फिगर ने चौखट भर दी।

'क्यों, जुगुत सिंहजी, आपने इस समय यहां क्या व्यवसाय किया है?' मीत सिंह से पूछा।

'भई,' वह फुसफुसाया, 'मुझे गुरु का वचन चाहिए। क्या तुम मुझे एक श्लोक पढ़ा दोगे?'

मीत सिंह ने कहा, 'मैंने रात को आराम करने के लिए ग्रन्थ साहिब को रखा है।' 'क्या है यह आप करना चाहते हैं?'

जुगगा ने अधीरता से कहा, 'इससे कोई फर्क नहीं पड़ता।' उन्होंने मीत सिंह के कंधे पर एक भारी हाथ रखा। 'क्या तुम मुझे जल्दी से कुछ पंक्तियाँ पढ़कर सुनाओगे?'

मीत सिंह ने बड़बड़ाते हुए रास्ता दिखाया। 'आप कभी किसी और समय गुरुद्वारे में नहीं आए। अब जब शास्त्र आराम कर रहा है और लोग सो रहे हैं, तो आप चाहते हैं कि मैं गुरु के वचन को पढ़ूं। यह उचित नहीं है। मैं आपको मॉर्निंग प्रेयर से एक अंश पढ़कर सुनाऊंगा।'

'इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि आपने क्या पढ़ा। जरा इसे भी पढ़ें।'

मीत सिंह ने एक लालटेन की बाती उठाई। इसकी कालिख वाली चिमनी उज्ज्वल हो गया। वह खाट के पास बैठ गया जिस पर शास्त्र पड़ा था। जुगगा ने खाट के नीचे से मक्खी की चोंच उठाई और मीत सिंह के सिर पर लहराते हुए चलने लगी। मीत सिंह ने एक छोटी सी प्रार्थना पुस्तक निकाली, उसे अपने माथे से लगा लिया और उस पृष्ठ पर पद्य को पढ़ना शुरू कर दिया, जो उसने खोला था:

वह जिसने रात और दिन बनाया,  
सप्ताह और मौसम के दिन।  
जिसने हवा के झोंके उड़ाए, पानी चला,  
आग और निचले क्षेत्रों।  
पृथ्वी को बनाया - कानून का मंदिर।  
वह जिसने विविध प्रकार के जीव बनाए  
नामों की एक भीड़ के साथ,  
यह कानून बनाया-  
विचार और कर्म के कारण,  
क्योंकि परमेश्वर सत्य है और सत्य को दूर करता है।  
वहाँ का चुनाव उनके दरबार में सजी,  
और ईश्वर स्वयं उनके कार्यों का सम्मान करते हैं।  
छांटे गए कर्म हैं और फल हैं,  
उन है कि कार्रवाई करने के लिए कभी नहीं पक सका।  
हे नानक, इसके बाद होगा।

मीत सिंह ने प्रार्थना पुस्तक को बंद कर दिया और फिर से उसके माथे से लगा दिया।  
उन्होंने सुबह की प्रार्थना के लिए उपसंहार को गुनगुनाना शुरू किया:

वायु, जल और पृथ्वी  
इनमें से हम बने हैं,  
गुरु के वचन की तरह हवा जीवन की सांस देती है  
महान माँ पृथ्वी से पैदा हुई लड़की को  
पानी से तर।

उसकी आवाज एक अशोभनीय फुसफुसाहट से बंद हो गई। जुगुत सिंह ने मक्खी की  
पीठ पर हाथ फेरा और अपना माथा जमीन पर पटक दिया।

'क्या वह अच्छा है?' उसने भोलेपन से पूछा।

" गुरु के सभी शब्द अच्छे हैं, " सिंह ने पूरी ईमानदारी से जवाब दिया।

'इसका क्या मतलब है?'

Have अर्थ के साथ क्या करना है? यह सिर्फ गुरु का वचन है। यदि आप कुछ  
अच्छा करने जा रहे हैं, तो गुरु आपकी मदद करेंगे; यदि आप कुछ बुरा करने जा रहे हैं,  
तो गुरु आपके रास्ते में खड़े होंगे। यदि आप ऐसा करने में लगे रहते हैं, तो वह आपको  
पश्चाताप करने तक दंडित करेगा, और फिर आपको क्षमा करेगा। '

'हाँ, अर्थी के साथ क्या करूँगा? सब ठीक है भाईजी। सत श्री अकाल। ' 'सत श्री  
अकाल।'

जुग्गा ने अपना माथा फिर से ज़मीन पर रगड़ा और उठ गई। उन्होंने सोते हुए  
विधानसभा के माध्यम से अपना रास्ता बुना और अपने जूते उठाए। एक कमरे में रोशनी  
थी। जुग्गा ने देखा। उसने तकिए पर सिर के कटे बालों से पहचान लिया। इकबाल चांदी के  
कूल्हे की कुल्हाड़ी लेकर सो रहा था।

'सत श्री अकाल, बाबूजी।' उसने धीरे से कहा। कोई जवाब नहीं था। 'क्या आप सो रहे  
हैं?' मीट सिंह को कानाफूसी में बाधित करते हुए, " उसे परेशान मत करो। 'वह महसूस  
नहीं कर रहा है

कुंआ। वह सोने के लिए दवा ले रहा है। '

'अच्चा, भाईजी, आप मेरे लिए सत श्री अकाल कहिए।' जुगुत सिंह गुरुद्वारे से बाहर चले गए।

'पुराने मूर्ख की तरह मूर्ख नहीं।' हुकुम चंद के दिमाग में यह वाक्य बार-बार आता रहा। उन्होंने इसे खारिज करने की कोशिश की, लेकिन यह बार-बार वापस आया: 'कोई मूर्ख की तरह मूर्ख नहीं।' यह काफी बुरा था कि एक शादीशुदा आदमी को पचास के दशक में महिलाओं को लेने जाना पड़ता था। एक युवा लड़की के साथ भावनात्मक रूप से जुड़ने के लिए उसकी बेटी और उस पर एक मुस्लिम वेश्या होना! वह बहुत ही भद्दा था। उसे चीजों पर अपनी पकड़ खोनी चाहिए। वह अधमरा और बेवकूफ हो रहा था।

प्रातः काल की भावना जो उसकी योजना ने उसे दी थी सुबह चली गई थी। इसके बजाय चिंता, अनिश्चितता और बुढ़ापे में से एक था। उन्होंने बदमाश और सामाजिक कार्यकर्ता को उनके बारे में ज्यादा कुछ जाने बिना रिहा कर दिया था। उनके पास शायद उससे अधिक तंत्रिका नहीं थी। कुछ वामपंथी सामाजिक कार्यकर्ताओं को एक साहसी व्यक्ति के रूप में जाना जाता था। यह एक, हालांकि, एक बौद्धिक था, जिस तरह के लोग अवमानना किस्म के रूप में वर्णित करते हैं। वह शायद अपना कर्तव्य निभाने में असफल रहने के लिए दूसरों की आलोचना करने के अलावा कुछ नहीं करेगा। बदमाश कुख्यात डेयरडेविल था। वह ट्रेन डकैती, कार होल्ड-अप, डकैती और हत्याओं में शामिल था। यह वह पैसा था जो वह था, या बदला लेने के बाद। उनके कुछ भी करने का एकमात्र मौका मल्ली के साथ स्कोर तय करना था। अगर जुगगा के आने की बात सुनकर मल्ली भाग गया होता, तो जुगगा रुचि खो देता और शायद घात के शिकार लोगों को मारने और लूटने में भी गिरोह में शामिल हो जाता। उनके प्रकार ने कभी भी महिलाओं के लिए अपनी गर्दन को जोखिम में नहीं डाला। अगर नूरान मारा जाता, तो वह दूसरी लड़की को उठा ले जाता।

हुकुम चंद भी अपनी भूमिका को लेकर असहज थे। क्या उसके लिए काम करने के लिए दूसरों को पाना काफी था? कानून और व्यवस्था बनाए रखने के लिए मजिस्ट्रेट जिम्मेदार थे। लेकिन उन्होंने अपने पीछे शक्ति के साथ आदेश बनाए रखा; उनका विरोध नहीं। शक्ति कहाँ थी? दिल्ली के लोग क्या कर रहे थे? विधानसभा में बढ़िया भाषण देना! लाउडस्पीकर अपने अहं को बढ़ाते हुए; सांसों में आगंतुकों की दीर्घाओं में सुंदर दिखने वाली विदेशी महिलाएं

प्रशंसा। 'वह एक महान व्यक्ति है, यह श्री नेहरू। मुझे लगता है कि वह आज दुनिया का सबसे महान व्यक्ति है। और कितने सुंदर! यह एक अद्भुत बात नहीं थी? "बहुत पहले हमने नियति के साथ एक कोशिश की थी और अब समय आ गया है जब हम अपनी प्रतिज्ञा को पूरी तरह से या पूर्ण माप में नहीं बल्कि बहुत हद तक भुनाएंगे।" 'हां, श्रीमान प्रधानमंत्री, आपने अपना प्रयास किया। तो कई अन्य किया।

हुकुम चंद के सहयोगी प्रेम सिंह थे, जो लाहौर से अपनी पत्नी के जेवर वापस लाने गए थे। उन्होंने फेलेटी के होटल में अपनी कोशिश की, जहाँ यूरोपीय साहब एक-दूसरे की पत्नियों के साथ इश्कबाज़ी करते थे। यह पंजाब विधानसभा भवन के बगल में है जहां पाकिस्तानी सांसदों ने लोकतंत्र की बात की और कानून बनाए। प्रेम सिंह ने बीयर पीने और होटल में ठहरने वाले अंग्रेजों को इसे भेंट करने का समय निकाल दिया। प्रिवेट हेज पर एक दर्जन से अधिक हेड्स हैं जिनमें फेज़ कैप और पठान पगड़ी उनका इंतजार कर रहे थे। उसने अधिक बीयर पी ली और उसे अपने अंग्रेजी दोस्तों और ऑर्केस्ट्रा पर मजबूर कर दिया। हेज के पार उनकी तारीखें धैर्य से इंतजार करती थीं। अंग्रेजों ने बहुत सारी बीयर और व्हिस्की पी और कहा कि प्रेम सिंह एक भव्य चैप था। लेकिन रात के खाने में देर हो चुकी

थी, इसलिए उन्होंने कहा, 'गुड नाइट मिस्टर ... आपका नाम नहीं पकड़ा। हां, बिल्कुल, श्री सिंह। बहुत बहुत धन्यवाद श्री सिंह। फिर मिलेंगे।' ... 'अच्छा पुराना वांग। अपने ड्रिक को भी पकड़ सकते हैं, 'उन्होंने भोजन कक्ष में कहा। यहां तक कि ऑर्केस्ट्रा में पहले से ज्यादा बीयर थी। 'आप हमसे क्या खेलना चाहेंगे, सर?' मेंडोज़ा ने गोयन बैंडलाडर से पूछा। 'यह देर हो चुकी है और हमें अब बंद करना होगा।' प्रेम सिंह संगीत के किसी भी यूरोपीय टुकड़े का नाम नहीं जानते थे। उसने बड़ी मेहनत से सोचा। उसे याद आया कि अंग्रेजों में से एक ने कुछ पूछा था, जो 'केले' की तरह लग रहा था। 'केले', प्रेम सिंह ने कहा। "" आज हमारे पास कोई केले नहीं हैं। "" हाँ, सर। " मेंडोज़ा, मैकमेलो, डेसिल्ला, देसाराम और गोम्स ने 'केले' पर हमला किया। प्रेम सिंह लॉन से गेट की तरफ चल दिए। उनकी तारीखें भी हेज गेट की ओर बढ़ीं। बैंड ने प्रेम सिंह को छोड़ दिया, इसलिए उन्होंने 'गॉड सेव द किंग' पर स्विच किया।

हुकुम चंद की अर्दली की बेटी सुंदरी थी। उसने गुजरांवाला की सड़क पर नियति के साथ अपनी कोशिश की थी। उसकी शादी को चार दिन हो चुके थे और उसकी दोनों बाँहें लाल लाख की चूड़ियों से ढँकी हुई थीं और उसकी हथेलियों पर मेंहदी अभी भी एक गहरी सिंदूर लगी थी। वह अभी तक मनसा राम के साथ नहीं सोई थी। उनके रिश्तेदारों ने उन्हें एक मिनट के लिए भी अकेला नहीं छोड़ा था। उसने अपने घूँघट के माध्यम से अपना चेहरा शायद ही देखा था। अब वह उसे गुजरांवाला ले जा रहा था जहाँ उसने एक चपरासी के रूप में काम किया था और सत्र न्यायालय परिसर में उसका अपना एक छोटा कमरा था। कोई रिश्तेदार नहीं होगा और वह निश्चित रूप से इसकी कोशिश करेगा। वह विशेष रूप से उत्सुक नहीं लग रहा था, बस में बैठे हुए सभी से जोर से बात कर रहे थे

यात्रियों। पुरुष अक्सर उदासीनता का ढोंग करते थे। कोई भी वास्तव में विश्वास नहीं करेगा कि वह उसे या तो चाहती थी - उसके चेहरे पर घूँघट के साथ और एक शब्द भी नहीं! Lac कोई लाख की चूड़ियाँ उतार दो। यह दुर्भाग्य लाता है, 'उसकी लड़की दोस्तों ने उससे कहा था। 'जब वह तुमसे प्यार करता है और तुम्हें तुमसे प्यार करता है तो उसे तोड़ दो।' उसके प्रत्येक हाथ पर एक दर्जन थे, उन्हें कलाई से कोहनी तक कवर किया गया था। उसने अपनी उंगलियों से उन्हें महसूस किया। वे कठोर और भंगुर थे। उसे भगाने के लिए उसे बहुत सारे आलिंगन और प्रहसन करने पड़ते। बस के खिंचते ही उसने दिवास्वप्न रोक दिया। सड़क पर बड़े-बड़े पत्थर थे। फिर सैकड़ों लोगों ने उन्हें घेर लिया। सभी को बस से उतरने का आदेश दिया गया। सिखों को सिर्फ मौत के घाट उतार दिया गया। शुद्ध मुंडा छीन रहे थे। खतना करवाने वालों को माफ कर दिया गया। जो नहीं थे, उनका खतना किया गया। सिर्फ पूर्वाभास ही नहीं: पूरी चीज काट दी गई। वह जो वास्तव में मनसा राम पर अच्छी नज़र नहीं रखती थी, उसे उसके पति को पूरी तरह से नग्न दिखाया गया था। उन्होंने उसे बांहों और पैरों से पकड़ लिया और एक आदमी ने उसका लिंग काट दिया और उसे दे दिया। भीड़ ने उससे प्यार किया। उसे अपनी कोई चूड़ी नहीं उतारनी थी। वे सड़क पर लेट गए और एक आदमी और दूसरे और दूसरे द्वारा ले जाए जाने के कारण वे सभी को तोड़ दिया गया। यह उसे बहुत अच्छी किस्मत लाना चाहिए था!

सुंदर सिंह का मामला अलग था। हुकुम चंद ने उसे सेना में भर्ती किया था। उन्होंने अच्छा प्रदर्शन किया था। वह बर्मा, इरिट्रिया और इटली में लड़ाई में जीते गए पदकों की एक बड़ी, बहादुर सिख थी। सरकार ने उन्हें सिंध में जमीन दी थी। वह अपनी पत्नी और तीन बच्चों के साथ ट्रेन से उनके प्रयास में आया था। एक डिब्बे में पाँच सौ से अधिक पुरुष और महिलाएँ थे, जो '40 बैठे, 12 सो रहे थे'। सिसकारी में पानी के बिना कोने में बस एक छोटा सा शौचालय था। यह छाया में 115 डिग्री था; लेकिन मीलों के भीतर कोई छाया नहीं थी।



केवल सूरज और रेत ... और पानी नहीं। सभी स्टेशनों पर रेलिंग के साथ भाले थे। फिर ट्रेन को चार दिनों के लिए एक स्टेशन पर रखा गया था। किसी को भी उतरने की इजाजत नहीं थी। सुंदर सिंह के बच्चे पानी और भोजन के लिए रोते थे। तो बाकी सब ने किया। सुंदर सिंह ने उन्हें अपना मूत्र पीने के लिए दिया। फिर वह भी सूख गया। इसलिए उसने अपना रिवाल्वर निकाला और उन सभी को गोली मार दी। शंगारा सिंह ने अपने लंबे भूरे रंग के बालों के साथ छह साल की उम्र में एक टॉपकोन में बंधे, दीपो ने कर्लिंग पलकों के साथ चार साल की उम्र में और अमरो ने चार महीने की उम्र में अपनी माँ के सूखे स्तनों को अपने मसूड़ों से टटोला और पूरा चेहरा तक ढंक लिया। झुर्रियों की, रो रो कर। सुंदर सिंह ने भी अपनी पत्नी को गोली मारी। फिर उसने अपनी नस खो दी। उसने रिवाल्वर अपने मंदिर में लगाई लेकिन आग नहीं लगाई। खुद को मारने का कोई मतलब नहीं था। ट्रेन चल पड़ी थी। उन्होंने अपनी पत्नी और बच्चों की लाशों को ढेर कर दिया और भारत आ गए। उन्होंने प्रतिज्ञा को भुनाया नहीं। केवल उनके परिवार ने किया।

हुकुम चंद ने मनहूसियत महसूस की। रात ढल चुकी थी। मेंढकों को बुलाया नदी। फायरफ्लाइज़ ने बरामदे के पास चमेली के बारे में बताया। भालू व्हिस्की ले आया था और हुकुम चंद ने उसे भेज दिया था। भालू ने रात का खाना बाहर रखा था लेकिन उसने भोजन को नहीं छुआ था। वह दीपक को हटा दिया और अंधेरे में अकेले बैठ गया, अंतरिक्ष में घूर रहा था।

उन्होंने लड़की को वापस चुन्दुनुगर जाने क्यों दिया था? क्यों? उसने अपने आप को, अपनी मुट्ठी से माथा मारते हुए पूछा। यदि केवल वह उसके साथ रेस्ट हाउस में होती, तो बाकी दुनिया के नरक में जाने पर वह परेशान नहीं होती। लेकिन वह यहां नहीं थी; वह ट्रेन में थी। वह इसकी गड़गड़ाहट सुन सकता था।

हुकुम चंद अपनी कुर्सी से फिसल गए, अपने चेहरे को अपनी बांहों से ढक लिया और रोने लगे। फिर उसने अपना चेहरा आसमान की तरफ उठाया और प्रार्थना करने लगा।

ग्यारह के थोड़ी देर बाद, चाँद ऊपर आया। यह थका हुआ और फैला हुआ लग रहा था। इसने मैदान को थके हुए हल्के प्रकाश से भर दिया जिसमें सब कुछ थोड़ा धुंधला था। पुल के पास बहुत कम चाँदनी थी। उच्च रेलवे तटबंध ने अंधेरे छाया की एक दीवार डाली।

सैंडबैग, जो सिग्नल के पास मशीन-गन घोंसले की रखवाली करता था, रेलवे पटरियों के दोनों ओर से घिरा हुआ था। सिग्नल मचान पर दृश्य पर एक विशाल संतरी की तरह खड़ा था। दो बड़ी अंडाकार आँखें, एक दूसरे के ऊपर, लाल रंग की। संकेत के दोनों हाथ एक दूसरे के समानांतर खड़े थे। बैंक के किनारे झाड़ियाँ जंगल की तरह लग रही थीं। नदी में चमक नहीं थी; यह स्लेट की एक चादर की तरह था, यहाँ और वहाँ एक लहर के संदेह के साथ।

पैपों के एक मोटे समूह के पीछे तटबंध से एक अच्छी दूरी, एक जीप थी जिसका इंजन धीरे से चल रहा था। उसमें कोई नहीं था। पुरुष एक दूसरे से कुछ फीट की दूरी पर रेलवे लाइन के दोनों ओर फैल गए थे। वे अपनी हथेलियों और भाले के साथ अपने पैरों के बीच अपनी जाँघों पर बैठ गए। पुल के पहले स्टील स्पैन पर एक मोटी रस्सी को रेलवे लाइन के ऊपर क्षैतिज रूप से बांधा गया था। यह ट्रैक से करीब बीस फीट ऊपर था।

पुरुषों के लिए एक-दूसरे को पहचानना बहुत गहरा था। तो उन्होंने जोर से बात की। फिर किसी ने फोन किया।

'शांति! बात सुनो!'

उन्होंने सुनी। यह कुछ भी नहीं था। केवल नरकट में हवा।  
'खामोशी किसी भी तरह,' नेता की आज्ञा आ गई। 'अगर आप इस तरह की बात करते हैं, तो आप ट्रेन को समय पर नहीं सुनेंगे।'  
वे फुसफुसाहट में बात करने लगे।  
इसमें से एक के रूप में कांपते हुए स्टील के तारों का शोर -शमी शोर था

सिग्नल कम हुए। इसकी अंडाकार आंख लाल से चमकीले हरे रंग में बदल गई।  
कानाफूसी बंद हो गई। पुरुष उठे और ट्रैक से दस गज की दूरी पर अपनी स्थिति बना ली।

नरम पफ-पप्स के द्वारा स्थिर एक स्थिर ध्वनि थी। एक आदमी लाइन तक गया और अपना कान स्टील की रेल पर लगा दिया।

'वापस आओ, तुम मूर्ख हो,' एक कर्कश कानाफूसी में नेता चिल्लाया।

'यह ट्रेन है,' उन्होंने विजयी घोषणा की।

'पीछे हटो!' नेता को जमकर दोहराया।

सभी की निगाहें ग्रे स्पेस की ओर टिक गईं, जहां से ट्रेन की रंबलिंग हुई थी। फिर वे स्टील की एक शाफ्ट के रूप में, रस्सी में बदल गए। अगर ट्रेन तेज होती तो वह दो लोगों को चाकू की नोक पर खीरे की तरह काट सकती थी। वे झेंप गए।

स्टेशन के बाहर एक लंबा रास्ता प्रकाश का एक बिंदु था। यह बाहर चला गया और एक और निकट आया। फिर एक और दूसरा, ट्रेन के आते ही नजदीक आना और जाना। पुरुषों ने रोशनी को देखा और ट्रेन की आवाज़ सुनी। पुल पर किसी की नजर नहीं गई।

एक शख्स स्टील स्पान पर चढ़ने लगा। वह केवल तभी देखा गया जब वह शीर्ष पर पहुंच गया था जहां रस्सी बंधी थी। उन्हें लगा कि वह गाँठ का परीक्षण कर रहा है। वह इसे टाल रहा था। यह अच्छी तरह से बंधा हुआ था; भले ही इंजन की कीप ने इसे मारा हो, रस्सी टूट सकती है लेकिन गाँठ नहीं देगी। आदमी ने खुद को रस्सी पर फैला लिया। उसके पैर गाँठ के पास थे; उसके हाथ लगभग रस्सी के केंद्र तक पहुँच गए। वह बड़ा आदमी था।

ट्रेन और नजदीक आ गई। इसके फ़नल से निकली चिंगारियों के साथ इंजन का दानव रूप ट्रैक के ऊपर आ गया। इसकी फुफकार ट्रेन की गर्जना में ही डूब गई। पूरी ट्रेन को वॉन चांदनी के खिलाफ स्पष्ट रूप से देखा जा सकता था। से कोयला निविदा पूँछ अंत करने के लिए, वहाँ छत पर मनुष्य की एक ठोस परत था।

आदमी अभी भी रस्सी पर फैला हुआ था।

नेता खड़ा हो गया और जोर से चिल्लाया: 'आओ, तुम गधे हो! तुम मारे जाओगे। एक बार तो उतरो!'

वह आदमी आवाज की तरफ घूम गया। उसने अपनी कमर से एक छोटे से किराने को बाहर निकाला और रस्सी पर पटकना शुरू कर दिया।

'यह कौन है? वह क्या है...?'

कोई समय नहीं था। उन्होंने पुल से ट्रेन तक, ट्रेन से पुल तक देखा। आदमी ने रस्सी को जोर से काट दिया।

नेता ने अपने राइफल को अपने कंधे पर उठाया और निकाल दिया। उसने अपना निशान मारा और आदमी का एक पैर रस्सी से उतर गया और हवा में लटक गया। दूसरा अभी भी था

रस्सी को घुमाया। वह उन्मत्त जल्दबाजी में भाग गया। इंजन केवल कुछ गज की दूरी पर था, सीटी के प्रत्येक विस्फोट के साथ आकाश में उच्च अंगारे फेंक रहा था। किसी ने एक और गोली चलाई। आदमी का शरीर रस्सी से फिसल गया, लेकिन वह अपने हाथों और ठुड्डी से उस पर चढ़ गया। उसने खुद को ऊपर खींच लिया, अपने बाएं बगल के नीचे रस्सी को पकड़ा, और फिर अपने दाहिने हाथ से हैक करना शुरू कर दिया। रस्सियों में रस्सी काटी गई थी। केवल एक कठिन सख्त किनारा रह गया। वह चाकू के साथ उस पर गया, और फिर अपने दांतों से। इंजन लगभग उस पर था। शॉट्स की एक वॉली था। वह आदमी कांप गया और ढह गया। केंद्र में गिरते ही रस्सी टूट गई। ट्रेन उसके ऊपर से गुजरी और पाकिस्तान चली गई।



शुरुवात

बातचीत शुरू करते हैं ...

पेंगुइन [Twitter.com@PenguinIndia](https://twitter.com/PenguinIndia) का अनुसरण करें  
हमारे सभी कहानियों [YouTube.com/PenguinIndia](https://YouTube.com/PenguinIndia) के साथ अद्यतित रहें  
जैसे [Facebook.com/PenguinIndia](https://Facebook.com/PenguinIndia) पर 'पेंगुइन बुक्स'  
लेखक और के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त करें  
इस तरह की और कहानियाँ [p पेंगुइनinbooksindia.com](https://penguininbooksindia.com) पर [देखें](#)

## वाइकिंग

पेंगुइन ग्रुप द्वारा प्रकाशित

पेंगुइन बुक्स इंडिया प्रा। लिमिटेड, 11 कम्युनिटी सेंटर, पंचशील पार्क, नई दिल्ली 110 017, इंडिया पेंगुइन ग्रुप (यूएसए) इंक।, 375 हडसन स्ट्रीट, न्यूयॉर्क, न्यूयॉर्क 10014, यूएसए

पेंगुइन ग्रुप (कनाडा), 90 एग्लिंटन एवेन्यू ईस्ट, सूट 700, टोरंटो, ओन्टेरियो एम 4 पी 2 वाई 3, कनाडा (पियर्सन पेंगुइन कनाडा इंक का एक प्रभाग)

पेंगुइन बुक्स लिमिटेड, 80 स्ट्रैंड, लंदन WC2R 0RL, इंग्लैंड

पेंगुइन आयरलैंड, 25 सेंट स्टीफन ग्रीन, डबलिन 2, आयरलैंड (पेंगुइन बुक्स लिमिटेड का एक प्रभाग)

पेंगुइन ग्रुप (ऑस्ट्रेलिया), 707 कोलिन्स स्ट्रीट, मेलबोर्न, विक्टोरिया 3008, ऑस्ट्रेलिया (पियर्सन ऑस्ट्रेलिया ग्रुप पीटीआई लिमिटेड का एक प्रभाग)

पेंगुइन ग्रुप (NZ), 67 अपोलो ड्राइव, रोसेडेल, ऑकलैंड 0632, न्यूजीलैंड (पियर्सन न्यूजीलैंड लिमिटेड का एक प्रभाग)

पेंगुइन बुक्स (साउथ अफ्रीका) (पीटीआई) लिमिटेड, ब्लॉक डी, रोजबैंक ऑफिस पार्क, 181 जन स्मट्स एवेन्यू,  
पार्कटाउन नॉर्थ, जोहान्सबर्ग 2193, साउथ अफ्रीका  
पेंगुइन बुक्स लिमिटेड, पंजीकृत कार्यालय: 80 स्ट्रैंड, लंदन WC2R 0RL, इंग्लैंड

[www.penguin.co.in](http://www.penguin.co.in)

1956 में पहली बार प्रकाशित हुआ

रवि दयाल प्रकाशक 1988 द्वारा प्रकाशित

पेंगुइन बुक्स इंडिया और रवि दयाल पब्लिशर 2007 द्वारा वाइकिंग में प्रकाशित

कॉपीराइट © रवि दयाल 1988, 2007

EO Hoppé / CORBIS द्वारा कवर फोटोग्राफी

भवी मेहता द्वारा कवर डिजाइन

सभी अधिकार सुरक्षित

आईएसबीएन: 978-0-143-06588-3

यह डिजिटल संस्करण 2013 में

प्रकाशित हुआ। ई-आईएसबीएन:

978-9-351-18352-5